शोला सीरीज का नया

देवा ठाकुर

विस्फो

हाहाकार

शोला इस सदी का
महामानव है और ज
वह पूरी ताकत के स
एक्शन में आता है
"हाहाकार" न मचे
हो ही नहीं सकता




शोला सीरीज का नया
वा ठाकुर
विस्फो
हाहाकार
शोला इस सदी का
महामानव है और ज
वह पूरी ताकत के स
एक्शन में आता है
“हाहाकार” न मचे
हो ही नहीं सकता

शोला का दूसरा नाम स्पीड और एक्शन है। की जिन्दगी में हर पल स्पीड-एक्शन और एडवेंचर सिलसिला उसकी पैदाइश से ही चला आ रहा उसकी जिन्दगी का अपना कोई लक्ष्य नहीं है। वह जी और के लिये जी रहा है और जिसने उसे इस नोगारल की दुनिया में उतारा है, उसका मकसद कूल साफ है। शोला के हाथों दुनिया के सबसे यानाक जादूगर वृन्दास्वामी का खात्मा। उसका यह शन कब पूरा होगा, वह नहीं जानता। अनेक बार वह वृन्दा को मौत के घाट उतार चुका है, लेकिन मर-मरकर फिर जिन्दा हो जाता है। इस बार शोला इसी मिशन के सिलसिले को जारी रखते हुए पृथ्वी की दूसरी सतह पर आ पहुंचा है। यानि कि इसे हम ताल कह सकते हैं। तिलिस्म और रहस्यों के कोहरे चीरता हुआ शोला अपनी रफ्तार के साथ आगे रहा है और उसके बढ़ते कदमों की हर चाप को वा ठाकुर" ने कलमबद्ध करके पुस्तक की शक्ल आपके सामने रखा है—पढ़िये और पढ़ते जाइये—

हाहाकार

देवा ठाकुर

की जादूभरी लेखनी का
एक और जादू

हाहाकार

देवा ठाकुर

नयी शताब्दी की नयी खोज

आग जिसकी हिफाजत करती है... तूफान जिसके साये में पलते हैं...जो महामानव है और आदिमानव भी। नाम है शोला। दुनिया का सबसे संवेदनशील, खतरनाक, एक्शन मास्टर!

उपन्यास : हाहाकार
उपन्यासकार : देवा ठाकुर

उपन्यास : हाहाकार
उपन्यासकार : देवा ठाकुर
प्रकाशक : शिवा पॉकेट बुक्स,
428/15, ईश्वर पुरी, मेरठ-250 002
✆ (0121) 2515971
लेजर टाइप सैटिंग : मित्तल कम्प्यूटर्स, मेरठ।
मुद्रक :

मूल्य : पच्चीस रुपये केवल

लेखकीय....

इन्सान का मस्तिष्क एक कम्पयूटर है। ऐसा कम्पयूटर जिसकी कोई थाह नहीं पायी जा सकती, जिसे किसी सॉफ्टवेयर की शक्ल में नहीं ढाला जा सकता। आमतौर पर इन्सान का मस्तिष्क सात प्रतिशत ही जागरूक रहता है। यदि यह सौ प्रतिशत जाग जाय तो इन्सान ही भगवान बन जाता है। कुछ प्रतिशत और जागने पर ही वह अदृश्य हो सकता है—पलभर में हजारों मील का फासला तय कर सकता है। एटमबम से हजार गुना विध्वंसकारी शस्त्र का निर्माण कर सकता है। अदृश्य लोकों में आवागमन कर सकता है। जो चीजें इन्सान की आम दृष्टि से ओझल हैं, उन्हें वह देखने में सक्षम हो जाता है। दूसरे शब्दों में, इन्सान जो भी कल्पना कर सकता है उसे यथार्थ की शक्ल में तब्दील कर सकता है। हर सपने को सच में तब्दील कर सकता है। हर चंद कि मैं ऐसी कोई शख्सियत नहीं हूं लेकिन मैं कल्पना की उड़ान भरने के लिये तो आजाद हूं ही। शोला के किरदार के माध्यम से मैंने ऐसी ही उड़ान ली है। मेरी यह परवाज शब्दों की शक्ल में ढलकर एक कथानक तैयार करती है। और वह कथानक पुस्तक की शक्ल में आप तक पहुंचाने की जिम्मेदारी प्रकाशक निर्वाह करता है। मेरी रचनायें चाहे आप पसन्द करें या ना पसंद करें, अलग बात है। लेकिन मेरी कोशिश होनी चाहिये कि अपनी इस उड़ान में आपको भी सम्मिलित कर सकूं। इन दिनों वैसे भी प्रिंट मीडिया बहुत बुरे वक्त के दौर से गुजर रहा है। ऐसे संकट में हर उपन्यासकार को संकटमोचक की भूमिका अदा करने की जिम्मेदारी कुबूल कर लेनी चाहिये। मेरा यकीन है कि नये हस्ताक्षर (लेखक) पूरी जिम्मेदारी के साथ मैदान में उतरेंगे।

मैं भी एक नया ही लेखक हूं। कोई ज्यादा नावल मेरे नहीं छपे। किसी जुबली के आसपास भी अभी नहीं पहुंचा हूं। लेकिन इस छोटे से लेखकीय सफर में आपने मुझे मेरे नाम से जानना शुरू कर दिया—यही मेरे लिये काफी है। लीजिये प्रस्तुत है **"हाहाकार"**! एक बार फिर आपको दूसरी दुनिया में ले चलता हूं।

—देवा ठाकुर

हाहाकार

शोला की लाश को दफनाने का ऐलान कर दिया गया था। बस्ती वालों की निगाह में उसे फांसी पर लटका दिया गया था। सारा काम इन्तहाई तेज़रफ्तारी से हो रहा था। लाश को बन्द गाड़ी में डाल दिया गया था और शोला की लाश को लेकर कोचवान गाड़ी को आगे बढ़ा ले गया था। यह कोचवान कगोल था। कगोल जिसने शोला को फांसी से बचा लिया था।

बाहर निकलते ही शोला ने आंखें खोल दीं और मुस्कराते हुए कगोल को देख।

कगोल ने कहा—"जिन्दगी बच जाने की मुबारकबाद पेश करता हूं अजीम आका! और कहता हूं कि दोस्तों की दोस्ती पर विश्वास करना चाहिये।"

"हां, तुमने जो कुछ किया है कगोल, उसने मुझे तुम्हारा एहसानमंद बना दिया है।"

"और एक बात कहूं। मैंने तुमसे कहा था कि मैं जो कुछ तुम्हारे साथ कर रहा हूं, उसमें मेरा एक लालच छुपा हुआ है मगर तुमसे इसका पूरा-पूरा सिला वसूल करूंगा।"

"अगर तुम समझते हो कगोल कि मैं तुम्हें वह सिला दे सकता हूं तो तुम समझ लो—मेरी तरफ से यह स्वीकार है। अलबत्ता तुम्हारे इन इलाकों में मैं अजनबी हूं और मैं नहीं जानता कि मैं तुम्हें क्या सिला दे सकता हूं।"

"वह सिला बहुत बड़ा है। तुमने कगोल को देखा—वह एक कमजोर हड्डियों का ढांचा है। किसी को एक गाली तक नहीं दे सकता था। शुरू ही से मेरी ख्वाइश थी कि मुझे किसी ऐसे ताकतवर हाथ का सहारा मिल जाय और मेरे अजीम दोस्त! मैं जानता हूं कि सुनारिया के वहशी और गुरबान के नुमाइन्दे अगर मिलकर भी कोशिश करें तो शायद इन हालात के बावजूद तुम

पर काबू न पा सकें कि तुम यहां से वाकफियत रखते हो। कगोल का तजुर्बा भी तुमसे ज्यादा नहीं है, अलबत्ता इतना वह कह सकता है कि वह इन्सान की परख रखता है और उसनें जिन्दगी में पहली बार ही यह कारनामा अन्जाम दिया है।'' एक गहरी सांस लेकर वह बोला—''वरना भला मेरी क्या मजाल कि मैं उस कोचवान को जख्मी करके उसे अंधे कुवें में धकेलकर उसकी जगह ले लेता और तुम्हें यहां से ले जाता। नामुमकिन अजीम आका! मैं तो अगर ऐसा सोचता भी तो मेरी जान ही निकल जाती। क्या समझे, मैंने जिन्दगी में कभी किसी परिन्दे का शिकार भी नहीं किया है, लेकिन इस गाड़ी का कोचवान जो अंधे कुवें में मौत की नींद सो रहा होगा, वह मेरा पहला कारनामा है।''

''ओहो! तुमने मेरे लिये कत्ल भी किया है।'' शोला ने अफसोस भरे स्वर में कहा।

''हां, आसमान वाला मुझे मुआफ करे। मैं भला कत्ल कैसे कर सकता था, जैसे कि मैं तुम्हें बता चुका हूं कि मैंने तो कभी किसी चूहे को भी नहीं मारा। बस तुम समझ लो कि मैं एक बड़ा पत्थर लेकर उसके अकब में पहुंच गया और मैंने यह पत्थर उसके सर पर दे मारा। नजदीक ही गहरा कुवां था। उसमें धकेलने में मुझे कोई दिक्कत पेश नहीं आयी। लेकिन वह बेचारा कोचवान बेकसूर था। बस याद न दिलाओ, मैंने जिन्दगी में पहला कत्ल किया है।'' कगोल की आवाज में कपकपाहट थी। शोला को हंसी आ गयी।

''इस वक्त तुम मुझे कहां ले जा रहे हो?'' शोला ने पूछा।

''तकदीर देखो कैसा साथ दे रही है, अजीम दोस्त! तुम्हारा कफन दफन भी जरूरी था और यह काम मेरे ही सुपुर्द किया गया है। असल में यहां गुरबान के दुश्मनों का एक कब्रिस्तान है। समझ रहे हो ना—वह अपने दुश्मनों को एक ही जगह सुलाकर रखता है और उनकी कब्रों पर घोड़ा दौड़ाता रहता है। वह दर्शाता है कि वह दुश्मनों को अपने कदमों तले ऐसे रौंदा जाता है। बहुत बड़ा रकबा है इस कब्रिस्तान का। यकीन करो मेरे मोआज्जिज दोस्त कि इसमें बेशुमार कब्रें हैं।''

''क्या यहां लाशों को जलाने का प्रचलन नहीं है?'' शोला ने पूछा।

"यहां–क्या मतलब–क्या तुम किसी दूसरी धरती के बाशिन्दे हो–।" कगोल ने चौंककर पूछा।

"नहीं, मेरा मतलब यह नहीं था जो तुम समझ रहे हो। दरअसल हर बस्ती के अलग-अलग नियम कानून होते हैं। कहीं मुर्दों को जलाया जाता है–कहीं दफनाया जाता है।"

"जिनको सजा-ए-मौत मिलती है उनके मुर्दे को हमारे यहां जलाया नहीं जाता क्योंकि उसे हम पापी मानते हैं और पापी के मुर्दे जिस्म को भी सजा दी जाती है–ताकि वह सड़ता रहे, उस पर कीड़े पड़ते रहें और कीड़े-मकोड़े उसके मांस को खा जायें और अपने जिस्म की ऐसी बेकदरी देखकर उसकी रूह छटपटाती रहे। इसलिये उसे कब्र में गाड़ दिया जाता है। जो अपनी स्वाभाविक मौत मरता है, उसे हम जला देते हैं। गुरबान चूंकि सबको सजा देकर मारता है इसलिये उसका निजी कब्रिस्तान है जिसमें बेशुमार कब्रें हैं–इन कब्रों में अब एक और कब्र का इजाफा हो जायेगा, फिर उसका बोदा तुम्हारी कब्र को रौंदता रहेगा। वह कब्रों को भी गिनता रहता है और उनके इजाफे से बहुत खुश होता है।" कगोल के शब्द शोला को बहुत अजीब लग रहे थे।

फिर वह मुस्कराकर बोला–"फिर क्यों न कगोल! दुश्मनों के इस कब्रिस्तान में बल्कि कब्रिस्तान के बीचोंबीच गुरबान की कब्र भी बने ताकि उसके दुश्मन उसके करीब रहें और उससे अपना हिसाब-किताब करते रहें।" कगोल के अंदाज से यों लगा जैसे उन शब्दों ने उसे मदहोश कर दिया हो। उसने नशीली आवाज में कहा–"मेरे अजीम आका! तुम मुझे ख्वाब दिखा रहे हो। काश! इस ख्वाब की ताबीर मेरी जिन्दगी में निकल आये।"

शोला खुशी से कगोल को देखने लगा। वह उसके आगे बोलने का मुन्तजिर था लेकिन उसने कुछ न कहा और बोदा-गाड़ी दौड़ाता रहा। शोला खामोशी से बन्द गाड़ी की एक खिड़की खोलकर बाहर के दृश्य देखने लगा था। सूरज निकल आया था। उसकी रोशनी लम्हों में दोपहर के सूरज की तरह फैल गयी थी। यह सारे पाताल लोक का सूरज था जो आकाश के बीचों बीच ही अस्त हो जाता था और फिर उसी जगह उदय होता था। शोला इस कुदरती निजाम का कोई वैज्ञानिक हल अब तक नहीं निकाल सका था कि धरती की एक पर्त के नीचे यह जो दूसरी पर्त है

या लोक है जिसे वह पाताल कह सकता था—उसका सूरज आखिर किस वैज्ञानिक पद्धति के तहत एक ही जगह उगता है और वहीं अस्त हो जाता है। धरती की सतह पर जो सूरज आसमान पर चमकता है वह पृथ्वी के चौबीस घण्टे में एक चक्कर पूरा घूमने की वजह से सूरज पूरब में उदय होकर पश्चिम में अस्त होता है—तो क्या पृथ्वी की भीतरी सतह नहीं घूमती और क्या यह वही सूरज है जो धरती की सतह से देखा जाता है। मुमकिन है कि यह कोई दूसरा सूरज हो। इन सब चीजों को देखकर शोला को एहसास होता था कि कुदरत के निजाम के सामने सारा विज्ञान निरर्थक है—क्या मालूम विद्वान ने अब तक जो खोज की है वह भी सही न हो। और यह भी कोई आवश्यक नहीं कि वह जिस लोक में विचरण कर रहा है वह पृथ्वी का ही हिस्सा हो—किसी भी ब्लैक होल्स के रास्ते वह ऐसे किसी लोक में पहुंच सकता था—किसी दूसरे ग्रह में पहुंच सकता था। बहरहाल यह एक अनबूझ पहेली थी। शोला को तो इस धरती में वैज्ञानिक प्रोफेसर जोयोटा ने ट्रांसमिट किया था। (शोला पाताल में कैसे पहुंचा, इसका पूरा विवरण जानने के लिये पढ़िये देवा ठाकुर के उपन्यास—1. शोला का डंका, 2. डंके की चोट, 3. पाताल में डंका।)

शोला पाताल लोक के ही एक हिस्से में था जहां उसे इस धरती का बाशिन्दा फिट लेकर आया था और फिर अब गायब हो चुका था। वह कहां चला गया या उसके साथ कोई हादसा पेश आ गया इसकी जानकारी शोला को नहीं थी।

पहाड़ों के दामन में कब्रिस्तान था। अनगिनत कब्रें फैली हुई थीं और उन पर सूखी लकड़ियों से निशान लगे हुए थे। बोदा गाड़ी उस रहस्यमय कब्रिस्तान के पास रुक गयी और कमोल ने एक नयी कब्र की तैयारी शुरू कर दी।

उसने शोला की तरफ देखा और मुस्कराकर बोला—"मेरे अजीम दोस्त! क्या तुम अपनी कब्र खुदवाने के लिये मेरा हाथ नहीं बढ़ाओगे। जब तुमने इस बस्ती सुनारिया में आकर यहां के सबसे ताकतवर जालिम आदमी से दुश्मनी मोल ले ही ली तो इस दुश्मनी को आखरी अन्जाम तक पहुंचाने में मेरी मदद करो। तुम एक ऐसे मज़लूम की हिमाकत में उठ खड़े हुए थे जो गुरबान का दुश्मन था और उस हिमायत की सजा आखिर तुम्हें मिल ही

गयी—सजा-ए-मौत। वैसे मैं तो समझता हूं कि इन्सान की जिन्दगी का बहुत ही बड़ा और दिलचस्प तजुर्बा होगा कि वह खुद अपनी कब्र तैयार करे और तुम्हें जल्द ही इस काम से फारिग हो जाना चाहिये।''

कगोल के शब्दों पर शोला को बेइख्तियार हंसी आ गयी। उसने आगे बढ़कर लोहे के वह औजार अपने हाथ में ले लिये जिससे कब्र खोदी जा रही थी और फिर वह हंसते हुए कगोल से बोला—''तुम बहुत दिलचस्प इन्सान हो कगोल! और तुम्हें देखकर बार-बार मुझे अपना साथी याद आ जाता है। वह बेहद खुशमिजाज और तुम्हारी ही तरह दिलचस्प शख्सियत का मालिक है। आह! मैं नहीं जानता कि इस वक्त वह मेरे साथ होता तो क्या कैफियत होती—तुम यकीन नहीं कर सकते इस बात पर कि वह माहौल बदल देने का माहिर है। बहुत जहीन और ऐसे-ऐसे गहरे नुक्ते निकालता है कि इन्सान की अक्ल हैरान रह जाय।''

''लेकिन वह कहां गया?'' कगोल ने पूछा।

''यही तो नहीं मालूम। यह तो सोचा ही नहीं जा सकता कि वह अपनी जिन्दगी का खतरा महसूस करके मुझे अकेला छोड़कर भाग गया हो। नहीं कगोल! हरगिज नहीं! अगर मैं अपने दिमाग पर जोर देता हूं तो एक ही अन्दाज होता है कि वह किसी खास चक्कर में निकल गया है या फिर किसी इतनी बड़ी मुसीबत में फंस गया है कि उससे निकल नहीं पाया, क्योंकि आम हालात में वह मुझसे दूर रहने वालों में से नहीं है।''

''मेरे दोस्त! तुम यकीन करो कि मैंने उसे हर सम्भावित जगह तलाश कर लिया है और ऐसी जगह नहीं छोड़ी जहां वह छुप सकता है, लेकिन मुझे इसका कोई निशान नहीं मिला।'' कगोल ने कहा। दोनों कब्र खोदते रहे और कुछ देर बाद जब कब्र खोदने में कामयाब हो गये तो कब्र को पत्थरों से भरा गया और फिर उस पर एक निशान गाड़ दिया गया। सारा काम खत्म होने के बाद कगोल ने गर्दन उठायी और चारों तरफ देखने लगा फिर बोला—''अभी उचित समय है। हमें थोड़ा-सा सफर और करना होगा।''

''अब कहां जाओगे?'' शोला ने सवाल किया।

''वह जो सामने वाली काली पहाड़ी देख रहे हो ना—वह

जिसकी चोटी किसी कुत्ते के मुंह की तरह स्याह है और बदन ढीला, उसमें एक बड़ा अच्छा गार है। यह गार तुम्हारे इस्तेमाल में रहेगा। मुमकिन है आज रात या ज्यादा से ज्यादा कल मैं तुम्हें यहां से निकालकर दूसरी जगह ले जाऊं, लेकिन इस वक्त तुम्हारे छुपने के लिये यह जगह सबसे अच्छी है।"

"यानि कि अब मुझे बुजदिलों की तरह छुपकर रहना होगा?"

"बुजदिल नहीं अक्लमंदों की तरह। मैं इस बात को जानता हूं कि तुम एक हुनरबाज इन्सान हो, मगर तुम्हारे अन्दर एक खराबी है। अगर तुम मुझे इजाजत दो तो मैं बता दूं।"

"बताओ।"

"बस, जरा सोचने के अन्दाज में मेहनत से काम नहीं लेते। तुम्हारा क्या ख्याल है क्या मैं यह सब कुछ करने में आसानी से कामयाब हो गया हूं? नहीं, मेरे दोस्त हरगिज नहीं। उसके लिये मैंने बड़ा जबरदस्त संघर्ष किया है और उस संघर्ष का एक ही मकसद है। तुम यह पूछना पसंद करोगे कि वह मकसद क्या है?"

"बताओ—मैं तुम्हारी बात ध्यान से सुन रहा हूं।"

"मैं चाहता हूं कि गुरबान तुम्हारे हाथों मौत की आगोश में पहुंच जाय। क्या तुम इस बात का यकीन करोगे कि गुरबान का मुझसे बड़ा दुश्मन पूरे सुनारिया में कोई नहीं होगा। वैसे तो उसके दुश्मनों की संख्या बेपनाह है, लेकिन मैं तुम्हें बता रहा हूं कि मैं गुरबान का एक बदतरीन दुश्मन हूं। कमजोर, अकेला शख्स जिस पर गुरबान को कभी संदेह नहीं हो सकता, लेकिन ऐसे ही लोग कामयाबी से हमकिनार हो सकते हैं। बेशक यह कामयाबी मैं खुद हासिल नहीं कर रहा, बल्कि उसका जरिया तुम बनोगे। मेरा इल्म मेरा जहन कहता है कि गुरबान तुम्हारे हाथों मारा जायेगा और यकीन करो, मैंने सिर्फ अपनी खुदगर्जी और लालच में तुम्हें जिन्दगी बख्शी है। मैंने तुम्हें जिन्दा रखने के लिये संघर्ष इसलिये किया है। अब तुम से दरख्वास्त करता हूं कि मुझे अपना गहरा साथी और गहरा दोस्त समझकर फिलहाल सिर्फ मेरी हिदायत पर अमल करो—हां—जब तुम मेरे कामों को मुकम्मल करो तो जो मुनासिब समझो करना। क्या समझे, आओ अब हमें यहां से आगे बढ़ना चाहिये। उस गार तक पहुंचना बेहद जरूरी है। बाकी बातें

हम गाड़ी में बैठकर ही करेंगे।"

शोला कगोल के साथ गाड़ी में जा बैठा। अब उसे यह सब कुछ बहुत दिलचस्प लग रहा था। सुनारिया वालों ने उसकी मौत का यकीन किया था और उसकी कब्र भी गुरबान के दुश्मनों के कब्रिस्तान में बन गयी थी, लेकिन वह जिन्दा सलामत था। रास्ते में उसने कहा—

"कगोल! तुमने खूब खेल दिखाया है, लेकिन इस खेल का अन्जाम अभी तक मेरी समझ में नहीं आया। इसके अलावा मैं यह बात भी जानता हूं कि इरोज ने मुझे नृत्य के मैदान में क्यों तलब किया था और मुझे वहां कत्ल करने की कोशिश क्यों की थी।"

"बड़ी आम बात है और एक जहीन आदमी बड़ी आसानी से इस बात को समझ सकता है। असल में उन लोगों ने तुम्हारी दिलेरी और ताकत को स्वीकार कर लिया था। एक ताकतवर आदमी को तुमने जिस तरह शिकस्त दी थी, उस तरह शिकस्त देना आम लोगों के बस की बात नहीं थी। ख्याल यह था कि शायद बस्ती के लोग खुल्लम खुल्ला तुम्हारे साथ सहयोग का ऐलान भी कर लें और यह बात बहुत कम लोग जानते हैं कि गुरबान जालिम दरिन्दा होने के बावजूद बुजदिल भी है और बुजदिल आदमी हमेशा चालाक होता है। गुरबान ने यही सोचा कि तुम्हें सीधे-सीधे हलाक करने की बजाय किसी न किसी तरह बस्ती वालों को तुम्हारे खिलाफ कर दिया जाये और इसके लिये उसने ईरोज को नियुक्त किया। अतः ईरोज ने सब कुछ कर डाला और अब उसने तुम्हें मौत की आगोश में पहुंचा दिया। अब यह इत्तिफाक है, कि तुम दो लोगों की उम्मीदों के केन्द्र बन गये और उन्होंने तुम्हारी जिन्दगी के लिये मिलकर संघर्ष किया और कामयाब हो गये।" कगोल की यह बात सुनकर शोला चौंक पड़ा।

उसने कहा—"दो लोग—यानि तुम्हारे अलावा भी कोई और इस साजिश में शामिल है।"

"यह बड़ी दिलचस्प बात है कि तुम अपनी जिन्दगी बचाने के अम्ल को साजिश कह रहे हो।"

"नहीं—मेरा मतलब यह है कि...।" शोला ने कहा।

"एक शख्स और है जो उस जगह तुम्हारा मुन्तजिर है—जो

अब तुम्हारी शरण-स्थली बनने वाली है।"

"कौन है वह?" शोला ने सर्द लहजे में कहा।

"यों समझ लो कि तुम्हारा दोस्त और तुम्हारा परिचित। तुम उससे मिल लोगे। अब तो फासला भी ज्यादा नहीं है। वह देखो, हम उस गार के करीब पहुंच रहे हैं जहां तुम्हारा दोस्त अन्दर मौजूद है।"

"तुम बड़े ड्रामेबाज आदमी मालूम होते हो। कभी कभार मुझे तुम पर गुस्सा आता है लेकिन तुम मुझ पर एहसान कर चुके हो और उस एहसान ने मुझे मजबूर कर दिया है कि तुम्हारी बेवकूफी की बातों को अनदेखा कर दूं।"

"यह तुम्हारा एहसान है। बस—मैं यह चाहता हूं कि मैं तुम्हें जल्द से जल्द यहां छोड़कर फौरन वापस बस्ती में पहुंच जाऊं, ताकि लोग मेरे ऊपर शक न कर सकें। जब कोचवान की गाड़ी उसके घर तक पहुंचे तो उनको मेरे बारे में किसी को कुछ पता न हो। मेरा मतलब है उसे वहां होना चाहिये जहां यह पहुंचेगी और उसके बाद मैं खुद अपना हुलिया बदलकर अपनी जगह पहुंच जाऊंगा। तो लोग कोचवान को जरूर तलाश करेंगे और उस वक्त अगर किसी को शक हो गया कि कोचवान अपनी जगह मौजूद नहीं है, कोई और उसकी जगह कार्यवाहियां करता फिर रहा है तो फिर यह समझ लो कि तुम्हारा यह दोस्त कगोल आइन्दा तुम्हारे सामने नहीं आ सकेगा। गुरबान तो खैर दूर की चीज है, ईरोज ही मेरे इतने टुकड़े करेगा कि कोई गिन भी नहीं पायेगा। क्योंकि मैं एक कमजोर और बहुत ही मामूली-सा आदमी हूं। इस बस्ती में सबकी निगाहों के सामने अहमक और बेवकूफ।"

"यह बात तो तुम्हारे हक में जाती है कगोल! बहरहाल, मैं तुम्हें नहीं रोकूंगा, क्योंकि मैं तुम्हारी जिन्दगी चाहता हूं।" शोला ने कहा और कगोल ने आंखें बन्द करके गर्दन हिला दी। वैसे इसमें कोई शक नहीं कि वह शक्ल से ही मक्कार नजर आता था।

फिर उसने बोदा गाड़ी (घोड़ा गाड़ी—वहां घोड़े को बोदा कहा जाता था) के पिछले हिस्से की तरफ इशारा करते हुए कहा—"और मेरे अजीम दोस्त! मैंने तुम्हारे लिये कुछ और भी इन्तजामात किये थे। मुझे अन्दाजा था कि तुम्हें इन गारों में चंद

चीजों की जरूरत होगी। हरचंद तुम्हारा यह साथी जो गार में पहले से मौजूद है—तुम्हारे लिये कुछ न कुछ बन्दोबस्त करके आया होगा, लेकिन कगोल की तरफ से इस बड़े थैले का तोहफा कबूल करो।'' कगोल ने नीचे उतरकर गाड़ी के पिछले हिस्से से एक थैला निकाल लिया जो काफी बड़ा था। शायद उसमें जरूरयात का सामान भरा हुआ था। उसके बाद उसने वह थैला शोला के हवाले करते हुए कहा—''और अब अगर मैंने गैर जिम्मेदारी से काम लिया तो तुम्हें तो मौत के मुंह से निकाल लाया हूं लेकिन मुझे मौत के मुंह से निकालने वाला और कोई न होगा। मुझे खौफ है कि यहां इस गार के नजदीक कोई यह बोदा गाड़ी देख न ले। अतः अब तुमसे रुखसत होता हूं। लेकिन कोशिश करूंगा कि दोबारा तुमसे बहुत जल्दी मुलाकात करूं। अच्छा...।'' यह कहकर उसने बोदा गाड़ी वापस मोड़ दी और फिर तेजी से उसे दौड़ाता हुआ आगे बढ़ गया। शोला उसे खड़ा देखता रहा था। थैला उसके हाथ में लटका हुआ था। आखिरकार जब कगोल एक मोड़ पर निगाहों से ओझल हो गया तो शोला ने एक गहरी सांस ली और गार की तरफ चल पड़ी, जिसका दहाना थोड़ी बुलन्दी पर था। चट्टानों को पार करता हुआ उसके नजदीक पहुंचा तो ठिठक गया। गार के दहाने पर उसे जो कोई नजर आया था, उसे देखकर उसे खुशी नहीं हुई। यह इरोना थी जो गार के दहाने पर खड़ी उसे देख रही थी। कुछ लम्हों के लिये शोला के कदम रुके। वैसे इसमें कोई शक नहीं कि उसको इरोना की यहां मौजूदगी पर हैरत हुई थी। वह आगे बढ़ा तो इरोना चेहरे पर कोई भाव पैदा किये बगैर उसके पास पहुंच गयी। उसने झुककर थैला शोला के हाथों से ले लिया।

''यह काफी वजनी है। तुम इसे संभाल नहीं पाओगी।'' शोला ने भारी आवाज में कहा और थैला स्वयं अपने हाथों में लिये हुए ऊपर पहुंच गया। इरोना उसके पीछे-पीछे गार में आयी थी।

''मैं हैरान हूं। तुम यहां कैसे?''

''क्यों, इसमें हैरत की क्या बात है।''

''मैं नहीं जानता था कि तुम यहां मौजूद होगी।'' शोला ने गार में दाखिल होकर कहा। उसने थैला एक तरफ रख दिया। गार काफी चौड़ा और साफ-सुथरा था। जरा बराबर घुटन नहीं थी वहां।

इरोना के होठों पर मुस्कुराहट थी। उसने कहा--"जब बस्ती सुनारिया में दाखिल हुए थे तो मैंने तुम्हारे बारे में ५... नजरिया कायम किया था। मैं यह तो नहीं कह सकती कि मैं तुम्हारे लिये बहुत कुछ कर सकती हूं या मेरे दिल में तुम्हारे लिये इश्को मुहब्बत के खजाने उबल पड़े हैं। लेकिन मैं इतना जरूर कहूंगी कि मैंने पहली ही निगाह में तुम्हें बहुत पसंद किया था और चाहती थी कि तुम्हें कोई नुकसान न पहुंचे। मैं खौफ का शिकार थी कि सुनारिया बस्ती में गुरबान, ईरोज और दूसरे खूंख्वार दरिन्दे तुम्हारी मौजूदगी बर्दाश्त नहीं कर सकेंगे। शुरू से ही मैं तुम्हारा पीछा कर रही थी और यह अन्दाजा लगाती रही थी कि दुश्मन तुम्हारे खिलाफ कोई कदम तो नहीं उठा रहे हैं और वही हुआ जिसक मुझे खतरा था और यह भी एक इत्तिफाक है कि यह शख्स कगोल जो इससे पहले इन्तहाई नाकारा-सा इन्सान था, मेरे इस मुआमले में बड़ा बेहतरीन सहयोगी बन गया है। जब मेरी इससे मुलाकात हुई और मैंने डरते-डरते उसे अपना हालेदिल कहा तो मुझे पता चला कि वह तो तुम्हें खुद प्यार करने वालों में से है और तुम्हारी जिन्दगी चाहता है। निःसंदेह इस शख्स से किसी बड़े कारनामे की आशा नहीं की जा सकती थी, लेकिन मैंने देखा और तुमने भी देखा और तुम्हारे अलावा शायद यह बात किसी को मालूम न हो कि कगोल ने अपनी फितरत के खिलाफ एक ऐसा कारनामा सर अंजाम दिया है जिसने उसे मेरी निगाह में पहले से भिन्न कर दिया है। मुझे बेपनाह खुशी है कि वह तुम्हारी जान बचाने में कामयाब हो गया।"

"इसमें कोई शक नहीं है कि तुमने और कगोल ने मेरी जिन्दगी बचायी है और मेरे ऊपर यह एहसान किया है। लेकिन इरोना, तुम्हारा क्या ख्याल है। क्या मैं इतनी आसानी से फांसी पा लेता। अगर तुम मेरी बात पर यकीन कर सकती हो तो जरूर कर लो कि मैं आखरी वक्त की प्रतीक्षा में था। मैं झूठ नहीं बोलता। बेशक अगर कगोल मुझे पहले न मिल जाता और मुझे सारी कार्यवाही पर विश्वास न हो जाता तो फांसी पर लटकने से पहले यहां लाशों का बाजार गर्म हो जाता। वह मुझे आसानी से फांसी नहीं दे सकते थे। यह खूंरेजी मैंने सिर्फ इसलिये नहीं की कि मुझे इसकी सम्भावना नजर आ गयी थी कि मैं बच जाऊंगा। अलबत्ता

क्यों मैं अच्छी तरह जानता हूं कि तुम लोगों ने मेरे लिये ...हनत की है।"

"मुझे यकीन है, मुझे तुम्हारी परेशानी से यह अन्दाजा होता है कि तुम आसानी से हार मानने वालों में से नहीं हो। बहरहाल, हम अपनी इस कोशिश में कामयाब हो गये। यह तुम्हारी नहीं बल्कि हमारी खुशकिस्मती है।"

"एक सवाल मेरे जहन में कुलबुला रहा है इरोना। मैं तुमसे ...ह जानना चाहता हूं कि तुम लोगों ने मेरे लिये यह सब कुछ ...ों किया है?"

"दिल की आवाज पर...और दिल की आवाज का कोई ...द नहीं होता। कगोल तुम्हारे सिलसिले में जिस काम पर ...ादा हुआ, उसकी पृष्ठभूमि में उसका मकसद जरूर है। वह ...लकर यह बात कहता है।"

रात के समय जब इरोना सो रही थी, शोला को गार से बाहर कदमों की आहट सुनाई दी। वह गार के दहाने पर आ पहुंचा। कुछ ही देर में आने वाले उसके सामने आ गया। उसे कगोल की बुलन्द आवाज सुनायी दी—"शोला! अगर तुम जाग रहे हो और मेरा ख्याल है कि तुम जैसे लोग बेखबर होकर नहीं सोया करते, तो तुम हम पर हमला मत कर बैठना।"

शोला ने हंसते हुए कहा—"आ जाओ कगोल!"

कगोल के साथ एक आदमी और था। उसका नाम राश था।

"यह मेरा साथी राश है। मेरा बहुत करीबी दोस्त। क्या ...ुम इस बात पर यकीन करोगे अजीम आका कि यह हमारी मुहिम ...ा बेहतरीन साथी है।"

राश की भी अपनी एक दास्तान थी। वह गुरबान के दायें हाथ ईरोज का साथी था। शोला को यह जानकर हैरानी हुई कि वह गुरबान के गिरोह का आदमी होते हुए भी गुरबान का दुश्मन ...ा। इसके पीछे एक कहानी थी जो राश ने सुनायी। गुरबान के ...ाप ने राश के बाप का कत्ल किया था। इस बस्ती से दूर एक ...राय थी जिसका मालिक राश का बाप था। गुरबान का बाप लुटेरा था और उसने सराय में आने-जाने वालों को लूटना शुरू किया तो राश के बाप ने उसे रोकने की कोशिश की। नतीजे में

राश का बाप मारा गया। सराय को आग लगा दी थी। राश बरसों तक अनाथ होकर दरबदर ठोकरें खाता रहा। फिर वह गुरबान के बाप को मौत के घाट उतारने के लिये सुनारिया में आया और इतिफाक से उसने ईरोज की एक मौके पर जान बचायी, जब ईरोज का एक दुश्मन उसे कत्ल करने की फिराक में था और ईरोज जख्मी हो चुका था। राश उस वक्त जंगल के एक गार में रहता था। संयोग से ईरोज उसी तरफ आया और राश ने उसके दुश्मन को कत्ल करके उसकी जान बचा ली। इस तरह ईरोज से राश की दोस्ती हो गयी। कुछ समय बाद जब राश को मालूम हुआ कि ईरोज गुरबान के गिरोह में शामिल हो गया है तो राश भी उसके साथ शामिल हो गया। बाद में उसें पता चला कि गुरबान का बाप मर गया। तब उसने फैसला किया कि अपने बाप की मौत का बदला वह गुरबान से लेगा।

उसकी कहानी सुनने के बाद शोला ने उससे एक सवाल किया—"तुम्हें याद होगा कि सुनारिया की एक लड़की और उसके बाप की मौत का इन्तकाम लेने मैं यहां रुक गया था। क्या तुम भी उसके कातिलों में शामिल थे?"

"नहीं—मैं इस किस्म के अत्याचारों से दूर रहता हूं।"

"तब ठीक है—वरना तुम मेरे हाथों मारे जाते।"

बातचीत के दौरान यह तय हुआ कि शोला को शोला का भूत बनकर हाहाकार मचा देना चाहिये। उनका कहना था कि गुरबान अंधविश्वासी है। जब उस तक भूत की खबर पहुंचेगी तो वह दहशतजदा हो जायेगा और फिर शोला के भूत पर हमला करने की बजाय उससे बचने की कोशिश करेगा। इसका शोला भरपूर लाभ उठा सकता था। बस्ती वाले लोग जो शोला से इसलिये नफरत करते हैं क्योंकि उसके हाथों दरवेश मारा गया था वह भूत से खौफजदा रहेंगे।

"बाकी काम हम पर छोड़ दो। हम बस्ती वालों को समझायेंगे कि जब भी कोई गलत फैसला होता है तो मरने वाला भूत बन जाता है।" कगोल ने कहा—"और ऐसा लोग मानते भी हैं। हम बतायेंगे कि शोला के हाथों दरवेश की मौत नहीं हुई थी। उसे शोला के दुश्मनों ने धोके में मार दिया था, ताकि शोला को फांसी पर लटकाया जा सके। इस तरह लोगों के मन में तुम्हारे

प्रति सहानुभूति जागेगी और तुम्हारा भूत गुरबान के खिलाफ ऐलान-ए जंग करेगा।''

''मैं समझ गया कि तुम क्या चाहते हो।'' शोला ने कहा—''तो फिर कल से तुम शोला का भूत ही देखोगे। भूत इन्सान से कई गुना ताकतवर होता है। भूत को मारा नहीं जा सकता। उसे आग में नहीं जलाया जा सकता।''

दिन निकलने से पहले वे दोनों वापस लौट गये।

शोला जब वापस गार में पहुंचा तो उसे आभास हुआ कि इरोना वहां नहीं लेटी है, जहां उसे होना चाहिये। वह चौंककर इधर-उधर देखने लगा।

''मैं यहीं हूं।'' ईरोना की आवाज सुनायी दी।

''अरे! तुम जाग रही हो?''

''हां—मैं जाग गयी थी और मैंने तुम्हारी बातचीत भी सुनी है, लेकिन मैंने तुम्हारी बातों में दखल देना पसंद नहीं किया।''

''खूब! वैसे एक बात बताओ। तुम इस शख्स राश को जानती हो?''

''हां—न सिर्फ राश बल्कि तुम्हें सुनारिया के आसपास में ऐसे बेशुमार लोग मिलेंगे जिनकी जिन्दगी की सिर्फ यही आरजू है कि गुरबान से छुटकारा प्राप्त कर लें। लेकिन वह तुम्हें बेबस नजर आयेंगे। गुरबान सुनारिया वालों को सुनारिया से बाहर भी नहीं जाने देता कि वह उसके जुल्म की दास्तानें सुनारिया से बाहर फैलाये। बड़ा मुश्किल वक्त डाल रखा है उसने सुनारिया पर। बेशुमार लोग उसके जुल्म की चक्की में पिस रहे हैं। लेकिन खामोशी इख्तियार किये हुए हैं। उन्हें आज तक ऐसा कोई सहारा नजर नहीं आया जो उनकी मदद करे।''

''बस—बहुत सी बातें सुन चुका हूं उसके बारे में। अब यह मेरा फर्ज हो गया है कि तुम सबको उससे निजात दिलाऊं या खुद मौत की आगोश में चला जाऊं। तुम नहीं जानतीं कि यह फर्ज कहां से मुझ पर आमद किया गया है।'' इरोना अकीदत की निगाहों से उसकी सूरत देखती रही।

फिर उसके बाद शोला उसी गार में वक्त गुजारने लगा। उसके दिल में सिर्फ एक ही आरजू थी कि फिट उसे मिल जाय। वास्तव में फिट उसके लिये बड़ी हैसियत रखता था। वह बजाते

खुद एक शानदार लड़का था। बेहतरीन जहीन फैसले किया करता था। फिर एक ठण्डे दिमाग का शख्स था। इधर वह लड़की खामोश निगाहों से उसे बहुत कुछ कहती रही थी। कभी-कभी शोला को उस पर गुस्सा आ जाता था। उसका दिल चाहता था कि उसे धक्के देकर गार से बाहर निकाल दे। वह उस किस्म के मामलात में जरा भी दिलचस्पी नहीं लेता था। यहां वह एक मिशन के तहत काम कर रहा था। उसे उन लोगों का पता लगाना था जो किसी रास्ते सें पाताल में घुस आये थे और उन्होंने यहां अपने अड्डे बना दिये थे। ये लोग उन्हें कालके कहते थे। गुरबान कालकों का एजेन्ट था। शोला को अपने बोदे की भी जरूरत महसूस हो रही थी। इस सारे घटनाक्रम में उनका बोदा (घोड़ा) उससे अलग हो गया था। शोला ने उसे काफी सिखा दिया था और वह शोला के प्रति वफादार जानवर था।

एक रात वह खामोशी से गार से बाहर निकल गया। इरोना गहरी नींद सो रही थी और उसने उसे जागने नहीं दिया था। गार की पहाड़ी से नीचे उतरकर वह बस्ती की ओर चल पड़ा। बहुत दूर निगाहों की आखरी हद पर बस्ती की रोशनियां नजर आ रही थीं और यह फासला शोला को पैदल ही तय करना था। बहरहाल वह तेजी से उस तरफ चलता रहा। मद्धिम और मलगजी रोशनियां आहिस्ता-आहिस्ता सफेद पड़ती जा रही थीं। दिल निकलने से पहले शोला बस्ती के करीब पहुंच गया। बस्ती में आहिस्ता-आहिस्ता जिन्दगी जागने लगी थी। मवेशियों के बाड़ों से उनके बोलने की आवाजें सुनायी दे रही थीं। भैंसें ग्वालों को पुकार रही थीं और उनके थनों से भरा हुआ दूध बाहर निकलने के लिये बेचैन था। दरख्तों प्रर परिन्दों ने शोर मचाना शुरू कर दिया था। यही सब इस बात का संकेत दे देते थे कि दिन निकलने वाला है। शोला उस दिशा में बढ़ रहा था जहां वह कगोल के मकान तक पहुंच सके। उसकी खुशकिस्मती ही थी कि थोड़ी दूर चलने के बाद उसने बोदे के कदमों की आवाज सुनी। कोई घुड़सवार उसकी तरफ आ रहा था। शोला को बोदे की टापें परिचित महसूस हुईं। वह हैरानी से आंखें फाड़ने लगा, लेकिन घुड़सवार की सिम्त का अन्दाजा नहीं हो सका था उसे। शोला को यह अन्दाजा अवश्य हो रहा था कि यह बोदा उसी का है, फिर और भी कोशिश की जा सकती है

और यही हुआ। शोला के होठों से सीटी की आवाज निकली। एक बार, दूसरी बार,,तीसरी बारी। उसके साथ ही बोदे की टापों की आवाज तेज हो गयी। फिर एक दिलचस्प मंजर निगाहों के सामने आ गया। यह वही आदमी था जिसकी मरम्मत शोला ने अच्छी तरह की थी और उसके गुरूर को खाक में मिला दिया था। वह शख्स बड़ा ही शैतान था। उसका नाम मोंगा था। जख्मी होकर वह कई दिन तक बिस्तर में रहा था। इस वक्त वही शख्स बोदे पर सवार था और शायद वह हवाखोरी के लिये निकला था या किसी और काम के लिये कहीं जा रहा था कि बोदे का फितरत बदल गयी। उसने मोंगा को गिराने की कोशिश की, लेकिन मोंगा ने उसे संभाल लिया था। बोदा तेज रफ्तारी से दौड़ता हुआ शोला के सामने आ खड़ा हुआ और फिर एकदम दोनों पैरों पर खड़ा हो गया। मोंगा एकदम से नीचे गिर पड़ा था। बोदे का अचानक भड़क उठना उनकी समझ में नहीं आया था। पहले तो वह सीधे-सीधे चला आ रहा था और बोदा मुकम्मल तौर पर उसके काबू में था। इसके अलावा उसने सीटी की आवाज भी नहीं सुनी थी। लेकिन एकाएक उसने बोदे को बिदकते देखा और फिर जब बोदा सरपट हुआ तो मोंगा के लिये उसको संभालना मुश्किल हो गया। हालांकि वह एक शानदार सवार था, लेकिन जख्मी होने की वजह से उसकी अपनी योग्यतायें दबी हुई थीं। बोदे ने अचानक ही यह तरीका इख्तियार किया था और उसे नीचे गिरा दिया था। लेकिन यह शख्स कौन है—मोंगा ने आंखें फाड़-फाड़कर देखा। मद्धिम अंधेरा और धुंध लहरें अब इस हद तक कम हो गयी थीं कि किसी के नक्शे निगार पहचानने में किसी को दिक्कत पेश नहीं आये, लेकिन जिस शख्स को उसने अपने सामने देखा उसे देखकर उसे एहसास हो गया कि उसकी आंखें शायद सही तरीके से काम नहीं कर रही हैं। हालांकि अंधकार अधिक नहीं है लेकिन उसकी आंखों पर जरूर धुंद छा गयी है। ऐसा तो हो ही नहीं सकता, जमीन पर लेटे-लेटे उसने दोनों आंखों को मसला और उसे अंगूठे और उंगली की मदद से चीरकर सामने खड़े हुए खाके को देखने लगा। फिर उसके हलक से दहशत भरी एक दहाड़ निकली। ठीक उसी समय शोला ने हवा में एक बुलन्द कलाबाजी खायी और वह शख्स बुरी तरह चीखने लगा। उसने ऐसा करतब

पहले कभी नहीं देखा था और यह किसी इन्सान का काम हो भी नहीं सकता था। शोला ने हवा में तीन कलाबाजियां खाईं और फिर बोदे की पुश्त पर आ रहा। बोदे की पुश्त पर वह बैठा नहीं, तनकर खड़ा था और बोदा मोंगा के ऊपर से टापता हुआ गुजर गया।

"भूत...भूत...भूत...।" मोंगा चीख रहा था।

शोला ने उसी अंदाज में एक चक्कर काटा और पलटकर मोंगा के पास आ गया—फिर वह बोदे से कूदकर उसके सामने खड़ा हो गया।

"क...क...कौन...कौन हो तुम...।" नहीं...तु...तुम...।

शोला ने उसे गिरेबान से पकड़कर उठाया और फिर उसे हवा में उछाल दिया। करीब ही एक झील थी। मोंगा छपाक से उसमें जा गिरा। अगर वह पथरीली जमीन पर गिरता तो उसका सिर तरबूज की तरह फटकर बिखर जाता।

शोला ने बोदे पर सवार होकर उसे एड़ लगा दी। अब उसका रुख पहाड़ी गार की तरफ था। बोदा उसके इशारे पर हवा से बातें करने लगा। थोड़ी ही देर के बाद वह पहाड़ों में गार के पास पहुंच गया। इरोना एक पत्थर पर खड़ी उसे आते देख रही थी। उसके बाल हवा में उड़ रहे थे और यों लगता था जैसे सूरज की चमक ने किरणों की शक्ल में जमा होकर इन्सानी शक्ल इख्तियार कर ली हो। शोला को देखकर उसके होठों पर मुस्कराहट फैल गयी और वह एक अल्हड़ लड़की की तरह पत्थर से नीचे कूद गयी।

"कहां चले गये थे तुम?" उसने शिकायत भरे स्वर में कहा, "शोला ने उसे देखा लेकिन उसकी बात का जवाब देना उसने आवश्यक नहीं समझा। वह बोदे से उतरा और उसकी लगाम पकड़कर गार के अकबी हिस्से की तरफ चल पड़ा। उसे किसी ऐसी जगह की तलाश थी जहां बोदे को बांधा जा सके और वह धूप से भी सुरक्षित रह सके और आम निगाहों से भी छुपाया जा सके। इरोना भी उसके पीछे-पीछे चली आयी थी, उस पर शोला की खामोशी का कोई खास असर नहीं पड़ा। आखिरकार शोला को एक ऐसा पहाड़ी कटान मिल गया जहां उसने बोदे को एक

चट्टान के सायबान के नीचे बांध दिया। वापस पलटा तो इरोना अपनी पतली सी कमर पर दोनों हाथ रखे उसे घूर रही थी।

"मैंने तुमसे पूछा था कि तुम कहां चले गये थे-- तुमने जवाब नहीं दिया।"

शोला ने उसे घूरा और कहा--"इरोना। मैं सिर्फ अपनी पसंद के सवालों का जवाब देता हूं। अब तुम यह बताओ कि खाने-पीने के लिये क्या प्रबन्ध किया है तुमने?"

इरोना एकदम संभल गयी। कुछ लम्हे वह खड़ी उसे गुस्सैली निगाहों से देखती रही और फिर अचानक ही उसके अन्दर सुस्ती पैदा हो गयी।

उसने आगे बढ़कर कहा--"तो मैंने कब कहा था कि मेरे सवाल जवाबदेही दो। नाराज होने की क्या बात है। खाने के लिये सबकुछ मौजूद है। हां--अगर तुम्हारी पसंद की कोई चीज हो तो मुझे बता दो।"

"मेरी कोई अलग से पसंद नहीं। जो कुछ भी है, दो। बोदे की सवारी ने मेरे पेट का एक-एक हिस्सा खाली कर दिया है और भूक बर्दाश्त करना मेरे लिये सबसे मुश्किल काम होता है।"

'इरोना ने जरा सी देर में शोला के सामने नाश्ते के बर्तन सजा दिये। शोला इस लड़की को सिर्फ दोस्ती तक की सीमा में रखना चाहता था। वरना आने वाले वक्त में मुश्किलात पेश आ सकती थीं। नाश्ता करने के बाद वह आराम से एक पथरीली चट्टान पर टेक लगाकर लम्बा हो गया। वक्त गुजरता रहा। इरोना बर्तन उठाकर चली गयी थी। न जाने दिन कितना बीत गया था कि अचानक ही शोला को अपने बोदे के हिनहिनाने की आवाज सुनायी दी। वह इस आवाज को अच्छी तरह पहचानता था। बोदा उसे किसी खतरे से आगाह कर रहा था, शोला किसी फुर्तीले बन्दर की तरह अपनी जगह से उठा और गार के दहाने के बाहर छलांग लगा दी, फिर वह इधर-उधर देखता हुआ एक बुलन्द चट्टान की ओर जा रहा था। फिर उसने फुर्ती से चट्टान पर चढ़कर छलांग लगायी। सामने ही एक पतली पगडन्डी पर पांच बोद सवार रायफलों से लैस उसी तरफ आ रहे थे। दूर से उनके बारे में सही अन्दाजा नहीं हो सकता था कि वह कौन हैं, लेकिन लिबास और कद-काठी से वह स्थानीय लोग ही मालूम होते थे। शोला ने एक

लम्हें के लिये कुछ सोचा और फिर वह निहायत फुर्ती से उस चट्टान के नीचे कूदा और अपने घोड़े के निकट पहुंचकर उसकी बागें खोलने लगा। उसके चेहरे पर खतरनाक इरादे नजर आ रहे थे और यकीनी तौर पर वह कोई खौफनाक खेल खेलने का फैसला कर चुका था। घोड़ा धीरे-धीरे चट्टानों की आड़ में होता हुआ नीचे उतरने लगा। उसका रुख भी उसी दिशा में था जिधर से वह सवार आ रहे थे, लेकिन शोला इस तरह बचकर चल रहा था कि उसे दूर से देखा न जा सके और धीरे-धीरे सवारों और उनके दरमियान फासला कम होता जा रहा था लेकिन साफ जाहिर हो रहा था कि अभी तक सवार उसे देख नहीं सके हैं। शोला आहिस्ता-आहिस्ता बुलन्दियां उतरता रहा। उसने अन्तिम सीमा तक यही कोशिश की थी कि उसके घोड़े की टापों की आवाज सवारों के कानों तक न पहुंचे। घोड़ा भी इस तरह सतर्कता से आगे बढ़ रहा था जैसे पानी में उतर गया हो। फिर शोला उस दर्रे की एक चट्टान की आड़ में जाकर रुक गया, जिसमें वह सवार आ रहे थे। शोला इन्तिजार करता रहा और जैसे ही वह उसके करीब पहुंचे, शोला उन्हें मोहलत दिये बगैर अचानक अपना घोड़ा दौड़ाकर उनके सामने आ गया। उस वक्त भी वह घोड़े की पीठ पर सीधा खड़ा था। पांचों सवार उसे देखकर भयभीत हो गये। हालांकि शोला का ख्याल था कि वह उससे जंग करके उसे हलाक करने के लिये आये हैं या फिर शायद वह उसे गिरफ्तार करना चाहते हो, लेकन सूरतेहाल बिल्कुल भिन्न थी। उन्होंने भयभीत होकर घोड़े की बागें खींचीं और अत्यंत दहशतभरी आवाज में चीखने लगे।

"भागो...भागो...भूत...भूत।" इसके साथ ही वह पलटकर भागे थे। घबराहट में वह दिशा का चयन भी नहीं कर सके थे और इधर-उधर बिखर गये थे। जिसका जिधर मुंह उठा उधर ही भाग लिया। उनमें से एक दौड़ता हुआ दर्रे की चट्टान से टकराया और जख्मी होकर गिर पड़ा। बाकी चार लोग किसी-न-किसी तरह निकल भागे थे। जख्मी होने वाला शख्स बेहोश हो गया था। शोला को इस सूरतेहाल की उम्मीद नहीं थी। कुछ लम्हें तक तो वह खुद भी हैरान रहा था। यही सोचता रहा कि हुआ क्या है। वह घोड़े पर बैठ गया। उसे बेइख्तियार हंसी आ गयी।

वह लोग भी उससे अत्यधिक भयभीत हो गये थे और यह बड़ा दिलचस्प और दिलकश चक्कर था। बहरहाल, शोला ने उनका पीछा करना उचित नहीं समझा था। वह उनकी बदहवासी से लुत्फ उठाता रहा। अंधविश्वासी लोग उसे भूत समझ बैठे थे। इस सिलसिले में अब उसे ज्यादा मेहनत करने की जरूरत नहीं थी। अब यकीनन कोई उसके मुकाबले में आने को तैयार नहीं होगा और न ही उसे गिरफ्तार करने की कोशिश की जा सकेगी। यह नादान अंधश्विासी लोग भूत को हलाक करने का तसव्वुर भी नहीं कर सकते थे। चट्टान से गिरने वाला जमीन पर चित्त पड़ा हुआ था। और उसका बोदा भी किसी कदर जख्मी हो गया था। बोदा अपने मालिक के पास ही खड़ा था। वह फरार नहीं हुआ था। शोला ने जख्मी की तरफ कदम बढ़ा दिये और उसके करीब पहुंच गया। जख्मी बेहोश था और उसके सिर में चोट आयी थी। शोला उसके करीब ही बैठ गया। सवार की कमर की पेटी में दोनों तरफ पिस्तौल नजर आ रहे थे। एक बंदूक भी उसके पास थी जो उसके हाथ से छूटकर दूर जा गिरी थी। असलहा शोला के लिये जरूरी चीज थी। उसने फौरन कारतूस की पेटी जख्मी की कमर से अलग कर ली और अपनी कमर में बांध ली। गोलियां काफी मात्रा में मौजूद थीं। बन्दूक भी उतारकर उसने कंधे पर लटका ली। उसके बाद शोला ने बेहोश आदमी के लिबास की तलाशी लेना शुरू कर दी। उसकी आशा के अनुरूप उसके लिबास में एक तेज धारदार चाकू भी मौजूद था। शोला ने उस पर भी कब्जा जमा लिया।

फिर उसके मुंह से आवाज निकली।

"अब यह बताओ मुझे तुम्हारे साथ क्या सलूक करना चाहिये। तुमने बेहोश होकर मेरे लिये बहुत कीमती चीजें फराहम कर दीं है। इत्मीनान रखो, मैं तुम्हें कोई नुकान नहीं पहुंचाऊंगा। वैसे भी बेहोश आदमी को हलाक करना मेरी फितरत के खिलाफ है।" फिर उसने उस बोदे की तरफ रुख किया। सीधा सादा बोदा था। थोड़ी देर तक शोला उसे चुमकारता और उसकी कमर पर हाथ फेरता रहा। जब उसने महसूस किया कि अब बोदा उसके हुक्म की तामील कर सकता है तो वह उसकी लगाम थामकर उसके पास आया। जख्मी को देखकर न सिर्फ वह हिनहिनाया

बल्कि उसने जमीन पर भी दो-चार पांव मारकर अपनी मौजूदगी का एहसास दिलाया। लेकिन जख्मी तो बदस्तूर बेहोश था। शोला ने जख्मी इन्सान को घोड़े की पुश्त पर औंधा लिटा दिया कि वह गिर न सके। उसके बाद उसने घोड़े का रुख दर्रे की तरफ मोड़ा। उसे आहिस्ता से थपकी दी। घोड़ा उसका मतलब समझते हुए आहिस्ता कदमों से अपने जाने पहचाने रास्ते पर चल दिया।

इरोना अब भी एक ऊंची पहाड़ी पर खड़ी उसे देख रही थी। चूंकि फासला काफी था और शायद इरोना उसकी सारी कार्यवाही नहीं देख सकी थी। अंततः शोला उसके समीप पहुंच गया।

"कितने थे?" इरोना ने पूछा।

"पांच।"

"लाशें कहां छोड़ दीं उनकी?"

"क्या मतलब?"

"क्या उनकी लाशें वहीं फेंक आये हो तुम?"

शोला ने नागवारी से उसे देखा। लड़की का लहजा उसे पसंद नहीं आया था। वह जवाब दिये बगैर घोड़े की लगामें थामे आगे बढ़ आया था। इरोना फिर उसके पास पहुंच गयी।

"मुझे यों लगता है जैसे तुम मेरी किसी बात का बुरा मान जाते हो। मैं तो सिर्फ मालूमात की वजह से पूछ रही थी कि तुमने उनकी लाशें वहीं पड़ी रहने दी हैं या घसीटकर सड़क पर डाल आये हो।"

"मैं अनावश्यक खून खराबा पसद नहीं करता। जिन लोगों से मेरी दुश्मनी है बस उन्हीं से है और वह भी एक उसूली दुश्मनी है। हालांकि अभी तक इन लोगों ने मेरे खिलाफ कुछ नहीं किया। अलबत्ता वह दरवेश जरूर मेरे हाथों मारा गया था—या मुमकिन है किसी और ने उस झगड़े के दैरान उसे मार डाला हो। उसे मेरे खिलाफ साजिश के तौर पर इस्तेमाल किया गया था—जिसका पता मुझे बाद में चला। लेकिन साजिश करने वाले अपने मकसद में कामयाब नहीं हो सकते। मुझे उस लड़की के कातिलों की तलाश है और मैंने अपने आप से वादा किया है उन कातिलों को जहन्नुम तक जरूर पहुंचाऊंगा। यह बात मेरे इल्म में आ चुकी है कि वह कातिल गुरबान और उसके साथी हैं। यह मेरा अहद है कि गुरबान

को जिन्दा नहीं छोड़ूंगा और उसका दायां हाथ ईरोज मेरे हाथों ही मारा जायेगा। इस तरह तुम्हारी बस्ती इन जहरीले सांपों से पाक हो जायेगी। बस इसके अलावा मेरी किसी से दुश्मनी नहीं है। मैं अपना काम करके अपने रास्ते पर चल पड़ूंगा।" शोला ने इरोना के छोटे से सवाल का बड़ा-सा जवाब देकर उसे घूरकर देखा।

लेकिन उसका दूसरा सवाल भी बड़ा दिलचस्प था—"मैं समझी नहीं।" वह आश्चर्यचकित स्वर में बोली और शोला गुस्सैली निगाहों से उसे घूरने लगा।

"अगर तुम नहीं समझीं तो इसमें मेरा कोई कुसूर नहीं है। इन पांचों सवारों में से मैंने किसी को कत्ल नहीं किया।"

"तो क्या वह निकल गये।"

"हां—वह भाग गये।" शोला ने लापरवाही से जवाब दिया—"उनमें से सिर्फ एक जख्मी हुआ है और वह भी अपनी बेवकूफी की वजह से।"

"तुमने जख्मी को वहीं छोड़ दिया?" इरोना बेताबी से बोली।

"नहीं—मैंने उसे बोदा की पुश्त पर डालकर उसे भी उसके साथियों के पीछे रवाना कर दिया।"

इरोना खामोश हो गयी। लेकिन उसके चेहरे पर बेचैनी के आसार साफ नुमाया हो रहे थे। शोला अपना बोदा उसी जगह बांधने के लिये चल पड़ा और उसके बाद गार में दाखिल हो गया। इरोना उसके पीछे-पीछे अन्दर आ गयी थी।

"यह अच्छा नहीं हुआ।" इरोना का चेहरा बदला हुआ था।

"मतलब?" शोला गुर्राया

"अब वह लोग बस्ती में जायेंगे और लोगों को यह कहानी सुनायेंगे कि फांसी पाने वाला जिन्दा सलामत है। वह उसे अपनी आंखों से देखकर आये हैं। सम्भव है यह बात इरोज के कानों तक पहुंच जाये और वह अपने साथियों को लेकर इन पहाड़ों की तरफ रुख करें। इस बार वह बहुत सारे लोगों के साथ आयेगा।"

"एक मशवरा मानोगी मेरा।" शोला ने कहा।

"हां-हां—जरूर—बोलो।"

"अब तुम यहां से फौरन वापस चली जाओ। तुम अपनी

बस्ती और उस जगह से गायब हो जहां नजर आती हो। लोग तुम्हारे बारे में कुछ सोचने लगें। इस तरह तुम्हारी जिन्दगी भी खतरे में पड़ जायेगी।''

इरोना ने उसे अजीब सी निगाहों से देखा और बोली—''क्या यह सम्भव नहीं है कि तुम अपने दुश्मनों से इन्तकाम लेने के बाद मुझ बेसहारा लड़की को सुनारिया की खौफनाक फिजा से निकालकर ले जाओ। क्या तुम मुझे वहां नहीं ले जा सकते, जहां खुद रहते हो। यकीन करो, मैं इससे ज्यादा तुमसे कुछ नहीं चाहूंगी कि बस मुझे सुनारिया से निजात दिला दो। यह काम सिर्फ तुम कर सकते हो।'' इरोना ने अजीब से स्वर में कहा, लेकिन शोला पथराई हुई निगाहों से उसे देखने लगा।

फिर उसने सर्द लहजे में कहा—''देखो लड़की! मैं इन तमाम बातों को नहीं जानता। औरत मेरी जिन्दगी में कहीं दूर-दूर तक नहीं है और न ही अभी सदियों तक इसकी गुंजाइश है। यह अलग बात है कि कुछ औरतें मेरी बहुत करीब की दोस्त बन चुकी हैं लेकिन वह मेरी जिन्दगी से चिपक कर रह जायें—यह नहीं हो सकता। दूसरे लफ्जों में, तुम किसी भी तौर पर मेरी मुहब्बत हासिल नहीं कर सकतीं, लेकिन दोस्त जरूर बन सकती हो जो कि तुम हो। अगर हम सुनारिया को गुरबान के चंगुल से आजाद कराने में कामयाब हो जाते हैं तो तुम साफ-सुथरी फितरत के मुताबिक अपनी पसंद के किसी आदमी का चयन कर लेना। मेरे साथ तुम्हें कुछ हाथ नहीं आयेगा, क्योंकि मेरा मकसद और मेरी जिन्दगी का मसअला ही भिन्न है।''

इरोना की आंखों में आंसू आ गये। वह कुछ लम्हे तक डबडबाई आंखों से शोला को देखती रही। फिर उसने एक ठण्डी सांस ली और कहा—''वाकई तुमने ठीक ही कहा है शोला। इन्सान के अन्दर खुदगर्जी उस तरह पलती है जैसे वह उसके वजूद का ही एक हिस्सा हो, लेकिन तुम कितने महान इन्सान हो। तुमने मुझे ख्वाब से जगा दिया—तुम तो न जाने किस-किस बस्ती को जुल्म से मुक्त करने के लिये कायनात में उतारे गये हो और एक औरत तुम्हें कैद कर लेना चाहती है जो मैं हूं। नहीं, शोला! तुमने मेरी आंखें खोल दी हैं। मैं तुम्हारी शुक्रगुजार हूं। वह मैं नहीं हो सकती। मैं ऐसा कभी नहीं करूंगी। गलती कर रही थी मैं। तुम

सच्चे दिल से मेरे बारे में यह सोच लो कि मुझसे गलती हुई थी, एक इन्सान की मानिन्द। और वह इन्सान ही क्या जो गलती न करे। अब मेरे दिल में तुम्हारे लिये सिर्फ अकीदत है। वाकई मेरे दिल में तुम्हारे लिये अकीदत है।''

शोला खामोशी से उसे देखता रहा। वह फिर बोली—''मैंने यह बात गलत नहीं कही थी कि तुमसे डरकर फरार होने वाले सवार बस्ती में जाकर लोगों को तुम्हारे भूत बन जाने की कहानी सुनायेंगे। फिर यह कहानी जुबानों पर सफर करती हुई इरोज के कानों तक पहुंच जायेगी—और उसके बाद हालात तुम्हारे हक में नहीं जाते। तुम उस वक्त क्या करोगे?''

''फिक्र मत करो। मैं कोई भी उचित पनाहगाह तलाश कर लूंगा। लेकिन इरोना, मेरा ख्याल है कि अब तुम्हारा यहां से चले जाना बेहतर है। यों भी यह चट्टानें अभी इतनी संगदिल नहीं कि एक इन्सान को पनाह न दे सकें। तुम अपनी सराय में जाओ और वहां अपना काम करो। बल्कि यह बहुत अच्छा रहेगा, क्योंकि राश और कगोल तुमसे मुलाकात करके सूरतेहाल तुमसे मालूम कर लेंगे। वैसे उनसे यह बात भी कहना कि मैं खुद ही उनसे मुलाकात भी करूंगा और हम आइन्दा के मुआमलात तय कर लेंगे।''

''मेरा जाना जरूरी है?''

''हां—तुम जाओगी तो मुझे सूरतेहाल का अन्दाजा होता रहेगा।''

''ठीक है, जैसे तुम कहो।''

''वैसे तुम्हें आम रास्तों से बचकर जाना चाहिये और अगर तुम्हारे ख्याल के मुताबिक सवार बस्ती में पहुंच गये और ईरोज को इस बात की सूचना मिल गयी है तो सम्भव है वे लोग पहाड़ों की ओर चल पड़े हों। तुम्हें उनकी निगाहों से बचना होगा।''

''ठीक है, जैसे तुम कहो।'' इरोना तैयार हो गयी। उसके बाद शोला को एक निगाह देखा और अपने सफर पर रवाना हो गयी। शोला उसे उस वक्त तक देखता रहा, जब तक वह उसकी निगाहों से ओझल न हो गयी। फिर उसने अपनी बन्दूक को जांचा और वापस बोदे की ओर चल पड़ा। अब वह फिट के बारे में सोच रहा था। और अतीत की तमाम बातें याद आ रही थीं। फिर

शोला की कैद में फंसा था और अमरीना की शहंशाह के बारे में, फिर माहोरों के माध्यम से कुछ अफवाहें सुनी थीं। कोरसार और पलोठाओं की धरती पाताल के दो अलग हिस्से थे। जिस तरह कोलम्बस ने अमेरिका को तलाश किया था—कुछ उसी तरह शोला कोरसार में आ पहुंचा था। फिर उसे अपने साथ यहां लेकर आया था। तिलस्मी रास्तों से होते हुए वे दोनों कोरसार में पहुंचे थे। फिट कोरसार के सीमावर्ती मुल्क जो पलोठा की सीमा के तरफ था—वहां का वाशिन्दा ही नहीं एक जांबाज जासूस था। कोरसार में धरती की सतह से कुछ लोग उतर आये थे जिनके बारे में फिट का ख्याल था कि वह अमेरिकन हैं। वे लोग किस रास्ते से आये, यह अभी तक रहस्य ही बना हुआ था। गनीमत थी कि वह अभी तक पाताल के उस हिस्से में नहीं पहुंचे थे जहां हीरों का पहाड़ और सोने की धरती थी। इस जगह पहुंचने के लिये ही वृन्दा स्वामी सिंगही-थारसा की संयुक्त आर्गेनाइजेशन सुरखाब में सरगर्म थी। सुरखाब दक्षिण अफ्रीका का एक रहस्यमय प्रदेश था जो काले जादूगरों की धरती थी। शोला इसी धरती के सेन्ट्रल वाल्ट जराकाका की दरगाह से पाताल में ट्रांसमिट होकर पहुंचा था। जोयोटा ने उसे कम्प्यूटर के जरिये इस धरती में उतार दिया था और शोला किसी भी तौर पर इस धरती से वापस नहीं जा सकता था। लेकिन इस धरती में उतरने के बाद नयी-नयी कहानियां शुरू हो गयीं! रानी मलिका सुरखाब उसे मिली जो उसके पिछले जन्म में प्रेमिका थी और वह अब तक जिन्दा थी—न जाने वह कब से जिन्दा थी। यहां डायनासोरों की बाकायदा एक कौम थी जिसे माहोर कहा जाता था। उनमें उड़ने वाले रेप्टाइल भी थे—वह कौम फोर्थ डाइमेन्शन में एक-दूसरे से बात करते थे। यह टैलीपैथी की तरह की चीज थी। हैरानी की बात थी कि पलोठाओं, अमरीना या सबरीना वासियों को कोरसार का इल्म ही नहीं था। फिर शोला को यहां इसलिये लाया गया था ताकि धरती की सतह से उतर आये लोगों का निजाम खत्म किया जा सके जिन्हें वह कालक कहते थे—इन्हीं कालकों की तलाश में फिट और शोला कोरसार की बस्ती-बस्ती भटकते हुए यहां तक पहुंचे थे। (पूरा विवरण जानने के लिये पढ़ें...देवा ठाकुर का उपन्यास **पाताल में डंका**।) और अब गुरबान एक ऐसा शख्स उन्हें मिला था जो

कालकों का एजेन्ट बताया जाता था। उसके सोनारिया में पहुंचते ही गुरबान से ठन गयी। शोला को एक साजिश में फंसाकर फांसी पर लटका दिया गया था, लेकिन शोला बच गया था।

बस्ती में वापस लौटने के लिये शोला—रात का इन्तिजार करने लगा। इस समय वह गुंजान वृक्षों की ओर चला जा रहा था। ऐसे वृक्ष वहां मौजूद थे जो किसी भी इन्सान को इस तरह छुपा सकते थे जैसे आंख में आंसू। घने वृक्षों के नीचे की घास मखमल के बिस्तर की मानिन्द बिछी हुई थी। मौसम की तेजी भी वृक्षों की चोटियों से अटककर रह जाती थी और नीचे के माहौल तक उसका प्रभाव नहीं पड़ता था। इस जगह पहुंचकर बोदा भी शायद मौसम की खुशखबरी का शिकार हो गया, क्योंकि वह भी बड़ी सुस्त चाल चल रहा था। शोला ने थोड़ी देर तक कुछ सोचा और उसके बाद वह बोदे की पुश्त से उतर गया और उसने बोदे की गर्दन से लगामें निकाल दीं। बोदा अपने मालिक का शुक्रगुजार होकर आगे बढ़ गया। वह उसकी एक-एक जुम्बिश का मतलब समझता था। काफी देर तक शोला उसी जगह वक्त गुजारता रहा और जब उसे ऐहसास हो गया कि अब सूरज की तपिश कम हो गयी है तो वह अपने लिबास से तिनके झाड़ता हुआ वृक्षों के नीचे से निकलकर खुले में आ गया। यहां सुबह व शाम की यही पहचान थी। उस वक्त सूरज का ताप घटा रहता था। वैसे सूरज एक ही जगह निकलता और डूबता था। उसका जहन अब तेजी से आने वाले वक्त और हालात के बारे में सोच रहा था। काफी गौर करने के बाद उसने कुछ फैसले किये और फिर वह कुछ निश्चिंत हो गया। आखिरकार उसने बस्ती की ओर रुख किया। थोड़ी देर के बाद वह बस्ती की सीमा में दाखिल हो चुका था। फिर उसकी आशा के अनुरूप ही हुआ। बस्ती के पहले आदमी ने उसे देखा और अपनी जगह पर पथरा कर रह गया। वह कुवें से पानी निकाल रहा था। उसकी नजर शोला पर पड़ी और पानी का बर्तन उसके हाथ से छूटकर वापस कुवें में जा गिरा। शोला ने यह अम्ल देख लिया था, लेकिन वह उसकी तरफ ध्यान दिये बगैर आगे बढ़ता चला गया। अभी ज्यादा वक्त नहीं हुआ था, लेकिन वह जिस तरफ से भी गुजरता, वह जगह लम्हों में सुनसान हो जाती। मौजूदा सूरतेहाल खासी सनसनीखेज थी और अब लोग दरवाजों से भी

झांककर नहीं देख रहे थे। अगर किसी बच्चे के रोने की आवाज आती तो यों लगता जैसे किसी ने बच्चे के मुंह पर हाथ रख दिया हो। शोला को यकीन हो गया कि भागकर आने वाले सवारों ने आग की तरह बस्ती में उसके भूत की खबर फैला दी है। यकीनन मोंगा और बाकी लोग भी इस खबर से बेखबर नहीं होंगे। गुरबान को अवश्य ही इसका पता चल गया होगा। शोला ने बड़ी हिम्मत से बस्ती की गलियों के चक्कर लगाये और अंततः वह इरोना के कहवाखाने की तरफ चल पड़ा। इरोना के कहवाखाने तक यह सूचना पहुंच चुकी थी कि सुनारिया का अजनबी जिसे फांसी दी जा चुकी है, रुह बनकर पहाड़ों में भटक रहा है। यह सूचना अभी तक आम नहीं हुई थी कि वह बस्ती में दाखिल हो चुका है। अतः जैसे ही शोला ने ईराना के कहवाखाने में कदम रखा, अन्दर मौजूद चंद लोग दहशत भरी आवाजें निकालते हुए अपनी-अपनी मेज छोड़ भाग गये और फिर जिसे भी मौका मिला, एक-दूसरे पर गिरता पड़ा कहवाखाने से निकल भागा। इरोना सराय के बूढ़े मालिक के साथ खड़ी हुई थी। वह शख्स जिसे शोला ने पहले इरोना का बाप समझा था, वह उसका बाप नहीं था। इस कहवेखाने का मालिक वही था। यह बात इरोना उसे बता चुकी थी। इरोना अपने बूढ़े मालिक के साथ खड़ी हुई थी। शोला चलता हुआ उन दोनों के पास पहुंच गया। बूढ़े के बदन में भी खौफ की थरथराहट थी, लेकिन इरोना की आंखों में एक खास तरह की चमक थी।

उसने भारी लहजे में कहा—"मैं तुम्हारे लिये भयभीत नहीं हूं बल्कि तुम्हारी मौत पर दुःखी हूं। कोई क्या कर सकता था, जबकि मौत तुम्हारा मुकद्दर बन चुकी थी।"

शोला ने इरोना की तरफ देखा और फिर एक विशेष भयानक आवाज हलक से निकालते हुए बोला—"और तुम यह भी देखो कि मौत भी मुझे सुनारिया से नहीं निकाल सकी। क्या तुम्हें मेरा यह मुकद्दर नजर नहीं आया।"

"मैं क्या कह सकती हूं। लेकिन सुनरिया अजनबी लोगों का कब्रिस्तान है। यहां आने वाला अजनबी शख्स चंद घण्टों से ज्यादा जिन्दा नहीं रह सकता। यहां की कहानियां कोई जिन्दा इन्सान अपने साथ लेकर वापस नहीं लौट सकता, यह सिर्फ तुम्हारी बदनसीबी है कि तुमने यहां से निकल जाने की बजाय मौत को

अपनाया—जाओ, बेहतर तो यह होगा कि अपनी कब्र में जाकर सो जाओ।''

''मैं तुम्हारे मशवरे पर जरूर अमल करता, मगर अभी मुझे कुछ काम है। असल में कुछ लोगों को अपने साथ ले जाना चाहता हूं। बस, यह चंद लोग मेरे साथ चल पड़ें—उसके बाद मैं यहां से चला जाऊंगा।''

अभी शोला ने अपनी बात पूरी ही की थी कि उसे अपने पीछे कदमों की आवाजें सुनायी दीं। आने वालों में सबसे आगे ईरोज ही था जो हाथ में पिस्तौल पकड़े हुए था और उसके पीछे-पीछे कुछ लोग और भी थे। लेकिन शायद अभी तक इस उम्मीद का शिकार थे कि कोई भूत यहां तक नहीं आया और वह सिर्फ एक कहानी सुन रहे हों। लेकिन अब यहां आने के बाद इन्होंने अपनी आंखों से शोला को देख लिया था। उनके चेहरों पर बेशक खौफ के आसार थे, लेकिन शोला ने महसूस किया कि ईरोज की आंखों में सिर्फ संजीदगी है। वह शोला को घूर रहा था।

फिर उसने अपने पिस्तौल को गर्दिश देते हुए कहा—''लोगों का ख्याल है कि तुम एक चालाक और दिलेर इन्सान हो, लेकिन मेरी ख्याल इससे भिन्न है। तुम मुकम्मल गधे हो। अगर तुम चालाक होते तो इस मौके का फायदा उठाकर बस्ती से निकल जाते। यह बस्ती तुम्हारे लिये सिर्फ मौत की बस्ती है। तुम्हारा क्या ख्याल है—क्या तुम सुनारिया वालों को इतनी आसानी से बेवकूफ बना सकते हो? तुमने यह जाहिर करने की कोशिश की है कि तुम मरने के बाद फिर जिन्दा हो गये हो, लेकिन इरोज गुरबान तक की खबर रखता है। मैं नहीं जानता कि तुम्हें दफनाने के सिलसिले में या फांसी देने के मुआमले में किसने साजिश की। लेकिन तुमने अपनी इस खाली कब्र के बारे में क्यों नहीं सोचा जिसे खोलकर देखा जा सकता है। क्या गुरबान इतना ही बेवकूफ है कि तुम्हारी नयी जिन्दगी की खबर सुनकर सबसे पहले तुम्हारी खाली कब्र को न तलाश करता। अलबत्ता यह बात तुमसे पूछी जायेगी कि फांसी देते हुए जल्लाद ने तुम्हारे साथ क्या रियायत की या फिर अगर यह जल्लाद की साजिश नहीं थी तो वह कौन है जिसने तुम्हें बचाने की जद्दोजहद की और सबकी आंखों में धूल झोंककर तुम्हें बचाकर ले गया। तुम्हारा वह अन्जान दोस्त

बस्ती का रहने वाला है या बस्ती के बाहर का। लेकिन गुरबान के आदमी इतने अहमक नहीं हैं कि किसी बात की खोज न लगा सकें। ताहम मैं तुमसे सिर्फ तुम्हारे बारे में कहने आया हूं कि तुम खुद को चालाक आदमी समझते हो और अगर नहीं तो तुम्हारा यहां आने का मकसद क्या है कि हमने तुम्हारी कब्र में भरे हुए पत्थर नहीं देखे। तुम क्या समझते हो—तुम उस कब्र में दफन ही नहीं हुए।''

शोला इत्मीनान से यह सब सुनता रहा, फिर उसने कहा—''हां क्या तुमने उस कब्र से पत्थर निकाल दिये? इरोज! इस कब्र को खाली नहीं रहना चाहिये। अगर तुम मेरी वापसी का मकसद जानना चाहते हो तो सुनो—मैं इसलिये वापस आया हूं कि इस खाली कब्र में गुरबान और उसके साथियों को दफन करूं।'' शोला की आवाज में बड़ी सफ्फाकी थी।

लेकिन ईरोज ने उसकी बात सुनकर कहकहा लगाया और बोला—''क्या यह काम तुम्हारे लिये इतना आसान होगा। सुनारिया और उसके आसपास के लोगों ने यह हिमाकत करने की कोशिश की है, मगर क्या हुआ? उनकी कब्रें तो तुमने दुश्मनों के कब्रिस्तान में फैली हुई देख ली होंगी। सैकड़ों दिलों में आज भी यह ख्वाइश मौजूद है कि गुरबान को खत्म कर दें, लेकिन किसी के दिल की हसरत पूरी नहीं हो सकी। गुरबान अपने दोस्तों के साथ और अपने दुश्मनों के दरमियान जिन्दा है। वह जिन्दा रहने का फन जानता है।''

''और मैं भी इस फन में महारत रखता हूं इरोज! और सुनो अब मैं गुरबान को इस फन पर अजमाना चाहता हूं।''

''तब मैं इसे तुम्हारी बेवकूफी के अलावा कोई नाम नहीं दे सकता। आह...कितना अच्छा होता तुम्हारे लिये कि अगर तुम किसी तरह बच गये थे तो यहां से जिन्दा निकल जाते। लेकिन बदनसीबी इसी को कहते हैं। तुम्हारी मौत सुनारिया में ही होगी। यह तुम्हारा मुकद्दर है।''

फिर उसने अपने अकब में खड़े लोगों को देखा और गरजकर बोला—''चलो, इसे गिरफ्तार कर लो—गुरबान इस जैसे जिद्दी आदमी...'' अभी उसके मुंह से इतने ही शब्द निकले थे कि दो फायर हुए और ईरोज बाल बाल बच गया। लेकिन उसके पीछे

खड़े हुए लोग नहीं बच सके थे। उसके दो आदमियों के सीने में सुराख हो गये थे और यह काम सिर्फ उन दो लम्हों में हुआ था जब उसने आदमियों की तरफ रुख करके उन्हें गिरफ्तार करने का हुक्म दिया था। शोला के लिये यही चंद लम्हें कीमती साबित हुए थे। दूसरे ही लम्हे वह कमान से निकले तीर की तरह उड़ता हुआ ईरोज पर आ पड़ा। उसने ईरोज की गर्दन दबोच ली और उसके हाथ पर हाथ मारकर उसका पिस्तौल नीचे फेंक दिया। फिर उसने अपने दूसरे हाथ में पकड़ा हुआ पिस्तौल ईरोज की कनपटी पर रख दिया। यह सब कुछ इतनी बर्क रफ्तारी से हुआ था कि ईरोज के आदमी उसका बचाव भी न कर सके थे। शोला ने पिस्तौल की नाल का दबाव बढ़ाते हुए सफ्फाक लहजे में कहा—

"अपने इन आदमियों से कहो कि बाहर निकल जायें, वरना जिन्दगी नहीं बच सकेगी।"

ईरोज शोला की फुर्ती देखकर हैरान रह गया था। उसे कतई अन्दाजा नहीं था कि सूरतेहाल को अपनी मर्जी के मुताबिक तब्दील करने में शोला कितना माहिर है। और यह तो सिर्फ ट्रेलर मात्र था। शोला ने उस ताकत का मुजाहरा तो किया ही नहीं था जिनकी वजह से उसे देवता या अवतार कहा जाता था।

उसने घबरायी हुई निगाहों से शोला को देखा और फिर पलटकर अपने साथियों को देखा जो हाथों में बन्दूकें लिये उससे ज्यादा हैरान खड़े थे। वह शोला पर गोली भी नहीं चला सकते थे। वरना साथ में ईरोज का जिस्म भी छलनी हो जाता। जिसके सीने में गोलियां लगी थीं, वह ठण्डे हो चुके थे।

"जाओ, जाओ—बाहर जाओ।" ईरोज ने कहा और वह लोग छलांगें लगाते हुए वहां से निकल भागे। उनके जाने के बाद शोला ने ईरोज की कनपटी से नाल हटायी और उसके बालों को पकड़ लिया।

"तुम मेरे साथ बाहर निकलोगे और बाहर निकलने से पहले चीखकर सबको सूचना दो कि वह अपने हथियार फेंक दें।" शोला ने कहा। ईरोज बुरी तरह नर्वस हो गया था। उसे यह भी अन्दाजा हो गया था कि उसका प्रतिद्वंदी किसी मुआमूली शख्सियत का मालिक नहीं है। भलाई इसी में है कि वह वैसा ही करे जैसा वह कह रहा है।

वह बाहर निकला तो उसने चीखते हुए कहा–"खबरदार! खबरदार! तुम सब अपने हथियार फेंक दो। मैं तुम्हें हुक्म दे रहा हूं।"

बाहर खड़े हुए लगभग सभी लोगों ने हथियार फेंक दिये थे। वह अब भी फटी-फटी आंखों से उस जिन्दा-मुर्दा इन्सान को देख रहे थे। उन्हें अपनी आंखों पर यकीन नहीं आ रहा था जिसकी मौत उन्होंने अपनी आंखों से देखी थी और जिसके बारे में मशहूर था कि एक खतरनाक आदमी ने एक दरवेश को हलाक कर दिया है। शोला अपने बोदे तक आया। ईरोज के बाल उसने अभी तक मुट्ठी में जकड़े हुए थे फिर उसने ईरोज को एक ठोकर मारी और उछलकर अपने बोदे पर सवार हो गया। उसके साथ ही उसने रिवॉल्वर से सामने खड़े हुए चारों बोदों के पैरों पर गोली मारी। बोदों ने जख्मी होकर उछलना कूदना शुरू कर दिया और बहुत से लोग उनकी जद में आकर जख्मी हो गये। इस दौरान शोला ने अपने बोदे को एड़ लगायी और बर्क रफ्तारी से वहां से निकल भागा। उसने बस्ती के वीरान हिस्से की तरफ रुख किया था। यह बात शायद बस्ती वालों में पूरी तरह नहीं फैली थी, इसलिये अपेक्षाकृत कम गुंजान इलाके में उसे चंद ही लोगों ने देखा और उन्होंने भी उसे देखते ही छुपने की कोशिश की थी। इस सूरतेहाल से फायदा उठाकर शोला बाआसानी बस्ती से निकल गया और फिर ऊंचे-नीचे टीलों के दरमियान वह एक विशेष मार्ग पर चलता रहा। वह काफी दूर निकल आया था। रास्ते में उसे छोटी-सी नदी नजर आयी। उसके बारे में उसे कुछ भी मालूम नहीं था, लेकिन उसने उस नदी के किनारे-किनारे बोदा दौड़ाना शुरू कर दिया। तकदीर पर भरोसा किये बगैर और कोई चारा नहीं था। अंततः एक ऐसी इमारत नजर आयी जो कभी किसी जमाने में इमारत बेशक रही होगी, लेकिन अब वह खण्डरात में तब्दील हो चुकी थी। इस खण्डहर ने अच्छा खासा इलाका घेर रखा था। उसके आसपास में इन्सानी कद से ज्यादा बुलन्द झाड़ियां बिखरी हुई थीं। शोला ने वहां बोदे की रफ्तार सुस्त की और फिर बोदा रोककर खड़े होकर उसे इमारत को देखने लगा। फिर उसने फैसला किया, कि यह इमारत इस वक्त उसके लिये बहुत अच्छी रहेगी। वह एक ऐसी इमारत थी जिसमें वह दाखिल होकर पूरी तरह अपनी सुरक्षा

कर सकता था। उसके पास काफी मात्रा में असलहा मौजूद था। एक बार फिर उसे फिट का ख्याल आ गया। अब तो फिट एक हसरत बन चुका था और शोला के दिल के गोशों में न जाने क्यों यह एहसास पैदा होने लगा कि शायद फिट उसे दोबारा नहीं मिल सकेगा।

बहरहाल बोदे को बाहर छोड़कर वह इमारत में दाखिल हो गया। उसने एक शिकस्ता सतून पर चढ़कर दूर-दूर तक के इलाके का जायजा लिया। निगाहों की हद तक खामोशी और वीरानी फैली हुई थी। किसी ने उसका पीछा नहीं किया था। यह बात इत्मीनान बख्श थी। अतः वह सतून से उतर आया और उसके बाद उसने पूरी इमारत का जायजा किया। इमारत अधिकांशतः टूटी-फूटी थी लेकिन उसकी चौड़ाई बेमिसाल थी। जो हिस्से बाकी बचे हुए थे, उनमें भी जाले लगे हुए थे और जगह-जगह चमगादड़ों के घर नजर आ रहे थे। यह एक अच्छा भुतहा महल मालूम होता था। फर्श पर धूल की तहें जमी हुई थीं। शोला को ऐसी जगह की तलाश थी जो उसके लिये पनाहगार बन सके। वह जानता था एक बार फिर उसकी तलाश में वे लोग सरगर्म हो जायेंगे जो फिलहाल उससे डर गये थे। शोला को फिलहाल इस हालात की ज्यादा परवाह नहीं थी, न ही उसने अपने जहन में कोई मंसूबा बनाया। असल में फिट की गुमशुदगी ने सारा अभियान ही ठप्प सा कर दिया था। उसकी कोई खबर मिले बिना वह सुनारिया छोड़कर नहीं जा सकता था। आखिरकार वह कई लम्बी राहदारियां गुजरता हुआ ऊपरी मंजिल के एक टूटे हुए दरीचे के ऊपर पहुंच गया जिसके ऊपर छत मौजूद थी। दरीचे में तीन मेहराब बने हुए थे। उस जगह को उठने-बैठने के लिये साफ किया जा सकता था। सबसे बड़ी बात यह कि दरीचे से वह दूर बस्ती में आने वाले रास्तों को भी नजर में रख सकता था। अतः उसने दरीचे को साफ किया और अपने सफरी थैले से जरूरत की चीजें निकाल लीं और दरीचे में बिछे हुए एक बड़े से पत्थर पर लम्बा हो गया। उस वक्त वो अपने आपको थका-थका-थका महसूस कर रहा था, लेकिन वह सोना नहीं चाहता था। ताजा जख्म लगाकर आया था और ईरोज के आदमी शिकारी कुत्तों की तरह उसकी गंध सूंघते फिर रहे होंगे। दरीचे से उसने अपने बोदे को देखा जो इतनी दूर निकल

गया था कि उसे नजर नहीं आ रहा था। या फिर यह भी मुमकिन है कि बोदे ने अपने आपको ऊंची-नीची पहाड़ियों में छुपा लिया हो। उसे लेटे हुए अभी ज्यादा देर नहीं हुई थी कि बहुत से बोदों के दौड़ने की आवाजें सुनायी दीं और शोला चौकन्ना होकर उठ बैठा। बोदे सवार इमारत की तरफ नहीं आये थे, बल्कि दूसरी दिशा में निकल गये थे। शोला बहुत देर तक उधर निगाहें जमाये रहा जिधर बोद सवार गये थे और फिर निश्चिंत अंदाज में गर्दन हिलाकर पत्थर पर लेट गया। उसे यकीन हो गया था कि उस खण्डहर की तरफ उनका ध्यान नहीं गया है। बहुत देर तक वह वहां लेटा रहा। फिर लेटे-लेटे उक्ता गया तो अपनी जगह से उठ खड़ा हुआ। इमारत का एक और चक्कर लगाने के ख्याल से नीचे उतर आया। वह बोद सवार जो अभी कुछ देर पहले यहां से गुजरे थे, अभी तक वापस नहीं आये थे। शोला को इमारत की बायीं तरफ एक जगह नजर आयी जिसका रुख नदी की तरफ था। उधर से ही खुश्क हवायें आ रही थीं और उनकी वजह से मौसम बहुत बेहतर हो गया था। सूरज का ताप घटने लगा था जिसका मतलब था रात उतरने वाली है। शोला को रात गुजारने के लिये उचित स्थान चुनना था कि इससे अच्छी जगह उसे कहीं नजर नहीं आयी।

रात उतर आयी।

उस वक्त न जाने रात का कौन-सा पहर था कि बोदों की टापें फिर सुनायी दीं। यह आवाजें निरन्तर करीब आती जा रही थीं। शोला को यह अन्दाजा लगाने में जरा भी देर न लगी कि बोदों की टापों का रुख इमारत की ओर है। अतः वह किसी सांप की तरह चौकन्ना हो गया। उसने अपने दोनों रिवॉल्वर पेटी से निकालकर हाथ में ले लिये और एक ऐसी जगह रेंग गया जिसका चयन वह पहले ही कर चुका था। अगर उसे जंग करना पड़ती तो यहां से आने वालों पर बेहतर तरीके से गोलियां चला सकता था और यह जगह उसके लिये एक सुरक्षित पनाहगाह भी थी। अगर कोई ऐन उस जगह आ जाये और उसे निशाना बनाने की कोशिश करे तो फिर दूसरी बात है। लेकिन इस सम्भावना के लिये भी उसे तैयार रहना चाहिये था। आने वाले संयोग से उसी दरीचे के नीचे रुके थे, जिसकी एक गुप्त जगह वह छुपा हुआ

था और उन लोगों को देख सकता था। तारों की मद्धिम रोशनी में आने वालों की शक्लें उसे नजर आ रही थीं। वह दोनों जवान थे जिनकी उम्र ज्यादा नहीं थी, अलबत्ता तीसरी एक ज्यादा उम्र की औरत मालूम होती थी। शोला ने हैरानी से इन तीनों को देखा। उस वक्त ऐसी किसी शख्सियतों का यहां आने का तसव्वुर भी नहीं किया जा सकता था। बहरहाल, वह दम रोके उन्हें देखता रहा। आने वालों ने घोड़ों से उतरकर चौकन्ने अन्दाज में चारों तरफ देखा फिर औरत की आवाज उभरी।

"माहौल बेहद पुरसुकून है।"

"क्या इसे बोदे से उतार दें मां।" एक नौजवान की आवाज थी।

"हां जल्दी करो बेटा! वक्त की लगामें थामी रखनी चाहिये। जिस शख्स ने वक्त को जाया किया तो समझ लो उसने अपनी जिन्दगी जाया कर दी।" रात के सन्नाटे में औरत की पुरवकार आवाज उभरी। दोनों नौजवान कोई चीज उतारने लगे। फिर उन्होंने दरीचों के अकब में एक छोटी-सी जगह की मिट्टी हटाना शुरू कर दी। शोला की हैरत आसमान को पहुंच रही थी। वह फटी-फटी आंखों से उनको देख रहा था। मिट्टी हटाने के बाद उन्होंने मोटे से तख्ते को सन्दूक की मानिन्द उठाया और फिर सीमित रोशनी करके तख्ते के नीचे से बरामद होने वाले खला में उतर गये। शोला हैरत से आंखें फाड़कर देख रहा था। सीमित रोशनी जिसमें वहां होने वाला हर अम्ल देखा जा सकता था, यह बात उसकी समझ में आ गयी थी कि शायद वहां कोई रहस्यमय तहखाना है। दोनों नौजवान कुछ देर तहखाने में रहे। फिर उनमें से एक बाहर निकल आया। उस दौरान औरत बाहर ही खड़ी रही थी। उसके बाद उसने बोदों की पुश्त से उतारा हुआ सामान तहखाने में मौजूद दूसरे नौजवान को ट्रांसफर करना शुरू कर दिया और थोड़ी देर बाद वह अपने काम से फारिग हो गये। फिर उन्होंने तहखाने के दहाने पर पहले की तरह तख्ता रखा और उसमें मिट्टी डालना शुरू कर दी। जल्द ही वह अपने इस काम से भी फारिग हो गये थे।

शोला की खोपड़ी तो आसमान में उड़ रही थी। वह हैरत और दिलचस्पी से यह सब कुछ देख रहा था। उन लोगों के तसव्वुर

में भी यह बात नहीं थी कि कोई अजनबी उनकी यह तमाम हरकतें देख रहा है। शोला पहले तो यही समझा था कि उसके दुश्मन उसकी तलाश में सही जगह पहुंच गये हैं। मगर यह मुआमला ही कुछ और है। दोनों नौजवान लड़कों ने घोड़े पीछे हटा लिये थे। बूढ़ी औरत आहिस्ता-आहिस्ता चलती हुई एक शिकस्ता दीवार की तरफ बढ़ गयी जिसके पहलू में कब्रनुमा मिट्टी का एक ढेर दिखायी दे रहा था।

और तभी आवाज रात की खामोश फिजा में उभरी—"मेरे मजलूम बच्चे! तेरी मां तेरे खून का इन्तकाम लिये बगैर इस जमीन से नहीं उठेगी। मैंने मौत से जिन्दगी मांगी है और मुझे यकीन है मौत ने मुझे जिन्दगी दे दी है। बहुत जल्द मैं तेरी रूह को सुकून पहुंचाऊंगी। यह देख ले—तेरे बेटे अब जवान हो गये हैं। तेरी औलाद तेरा मिशन पूरा करेगी मेरे बच्चे।" औरत की आवाज कांप रही थी। वह बेशक रो नहीं रही थी लेकिन आवाज आंसुओं में डूबी हुई थी।

फिर वह मुड़ी और दोनों लड़कों से बोली—"मेरी नजदीक आ जाओ मेरे बच्चो! आओ, वापस चलें। मुझे यकीन है कि तुम्हारे बाप की रूह सुकून महसूस कर रही होगी।"

दोनों लड़के बूढ़ी औरत के पास पहुंच गये थे और गर्दन झुकाकर खड़े हो गये थे। चंद लम्हे इसी तरह खामोशी रही, फिर वह पलटकर घोड़ों पर सवार हो गये। सहारा देकर उन्होंने बूढ़ी औरत को भी घोड़े पर सवार करा दिया। शोला फटी-फटी आंखों से उस सारी कार्यवाही को देख रहा था। यह तो बिल्कुल ही नयी और अनोखी दास्तान है। उसने सोचा—वह औरत कौन थी। वैसे तो यह इसी इलाके के बाशिन्दे लगते थे। उनकी बोलचाल से यही अन्दाजा हुआ था। वह क्या चीज थी जो उन्होंने जमीन की गहराई में पहुंचायी थी? वह अपनी जगह से निकला और वहां पहुंच गया जहां उन लोगों ने वह चीज छुपायी थी फिर उसने झुककर वही तमाम काम किये जो वह नौजान कर चुके थे। मिट्टी हटाने के बाद उसने तख्ता उठा लिया जिसके दरमियान लोहे का कुण्डा लगा हुआ था। तख्ते के हटते ही एक खला नमूदार हो गया और शोला उस खला में उतर गया। अन्दर गहरायी बहुत ज्यादा नहीं थी। तहखाना भी ज्यादा लम्बा चौड़ा नहीं था, लेकिन

उसकी आंखें खुली रह गयीं। इस छोटे से तहखाने में उसने हथियारों के ढेर लगे हुए देखे थे। बन्दूकें, गोलियों के तोड़े, चाकू गर्ज यह कि तमाम चीजें बहुत बड़ी मात्रा में मौजूद थीं। शोला हैरानी से उन चीजों को देखता रहा। रात के अंधकार में अन्दाजा लगाना दुश्मन था। समझ में नहीं आता था कि औरत और उसके दो साथी नौजवान कौन थे, लेकिन अनजाने में शोला एक बहुत बड़े राज से किया हो चुका था। यहां असलहा जमा करने का कोई खास मकसद रहा होगा। बूढ़ी औरत की बातों से तो यही अन्दाजा लगाया जा सकता था कि वह किसी से इन्तकाम लेना चाहते थे और शायद इसीलिये इन हथियारों को जमा कर रहे थे। देर तक वह हथियारों का जायजा लेता रहा फिर आहिस्ता-आहिस्ता उसने वापसी के लिये कदम आगे बढ़ा दिये और फिर बाहर निकलने के बाद उसने उसी तरह तख्ते को रखकर उसे मिट्टी से पाट दिया और अपनी पनाहगाह की तरफ चल पड़ा।

शोला ने अपने बोदे के लिये सीटी बजायी। वह भी कमाल का जानवर था। अभी तक तो कहीं दम साधे छुपा हुआ था। और सीटी की आवाज सुनते ही दौड़ता हुआ चला आया। फिर शोला उस पर सवार होकर चल पड़ा। वीरान रास्तों पर सफर करता हुआ थोड़ी देर के बाद वह बस्ती में दाखिल हो गया। नींद में डूबी हुई खामोश बस्ती में अंधेरा फैला हुआ था। कहीं-कहीं रोशनी नजर आ जाती थी तो एहसास होता था कि यह आबादी है, वीराना नहीं। शोला की कोशिश थी कि उस पर किसी की नजर न पड़े। कोई भूला भटका राहगीर अगर उसे मिल जाय तो उसके लिये परेशानी पैदा कर सकता है। अतः पूरी सतर्कता से रास्ते तय करता हुआ आखिरकार कगोल के दरवाजे पर पहुंच गया। बस्ती में दाखिल होते हुए उसकी मंजिल यही घर हो सकता था। उसने इधर-उधर देखकर अपना बोदा एक मुनासिब जगह बांधा और फिर दरवाजा बजाने की बजाय अहाते की दीवार फलांग कर अन्दर दाखिल हो गया। लेकिन यह देखकर उसे हैरत हुई कि कगोल दालान में ही बैठा हुआ कुछ सोच रहा था। वह अभी तक जाग रहा था। हालांकि इस पूरी बस्ती सोयी हुई थीं। कदमों की चाल पर कगोल ने गर्दन उठायी और शोला को अपने सामने खड़ा देखकर उसकी आंखें हैरत से फैल गयीं। वह बिजली की सी फुर्ती

से अपनी जगह से खड़ा हो गया था।

फिर उसके मुंह से बमुश्किल तमाम आवाज निकली—"आह! देखो लोग कहते हैं कि कगोल बेवकूफ है, नाकारा है, अहमक है, दीवाना है, लेकिन क्या तुम इस बात का समर्थ नहीं करोगे कि कगोल को अहमक, पागल, दीवाना समझने वाले खुद अहमक और बेवकूफ हैं।"

"क्यों खैरियत—क्या बात हुई?"

"तुम यकीन करो। मैं एक-एक लम्हा तुम्हारा इन्तिजार कर रहा था। मैं जानता था कि तुम आज आओगे, क्योंकि कोई रुकावट तुम्हें मेरे पास आने से नहीं रोक सकती।"

"क्या तुम्हें इल्म था कि मैं बस्ती में दाखिल हो चुका हूं।"

"देखो अजीम दोस्त! कगोल इतना बेखबर इन्सान नहीं है। अगर बेखबर होता तो जान गंवा चुका होता। क्या तुम्हें इस बात का अन्दाजा है कि मैंने खुद तुम्हें तलाश करने की कोशिश इसलिये नहीं की कि अब मैं लोगों की निगाहों में संदिग्ध हो चुका हूं।"

"ओह! कैसे?"

"जो कुछ घटा है, उस पर कम से कम गुरबान और ईरोज के आदमियों को चिन्ता जरूर हुई होगी। वह अब भी तुम्हारे भूत बन जाने पर यकीन नहीं रखते, बल्कि उन्हें यह चिन्ता हो गयी है कि सुनारिया बस्ती में तुम्हारे ऐसे जबरदस्त हामी कौन हो सकते हैं। तुम्हें फांसी के फंदे से जिन्दा बचाकर कब्र तक ले गये और फिर कब्र से निकाल लाये। वह यह भी सोच सकते हैं कि एक अजनबी के मददगार बस्ती के बाशिन्दे नहीं हो सकते। आम बाशिन्दों में सम्भव है अब भी बहुत से तुमसे हमदर्दी रखते हों और तुम्हारे उद्देश्य की पूर्ति की दुआ करते हों। लेकिन कोई भी खुल्लम-खुल्ला तुम्हारी मदद नहीं कर सकेगा। इसलिये कि तुम दरवेश के कातिल बन चुके हो। ईरोज को अपनी हिमाकत का तीव्र एहसास हो गया है। उसने तुम्हें दरवेश का कातिल बनाकर तुम्हारी सही निगरानी नहीं की। तुम्हें ऐसी मौत मिलनी चाहिये थी जिसमें शकोशुब्ह की कोई गुंजाइश न होती और अब उसने बस्ती के एक फर्द को घेर रखा है। हर एक से पागलों की तरह पूछता फिर रहा है कि इस शख्स का मददगार आखिर कौन है? तुम्हारी मौत तो गलत साबित हो चुकी है। कमबख्त ईरोज

ने तुम्हारी कब्र भी खुदवा कर देख ली थी। खाली कब्र देखने के बाद भला वह तुम्हारी मौत पर कैसे यकीन कर सकता था। मुसीबत उस बेचारे जल्लाद की आयी हुई है जिसने तुम्हें फांसी दी थी। अगर जल्लाद इस बात को स्वीकार कर लेता है कि फंदा तुम्हारी गर्दन की बजाय बगल में से गुजरा था तो अब तक तो उसके पूरे खानदान को मौत की नींद सुलाया जा चुका होता। वह बेचारा कुछ भी नहीं जानता था और वह अपने मकान की कोठरी में बेहोश बंधा पड़ा है।''

एकबारगी शोला चौंक पड़ा। उसने हैरत से कहा—''क्या मतलब?''

''मतलब यह कि तुम्हें फांसी देने वाला असल में जल्लाद था ही नहीं। वह मेरा अपना आदमी था। बात यह है अजीम दोस्त! तुम्हारा यह खादिम दोस्त बन्द्रा साजिशी दिमाग रखता है। लेकिन अफसोस! पूरी जिन्दगी सुनारिया में गुजर गयी। किसी ने मेरी कदर ही नहीं की। अगर मैं अपना साजिशी दिमाग लेकर गुरबान के पास जाऊं और उसका गुलाम बन जाऊं तो जानते हो उसकी क्या प्रतिक्रिया होगी।''

''क्या होगी?''

''वह मुझे कब्र तक पहुंचा देगा। मैं उसकी फितरत से वाकिफ हूं। वह कुत्ते की तरह एक-एक को सूंघता फिर रहा है और अपनी दानिस्त में वह उस काली भेड़ को ढूंढ निकालना चाहता है जिसने गुरबान के हुक्म की न सिर्फ खिलाफदर्जी की, बल्कि उससे बगावत की। कौन है जो इस इल्जाम को अपने सिर लेकर कब्रिस्तान पहुंच जाता। पुच्छ-गुच्छ मुझसे भी हुई थी। कुछ लोग अब भी मुझे संदिग्ध निगाहों से देखते हैं। वह लोग जो मुझे अहमक समझते हैं उन लोगों के संदेह का मजाक उड़ाते हैं। तो अजीम दोस्त! तुम्हारा यह बेवकूफ दोस्त अभी इतना अहमक नहीं कि ईरोज के आदमी इसकी गर्दन पर हाथ डाल दें—क्या समझे।'' कगोल ने अय्यारी की निगाहों से शोला को देखा फिर बोला—''खड़े क्यों हो, बैठो। मगर नहीं, चलो अन्दर चलते हैं। कमरे के पिछली तरफ भी छोटा-सा सेहन मौजूद है और उधर कोई ऐसी जगह नहीं है जहां से किसी की दखल का अन्देशा हो। यहां कोई हमें बाहर से देख सकता है। और यह बताओ कि खाने के लिये

क्या पेश करूं? भूके मालूम होते हो।" कगोल अपनी जगह से उठकर अन्दर की ओर चल पड़ा और शोला उसके साथ अन्दरूनी कमरे से गुजरकर दरवाजे के बाहर निकल आया। इस जगह खुला सेहन था और एक बहुत बड़ा वृक्ष पूरे हिस्से को घेरे हुए था। वृक्ष के नीचे चारपाइयां पड़ी हुई थीं। शोला एक चारपाई पर पैर फैला कर बैठ गया।

"अगर कुछ लम्हे सब्र करो तो बहुत ही उम्दा कहवा पेश कर सकता हूं। और उसके साथ ही खाने की बेहतरीन डिश।"

"सब्र करना मेरी फितरत तो नहीं है, लेकिन खैर तुम्हारे हाथ के बने हुए कहवे का इन्तिजार करूंगा। खाना भी गरम हो तो बेहतर है। रात भर की थकन दूर करने के लिये कहवा एक अच्छी चीज है।"

"अभी लाता हूं।" कगोल ने कहा और उसे वहां छोड़कर आगे बढ़ गया। रात खत्म होती जा रही थी। सुबह के लम्हात नमूदार होने में ज्यादा देर नहीं थी। थोड़ी देर बाद शोला के सामने खाना और कहवा आ गया। शोला ने खाना खाते-खाते ही कई प्याले कहवा पिया और कगोल उसका साथ देता रहा।

फिर उसने कहा—"हां अजीम आका! अब तुम सुनाओ।"

"मुझे एक सवाल का जवाब चाहिये कगोल।"

"हां-हां पूछो।"

"बाकी बातें अपनी जगह, लेकिन क्या सुनारिया में कोई ऐसी औरत तुम्हारी परिचित है जिसकी उम्र साठ साल के आसपास है और उसके साथ सत्तरह अठारह साल के दो नौजवान हों और वह किसी वीरान खण्डहर में एक कब्र के सिरहाने जाकर यह कहे कि मेरे बच्चे मेरे बेटे! तुम्हारी मौत का इन्तकाम लेने का वक्त आ गया है और बहुत जल्द तुम्हारे कातिल को तुम्हारे खून का हिसाब देना होगा।"

कगोल जो अर्धनिद्रा की स्थिति में था, इस तरह उछलकर बैठा जैसे बन्दर दरख्त से छलांग लगा देता है। उसने फटी-फटी आंखों से शोला को देखते हुए कहा—"आहा...आहा...आगे मैं बताता हूं। वह औरत नदी के किनारे गयी होगी। जिस कब्र का तुम जिक्र कर रहे हो, वह उसी खण्डहर में है और वहां उसके बेटे की कब्र है। हमारे यहां रिवाज है कि जिसकी मौत स्वाभाविक

नहीं होती—जिसे कत्ल किया जाय या जो आत्महत्या कर ले—उसका शव चिता में नहीं जलाया जाता। उसको कब्र में दफनाया जाता है—क्योंकि हमारा ख्याल है कि उसकी रूह भटकती रहती है और वह अपने जिस्म को सलामत देखकर शान्त हो जाती है वरना वह भूत बनकर तंग करेगा।''

''मैं जानता हूं—आगे बोलो, वह औरत कौन है?''

''सिर्फ और सिर्फ जुनाबिया।'' कगोल ने कहा—''और वह दोनों नौजवान लड़के उसके दो पोते हैं।''

''क्या कहानी है उनकी?''

''कोई नयी कहानी नहीं है। गुरबान ने बेशुमार कहानियों को जन्म दिया है। बूढ़ी जुनाबिया एक जमींदार औरत है और उसके पास बहुत से मवेशी भी हैं। उसका बेटा बेहद शरीफ आदमी था। गुरबान को जब भी मवेशियों की जरूरत होती तो वह खरीदने की बजाय उसके बाड़े से जबरदस्ती मवेशी ले जाता। तब एक दिन बूढ़ी का बेटा उन मवेशियों के पीछे चल पड़ा। वह गुरबान के इस जुल्म के खिलाफ आवाज उठाना चाहता था—लेकिन उसकी आवाज उसके हलक में घुटकर रह गयी और एक बोदा उसकी लाश लेकर आया। उसके पूरे जिस्म को चाकुओं से गोदा गया था और यह काम सिर्फ और सिर्फ गुरबान का था। उस वक्त बुढ़िया के दोनों पोते छोटे थे। उसने कुछ लोगों की मदद से उस खण्डहर में अपने बेटे की लाश को दफन कर दिया था। बस उसके बाद बूढ़ी के दिल में इन्तकाम का जज्बा पैदा हो गया और अक्सर उसे अपने पोतों के साथ उस खण्डहरात में जाते देखा गया। लोग यही समझते हैं कि बूढ़ी अपने बेटे की कब्र पर जाती है। इस बात से किसी को भला क्या ऐतराज हो सकता था। गुरबान ने भी उसके बाद उसकी तरफ कोई ध्यान नहीं दिया। बहरहाल, हर शख्स किसी न किसी अन्दाज में गुरबान का शिकार हो चुका है और वह सब एक-दूसरे से हमदर्दी भी रखते हैं। अब तुम यह बताओ कि तुमने इस बारे में सवाल क्यों किया?''

शोला गहरी सोच में डूबा हुआ था, फिर उसने मद्धिम लहजे में कहा—''क्या उस बूढ़ी से मुलाकात की जा सकती है?''

''बिल्कुल! यह कोई मुश्किल काम नहीं—लेकिन क्यों, आखिर क्यों?''

"उससे मुलाकात कैसे की जा सकती है?"

"मेरे मकान से बिल्कुल सीधे चले जाओ। उस जगह, जहां मकानों की सीमा खत्म हो जाती है, जब तुम दायीं तरफ मुड़ोगे तो तुम्हें एक बड़ा मकान नजर आयेगा जिसका अहाता बड़ा लम्बा-चौड़ा है और उसके बगली हिस्से से जानवरों की ऊंघ आती है। यही मकान जुनाबिया की मिलकियत है और वहां वह अपने पोतों के साथ रहती है। उसके पोते काश्त करते हैं। लेकिन ऐसा लगता है जैसे कोई खास बात तुम्हारे इल्म में आयी है। भला तुम उससे क्यों मिलना चाहते हो? वैसे इस बात की जानकारी भी सिर्फ मुझे है कि वह बेटे के-कातिल से इन्तकाम लेना चाहती है दूसरे लोगों की निगाह में वह एक इज्जतदार औरत है जो बड़ी खामोशी के साथ जिन्दगी गुजार रही है।

"मेरे साथ चलना पसंद करोगे।"

"क...कहां?"

"जुनाबिया के घर।"

"म...मैं...अजीम दोस्त! क्यों इस हड्डियों के पंजर को तुम जिन्दगी से महरूम करना चाहते हो। अगर तुम कुछ रोज और मुझे जिन्दा देखना चाहते हो तो थोड़ी-सी सावधानी बरत लो, वरना तुम्हारी मर्जी! मैं तुम्हारे साथ चलने के लिये तैयार हूं!"

"मैं समझा नहीं कगोल।"

"तुम्हारा यह खादिम जैसा कि तुम्हें बता चुका है, लोगों की निगाहों में संदिग्ध हो चुका है। किसी ने अगर गलती से भी मुझे तुम्हारे साथ देख लिया तो उसके बाद तुम क्या समझते हो। अरे गुरबान जैसे आदमी के लिये ऐसे आदमी की मौत भला कैसे मुश्किल हो सकती है जोकि खुद ही अधमरा इन्सान हो।"

शोला को हंसी आ गयी—"तुम सचमुच लोमड़ी की तरह चालाक हो कगोल! बहरहाल, मैं तुम्हें मजबूर नहीं करूंगा। तुम यहां मेरे वाहिद दोस्त और हमदर्द हो। राश भी भरपूर तरीके से मेरा साथ नहीं दे सकेगा क्योंकि वह भी सुनारिया का एक जाना पहचाना और मोआज्जिज आदमी है। खैर! मैं तुम दोनों की जिन्दगी खतरे में डालकर तुम्हें खोना नहीं चाहता। वैसे जो पता तुमने बताया है, क्या वह बिल्कुल दुरुस्त है?"

"तुम यकीन करो। तुम्हें उनकी तलाश में कोई दुश्वारी पेश

नहीं आयेगी।" कगोल ने आत्मविश्वास भरे स्वर में कहा और शोला खामोश हो गया। उसे आगे के मंसूबे पर अम्ल करना था। खुशबूदार हवायें फजा में गर्दिश करती फिर रही थीं। हल्की-हल्की खनकी ने माहौल को पुरकशिश बना दिया था। रात का आखरी पहर था। इस वक्त किसी के घर जाने के लिये कतई उचित नहीं होता लेकिन शोला के उसूल के मुताबिक इससे ज्यादा मुनासिब कोई दूसरा वक्त नहीं था। उसने बूढ़ी औरत की नींद का ख्याल किये बगैर उससे मिलने का फैसला कर लिया और कगोल के पास से उठता हुआ बोला—"अब मुझे इजाजत दो।"

"कहां जाओगे?" कगोल ने उसे देखते हुए कहा।

"अभी तो जुनाबिया से मिलने जा रहा हूं। उसके बाद अपने लिये कोई उचित पनाहगाह तलाश करूंगा। असल में मुझे अपने साथी की भी तलाश है। तुमने भी उसके बारे में कोई सूचना नहीं दी।"

"क्या बताऊं अजीम दोस्त! तुम्हारा साथी अगर जिन्दा है तो उसने मुझे भी बेबस कर दिया है। अभी तक उसके बारे में कहीं से मालूमात हासिल नहीं हो सकी। खैर मैं कोशिश में लगा हूं। अगर वह इस बस्ती में छुपा है तो मेरी निगाहों से ओझल नहीं रह सकेगा।"

"ठीक है, मेरी तरफ से बेफिक्र रहना। मैं उचित अवसरों पर तुमसे मिलता रहूंगा। अलबत्ता अगर तुम्हारे लिये खतरा न हो। कोई खास बात हो तो फिर मुझे वीरानों में तलाश कर लेना। यानि उन्हीं खण्डरात के इर्द-गिर्द।"

"मैं तुम्हारी हिदायत पर अम्ल करूंगा।" कगोल ने जवाब दिया और शोला उसके घर से निकल आया। बाहर निकलने के लिये उसने जो दरवाजा इस्तेमाल किया था, वह नहीं चाहता था कि उसकी वजह से कगोल किसी मुसीबत में फंस जाय।

यों भी उसका वजूद उसके लिये बहुत अहम था। शोला लोगों की निगाहों से बचता बचाता उस तरफ चल पड़ा जहां मकानों की कतार खत्म होती थी। रास्ता बहुत लम्बा था, लेकिन अभी दिन निकलने में देर थी। खुशी की बात यह थी कि वह किसी दुश्वारी के बगैर उस बड़े मकान की तलाश में कामयाब हो गया और आत्मविश्वास भरे अन्दाज में चलता हुआ उसके

अहाते के सामने पहुंच गया। शत-प्रतिशत यही मकान जुनबिया का हो सकता था। मकान के इर्द-गिर्द खामोशी का साम्राज्य था। अलबत्ता मकान के अन्दर न जाने क्यों ऐसा महसूस हो रहा था जैसे वहां के रहने वाले जाग रहे हों। कुछ हल्की-हल्की सरगोशियों की सी कैफियत थी। शोला उस इमारत के दरवाजे के सामने खड़े होकर सोचने लगा कि मकान में रहने वालों को सम्बोधित करने के लिये क्या तरीका इस्तेमाल किया जाय। अभी वह कोई तरीका सोच भी न पाया था कि अचानक मकान का दरवाजा खुला और एक नौजवान बरामद हुआ। एक ही निगाह में शोला ने उसे पहचान लिया। यह उन्हीं दोनों नौजवानों में से एक था जिन्हें शोला ने खंडरात में देखा था। दरवाजे पर खड़े शोला को नौजवान ने प्रश्नसूचक निगाहों से देखा। शोला ने एक लम्हे के अन्दर यह अन्दाजा लगा लिया था कि नौजवान के चेहरे पर घबराहट के भाव उजागर हो गये हैं। फिर भी उसने धैर्य से कहा।

"सुना है जनाब! आप किसी काम से आये हैं। मगर अफसोस मैं आपको नहीं पहचानता।"

"मुझे सभ्रांत महिला जुनबिया से मुलाकात करनी है।" शोला ने कहा।

"ओह! अफसोस, दादी की तबीयत नासाज है।" नौजवान का लहजा खुश्क था। फिर वह शोला को टटोलती निगाह से देखते हुए बोला—"क्या आपको उनसे कोई जरूरी काम है।"

शोला ने पलभर में महसूस कर लिया कि लड़का तेज है। उसने बेतकल्लुफी की फिजा कायम करने के लिये मुस्कराकर कहा—"हां मेरा उनसे मिलना बेहद जरूरी है। यह बताओ मैं तुम्हें किस नाम से पुकारूं।"

नौजवान अब भी उसे शंकित निगाहों से देख रहा था। वह बोला—"जब कि हम आपको नहीं जानते जनाब! और वैसे भी आप इस बस्ती के रहने वाले नहीं लगते। कौन-सी बस्ती से आये हैं आप और दादी से आपको क्या काम है?"

"तुमने अपना परिचय नहीं कराया दोस्त! यह बताओ, मैं तुम्हें किस नाम से पुकारूं?"

"तुम मुझे सीध कह सकते हो।" नौजवान ने जवाब दिया।

"और तुम्हारे भाई का क्या नाम है?"

"लरजा।" नौजवान ने जवाब दिया और फिर पुरख्याल अन्दाज में बोला—"चलो ठीक है। अन्दर आ जाओ। मैं दादी को तुम्हारे आगमन के बारे में सूचना देता हूं।"

"तुम्हारा शुक्रिया सीध। वैसे तुमने बड़ा अच्छा किया। मेरे साथ सहयोग किया और तुम देखोगे कि तुम्हें इससे खासा फायदा पहुंचा है।"

"मुझे अब यह बताओ कि दादी को मैं तुम्हारा क्या नाम बताऊं।"

"वह नाम से मुझे नहीं पहचान सकेगी। बस उनसे इतना कह दो कि एक पड़ौसी उनसे मिलना चाहता है।" न जाने क्यों शोला को यह नौजवान अच्छा लगा था। सेहतमंद, खूबसूरत। आम लोगों की तरह अक्खड़ नहीं था। सीधा शोला को अन्दर कमरे में ले आया। कमरा कीमती चीजों से सजा था और बैठक के तौर पर इस्तेमाल होता था। शोला को वहां बिठाकर नौजवान अन्दर चला गया। थोड़ी देर बाद ही बूढ़ी जुनाबिया लड़के के साथ कमरे में दाखिल हुई। शोला उसे देखकर खड़ा हो गया था। जुनाबिया अजनबी निगाहों से शोला के चेहरे को तकती रही और उसके होठों पर मुहब्बत भरी मुस्कराहट फैल गयी।

फिर उसने धीरे से कहा—"हरचंद कि तुम मेरे लिये अजनबी हो नौजवान, लेकिन मेरे घर में मेहमान बनकर आये हो। मैं तो यह भी नहीं जानती कि दोस्त हो या दुश्मन, लेकिन घर आये हुए मेहमान की हैसियत से मैं तुम्हारा स्वागत करती हूं।"

शोला को उसके लहजे की शाइस्तगी से अन्दाज हो गया कि वह एक अच्छी औरत है। वह अभी तक खामोश निगाहों से उसे देख रहा था।

फिर जुनाबिया ने कहा—"क्या अपना परिचय नहीं कराओगे। यह हमारी बदकिस्मती है कि हमारी जान-पहचान का दायरा बहुत छोटा है। अपनी बस्ती के बेशुमार लोगों से मेरी कोई वाकफियत नहीं है और यह दोनों लड़के भी ज्यादा मेल मिलाप पसंद नहीं करते। उनका हलका भी बहुत संक्षिप्त है। अच्छा, यह बताओ क्या पियोगे—कहवा या कुछ और...अभी दिन भी नहीं निकला।"

"मैं आप से क्षमाप्रार्थी हूं कि इस वक्त आपको तकलीफ

दी है और यह आपकी बहुत बड़ाई है कि आपने इस वक्त अपने घर के दरवाजे पर दस्तक देने वाले से भी एक बहुत ही मुहब्बत भरा सलूक किया। बहरहाल मैं आपका शुक्रगुजार हूं।"

"कोई बात नहीं। यह तो घर ही है, लेकिन तुम कहीं दूर से चलकर आये हो। यकीनन तुम्हें ज्यादा जहमत उठानी पड़ी है। ताहम, आने का मकसद बयान करो।"

"मैं कोई परेशानी भरी खबर लेकर नहीं आया। मेरे बारे में इतना समझ लीजिये कि आपकी बस्ती में अजनबी हूं और मैं यहां किसी से परिचय हासिल न कर सका। अगर मैं आपसे कहूं कि इस वक्त मुझे सुबह के नाश्ते की तलब यहां ले आई है, तो यकीनन आपका बनाया ताजमहल धड़ाम से गिर पड़ेगा और आप यह सोचेंगी कि देखो भीक मांगने का यह भी एक नया तरीका है।"

जुनाबिया एक लम्हे के लिये चौंकी थी, लेकिन फिर भी उसके चेहरे पर नागवारी की एक शिकन भी नमूदार नहीं हुई। उसने आहिस्ता से कहा—"नहीं, अगर तुम नाश्ते के लिये भी यहां आये हो तो मैं तो पहले ही तुम्हें मेहमान कह चुकी हूं। सीधा! नाश्ते का बन्दोबस्त करो।" लड़का अपनी दादी के हुक्म की तामील करने चला गया तो जुनाबिया ने टटोलती निगाहों से शोला को देखते हुए कहा—"खैर, वह चला गया। अब तुम अपना नाम और आने का मकसद बता सकते हो।"

शोला हैरान रह गया। वह बूढ़ी औरत अत्यंत ही जहीन और चतुर भी थी।

"मेरा नाम शोला है।" और शोला ने महसूस किया कि यह नाम सुनते ही जुनाबिया के जिस्म में एक लम्हे के लिये सनसनी सी दौड़ गयी। चेहरे के बदलते हुए रंग से महसूस हो गया कि जुनाबिया उसके नाम की शोहरत सुन चुकी है। भले ही उसकी शक्ल न देखी हो। थोड़ी देर की खामोशी के बाद उसने कहा—"यह नाम...यह नाम तो मेरा मतलब है यह नाम तो सुनारिया में दाखिल होने वाले उस शख्स का नाम है जो सुनारिया में रहने वालों के लिये खौफ का बायस बना हुआ है।"

"हां भद्र महिला! मैं वही शोला हूं।"

"कातिल, खूनी और कातिल भी एक दरवेश का! कातिल

जिसने पूरी बस्ती के लिये हाहाकार पैदा कर दिया है। ऐ शख्स! अगर इन्सानी जिन्दगी तुम्हारी निगाह में कोई अहमियत नहीं रखती थी तो कम-से-कम दरवेश का सम्मान तो करते।'' जुनाबिया का लहजा बड़ा अजीब था। कभी यों लगता था जैसे उसमें नफरत का तत्व शामिल हो और कभी यों महसूस होता जैसे कोई खौफ उसके सीने में बसा हुआ हो। शोला गहरी निगाहों से उसे देख रहा था।

कुछ देर बाद उसने कहा—''आपका ख्याल शायद दुरुस्त है। मैंने बेशक एक दरवेश को कत्ल कर दिया है और उसके अलावा भी कुछ और लोग मेरे हाथों से हलाक हुए हैं, लेकिन आप खौफजदा न हों। आपसे मिलने का मकसद बिल्कुल अलग है। आपका शायद यह ख्याल है कि मैं बस्ती में कत्लोगारतगिरी करने या लूटमार मचाने आया हूं।''

''मुझे इससे कोई सरोकार नहीं कि तुम बस्ती में क्यों आये हो। मुझे सिर्फ यह बताओ कि मेरे पास आने का मकसद क्या है।'' जुनाबिया सर्द लहजे में बोली और फिर जल्दी से कहने लगी—''मैं तुम्हें जरूर बताना चाहती हूं कि मैं गुरबान के खैरख्वाहों में से हूं और मेरा फर्ज है कि ईरोज को तुम्हारे यहां आगमन के बारे में फौरन सूचना दूं। सुना है कि फांसी के फंदे से भी तुम्हें मौत नहीं आ सकी और तुम उस बेचारे जल्लाद को भी चकमा देने में कामयाब हो गये जिसने तुम्हें फांसी दी थी।''

''तो फिर ठीक है। आप अपना फर्ज पूरा कीजिये।'' शोला ने सिर झुकाकर कहा।

''क्या कहना चाहते हो?'' जुनाबिया का लहजा सख्त हो गया।

''यही कि ईरोज को मेरे बारे में सूचना देकर गुरबान की खैरख्वाही का सबूत दीजिये, लेकिन मेहमान की हैसियत से आपने मुझे कुबूल कर लिया है और मैं यह समझता हूं कि सरजमीन कोरसार में रहने वाली किसी भी आबादी के किसी भी कबीले के लोग कम-से-कम इस इन्सानी फर्ज से अनभिज्ञ नहीं होते कि मेहमान की हिफाजत करें। मेरी खैरख्वाही भी आपकी जिम्मेदारी है और अभी तो मैंने आपके यहां एक घूंट पानी भी नहीं पिया।'' शोला ने पुरसुकून लहजे में कहा और जुनाबिया ने आंखें मींच

लीं, क्योंकि उसके चेहरे पर एक अनजानी हलचल के भाव नुमायां हो गये थे। कुछ देर वह आंखें बन्द किये रही और इस तरह उसने अपने ऊपर काबू पा लिया।

"अगर तुम वही हो जो तुम जाहिर कर रहे हो तो मुझे यहां आने का मकसद बताओ। निश्चिंत रहो। तुम नाश्ता भी करोगे और अगर मेहमान के रूप में तुम दुश्मन भी हो तो मेरी मेहमान नवाजी पर हरूफ नहीं आयेगा।"

"यह बात मैं अच्छी तरह जानता हूं। मैं आपको अपने आने का मकसद जरूर बताऊंगा, लेकिन नाश्ते के बाद, ताकि आपको इसका रंज न हो कि किसी गलत आदमी की मेहमान नवाजी की है।" शोला ने कहा।

जुनाबिया की गहरी निगाहें उसके चेहरे का जायजा ले रही थीं। कुछ खामोश लम्हे इसी तरह गुजर गये।

शोला उसकी निगाहों की गर्मी महसूस करता हुआ बोला—"कुछ दिन पूर्व मैं और मेरा छोटा भाई मुसाफिरों की हैसियत से सुनारिया में दाखिल हुए थे। हम जब आपकी बस्ती के इर्दगिर्द फैले पहाड़ों को पार कर रहे थे तो एक लड़की का कत्ल और बूढ़े जईस की मौत जो उसी मक्तूला का बदनसीब बाप था और जिस तरह उसे सुनारिया के चौक पर हलाक किया गया था, उसने हमारे इन्सानी जज्बे को झिंझोड़ डाला और हम दोनों ने तय किया कि इस बस्ती में उन लोगों के खिलाफ एक मुहिम चलायेंगे जो उन मौतों के जिम्मेदार थे, ताकि इस बस्ती को उन दरिन्दानुमा इन्सानों से पाक किया जाय। हालात से तो यही अन्दाजा हुआ है कि इस पूरे इलाके में गुरबान नामक किसी दरिन्दे के जुल्मों की दास्तानें बिखरी पड़ी हैं। हम दो लोग थे, लेकिन उसके बावजूद हमने फैसला किया कि इस नासूर को खत्म करके इस बस्ती के लोगों को उससे निजात दिलायेंगे। उससे पहले इस बस्ती से हमारी वापसी सम्भव नहीं है।" शोला कुछ लम्हे के लिये रुका। उसने निगाहें उठाकर जुनाबिया को देखा जो हैरानी से उसे तक रही थी। फिर उसने कहा—"मेजबान महिला! आपके चेहरे पर छायी हुई हैरानी का मतलब मैं नहीं जानता क्या है, लेकिन आप इतना अन्दाजा लगा दीजिये कि यह मेरी दीवानगी नहीं है। यह गुरबान का इलाका है और यहां उसके अनगिनत लोग बिखरे

पड़े हैं जिनमें आप भी शामिल हैं। आप सोचती होंगी कि दो आदमी उसका क्या बिगाड़ लेंगे। लेकिन मैं जानता हूं कि अगर शहादत का जज्बा हो और लक्ष्य पाने की लगन हो, फिर संख्या की कोई हैसियत नहीं होती। मैंने बस्ती के कमजोर लोगों के लिये दरबान से दुश्मनी मोल ली है, लेकिन मेरी बदकिस्मती है, मेरा साथी इसी बस्ती में या इस बस्ती के पहाड़ों में कहीं गुम हो गया है। खुद गायब हुआ है या उसे गायब किया गया है, यह मैं नहीं कह सकता। मैं उसकी तलाश में हूं, लेकिन साथ ही साथ गुरबान के पेजा सितम में फंसे हुए लोगों को आजाद कराने की कोशिश भी कर रहा हूं, लेकिन मुझे ऐसा महसूस होता है जैसे सुनारिया वाले मेरा साथ नहीं दे सकेंगे। वह जुल्मात के आदी हो चुके हैं और उन्होंने गुरबान के जुल्म के साये में जीने की आदत डाल दी है। मैं इन तमाम लोगों से बददिल नहीं हूं जो मेरे साये से भी कतराते हैं। मैं जानता हूं कि वह दिल से गुरबान से नफरत करते हैं और निजात हासिल करना चाहते हैं, लेकिन उनके अन्दर हिम्मत नहीं है। मैं अजनबी होने की हैसियत से उन सबसे अपरिचित हूं जिनके दिलों में गुरबान के लिये बगावत के जज्बे परवान चढ़ रहे हैं और मैं ऐसे ही लोगों की तलाश में हूं ताकि उन्हें ठीक वक्त पर अपना साथ देने के लिये अमादा कर सकूं।" शोला शब्दों के तीर बरसा रहा था और साथ ही साथ जुनाबिया का जायजा भी लेता जा रहा था कि उसके चेहरे के हावभाव क्या हैं।

जुनाबिया पूरे ध्यान और दिलचस्पी से शोला की बात सुन रही थी। उसके चेहरे से किसी तरह के जज्बात का इजहार नहीं हो रहा था। नहीं यह पता चल रहा था कि वह शोला का असली मकसद समझ भी रही है और सही समझ रही है। शोला ने एक लम्हे के अन्दर-अन्दर यह महसूस किया कि जुनाबिया कुछ और सोचने में व्यस्त हो गयी है। अतः वह एकदम खामोश हो गया।

लेकिन जुनाबिया ने फौरन कहा—"हो सकता है कि जो कुछ तुम कह रहे हो वह सच हो लेकिन मैं नहीं जानती कि तुम मेरे पास कैसे आये।" जुनाबिया का लहजा किसी भी जज्बात से कोरा था।

अतः शोला ने एक बार फिर कहा—"मैं आपको सिर्फ यह

बताना चाहता हूं कि मैं उन लोगों की तलाश में हूं जो गुरबान का सूर्य अस्त होते देखना चाहते हैं।"

"लेकिन हम तो उनमें से नहीं हैं।" जुनाबिया ने ठण्डे हुए लहजे में कहा—"हम तो गुरबान के खैरख्वाहों में से हैं। तुम्हारे तो विरोधी ही हुए ना हम।"

शोला ने फिर कड़ुवे स्वर में कहा—"अपने बेटे की दर्दनाक मौत के बावजूद भी।"

उसके यह शब्द जुनाबिया के लिये धमाकाखेज साबित हुए थे। बूढ़ी औरत ने चौंककर शोला की तरफ देखा। उसके चेहरे की सुर्खी बताती थी कि एकदम से उस पर जज्बात का हमला हुआ है। उसने तीव्र जज्बात से अपने होंठ काटने शुरू कर दिये और शोला को यकीन हो गया कि बूढ़ी जुनाबिया खामोश नहीं रह सकेगी। वह बड़ी गहरी निगाहों से जुनाबिया के चेहरे की बदलती रंगत का जायजा ले रहा था। लेकिन उसे फिर मायूसी ही हुई। जुनाबिया असाधारण आत्मशक्ति की मालिक थी। उसने चंद ही लम्हों बाद खुद को संभाल लिया।

चुभते हुए स्वर में बोली—"सम्भव है कुछ लोगों ने तुम्हें यह बात बतायी हो, लेकिन यह नहीं बताया होगा कि मुद्दत गुजर गयी हमारा दिल गुरबान की तरफ से साफ हो गया है। वह सब कुछ एक गलतफहमी के नतीजे में हुआ था।"

"तो फिर सुनो भद्र महिला!" शोला की गुर्राती हुई आवाज उभरी—"जो लोग कसम खाते हैं इन्तकाम लेने की और किसी का खून मुआफ न करने की, वह कभी अपना दिल साफ नहीं करते और न खून मुआफ करते हैं। तुम दुनिया से बहुत कुछ छुपाना चाहती हो। मैं जानता हूं, इसकी वजह भी जानता हूं। लेकिन तुम्हारे सीने में इन्तकाम की जो शमा रोशन है वह कभी बुझ नहीं सकती। हां, अगर तुम्हारे सीने में इन्तकाम की शमा बुझ गयी है तो इकरार करो इस बात का कि तुमने अपने बेटे के खून को ठोकर मार दी है। जवाब दो। क्या तुम अपने बेटे के खून को फरामोश कर सकती हो। वह खून जो गुरबान के हाथों बहा है।" शोला के शब्दों में आग भरी हुई थी, जिसने बूढ़ी जुनाबिया के पूरे वजूद को जला दिया। उसके पूरे बदन में थरथरी-सी पैदा हो गयी।

अंततः उसकी कमजोर आवाज उभरी—"मैं पूछती हूं तुम यहां क्यों आये हो। किसने भेजा है तुम्हें? क्या पता गुरबान के आदमी हो। बोलो जवाब दो।" जुनाबिया की आवाज में लरजिश थी। उसी वक्त एक लड़का नाश्ते का थाल उठाये हुए कमरे में दाखिल हुआ। उसने माहौल की संजीदगी का अन्दाजा लगाकर नाश्ते का थाल नीचे रख दिया और शोला पर कड़ी निगाह डाली।

"क्या बात है दादी? यह शख्स कौन है और क्या चाहता है? क्या इसने आपके साथ कोई गुस्ताखी की है। मैंने तो इसे पहली ही बार देखा है। अगर इसने कोई गुस्ताखी की है तो मैं इसे जिन्दा नहीं छोड़ूंगा।" यह नौजवान लड़का सीध था और उसका हाथ अपनी कमर में कसी हुई रिवॉल्वर की पेटी की ओर बढ़ रहा था। इतनी देर में बूढ़ी औरत अपने ऊपर काबू पा चुकी थी। शोला ने उसकी मजबूत इच्छा शक्ति की मन ही मन में तारीफ की थी। उसने नर्म लहजे में सीध से कहा—

"नहीं, यह शख्स अपना नाम शोला बताता है और स्थानीय नहीं है।"

"शोला...!" नौजवान लड़का उछल पड़ा और फिर बेइख्तियार शोला की तरफ बढ़ते हुए बोला—"यह बस्ती इतनी बड़ी नहीं है कि यहां के रहने वाले एक-दूसरे से परिचित न हों। तुम मुझे पहली ही नजर में अजनबी मालूम हुए थे। इस वक्त सिर्फ एक अजनबी है जिसका पूरी बस्ती में चर्चा है और जिसका नाम है शोला।" फिर नौजवान लड़का अपनी दादी की ओर आकर्षित होकर बोला—"दादी! यह वही शख्स तो है जिसकी तलाश ने गुरबान और ईरोज को पागल कर दिया है।" बूढ़ी ने निगाहें उठाकर पोते को देखा और बोली—

"तुम्हें पूरा यकीन है?"

"शत-प्रतिशत।" सीध ने पुरयकीन लहजे में कहा, फिर शोला की तरफ रुख करके बोला—"हम तो आपके भक्तों में से हैं। आपको अपना देव पुरुष मानते हैं। ठहरो, मैं अपने भाई को बुलाता हूं। लाजा भी तुम्हारा अकीकदमंद है।" यह कहकर नौजवान लड़का पुरजोश अन्दाज में बाहर की तरफ दौड़ पड़ा।

उसके जाने के बाद जुनाबिया ने बदले हुए लहजे में कहा—"मुझे अफसोस है मेरे बेटे। तुमको यहां आते हुए किसी

ने देखा तो नहीं है।?' धीरे-धीरे जुनाबिया की कठोरता कोमलता और मुहब्बत में बदल गयी थी।

''नहीं।'' शोला ने जवाब दिया—''मैंने इस बात का खास ख्याल रखा था। आधी रात के बाद मुलाकात का मकसद ही यही था।''

''मगर तुमने इधर का रुख क्यों किया?''

''मैं किसी झूठ में नहीं पड़ूंगा बुजुर्ग महिला! क्योंकि वह आपकी शान के खिलाफ बात होगी। सारांश यह है कि जब आप अपने दोनों पोतों के साथ खण्डरात के एक विशेष हिस्से में असलहा तहखाने में पहुंचा रही थीं, उस वक्त मैं उस जगह से ज्यादा दूर नहीं था। मैंने वह तमाम अल्फाज सुने थे जो आपके दिलोदिमाग में गूंज रहे हैं। आपके इन्तकाम के प्रण से मुझे यकीन हो गया था कि मेरा और आपका दुश्मन एक ही है, लेकिन मैं आपसे वाकिफ नहीं था और वाकफियत हासिल करना जरूरी हो गया था मेरे लिये। यहां एक शख्स ऐसा है जिसने आपके बारे में मालूमात फराहम की और आखिरकार मैं आप तक पहुंच गया।''

''एक और शख्स?'' जुनाबिया का स्वर आश्चर्य में डूबा था।

''हां एक और शख्स से वाकिफ हूं जो आपको इस हैसियत से भी जानता है कि आप बेटे की कब्र पर जाकर अपना संकल्प दोहराती हैं। लेकिन आप चिन्ता न करें। वह शख्स पक्के भरोसे का आदमी है। उसे भी अपने दोस्तों में समझिये। वह बहुत अर्से से आपके मकसद से वाकिफ है, लेकिन उसने कभी अपनी जबान नहीं खोली। यहां तक कि आपको भी शुब्ह नहीं हो सका और उसकी सच्चाई की इससे बड़ी दलील और कौन-सी हो सकती है।''

''लेकिन वह कौन है?'' जुनाबिया के चेहरे पर खौफ का हल्का-सा अक्स नजर आ रहा था और शोला उस खौफ की वजह बखूबी जानता था। जिस आग को सुलगते रहने के लिये वह अपने दोनों पोतों के सीनों में सुलगाये हुए थी, अगर वह राज समय से पहले फाश हो जाता तो उसके दोनों पोते भी दुश्मनों के कब्रिस्तान में पहुंचा दिये जायेंगे।

शोला ने उसके इस खौफ को दूर करने के लिये कहा—"मैं उस शख्स का नाम आपको बता सकता हूं। अगर आप उसको जानती हैं तो उसके बारे में यह अन्दाजा भी लगा सकती हैं कि वह किस कदर विश्वासपात्र है। दूसरे, यह कि आप उसके जरिये मुझे जरूरी पैगाम पहुंचा सकती हैं। उसके जरिये सम्पर्क स्थापित किया जा सकता है। उसका नाम कगोल है। बस्ती वाले उसे अपनी बस्ती का सबसे ज्यादा बेवकूफ शख्स करार देते हैं।"

"क्या नाम बताया तुमने—कगोल?" बूढ़ी जुनाबिया ने हैरत भरे अंदाज में कहा।

"हां—कगोल।"

"वह कमजोर सा बूढ़ा।" उसी लम्हे लाजा और सीध भी अन्दर आ गये, लाजा बड़ी अकीदत से शोला से मिला। शोला ने उन्हें थोड़ी बहुत जानकारी दे दी। कगोल का नाम सुनकर उन्हें भी दादी की तरह हैरत हुई।

बल्कि लाजा ने तो घबराते हुए कहा—"मगर वह बूढ़ा गिद्ध! मेरा मतलब है वह मसखरा बेवकूफ तुम्हारा साथी है। तुम्हारी मदद करता है। वह तो इन्तहाई बुजदिल है। वह तो...वह तो अगर एक छोटा-सा धमाका भी कर दो तो बेहोश होकर गिर जाता है। मुझे यकीन नहीं आ रहा।"

"हां—वही मेरा मददगार है—इस पर यकीन करो। यों समझ लो कि सुनारिया बस्ती में वह मेरा पहला मददगार था, जिसने खुलकर कई जगहों पर मेरी मदद की और मुझे गुरबान और उसके नायब ईरोज के आदमियों से महफूज रखने के लिये अपनी जिन्दगी की बाजी लगा दी।"

"कमाल है—कमाल है...हैरानियों के पहाड़ टूट रहे हैं मुझ पर। एक ऐसा शख्स...लेकिन सारी ही बातें हैरतनाक हैं। तुमने हमारा वह शस्त्रागार भी देख लिया और कगोल भी उससे वाकिफ है...आह...यह तो बड़ी परेशानी की बात है। मैं तो बड़ा परेशान हो गया हूं। अच्छा एक बात बताओ—क्या कगोल भी हमारे इस शस्त्रागार के बारे में जानकारी रखता है?"

"यह बात मैं विश्वास से नहीं कह सकता, लेकिन मुझे यकीन है कि वह उससे वाकिफ होगा। हालांकि उसने इस बात का इजहार नहीं किया है, क्योंकि वह बहुत चालाक है।"

"अब मैं तुमसे एक सवाल और करता हूं मेरे अजीज मोहतरम दोस्त! क्या हमारा शस्त्रागार सुरक्षित है? मेरा मतलब है जिस तरह तुम उससे वाकिफ हो गये हो, कोई और भी हो सकता है? ऐसी हालत में वह शस्त्रागार क्या सुरक्षित रह सकता है?"

"मुझे यकीन है कि वहां इस वक्त मेरे अलावा और कोई नहीं था। मैं समझता हूं कि वह जगह बिल्कुल सुरक्षित है।" एकाएक शोला जुनाबिया की ओर आकर्षित होकर बोला—"और अगर मैं आपके लिये विश्वासपात्र हो चुका हूं, तो आप मुझे बताइये वहां असलहा जमा करने का क्या मकसद है?"

जुनाबिया अभी तक गुमसुम उन तीनों की बातें सुन रही थी। उसने शोला की बात पर दोनों की तरफ सवालिया निगाहों से देखा। वह दोनों नौजवान संतुष्ट नजर आ रहे थे।

तब जुनाबिया बोली—"हमारा राजफाश हुआ है, लेकिन तकदीर हम पर मेहरबान है कि यह राज जो हमें जान से ज्यादा प्यारा है, किसी गलत जहन तक नहीं पहुंचा। शोला! तुमने इसका मकसद पूछा है तो सुनो! जिस मां के सामने उसके जवान बेटे का खून बहा हो, वह मां अपनी आखरी सांस तक उस सुर्ख खून को नहीं भूलती। मैं कमजोर थी और दुश्मन ताकतवर। भला मैं उससे क्या इन्तकाम ले सकती थी। इसके लिये एक लम्बा अरसा दरकार था मुझे। हां—मैंने अपने दोनों पोतों को इन्तकाम का सबक दिया और इनके खून के एक-एक कतरे में गुरबान से इन्तकाम का बारूद भर दिया। मैं इनके जवान होने का इन्तिजार कर रही थी। दुश्मन बस्तियों को उजाड़कर चला जा रहा था। उसकी ताकत अपनाह होती जा रही थी। आह! मुझे सब कुछ याद है।" जुनाबिया एक लम्हे के लिये रुकी जैसे अपने अतीत को अपने सामने ला रही हो। फिर उसकी आवाज उभरी—"शोला! तुम पर भरोसा करने को दिल चाहता है। तुम्हारे चौड़े ललाट पर सच्चाई की मुहर है। मेरे बेटे! मैंने इनके जवान होते ही अपने काम का आगाज कर दिया और इन्तहाई कोशिश करके इन दोनों जवानों को गुरबान के सामने पहुंचा दिया। इन्होंने गुरबान के यहां नौकरी हासिल की। वह ईरोज के खास पट्ठों में से हैं और ईरोज नहीं जानता कि यह उसकी आस्तीन के सांप हैं। ईरोज इन दोनों पर मुकम्मल भरोसा करता है और यह उसके लिये काम करते हैं। जो असलहा

तुमने खंडरात में देखा है वह असल में गुरबान की ही मिलकियत है। उसे यह दोनों लड़के ईरोज के यहां से चुराते हैं। ईरोज बेहद शैतान किस्म का आदमी है। यों समझ लो कि गुरबान की तमाम दरिन्दगी ईरोज के ही दम से है। ईरोज उसकी सम्पत्ति का निगरां है और उसके दूसरे मुआमले देखता है। यह दोनों असलहा चुरा-चुराकर इकट्ठा करते जा रहे हैं। असलहा इन्हीं को मिलता है जिन पर ईरोज भरोसा करता है। आम लोग असलहा इस्तेमाल नहीं करते। लेकिन हमें चूंकि इसकी जरूरत है इसलिये हमने ऐसे कमसिन बच्चों को अपना साथी बनाया है जो अभी ईरोज की निगाहों से ओझल हैं। वह शैतान हर उस शख्स पर नजर रखता है जो कड़ियल जवान हो। उसे हर नौजवानों से खतरा महसूस होता है कि कहीं वह गुरबान के लिये नुकसानदेह न हो। ऐसे नौजवानों को या तो वह खरीद लेता है या फिर उनकी निगरानी शुरू कर देता है। गुरबान की हिफाजत के लिये उसने बेशुमार जाल बिछा रखे हैं, क्योंकि इसी में उनकी अपनी सुरक्षा है। उन दोनों से नफरत करने वालों की संख्या बहुत ज्यादा है और वह दोनों इस बात से वाकिफ हैं कि बस्ती के बेशुमार लोगों के दिलों में उनके खिलाफ नफरत भरी हुई है। उसकी कोशिश यही होती है कि नफरत करने वाले इकट्ठे न होने पायें। अगर वह सब खड़े होकर गुरबान के खिलाफ हो गये तो फिर वह इन बिफरे हुए नौजवानों को संभाल न सकेगा। ऐसा तूफान उठेगा कि गुरबान और ईरोज को नेस्तनाबूद कर देगा, हम सब उस तूफान की तैयारियां कर रहे हैं। तुम देखना, एक दिन यह गुरबान का दायां हाथ किस तरह जिन्दगी की भीक मांगता फिरेगा।'' जुनाबिया का लहजा इन्तहाई खुंख्वार हो गया। शोला ध्यानपूर्वक उसकी बात सुन रहा था। उसके खामोश होते ही उसने एक गहरी सांस लेकर कहा—

''मैं भी आपके इस उठाये जाने वाले तूफान में शामिल होना चाहता हूं। खुद को इस मकसद के लिये निःस्वार्थ भाव से पेश करता हूं।''

''शोला! सुनारिया के अजनबी जवान! तुमने सुनारिया में दाखिल होकर उन लोगों की रगों में एक नयी जिन्दगी फूंक दी है जो गुरबान से दुश्मनी रखते हैं। इस तरह किसमें जुर्रत थी कि

गुरबान के मुंह पर कीचड़ मले और न इस तरह ईगोत्र के कुत्तों को सड़कों पर भूंकते सुन गया था। उसका नायाब एक दरिन्दा नुमा जल्लाद की हैसियत से मशहूर है। वह जख्मों से चूर किर्गा गार में पड़ा हुआ है और बेशुमार लोग उसकी दरिन्दगी से मफ्लूज हो गये हैं क्योंकि वह खुंख्वार दरिन्दे कभी-कभी तफरीह के लिये भी दरिन्दगी करने निकल खड़े होते हैं और बहुत से बेगुनाह मौत की आगोश में आ जाते हैं। मैं जानती हूं कि सुनारिया के चप्पे-चप्पे में गुरबान के शिकारी कुत्ते तुम्हारी गंध सूंघते फिर रहे हैं। ईगोत्र तुम्हारी तलाश में दीवाना हो रहा है।'' जुनाबिया एक लम्हे के लिये रुकी और शोला को हैरत होने लगी कि चन्द लम्हात पूर्व जो बूढ़ी औरत उसकी तरफ से बद्‌दिल नजर आ रही थीं, अब एकदम उसके बारे में इतना कुछ बता रही है।

उसने एक गहरी निगाह शोला पर डालते हुए कहा—''शोला! तुम अब मेरी औलाद की मानिन्द हो और मैं तुम्हारे लिये भी चिन्तित हो गयी हूं। जिस अन्दाज में तुम इस बस्ती में घूमते फिर रहे हो, वह तुम्हारे हक में बेहद खतरनाक है। मेरी उम्र भर का तजुर्बा बताता है कि तुम एक दिलेर नौजवान हो। बुजदिली और खौफ तुम्हारे करीब से भी नहीं गुजरा। लेकिन मेरे बच्चे! कभी-कभी दिलेरी नहीं बल्कि अकल और चतुराई से भी काम लिया जाता है। शैतान का तोड़ भी शैतान ही होता है। तुम अगर चाहो तो मैं तुम्हारे लिये एक गुप्त स्थान का प्रबन्ध कर सकती हूं। मैं और मेरे दोनों पोते तुम्हारे साथ हैं। हरचंद कि हम अभी तक कोई गिरोह नहीं बना सके, लेकिन मेरे दिमाग में यह बात मौजूद है कि जब हमारे पास बेशुमार कड़ियां हो जायेंगी और हम उन कड़ियों से जंजीर बनाने में कामयाब हो जायें तो फिर गुरबान से दुश्मनी रखने वाला गिरोह जमा होकर अचानक ही एक तूफान की तरह उठेगा। हम अचानक उठने से पूर्व अपने आप को आम नहीं करना चाहते वरना फिर हम गुरबान के उठाये हुए तूफान का शिकार हो जायेंगे।'' वह एक लम्हे के लिये सांस लेने के लिये रुकी फिर बड़ा-सा सांस लेते हुए बोली—''हम तीनों हर किस्म के सहयोग का तुम्हें यकीन दिलाते हैं। गुरबान चालाकी से मारा जायेगा। तुम नहीं जानते कि वह किस वहशी शख्स की औलाद है।''

शोला खामोशी से जुनाबिया के शब्द सुन रहा था। फिर उसने पूछा—"तो क्या गुरबान का बाप भी उसी की तरह वहशी था?"

"आह! वह कितना बड़ा वहशी था। मैं उसकी कहानी क्या सुनाऊं। उसका बाप गाजाल तो यों समझ लो भेड़िये से भी ज्यादा खुंख्वार, शेर से ज्यादा ताकतवर और लोमड़ी से ज्यादा चालाक था। तुम्हें नहीं मालूम कि एक गुरबान ही नहीं गाजाल के चार और वहशी बेटे यहां आस-पास बिखरे हुए हैं और उनके बारे में कहा जाता है कि कालकों को अगर उनसे मदद हासिल न होती तो वह कभी यहां अपने कदम नहीं जमा सकते थे। यह एक लम्बी कहानी है और थोड़े से वक्त में पूरा विवरण सुनाना दुश्वार है। चूंकि तुम सुनारिया के रहने वाले नहीं हो, इसलिये मैं जानती हूं कि तुम्हें गाजाल के बारे में कुछ नहीं मालूम होगा। बस यों समझ लो कि गाजाल इस इलाके का सबसे बड़ा खुंख्वार और वहशी लुटेरा था जो मर चुका है, लेकिन उसकी मौत पर भी अभी लोग शंकित हैं। कुछ का कहना है कि वह जिन्दा है और अपने बेटों की दहशत के रूपोश है। कुछ का कहना है कि उसने अपने बेटों को सब कुछ सौंपकर अज्ञातवास ले लिया हैं। कुछ लोगों का यह भी ख्याल है कि उसके बेटों ने ही उसे हलाक कर दिया है। गुरबान नकाब में रहता है, उस तक किसी की पहुंच भी नहीं है। मुझे डर है कि अगर गुरबान ने खुद बस्ती में आकर ऐलान कर दिया कि शोला और उसके साथियों को मौत की आगोश में सुला दिया जाय तो मुझे यकीन है कि बस्ती का बच्चा-बच्चा तुम्हारी तलाश में निकल खड़ा होगा।" इतना कहकर जुनाबिया कुछ देर के लिये खामोश हो गयी फिर अपना गला साफ करते हुए बोली—"मुझे तो इस बात पर हैरत है कि ईरोज ने तुम्हें सीधे कत्ल करने की बजाय तुम्हारे हाथों उस दरवेश को क्यों मरवाया। क्या उसे सुनारिया वालों से कोई खतरा था या यह बात उसे महसूस हो चुकी थी कि सुनारिया की गहराइयों में कोई ज्वालामुखी फट रहा है। अगर ऐसा है शोला तो हमें बहुत सजग रहना होगा।" जुनाबिया ने अपनी बात खत्म की और शोला की तरफ इस तरह देखने लगी जैसे अपनी बातों के बारे में उसकी राय जानना चाहती हो, लेकिन शोला ने चंद लम्हात के लिये खामोशी कायम कर ली थी।

उसके बाद उसने आहिस्ता से कहा– "मैं आपकी हिदायत पर अम्ल करने की कोशिश करूंगा। मगर मुझे अपने साथी को भी तलाश करना है।"

"जिस साथी के बारे में तुमने बताया था।"

"हां...।"

"ठीक है–मैं तो तुम्हें बस सुझाव दे सकती हूं।" सुनारिया ने कहा और फिर काफी देर के लिये खामोशी छा गयी। सूरज उदय हो गया था। परिन्दों और मवेशियों की आवाजें फिजा में उभर रही थीं।

तब शोला ने कहा–"अब आप मुझे इजाजत दीजिये। आपकी मेहरबानी का शुक्रिया। मैं तो सिर्फ आपसे आपके बारे में मालूम करना चाहता था। आपके हालात भी दूसरे सितमजदा लोगों से भिन्न नहीं हैं। मैं यहां एक अजनबी था और अब भी हूं। सुनारिया के अन्दरूनी मुआमलात से मुझे कोई सरोकार नहीं, लेकिन आपको एक बात बता दूं। एक जिम्मेदारी सौंपी गयी है मुझे कोरसार के रुहानी पेशवा की तरफ से–वह जो कोरसार की सीमा का प्रहरी है–जिसने पूरे कोरसार का संविधान बनाया है।"

"राजगुरु मुकद्दस फलांग जो कोरसार का मजहबी पेशवा है...।"

"हां–वही–तो बस यों समझ लीजिये कोरसार के मजहबी पेशवा ने यह जिम्मेदारी मेरे कांधों पर रखी है कि कालकों के खिलाफ जंग करूं और उस वक्त तक जंग करता रहूं जब तक उनका वजूद हमारी दुनिया से मिट नहीं जाता। सुनारिया के अन्दरूनी मुआमलात से जैसा कि मैंने आपको बताया है कि मुझे कोई सरोकार नहीं है लेकिन मैं यहां उस वक्त तक रहना चाहता हूं जब तक सुनारिया में खुरेंजी खत्म न हो जाय। जब सुनारिया के बुझे हुए चिराग दोबारा रोशन हो जायेंगे तो आप इस अजनबी शख्स को अच्छे शब्दों में याद जरूर कर लीजियेगा।" शोला ने उन दोनों नौजवानों की तरफ निगाहें डालते हुए कहा–"और मेरे अजीज नौजवानो! मुझे इजाजत दो, लेकिन जब तुम अपनी मुहिम का आगाज करोगे तो यह हकीर सा इन्सान तुम्हारे शाना-ब-शाना होगा।" यह कहकर शोला अपनी जगह से उठ खड़ा हुआ। उसी वक्त सीथ और लाजा आगे बढ़े और उसके दायें-बायें खड़े हो

गये। उन्होंने दोनों तरफ से शोला के बाजू पकड़ लिये थे।

"सुनारिया के मजलूम बाशिन्दों को तुम जैसे रहनुमा की जरूरत है शोला। काश! हम बाहर निकलकर ऐलान कर सकते कि लोगो! वह आ गया है जिसका तुम्हें मुद्दतों से इन्तिजार था। जिसकी भविष्यवाणी बहुत पहले की गयी थी। तुम सब मिलकर उसके बाजुओं को मजबूत करो। अब ईरोज के जुल्मोसितम की दास्तानों का किस्सा खत्म होने वाला है। अगर हम ऐसा करते तो हमें फख्र होता, लेकिन हमारे मोआज्जिज दोस्त! तुम हमें बुजदिल न कहना। हम इसी बस्ती के रहने वाले हैं। हमारी बेमकसद की बहादुरी हमारे खानदानों को खत्म कर देगी। इस वक्त सुनारिया के चप्पे-चप्पे पर तुम्हारी तलाश हो रही है और हमारी खुशकिस्मती है कि इस वक्त तुम हमारे मेहमान हो। हम तुम्हें दिन की रोशनी में नहीं जाने देंगे। अगर तुम्हें कुछ काम करने हैं तो रात के अंधेरे में अन्जाम दो। तुम्हारे लिये इस घर से ज्यादा सुरक्षित जगह बस्ती में दूसरी कहीं नहीं हो सकती। हम बस्ती के हालात पर नजर रखेंगे और तुम्हें सूचना देते रहेंगे कि तुम्हारे खिलाफ क्या कार्यवाहियां हो रही हैं। क्या समझे....।"

"लेकिन मैं....।" शोला ने कहना चाहा तो वह दोनों बोल पड़े—

"हम समझते हैं कि हमारी यह पेशकश ज्यादा बहतर है। हमें खिदमत का मौका दिया जाय।"

शोला के होठों पर मुस्कराहट आ गयी, "तुम बहुत छोटे हो। इतनी छोटी-सी उम्र में तुम पर बहुत भारी जिम्मेदारी आन पड़ी है। फिलहाल मैं तुम्हें किसी मुश्किल में नहीं डालना चाहता। इस घर की व्यवस्था पूर्ववत चलती रहनी चाहिये। अभी इसमें ऐसी कोई तब्दीली न की जाय। इसलिये मेरा यहां रुकना मुमकिन नहीं है।"

"अगर तुम मेरे बेटे होते तो मैं कम-से-कम दिन की रोशनी में तुम्हें न निकलने का हुक्म देती।" बूढ़ी औरत ने कहा।

"ठीक है तो फिर सिर्फ रात होने तक मैं आपके हुक्म की तामील करूंगा।" शोला ने कहा।

शोला वहां रुक गया। दोनों लड़के काम पर चले गये। रात के होते ही वह वापस आ गये और शोला को रिपोर्ट देने लगे।

"ईरोज जख्मी भेड़िये की तरह गुर्राता फिर रहा है। उसकी इतनी बुरी हालत है कि पहले कभी उसकी ऐसी हालत नहीं देखी गयी। उसके पालतू कुत्ते तुम्हारी बू सूंघते फिर रहे हैं। और इस वक्त उसने अपने तमाम आदमी सिर्फ और सिर्फ तुम्हारी तलाश में लगा दिये हैं। आदेश दिये गये हैं कि बस्ती में किसी भी नन्हें अजनबी को देखा जाय तो उसे जिन्दा या मुर्दा फौरन गिरफ्तार कर लिया जाय। चारों तरफ दूर-दूर तक उसके आदमी फैल गये हैं और उसने शायद गुरबान से और मदद तलब की है।"

"यह तो बड़ी खुशी की बात है। एक आदमी के स्वागत के लिये इतनी ज्यादा तैयारियां की गयी हैं। खैर! मैं आज ही ईरोज से मुलाकात करके उसे संतुष्ट करने की कोशिश करूंगा।"

"क्या मतलब?" वह दोनों चौंककर बोले।

"मेरा मतलब है कि आज उसके दो चार आदमी जरूर मेरे हाथों जख्मी होने चाहिये।" शोला ने कहा और दोनों हैरान निगाहों से शोला को देखने लगे। खुद जुनाबिया के चेहरे पर भी हैरत के भाव थे।

लाजा ने कहा—"नहीं, बिल्कुल नहीं। यह एक अक्लमंदी वाला कदम नहीं होगा—खास तौर से आज रात ईरोज की सख्त हिदायत है कि...।"

"नहीं मेरे दोस्त! यह जरूरी है। हम बोदों की पुश्त पर दिन रात इसलिये गुजारते हैं कि हमें ज्यादा सतर्क रहने का सुझाव न मिले। तुम सुबह बहुत-सी बातें सुनोगे। हमारी यह रात मेरा मतलब है मेरी यह रात बोदे की पुश्त पर ही उचित रहेगी।"

"यानि कि तुम...।"

"हां—मैं इसके अलावा न तो और कुछ कहना चाहता हूं न सुनना चाहता हूं।" लड़कों ने फिर कुछ कहना चाहा लेकिन जुनाबिया ने हाथ के संकेत से उन्हें रोक दिया।

"तुम जो कुछ भी करोगे, मैं सिर्फ तुम्हारे लिये दुआयें ही कर सकती हूं।"

"और अगर हम तुमसे कहें कि आज रात की इस मुहिम में तुम हमें भी अपने साथ कर लो।"

जवाब में शोला हंसने लगा—"नहीं मेरे भाई। यह उचित नहीं है।"

फिर रात के सन्नाटे में शोला उस इमारत से निकल आया था। उसने बोदे का रुख इरोना के कहवेखाने की तरफ कर दिया और थोड़ी देर के बाद वह वहां पहुंच गया। अपने आपको मुकम्मल तौर पर तैयार करके वह कहवाखाने में दाखिल हुआ और उसने एक लम्हे के अन्दर उन चारों लोगों का जायजा ले लिया जो गुस्सलह थे और यकीनी तौर पर ईरोज के आदमी थे। इस वक्त वह चारों एक मेज के गिर्द बैठे कहवा पी रहे थे। दरमियान में क़हवे का एक बड़ा प्याला रखा गया था। जैसे ही शोला कहवाखाने में दाखिल हुआ, वह चारों उसे देखकर चौंक पड़े और उनके चेहरे उतर गये। उनमें से एक ने दूसरे को कोहनी मारी और दूसरे ने बदहवासी में रिवॉल्वर पर हाथ डालने की कोशिश की, लेकिन उसी वक्त पिस्तौल की गोली ने दरमियान में रखे कहवे के बर्तन के चीथड़े उड़ा दिये और उन चारों की एकदम चीखें निकल गयीं। शोला आहिस्ता-आहिस्ता आगे बढ़ता हुआ उनके करीब पहुंच गया। फिर उसने अपना पिस्तौल हौलेस्टर में लगाया और हाथ बढ़ाकर उस शख्स का पिस्तौल उसके हौलेस्टर से निकाल लिया जिसने उठने की कोशिश की थी। उसके बाद उसने उसका गिरेबान पकड़कर उसकी जेबों की तलाशी लेनी चाही, लेकिन वह शख्स प्रतिरोध पर तुल गया। शोला का हाथ एक दायरे की शक्ल में घूमा और वह शख्स कई फुट दूर जा गिरा। बाकी तीनों ने अपनी जगह से जुम्बिश करने की कोशिश की तो शोला ने पिस्तौल की नाल उनकी कनपटी पर रख दी। वह एकदम से साकित हो गये थे। शोला ने एक और शख्स के बाल पकड़े और उसका सिर पूरी कुव्वत से मेज पर दे मारा। उसके साथ ही उसने उस शख्स का रिवॉल्वर भी हासिल कर लिया। फिर उसके बाद शेष दोनों की हिम्मत नहीं हुई और वह एकदम से साकित हो गये। शोला ने उसका असलहा अपने कब्जे में किया और फिर इधर-उधर देखने लगा। एक तरफ इरोना सम्मोहित-सी खड़ी थी। उससे कुछ फासले पर कहवाखाने का बूढ़ा मालिक फटी-फटी आंखों से शोला को देख रहा था।

तब शोला की गुर्राती हुई आवाज उभरी—"कहवा लाओ।"

इरोना एकदम से जैसे होश में आ गयी। चंद ही लम्हों के बाद कहवा का प्याला शोला को पेश कर दिया गया और शोला

बड़े सुकून से कहवे के घूंट लेने लगा। कहवाखाने में गहरा सन्नाटा छा गया था। फिर जब शोला ने उस कहवे की कीमत अदा की तो इरोना के कंठ से एक आवाज-सी निकली। उसी वक्त वहां बैठे एक शख्स ने दरवाजे की तरफ छलांग लगायी थी। उसने दरवाजे के करीब पहुंचकर कांपते हाथों से दरवाजा खोला। मगर शोला ने उसके पैरों को निशाना बनाया और वह शख्स उछलकर एक तेज चीख के साथ नीचे गिर पड़ा। वह न जाने कौन था लेकिन उनमें से नहीं था। वह जमीन पर गिर पड़ा। शोला ने सिर्फ उसका एक पांव जख्मी किया था और वह जमीन पर इस तरह साकित बैठा हुआ था जैसे उसकी जान निकल गयी हो। शोला की निगाहें एक पल के लिये ईरोना की ओर उठीं तो उसने महसूस किया कि ईरोना की आंखों में बहुत ही हर्ष भरा अन्दाज है।

कहवा खत्म करने के बाद शोला बड़े शाहाना अन्दाज में कहवाखाने के दरवाजे की ओर बढ़ गया। जाते हुए उसने उस जख्मी को ठोकर मारी थी। शोला आहिस्ता-आहिस्ता चलता हुआ कहवाखाने से बाहर निकल आया था। फिर एक बाजार में उसने तीन लोगों को देखा जो टहलते हुए आगे जा रहे थे।

शोला को बोदे पर सवार देखकर वह रुके और उनमें से एक ने कहा—"कहो क्या खबर है? क्या तुमने उसे देखा। कमबख्त सचमुच छलावा है और मेरा ख्याल है ईरोज उसके सिलसिले में गलती कर रहा है।"

अचानक ही उन्होंने बोदसवार पर गौर किया और एक पल में ही उन्हें अन्दाजा हो गया कि वह उनका अपना साथी नहीं बल्कि वह 'वान्टेड' शख्स है। वही शख्स जिसके लिये यह सारा हंगामा हो रहा है। असल में सबसे बड़ी बात जो शोला के हक में जाती थी, वह यह थी कि वह एक प्रेत की हैसियत से मशहूर हो गया था, और बड़े-बड़े जियाले अभी तक यह फैसला नहीं कर पाये थे कि वास्तव में वह एक प्रेत है या जिन्दा इन्सान।

शोला बोदे से नीचे उतरा। वह लोग दहशतभरी निगाहों से उसे देख रहे थे। शोला ने उनमें से एक के पेट में लात मारी और वह एक कराह के साथ औंधा हो गया। तब शोला की उल्टी लात उसके मुंह पर पड़ी और वह फिजा में तीन कलाबाजियां खाकर एक तरफ गिर पड़ा। बाकी दोनों ने भागने की कोशिश

की थी लेकिन शोला के पिस्तौल से दो फायर हुए और उन दोनों की पिंडिलियों की हड्डियां चूर-चूर हो गयीं। शोला इस काम से फुर्सत पाने के बाद अपने घोड़े पर सवार हो गया और आगे बढ़ गया और फिर वह किसी नये शिकार की तलाश में सरगर्म हो गया। सारी रात कहरो गजब और हंगामों की हाहाकारी रात थी। ईरोज को उसकी बेबसी ने पागल कुत्ते से भी बदतर बना दिया था। उसके चेहरे पर छाये गुरूर की स्याही छंट गयी थी। वह अपने मातहतों के सामने जलील हो रहा था। शोला ने उसके मुंह पर थूक दिया था। उसकी तमाम ताकत को चकनाचूर कर दिया था। बहरहाल, ईरोज उस रात के हादसे पर पागल हुआ जा रहा था, क्योंकि उस अजनबी ने सुनारिया में सरकशी का एक अध्याय खोल दिया था और यह कोई मामूली बात नहीं थी। ईरोज जानता था कि उसका खौफ ही उसे सुनारिया वालों से सुरक्षित रख सकता है, वरना वह उसकी तिक्का बोटी करके फेंक देंगे। उसे डर पैदा हो गया था कि शोला के हाथों उसकी जिल्लत सुनारिया के नौजवानों में बारूद भर देगी। वह यह जान जायेंगे कि एक आदमी का कुछ नहीं बिगाड़ा जा सकता और उसके बाद मुमकिन है उनके अन्दर बगावत की चिंगारी फूट पड़े। वह महसूस कर रहा था कि शोला की शक्ल में एक बहुत बड़ा खतरा तलवार की तरह लटक रहा है और अगर शोला चाहे तो उन नौजवानों को संगठित करके उनकी रहनुमाई शुरू कर दे। वह जानता था कि अगर ऐसा ही गया तो सुनारिया के बिफरे हुए नौजवान जो बजाहिर खामोश नजर आते थे, बाआसानी शोला के गिर्द इकट्ठा हो जायेंगे।

बहरहाल, रात की कहानी जगह-जगह से उसके इल्म में आयी थी। शोला ने लगभग डेढ़ दर्जन लोगों को जख्मी कर दिया था। सूरतेहाल ऐसी थी कि अगर शोला चाहता तो उन तमाम लोगों को कत्ल भी कर सकता था, लेकिन उसने जानबूझकर ऐसा नहीं किया था। ईरोज के गिर्द उसके खुशामदी जमा थे और कोशिश कर रहे थे कि ईरोज को उसकी शिकस्त का एहसास न होने दें। वह अपनी फिजूल बातों से उसे बता रहे थे कि यह सब कुछ तो होता ही रहता है। दुश्मन भी बहरहाल ताकतवर होता है और अपने तौर पर कोशिश करता है कि कुछ कार्यवाही करे, लेकिन आखिरकार वह अपने ही हाथों मारा जाता है। वह सब

कुछ कह रहे थे, लेकिन ईरोज दिल ही दिल में अपनी गलती स्वीकार कर रहा था और सोच रहा था कि उसने शोला के सिलसिले में जो कुछ किया है वह गलत किया है। वह जो कुछ शोला को समझता था, शोला उससे भिन्न निकला। बहरहाल गलतियां दूसरों के सामने तस्लीम नहीं की जातीं। सबसे ज्यादा उसे उन लोगों की फिक्र थी जो उसकी अमलदारी में रहकर शोला के साथ न सिर्फ हमदर्दी कर रहे थे, बल्कि उसकी जान बचाकर उसे पनाह का रास्ता फराहम कर रहे थे। वरना एक अजनबी शख्स शोला बिना स्थानीय लोगों के सहयोग से इस तरह जिन्दगी नहीं गुजार सकता था। ईरोज को अब शोला से ज्यादा उन छुपे हुए दुश्मनों की फिक्र हो रही थी। उसे खतरा था कि घर के भेदी लंका न ढावें।

उसने गुर्राती आवाज में कहा—"अनगिनत शस्त्रधारी लोग रात भर उसकी तलाश में सरगर्म रहे और वह रातभर उनके सामने आकर उन्हें जख्मी करता रहा। मैं पूछता हूं आखिर ऐसा क्यों हुआ? तुम लोग जो कुछ कह रहे हो वह मेरे लिये बिल्कुल निरर्थक है। मैं सिर्फ जवाब चाहता हूं। एक ऐसा जवाब जो थोड़ी बहुत राहत पहुंचा सके।"

"मोआज्जिज आका! दरअसल मैं आपको असली बात बताता हूं। हमारे आदमियों पर इस बात की दहशत सवार है कि वह एक रूह है। हम उसके खिलाफ वह सब कुछ नहीं कर पाते जो करना चाहते हैं। सिर्फ इसी वजह से कि कहीं वह प्रेत न हो।"

ईरोज ने खुंख्वार नजरों से उसे देखा फिर बोला—"और मुझे इल्म है कि तुम भी उन्हीं भागने वालों में से हो—क्यों?"

"नहीं ईरोज! ऐसा नहीं है। हम भूतों से नहीं डरते। लेकिन सबसे बड़ी बात यह है कि इसका फायदा उसे मिल रहा है। हकीकत यह है कि वह भूत नहीं एक जबरदस्त लड़ाका है जो बिजली की तेजी से काम करता है। मगर ईरोज! एक बात की निशानदेही मैं करना चाहता हूं। आखिर वह इस दौरान कहां रह रहा है। कहां से खा रहा है? कौन उसके पीछे है? हमें सबसे बड़ा खतरा उन लोगों से है जो किसी शख्स को इस तरह पनाह दे सकते हैं। अगर वह जिन्दा है तो बेमकसद जिन्दा नहीं होगा। उसे फांसी के तख्ते पर पहुंचाया गया था। उसकी गर्दन में रस्सी

डालकर उसे लटकाया गया था। फिर उसमें जिन्दगी कहां से दौड़ गयी। अगर ऐसा नहीं है तो फिर ईरोज! वह सिर्फ और सिर्फ एक भूत है। असल काम तो हमारा है, वह यह कि हम उसके मददगारों को तलाश करें।"

"अच्छी तरह जानता हूं मैं—अच्छी तरह जानता हूं। बस्ती के कुछ सिरफिरे मुझसे टकराना चाहते हैं, ताकि मेरे खिलाफ बगावत की जा सके।"

"आह! काश! उनकी निशानदेही हो सके ताकि हम उनकी गर्दनें काटकर सुनारिया के बड़े दरवाजे पर लटका दें।" वहां मौजूद कई लोगों ने कहा।

"अभी नहीं। यह वक्त भी बहुत करीब आ जायेगा। बहुत ही करीब। मेरे लिये यह जरूरी है कि मैं अपने मालिक सुनारिया के रखवाले गुरबान को इस सूरतेहाल के बारे में क्या सूचना दूं। अब मुझे सिर्फ गुरबान की हिदायत लेनी है। वह बुद्धिमानों का बुद्धिमान है। हम सब उससे अक्ल हासिल करते हैं। वह जो भी हिदायत देगा, मैं उस पर ही अम्ल करूंगा और मैंने फैसला किया है कि बस्ती के चार मोआज्जिज लोग मेरे साथ जायेंगे ताकि मैं उनकी मौजूदगी में आका गुरबान से निर्देश हासिल करूं और बस्ती वालों को उनके बारे में बताऊं।"

ईरोज के चेहरे पर एक अजीब-सी मक्कारी फैल गयी थी। उसकी आंखों में खून और नफरत थी। लेकिन उसके लहजे में उसकी आवाज में एक मक्कारी की झलक नजर आती थी। न जाने क्या चाहता था वह और न जाने क्यों वह सब कुछ कर रहा था। उनके बाद उसने खुद ही उन चार मोआज्जिज लोगों का चयन किया और बोला—"हमारी रवानगी का बन्दोबस्त किया जाय।" फिर वह तैयारियां करने के बाद उन चारों लोगों को साथ लेकर गुरबान के किले नुमा मकान की ओर चल पड़ा था। यह हकीकत थी कि उसे शोला के खौफ ने बदहवास कर दिया था। इसलिये उसने अपनी हिफाजत के लिये मुस्सलह लोगों का एक बड़ा दस्ता भी साथ ले लिया था, जबकि इससे पहले उसे अपनी हिफाजत के लिये रक्षक दस्ते की जरूरत नहीं पड़ी थी। वह किसी से खौफजदा नहीं होता था। सुनारिया में रहने वाले तो खुद उसके नाम से कांपते थे, लेकिन पहली बार उसके दिल में भी खौफ का

बसर हुआ था। वह किसी से नहीं डरता था। यहां तक कि लोगों का ख्याल था कि वह गुरबान से भी नहीं डरता। गुरबान की ताकत तो वह खुद ही था। उससे क्या डर था, लेकिन मुसीबत यह थी कि इस वक्त अपने आपको भयभीत जाहिर करने का मकसद अपनी साख को हमेशा-हमेशा के लिये खो देना था। अतः इस खौफ को किसी तौर पर भी उजागर नहीं कर सकता था। गुरबान की रिहाइशगाह सुनारिया के बाकी मकानों से अलग एक पहाड़ी के दामन में थी, जो रिहाइशगाह उसने पहाड़ी पत्थरों को तराशकर बनायी थी। वह बेइन्तहा लम्बी चौड़ी इमारत थी—दूसरे शब्दों में यह एक किला था। इस पहाड़ी में सुरंगों का जाल बिछा हुआ था और कोई नहीं जानता था कि गुरबान अपनी इस रिहाइश गाह में कब आता है और कब जाता है—किस वक्त वह अन्दर दाखिल होता है। उसकी वजह यह थी कि उसका आवागमन अपनी सुरंगों के जरिये होता है। इमारत का सदर दरवाजा तो बहुत कम इस्तेमाल करता था। बहरहाल, इसमें कोई शक नहीं कि यह इमारत बस्ती सुनारिया वालों के लिये बहुत रहस्यमय थी। वैसे भी गुरबान की शक्ल बहुत कम लोगों ने देखी थी। तरह-तरह की रहस्यमय कहानियां उन्होंने खुद ही जन्म देकर उस शैतान से जोड़ दी थीं। लेकिन ईरोज उससे कहीं ज्यादा मक्कार और चालाक था। उसे गुरबान के बारे में हर जानकारी हासिल रहती थी। उसके तमाम जासूस गुरबान के किले में उसके लिये जानकारियां फराहम करने के लिये मौजूद थे। और इस तरह उन्होंने गुरबान के किले पर कब्जा कर रखा था कि खुद गुरबान भी उन पर भरपूर भरोसा किया करता था। ईरोज को सूचना मिल चुकी थी कि गुरबान किले में मौजूद है। अतः इस वक्त भी जब ईरोज ने अपने आने की सूचना गुरबान को पहुंचायी तो उसने उसे फौरन तलब कर लिया, क्योंकि वह जानता था कि ईरोज अकारण उसके पास नहीं आया होगा। लेकिन ईरोज के साथ जो लोग आये थे उनकी हालत बहुत खराब थी। बस्ती सुनारिया तो सुनारिया, खुद इस किले नुमा इमारत में रहने वालों में से बहुत सों ने गुरबान को कभी नहीं देखा था। बस्ती के किसी फर्द को तो कभी गुरबान के सामने आने का मौका ही नहीं मिला था। उनके दिलों पर गुरबान का खौफ इस तरह छाया हुआ था कि

अगर ईरोज उन्हें तसल्लियां नहीं देता रहता तो वह कभी गुरबान के रूबरू आने की सोच भी नहीं सकते थे।

बहरहाल, इस हौलनाक और रहस्यमय इमारत को जिसको मीलों के फासले से देखा जा सकता था और सुनारिया के किसी भी शख्स को इसके करीब आने की इजाजत नहीं थी, करीब से देखकर उन लोगों पर बड़ा खौफ सवार हो गया था। उन्हें इस पहाड़ी में बनी हुई इमारत के बड़े दरवाजे के अन्दर दाखिल किया गया और पेच दर पेच रास्तों से गुजरते हुए एक कमरे में पहुंचा दिया गया जो सिर्फ बाहर से आने वाले मुलाकातियों के लिये सुरक्षित था। फिर थोड़ी देर बाद गुरबान कमरे के दरवाजे में प्रकट हुआ। वह इस वक्त भी नकाब से अपने चेहरे को ढके हुए था। उसके नौकर ने पांच लोगों के आगमन की उसे सूचना दी थी। ज्योंही गुरबान ने कमरे में कदम रखा, वह पांचों खड़े हो गये। चार मोआज्जिज लोगों ने तो निगाहें भी झुका ली थीं। गुरबान को नमन करने के बाद गुरबान के इशारे पर उन लोगों को बैठने का अवसर मिला और गुरबान खुद भी बैठ गया।

"क्या बात है ईरोज?" उसकी धारदार आवाज कमरे के सकून को तोड़ती हुई उन चारों के कानों से टकरायी तो वह घबरा गये।

"खादिम का ख्याल है कि आप सुनारिया के ताजा तरीन हालात से अनभिज्ञ नहीं होंगे।" ईरोज ने कहा।

"क्या तुम उस लड़के की बात करते हो जो अपना नाम शोला बताता है और जो एक आवारागर्द है—इसके अलावा कुछ नहीं।" गुरबान की भारी आवाज कमरे में गूंजी।

"हां—अजीम गुरबान! यह हकीर-सा कीड़ा ईरोज महान गुरबान से उसके बारे में बात करने आया है।" ईरोज ने अपने लहजे में नफरत को दबाते हुए कहा।

"तुम्हें यह यकीन क्यों नहीं था कि हमसे सुनारिया के हालात छुपे नहीं हैं।" गुरबान की आवाज उभरी—"सुनो! न तो हम सुनारिया के हालात से अनभिज्ञ हैं और न ही तुम लोगों की बुजदिली हमसे छुपी हुई है। एक अजनबी मुसाफिर ने तुम लोगों की नाक काटकर रख दी है और तुम सिर्फ बैठकर मशवरे कर रहे हो। ईरोज! मुझे तुमसे यह उम्मीद नहीं थी कि इस छोटे से

मसअले को इतना लम्बा करोगे और उसके बारे में मशवरा करने के लिये तुम मेरे पास दौड़े आओगे। तुमने एक तन्हा आदमी को क्या-क्या बना दिया। क्या तुम इस बात को नहीं सोच रहे? इसका मतलब है कि सुनारिया के रहने वाले अब इस कदर कमजोर हो गये हैं कि कोई अजनबी आये तो बात हम तक पहुंच जाये। मैं तुमसे पूछता हूं इस मामूली से हकीर इन्सान को बस्ती में इतनी शोहरत क्यों दी गयी। उसे उसी वक्त हलाक क्यों नहीं किया गया जब तुमने उसके बारे में सुना था कि उसने गुरबान के बनाये कानून को तोड़ा है।''

कमरे में गहरी खामोशी छा गयी थी। ईरोज दम साधकर रह गया था। उसके तसव्वुर में भी नहीं था कि गुरबान इतना सचेत होगा।

गुरबान की आवाज फिर उभरी—''मुझे जवाब चाहिये। खामोश बैठने के लिये मैंने तुमसे शब्द नहीं कहे।''

''अजीम गुरबान!'' ईरोज की गिड़गिड़ाती हुई आवाज उभरी—''मैं तेरे खादिमों का खादिम अपनी कोताही पर शर्मिन्दा हूं। लेकिन बदनसीबी यह है कि सुनारिया के लोग ईरोज और गुरबान को क्रूर और जालिम समझते हैं। उनका ख्याल है कि हम उनकी जिन्दगी बर्बाद किये हुए हैं और उनके लिये दिलों में नफरत रखते हैं। हालांकि यह सच नहीं है। इतना भी गौर नहीं करते कि किसी हुक्म या कानून पर अम्ल करने के लिये कुछ सरकश लोगों पर सख्ती करना बेहद जरूरी होता है। अगर ऐसा न किया जाय तो सुनारिया के चप्पे-चप्पे पर खुंरेजी होने लगे। हर शख्स अपनी-अपनी हकूमत बनाने लगे। ताक़तवर कमजोरों से जिन्दगी छीन लें। उन्हें जीने का हक न दें। महान गुरबान के गुलाम बल्कि गुलामों के गुलाम ने यही सोचकर कुछ सख्तियां की थीं, लेकिन सुनारिया वाले बदगुमान होने लगे और उन्होंने हमें जालिम समझ लिया। मेरी गलती सिर्फ इस कदर है कि मैंने उसे मौका दिया था कि अगर वह मेहमान की हैसियत से आया है तो मेहमान की हैसियत से कुछ अर्सा सुनारिया में गुजारकर यहां से चला जाय। उसने हमारी नर्मी से गलत फायदा उठाकर हमारी मेहमानदारी के उसूलों के खिलाफ अम्ल शुरू कर दिया और अब वह तन्हा पहाड़ों में भटक रहा है। रात की तारीकियों में पहाड़ियों से

निकलकर बस्तियों में आता है और हंगामा करके चला जाता है। इसकी बुनियादी वजह यह है कि सुनारिया के कुछ लोग उसका साथ दे रहे हैं। महान गुरबान यह भी जरूर जानता होगा कि उसने एक दरवेश को भी कत्ल कर दिया था। उसने हमारी बस्ती में आकर हमारी आस्थाओं पर चोट की है। फांसी से लेकर कब्र में फरारी तक कोई तो उसका मददगार होगा।'' ईरोज अपनी बात खत्म करके खौफजदा निगाहों से गुरबान को देखने लगा।

कुछ क्षण खामोशी रही फिर गुरबान की आवाज उभरी—''हां—हम तुम्हारी इस बात से सहमत हैं, लेकिन सुनारिया वाले अगर मूर्खता कर रहे हैं तो उनकी मूर्खता का जवाब मूर्खता से नहीं देंगे। यह हमारा फर्ज है कि उसका सर कलम करा दें ताकि बस्ती में इस फितने का खात्मा हो जाय। हम हुक्म देते हैं कि सुनारिया वालों को इस बात पर अमादा किया जाय कि उनमें से हर शख्स शोला का दुश्मन बन जाय और वह सब मिलजुलकर शोला को हलाक कर दें। यह सिर्फ हमारी ही नहीं उन सबकी जिम्मेदारी है कि बस्ती में सिर उठाने वाले हर फितने को खत्म कर दें और फिर सबसे बड़ी बात यह कि उसने एक दरवेश को कत्ल किया है। सजा के तौर पर उसकी मौत तो लाजमी है।''

''लेकिन क्या सुनारिया वाले इसके लिये तैयार होंगे कि वह शोला को तलाश करें।''

''सवाल उनकी तैयारी का नहीं है...उनकी जिम्मेदारी का है।'' गुरबान ने कीमती अंगूठियों से भरा हाथ उठाते हुए कहा—''अगर वह सुनारिया के बाशिन्दे हैं और सुनारिया में गुरबान के वफादार बनकर रहना चाहते हैं तो उन्हें चाहिये कि टोलियां बना लें और रातों को गर्दिश करें और जहां कहीं भी उन्हें शोला नजर आये, उसे हलाक कर दें। गिरफ्तार करने की कोई जरूरत नहीं है। अगर उन्होंने ऐसा नहीं किया तो हम उन्हें भी गद्दारों में शुमार करेंगे और गद्दारों की जो सजा है वह सुनारिया वाले बखूबी जानते हैं।'' गुरबान के लहजे में बला की सफ्फाकी थी।

तब ईरोज ने सीने पर हाथ रखकर झुकते हुए कहा—''महान गुरबान! तेरा हुक्म सर आंखों पर। यहां सुनारिया के चार बुजुर्ग हैं, जो उनके प्रतिनिधि बनकर आये हैं। यह तेरे सामने मौजूद हैं। लोग इन पर भरोसा करते हैं। तेरा हुक्म इनकी जुबानी

सुनारिया के बाशिन्दों तक पहुंचेगा और अगर उन्होंने तेरे हुक्म से गर्दन मोड़ी तो मुझे इजाजत और अधिकार दे कि मैं गद्दारों को तलाश करके हलाक कर डालूं।"

"ऐलान करा दिया जाय कि बाहर का शख्स जहां कहीं भी छुपा है, अपने आपको गुरबान के हवाले कर दे—वरना उसके ऐवज में सुनारिया के चार इन्सान रोजाना हलाक होते रहेंगे और उनकी हलाकत का बायस वह शख्स बनेगा।" गुरबान ने हुक्म दिया। लेकिन अभी उसकी बात खत्म भी नहीं हुई थी कि चारों बुजुर्गों ने एक दूसरे की तरफ देखा।

फिर एक ने हाथ उठाकर कहा—"मैं कुछ कहना चाहता हूं महान गुरबान!"

गुरबान की आंखों का रुख उसकी तरफ हो गया।

"हां—बोलो क्या कहना चाहते हो?"

"महान गुरबान! मैं सुनारिया के लिये रहम की भीक मांगता हूं। बाहर से आने वाले इस शख्स के दिल में भला सुनारिया वालों के लिये क्या हमदर्दी हो सकती है। वह स्थानीय वाशिन्दा है नहीं। वह जो कुछ भी कर रहा है अपने लिये कर रहा है। सुनारिया से उसे जोड़ना दुरुस्त नहीं। मैं उन लोगों की सिफारिश बिल्कुल नहीं कर रहा हूं जो उसकी मदद कर रहे हैं, लेकिन शोला के सर के ऐवज में सुनारिया का सर रखा जाय तो क्या यह सुनारिया के साथ इन्साफ होगा।"

गुरबान ने चंद लम्हे सोचा फिर ईरोज की तरफ देखकर बोला—"तुम...इस सिलसिले में क्या कहते हो ईरोज।"

इरोज घबरा गया था। उसे गुमान नहीं था कि इन चारों में से कोई जुबान भी रखता है और इस तरह वह अपनी जुबान खोल देगा।

उसने कहा—"मैं रहमदिल गुरबान से सिफारिश करता हूं कि बस्ती के मोअज्जिज बुजुर्ग की बात मान ली जाय। मैं उसकी राय से सहमत हूं कि शोला की खातिर सुनारिया के लोगों को हलाक करना मुनासिब नहीं है। शोला को उससे कोई नुकसान नहीं पहुंचेगा। इस वक्त तो सिर्फ यही बेहतर है कि हम उन पर कड़ी नजर रखें जो शोला की मदद कर रहे हैं। मैं उनमें से किसी को जिन्दा नहीं छोड़ूंगा।"

"ठीक है।" गुरबान ने भर्राई हुई आवाज में कहा—"तुम सब की ख्वाइश पर मैं अपना हुक्म वापस लेता हूं। लेकिन जिस कदर जल्द मुमकिन हो, शोला का किस्सा पाक हो जाना चाहिये। कुछ और कहना चाहते हो तुम?"

"नहीं—बस इतना ही काफी है और इसीलिये हम तुझे तकलीफ देने के लिये हाजिर हुए हैं गुरबान।"

"ठीक है, फिर जाओ। मैं समझता हूं मेरी और तुम्हारी मुलाकात लाभदायक हुई है।" गुरबान उठ खड़ा हुआ। उसके साथ ही वह पांचों भी गर्दन झुकाकर उठ खड़े हुए थे। गुरबान उसी रास्ते से वापस चला गया जहां से आया था। ईरोज के साथियों की आंखों में अजीब से भाव नजर आ रहे थे।

❑❑❑

बूढ़ी जुनाबिया की परेशान निगाहें उस वक्त तक दरवाजे पर लगी रहती थीं जब तक कि उसके दोनों पोते नहीं आ जाते थे। वह एक बुलन्द जगह बैठी दरवाजे को तकती रहती थी और जब वह दोनों अन्दर दाखिल हो जाते तो वह एक गहरी सांस लेकर आसमान को देखती हुई अपनी जगह से उठ जाती थी। उसकी अपनी जिन्दगी तो बहुत पहले खत्म हो चुकी थी—सिर्फ उस वक्त जब उसका इकलौता बेटा इस दुनिया से रुखसत हुआ था। अब अगर कोई चीज जिन्दा रखे हुए थी तो सिर्फ एक प्रण, एक संकल्प, एक मकसद उसकी बूढ़ी हड्डियों में जिन्दगी बनकर दौड़ता रहता था। कई बार नाकाम होकर उसने चाहा कि रात के अंधेरों में सुनारिया को छोड़ दे और अपने दोनों पोतों को रात के अंधकार में लेकर इस सरजमीन से निकल जाय। लेकिन जब वह ऐसा सोचती तो खंडरात में बनी हुई एक कब्र उसके कदम रोक लेती। उसे ऐसा लगता था जैसे कब्र के पांयती कोई बैठा हुआ इन्तिजार कर रहा हो—उस वक्त का—जब जालिम गुरबान, ईरोज और उसके दूसरे साथियों को बदतरीन मौत दबोचे और यह एहसास जुनाबिया के इरादे बदल देता था। उसका सिर्फ एक ही मकसद था। सुनारिया में ईरोज से बगावत की हौसला अफजाई और उन लोगों की मदद जो गुरबान के सितम से निकलना चाहते हैं। उसने अपनी इस पूरी जिन्दगी को इस काम के लिये समर्पित कर दिया था और इससे पहले वह इस कदर पुर उम्मीद नहीं थी जब तक

शोला उससे नहीं मिला था।

हकीकत यह है कि शोला ने उसकी आरजुओं में जान डाल दी थी। वह अपने दोनों पोतों से हर वक्त शोला ही की बात करती रहती थी। कई बार उसने शोला की कामयाबी के लिये दुआयें भी मांगी थीं। न जाने क्यों उसके दिल को यकीन था कि शोला जिसका सम्बन्ध उनसे नहीं है, उन सबका मुक्तिदाता होगा। बजाहिर उसके पास अपने यकीन की कोई दलील नहीं थी, लेकिन दिल की बातें दिल ही जानता है। जब नाकामयाबियां बहुत बढ़ जाती हैं तो फिर आसमानों से कुछ फैसले होते हैं और शोला उसे आसमान का फैसला ही नजर आता था। हां–अगर बदनसीबी ने अब भी दामन न छोड़ा और वह अपने मकसद में नाकाम रहा तो...तो फिर कुछ नहीं कहा जा सकता था कि क्या होगा। इस वक्त भी ऐसी तमाम सोचें हमेशा की तरह उसके दिल में सिर उठाये खड़ी थीं जो उनकी जिन्दगी का हिस्सा बन चुके थे। क्योंकि सीध और लाजा शोला की कछार में रहकर उसके खिलाफ काम कर रहे थे, इसलिये जुनाबिया को हर वक्त यह खौफ रहता था कि कहीं उनका राज न खुल जाय। अगर ऐसा हुआ तो न जाने उन बच्चों का क्या हुआ होगा। वह जानती थी कि यह नौउम्र लड़के हैं। पुरजोश और नातजुर्बेकार। जबकि दुश्मन ताकतवर भी है और चालाक भी। बहरहाल वह हमेशा उनकी सलामती की दुआ करती रहती थी और इस वक्त भी वह दोनों उसकी निगाहों में गर्दिश कर रहे थे। लेकिन फिर हमेशा की तरह हंसी खुशी अन्दर दाखिल हुए। उनके चेहरे सुर्ख हो रहे थे और आंखों में अजीब से भाव थे।

जुनाबिया ने उन दोनों के सिरों पर हाथ फेरते हुए पूछा–"यकीनन तुम्हारे पुरजोश चेहरे बताते हैं कि कोई खास बात है।"

"बहुत ही ख़ास दादी जी।" लाजा ने पुरजोश लहजे में कहा।

"जरा बताओ तो सही।" जुनाबिया के अन्दाज में भी दिलचस्पी प्रकट हो गयी।

"ईरोज गुरबान के पास गया था। पिछली रात शोला ने जो हंगामा बरपा किया है, उसकी प्रतिक्रिया भी बहुत तीव्र हुई

है। सुनारिया के वह लोग जो अन्दर ही अन्दर बगावत की तैयारियां कर रहे हैं, उन्हें बड़ा हौसला मिला है। उनकी आरजुओं में शोला ने एक नया रंग भर दिया है। उन्हें यह भी यकीन है कि अब गुरबान और ईरोज अपराजित नहीं रहे। वह सब लोग शोला की जिन्दगी की दुआ मांग रहे हैं, और दादी! हम भी आपसे इजाजत चाहते हैं कि जिस तरह भी बन पड़े अन्तिम कार्यवाहियों का आगाज कर दें।''

जुनाबिया ने उन दोनों को साथ लिया और बिल्कुल अन्दरूनी हिस्से में पहुंच गयी कि कहीं दीवारें भी उनकी बातें न सुन लें।

उसने उन दोनों की पेशानी बारी-बारी चूमी और फिर कहा—''मेरे योग्य बच्चो! बहुत ज्यादा जोश नुकसान देता है। मैं तुम्हारे जज्बात से वाकिफ हूं। खुद पर काबू पाने की कोशिश करो। मैं जानती हूं कि तुम ईरोज से ज्यादा करीब हो। जरा-सी चूक होगी तो नुकसान भी तुम्हें ही ज्यादा पहुंचेगा। अपने जवान खून को मेरे तजुर्बे में शामिल करो। मुझे सुनारिया के हालात बताओ कि मैं कोई नतीजा निकाल सकूं।

''शोला ने जैसा कहा था, वैसा ही करके दिखा दिया। उसने रात ही से अपनी कार्यवाहियों का आगाज कर दिया था। ईरोज से न सिर्फ उसकी झड़प हुई, बल्कि उसने उसे बेबस कर डाला। उसने बेशुमार आदमी जख्मी कर दिये हैं। दादी मां! शोला बहुत चालाक है। हमारी आशा से कहीं ज्यादा चालाक। उसने अपना बोदा भी कहीं छुपा दिया है और स्थानीय बोदों को इस्तेमाल कर रहा है। मुझे यकीन है कि यह वही शख्स है जिसके बारे में भविष्यवाणी की गयी थी कि एक शख्स बाहर से आयेगा और सुनारिया में क्रान्ति हो जायेगी।'' लाजा ने जोशीले अन्दाज में कहा—''और दादी जी! ईरोज गुरबान के पास चार बुजुर्गों को लेकर पहुंचा था। गुरबान ने उसे हुक्म दिया है कि सुनारिया बस्ती के लोगों की टोलियां बनाकर पूरी बस्ती और उसके आसपास के इलाकों में फैला दें। यह लोग शोला को हलाक करने के लिये भरपूर काम करें। सुनारिया ने इस सिलसिले में कोताही की तो गुरबान की सजा के हकदार होंगे। दादी! उसने तो बहुत खौफनाक हुक्म दिया था। उसने कहा था कि अगर वह लोग नाकाम रहे

तो चार आदमी रोजाना हलाक किये जायें–उस वक्त तक जब तक शोला सामने न आ जाय। लेकिन फिर उसने अपना यह हुक्म वापस ले लिया था क्योंकि सुनारिया के एक मौअज्जिज फर्द ने इस हुक्म के खिलाफ आवाज उठायी थी। हैरत की बात है कि पहली बार गुरबान ने अपना हुक्म वापस लिया है। सुनारिया के इतिहास में आज तक ऐसा नहीं हुआ।'' सीघ ने भी पुरजोश अन्दाज में कहा।

''वह तो सब ठीक है, लेकिन सुनारिया वालों की प्रतिक्रिया के बारे में कुछ पता चला?'' जुनाबिया ने सवाल किया।

''इतनी जल्दी तो खैर किसी प्रतिक्रिया की सम्भावना भी नहीं हो सकती। फिलहाल तो सबके सब दिल ही दिल में खुश होकर मंसूबे बना सकते हैं। आप इस बारे में क्या कहती हैं? आपकी उम्र ने जो तजुर्बा आपको बख्शा है, दादी! उसको सामने रखकर हमें बताइये कि क्या गुरबान का सितारा अस्त होगा या नहीं।'' लाजा ने कहा और बूढ़ी जुबानिया की आंखें किसी ख्याल में डूब गयीं। आहिस्ता-आहिस्ता उसके होठों पर मुस्कराहट उभर आयी। उसने पोतों के सवाल को अनदेखा करते हुए रहस्यमय स्वर में कहा–

''और मेरा ख्याल है इस हुक्म से शोला को लाभ पहुंचेगा।''

''कौन-सा हुक्म?''

''वह जो गुरबान ने दिया है।''

''कैसे?'' दोनों लड़के एक साथ बोले।

''तुम जानते हो कि शोला जिन्दा इन्सान है। वह सिर्फ अपनी चालाकी से सुनारिया के भेड़ियों को चक्कर देता फिर रहा है। वह इस वक्त इससे जरूर फायदा उठाने की कोशिश करेगा। फर्ज करो, कुछ लोगों की टोलियां शोला को तलाश करती फिर रही होंगी। अगर शोला खुद भी किसी टोली में अपने आपको शामिल कर खुद अपनी तलाश में लग जाय और जब भी उसे मौका मिले? वह दुश्मनों के खिलाफ कार्यवाही कर डाले...यह एक बेहतरीन जरिया हासिल हो जायेगा उसे।''

''लेकिन दादी! शोला पहचान लिया जायेगा अपने कद की वजह से–वह सुनारिया के वाशिन्दों से कुछ छोटा लगता है।''

''नहीं–सुनारिया में भी कुछ छोटे कद के लोग मौजूद हैं।

सुनारिया का लिबास पहनकर वह सौ प्रतिशत सुनारी लगने लगेगा। जरा सोचो—क्या गुरबान के लड़ाके उसे तलाश कर सकेंगे? मैं तो कहती हूं कि मेरे ख्याल में शोला को यही करना चाहिये।''

''अगर उसके जहन में यह बात आ जाये तो शायद वह ऐसा कर गुजरे।'' लाजा ने कहा।

''क्या हम उससे सम्पर्क स्थापित करने की कोशिश करें?'' सीध बोला।

''नहीं।'' बूढ़ी जुनाबिया ने गर्दन हिलायी—''शोला हमसे कहकर गया था कि गुरबान और ईरोज का ध्यान अपनी तरफ आकर्षित करेगा और हम लोग अपने काम में पहले की तरह लगे रहें। सुनो! मेरे बच्चो! तुम अपना काम करो और वह अपना काम करे। उसकी सोच हमसे ज्यादा ताकतवर हो सकती है। हम उस पर अपनी कोई सोच हावी न करें तो अधिक उचित होगा।''

''तो फिर ठीक है, क्या हमें अपने काम का आगाज कर देना चाहिये?'' लाश ने पूछा।

''काम का आगाज किस तरह किया जाय?'' सीध ने पूछा।

''रात में सुनारिया के त्रिपालों की टोलियां सड़कों पर निकलेंगी। खण्डरात में बाजारों में, वीरानों में हर जगह शोला को तलाश किया जायेगा और तुम खुद भी उसकी तलाश करने वालों में शामिल हो जाओ। इस तरह तुम यह भी खबर रख सकोगे कि शोला को किसी टोली ने गिरफ्तार तो नहीं कर लिया और दूसरे यह कि उन लोगों से भी सम्पर्क कर लो जो अन्दर ही अन्दर बगावत के लिये कमर कसे हुए हैं। उनको खबरदार करो कि वक्त आ गया है, अब बगावत कर दी जाय। उन्हें इकट्ठा कर लो और उनसे कहो कि खण्डरात के नीचे जो पनाहगाह बनी हुई है, सब वहां जमा होना शुरू हो जायें और ज्यों ही शोला को जरूरत पड़े वह जिन्दगियों को दांव पर लगाकर बाहर निकल आयें।''

''आह! काश! आप आज ही रात हमें काम शुरू करने की इजाजत दें।'' लाजा ने हाथ मलते हुए कहा।

''मैं तुम्हें इजाजत देती हूं।'' बूढ़ी जुनाबिया निर्णायक स्वर में बोली।

''अब ज्यादा सहूलियत पसंदी से काम लेना उचित नहीं

होगा। आग भड़क चुकी है। हमें सिर्फ हवा देना है। हमारे पास इतना असलहा तो मौजूद है कि हम गुरबान के आदमियों का शुरूआती हमला रोक सकें। अपने मददगारों को यही सब कुछ बताना है कि मुस्सलह होकर उन पर हमला करेंगे जो शोला की तलाश में सरगर्म होंगे। इस तरह हमारी बगावत का आगाज हो जायेगा।"

"ठीक है दादी मां! जो कुछ आपने कहा है, हम वैसा ही करेंगे।" सीध ने कहा।

"बल्कि बेहतर तो यह होगा कि तुम कगोल से मिल लो। कगोल लोमड़ी की तरह चालाक और शोला का हमदर्द है।" जुनाबिया ने कहा।

"बेहतर! क्या हमें यहां से जाने की इजाजत है।"

"हां—जा सकते हो।" जुनाबिया ने जवाब दिया और दोनों भाई दादी से इजाजत लेकर वहां से बाहर निकल गये। उधर गुरबान का हुक्म सुनारिया के गली बाजारों और घरों-कूचों में पहुंच गया था। नौजवान जियालों के हाथों में एक व्यस्तता भरा काम आ गया और उन्होंने अपनी-अपनी टोलियां बना लीं, फिर वह चारों तरफ फैल गये। कगोल ने भी लाजा और सीध को देख लिया था। कगोल खुद भी एक टोली के पीछे चल पड़ा था, लेकिन इन दोनों को देखने के बाद वह अपनी टोली से कटकर इनके पास पहुंच गया। उसके हाथ में एक लम्बी कुल्हाड़ी थी। उसके करीब पहुंचकर उसने उन दोनों को खाली हाथ देखा और आश्चर्यचकित स्वर में बोला।

"अरे वाह! क्या खाली हाथ सुनारिया के भूत को गिरफ्तार करोगे?"

दोनों चौंककर कगोल को देखने लगे।

"मैंने सुना है कि वह अकेला ही सैकड़ों पर भारी है। उसे पकड़ने या हलाक करने के लिये बड़े हथियार दरकार होंगे। क्या खेलकूद कर उसे पकड़ोगे। लेकिन नहीं। तुम भी क्या कर सकते हो। ईरोज ने दबी जुबान में यह कहलवाया था कि शोला को जिन्दा या मुर्दा पकड़ने के लिये अगर सुनारिया वालों को मजबूर किया जा रहा है तो उन्हें हथियार भी दे दिये जायें। क्या निहत्थे लोग किसी ऐसे शख्स को गिरफ्तार कर लेंगे जो चालाक और

बहादुर भी हो और मुस्सलह (हथियारबंद) भी। ईगोज ने मेरी इस बात को स्वीकार कर लिया था। मेरे बच्चो! सीध और ताजा मुझे बताओ तो सही भला कुल्हाड़ी इस सिलसिले में क्या काम कर सकती है जबकि दुश्मन ज्यादा से ज्यादा दो गज के फासले पर हो और तुम्हारे सामने हाथ बांधे खड़ा हो कि आओ अपनी कुल्हाड़ी से हमारी गर्दन उतार लो। इसके विपरीत अगर दुश्मन आग के हथियार से लैस किसी पहाड़ी चट्टान के पीछे छुपा हो तो कुल्हाड़ी क्या काम दिखा सकती है। लेकिन इसके बावजूद सुनारिया के तमाम जियाले कुल्हाड़ियों, लकड़ियां डंडे जो भी उन्हें हासिल हो रहा है, लेकर बाहर निकल आये हैं और अब वह सब के सब शोला की तलाश में दीवाने हो रहे हैं। अगर शोला दरवेश को हलाक न करता तो सुनारिया इस जोशो खरोश से उसकी तलाश में व्यस्त न हो जाता।" कगोल ने खामोश होकर उन पर निगाह डाली।

सीध ने फौरन कहा—"बस करो कगोल! हमारे आस-पास दूसरे लोग भी बिखरे हुए हैं। तुम्हें उनका ख्याल रखना चाहिये।"

"मेरे बच्चे! मैं भला बेचारा नकारा सा आदमी क्या कह सकता हूं। मैं तो सिर्फ तुमसे यह सवाल कर रहा हूं कि तुम खाली हाथ शोला को किस तरह हलाक करोगे।" कगोल ने अपना सिर खुजाया। कुछ देर खामोश रहने के बाद बोला—"खैर! कोई बात नहीं है। इस वक्त तो हमारी टोली सिर्फ तीन लोगों तक सीमित है। मगर यह करो कि कहीं से लम्बे-लम्बे डंडे हासिल कर लो ताकि हम भी शोला को तलाश करने वालों में शामिल हो जायें। मैं तुम्हारी मुलाकात उस शेर से कराने के लिये पाबन्द हूं और यही काम मुझे दिया गया है कि तुम दोनों को तलाश करके उस तक पहुंचा दूं।" कगोल ने एक बार फिर इधर-उधर चौकन्नी निगाहों से देखा।

दोनों लड़कों को हंसी आ गयी। सीध ने कहा—"कगोल! तुम जैसे इन्सान के बारे में कोई सोच भी नहीं सकता कि तुम अन्दर से इतने गहरे और ऊपर से इतने सपाट हो। हम तुम्हारी ही तलाश में निकले थे।"

"खूब...खूब...!" कगोल ने अहमकों की तरह कहकहे लगाते हुए कहा—"गोया तुम भी कोई मंसूबा रखते हो। यकीनन

माताजी ने कोई नयी तरकीब सोची होगी। मुझे तो हैरत है कि वह इतनी बूढ़ी होने के बावजूद...आह...जवानी के आलम में तो उनकी स्थिति कुछ और ही होगी...।"

कगोल का अन्दाजा कुछ ऐसा था कि दोनों लड़के उसे घूरने लगे, फिर लाजा ने कहा--"तुम वास्तव में सुनारिया के गधे हो--पूरे-के-पूरे गधे। किसी के बारे में कुछ कहने से पहले अपने अल्फाज को तोल लेना चाहिये।"

"आह! इसी नाप तोल में तो कमजोर रहकर सुनारिया का सबसे अहमक आदमी बन गया हूं। लेकिन क्या हम एक जगह खड़े होकर एक बेमकसद बातचीत नहीं कर रहे। दूसरे लोग अपने-अपने कामों में व्यस्त हैं और अगर कुछ कर नहीं पा रहे तो कम से कम इत्मीनान जरूर कर रहे हैं। वैसे भी तमाम टोलियां ज्यादा से ज्यादा लोगों की हैं और हम सिर्फ तीन। मगर क्या किया जाय। चौथे की गुन्जाइश भी तो नहीं है हमारे पास क्योंकि सिर्फ हम ही हैं जिन्हें उस अजनबी से मिलना है। बाकी लोग तो अपना समय भी जाया कर रहे हैं और दूसरे का भी--आओ।" कगोल ने कहा और वहां से आगे बढ़ गये। कुछ देर बाद उन्होंने लकड़ियों का एक बड़ा जखीरा तलाश किया और फिर उसमें से उम्दा किस्म के अपनी पसंद के डंडे उठा लिये। उसके बाद वह भी उन लोगों के से अन्दाज में आगे बढ़ गये जो शोला की तलाश में इधर-उधर घूमते फिर रहे थे। अजीबोगरीब हालात पैदा हो गये थे। पूरी बस्ती जद्दोजहद में व्यस्त थी। नौजवानों ने रोजाना के कामों से हाथ उठा लिया था और शोला की तलाश में मारे-मारे फिर रहे थे। वह दिल से नहीं चाहते थे कि शोला को मुर्दा या जिन्दा गिरफ्तार करके गुरबान के सामने इज्जत कमायें। उन्हें इस अजनबी नौजवान से मुहब्बत हो गयी थी जिसने ईरोज और गुरबान को भयभीत कर दिया था। बहरहाल, वह तीनों आगे बढ़ते रहे। किसी ने उन पर कोई ध्यान नहीं दिया। अलबत्ता कगोल के हाथ में कुल्हाड़ी देखकर बस्ती के चंद लोग हंसते हुए गुजर गये थे।

जब वह काफी दूर निकल आये तो कगोल ने कहा--"हां--तो हम क्या बातें कर रहे थे।"

"बातें तो कुछ नहीं कर रहे थे। तुमने यह वादा किया था कि तुम हमें शोला के पास ले जाओगे। क्या तुम्हें इल्म है कि

वह इस वक्त कहां है?" सीध ने कहा।

"मेरे बच्चे! अगर इल्म न होता तो तुम्हें उस तक ले जाने की जिम्मेदारी कैसे लेता। शोला कितना ही बहादुर और ताकतवर क्यों न हो, लेकिन कगोल के बगैर बहुत-सी गाड़ियां नहीं चलतीं और अब तो मैंने अपनी जिन्दगी को इस काम के लिये समर्पित कर दिया है। जिसका बीड़ा शोला ने उठाया है। मेरे बच्चो! सारी उम्र सुनारिया बस्ती के हर उस शख्स से डरता रहा हूं जिसके बदन में थोड़ी सी भी जान रही हो, लेकिन अब इस आखरी उम्र में मैंने भी बहादुर बनने का फैसला कर ही लिया है। दरअसल हर अम्र के लिये एक खास वक्त की जरूरत होती है। ऐसा लगता है कि अब वह वक्त आ गया है जब सुनारिया में क्रान्ति होगी और इस सिलसिले में हमें बहुत कुछ करना है।"

"बताओ।"

"मैंने ऐसे नौजवानों पर निगाह रखी है जो दिल की गहराइयों से गुरबान और ईरोज से नफरत रखते हों, लेकिन शोला से भी बद्‌दिल हैं क्योंकि उसने द्ररवेश की हत्या की है।"

"तो फिर?"

"मैंने उन्हें दूसरा सबक पढ़ाया है।" कगोल ने अपनी धंसी हुई छोटी-छोटी आंखें फैलाकर कहा।

"वह क्या सबक है कगोल?" सीध बोला।

"बात तो बिल्कुल सच्ची ही है लेकिन समझाने का अन्दाजा जरा भिन्न है। मैंने पहले उनके दिल टटोले कि वह अपनी नफरत में कितने गहरे हैं। मैंने ऐसे किसी शख्स को अपना राजदार नहीं बनाया जिसकी नस्ल में जरा बराबर भी खराबी थी। ऐसा आदमी किसी भी वक्त गद्‌दारी कर सकता है। अतः मैंने ऐसे लोगों को जमा करके सूरतेहाल यों समझाई कि शोला अव्वल तो सुनारिया का बाशिन्दा नहीं है और न ही यहां के बारे में कुछ ज्यादा जानकारी रखता है। यानि कि दरवेश को हलाक करने का उसका कोई इरादा न था और वह जानता भी नहीं कि दरवेश क्या होता है। यह सुनारिया के लोगों को उसके खिलाफ भड़काने की एक साजिश थी जो दरअसल ईरोज की साजिश कही जा सकती है और इसमें कोई शक नहीं है कि ईरोज ने अपनी इस साजिश में सौ प्रतिशत कामयाबी हासिल की है। इसका मकसद लोगों के दिलों में शोला

के प्रति नफरत पैदा करना है ताकि कहीं यह नौजवान शोला को अपना पेशवा बनाकर बगावत न कर दें। दरवेश का कत्ल ही एक ऐसा काम था जिसकी वजह से शोला के खिलाफ दिलों में इन्तकाम पैदा हो सकता था। मैंने इन नौजवानों को इसी बात पर कायल कर लिया कि अगर दरवेश का कत्ल किसी आफत का प्रतीक होता तो अब तक बस्ती पर आफत टूट चुकी होती। और कुछ नहीं तो कम से कम कालके ही हमला कर देते या फिर शोला इस आफत का शिकार हो जाता। जबकि आफत तो ईरोज पर टूटी है क्योंकि दरवेश उसी की साजिश से मारा गया। बच्चो! वह लोग मेरी बात के कायल हो गये। मैंने उन्हें यकीन दिलाया कि शोला के विरोध से उन्हें कुछ हासिल नहीं होगा। जिन्दगी ने उन्हें एक सुनहरा मौका फराहम किया है। अगर वह यह मौका खो बैठे तो फिर ईरोज और गुरबान से कभी छुटकारा हासिल नहीं होगा। इस मौके से फायदा उठायें—वगैरह-वगैरह। अब वह सब शोला का साथ देने को तैयार हो चुके हैं।" कगोल ने बड़े विवरण सहित यह बातें बतायीं।

"ओह! कगोल! तुमने तो अपनी सारी जिन्दगी की हिमाकतों का पाप धो डाला बल्कि अब तो यही कहना उचित होगा कि अहमक तो वह है जो तुम्हें अहमक समझते हैं। ओह! तुमने तो सचमुच हाण्डी चढ़ा दी है और बस उबाल बाकी रह गया है। हमें तो कुछ भी नहीं करना पड़ा। तुम वाकई बेहद अजीब हो कगोल। इस बस्ती ने तुम्हारी कदर नहीं की। हकीकत तो यह है कि तुम ही इस बस्ती के सरदार बनने के काबिल हो।" कगोल ने दोनों आंखें बन्द कीं और मुस्कराने लगा।

"कद्रदानी का शुक्रिया।" वह बोला—"वह बूढ़ा सरदारी के काबिल कहां है। अलबत्ता यह बता दूं कि मेरी जहनी योग्यतायें मूर्खता की तह में छुपी हुई थीं। दरअसल मैंने अपना जहन थोड़ा-थोड़ा करके खर्च किया है कि कहीं दिवालिया न हो जाऊं। और अब मेरा बचा हुआ जहन काम आ रहा है। जखीरा कोई भी हो—एक-न-एक दिन बुरे वक्त में जरूर काम आ जाता है। वैसे बुजुर्ग जुनाबिया ने इस सिलसिले में कौन-सी कौड़ी निकाली है।"

"मैं बता दूंगा। तुम यह बताओ कि शोला से कहां मुलाकात

होगी।" सीध ने कहा।

"शोला ने एक विशेष जगह पर मिलने को कहा है। अब तुम अपना मंसूबा बताओ ताकि मैं उसका जायजा ले सकूं।" कगोल बोला।

"हमारी दादी का कहना है कि शोला ने हमारे लिये जान की बाजी लगायी है और हमें मौका दिया है कि हम जुल्म का मुकाबला करें। इससे बेहतर मौका फिर कभी नहीं आयेगा। शोला की इस कुर्बानी को व्यर्थ नहीं जाने दिया जाये। आज रात को खण्डहर में किसी वक्त एक गुप्त सभा कर ली जाय और वहां मौजूद तमाम लोगों से सुझाव लेकर फैसले किये जायें।"

"तुम्हारी दादी का फैसला बिल्कुल सही है।" कगोल पुरख्याल अन्दाज में गर्दन हिलाकर बोला।

फिर चंद लम्हे खामोश रहने के बाद कहने लगा—"हम आज रात इसमें कामयाब नहीं हो सकेंगे। मेरे दोस्त! काम बहुत बड़ा है और वक्त कम। अगर आज रात सभा न भी करें तो परेशानी की कोई बात नहीं। अभी कल का दिन और कल की रात हमारे पास है और शायद और भी कितने दिन और कितनी रातें ऐसी आयेंगी जिनमें शोला को तलाश करने का काम जारी रहेगा। शोला के न मिलने से गुरबान परेशान होगा। गजबनाक होकर फैसले बदलेगा। उसके आदमी पागल कुत्तों की तरह सड़कों पर दौड़ते फिरेंगे और हम उस वक्त अपने तमाम लोगों को जमा कर सकते हैं।"

"लेकिन दादी की ख्वाइश है कि आज रात ही को...।" सीध ने कहा।

"अगर यह बात है तो जितने लोग हमें बाआसानी से हासिल हो सकेंगे, हम आज ही रात उन्हें खण्डरात में ले आयेंगे और निर्णायक बात कर लेंगे।"

"क्या शोला भी उनमें शामिल होगा?" सीध ने पूछा।

"हरगिज नहीं, क्योंकि उसने फैसला किया है कि यह रात भी सुनारिया के लिये यादगार बनायेगा। वह ऐसी जगहों पर हमले करेगा जहां गुरबान के खास लोग होते हैं।"

"ओह! क्या सचमुच?" सीध ने बेताब होकर कहा।

"तब तो यही बेहतर है कि तुम शीघ्रातिशीघ्र हमारी

मुलाकात उससे कराओ।"

"हां—मैं कोशिश करता हूं। आओ, हम आहिस्ता-आहिस्ता उसी सिम्त बढ़ रहे हैं जहां मुलाकात का वक्त तय है।"

फिर वह बस्ती के बाहर जंगलों की तरफ बढ़ गये।

□□□

ईरोज की हालत बिल्कुल पायल कुत्ते जैसी हो रही थी। उसका सारा भरम टूट गया था। सुनारिया में लम्बे अर्से की जद्दो जहद के बाद उसने पूरी बस्ती को अपनी गिरफ्त में ले लिया था। लेकिन अब वह गिरफ्त कमजोर होती नजर आ रही थी। उसकी दीवानगी इन्तहा को पहुंचती जा रही थी और उसका बस नहीं चल रहा था कि शोला को जहां से भी मुमकिन हो सके उसे तलाश करे और अपने दांतों से उसकी खाल उधेड़ दे। मगर न जाने उसे जमीन खा गयी थी या आसमान निगल गया था। बहरहाल, उसने एक आखरी कोशिश करने का फैसला किया। उसको ख्याल हुआ कि शायद उसकी कोशिश शोला को तलाश करने में कामयाब हो ज़ाय। उसने खुद पन्द्रह आदमियों की एक टोली बनायी और खामोशी के साथ वीरानों की तरफ निकल गया। रास्ते में उसने सुनारिया के लोगों की टोलियां देखी थीं जो अपने-अपने तौर पर किसी न किसी तरह शस्त्रों से लैस होकर शोला को तलाश करती फिर रही थीं। इन बेशुमार टोलियों को देखकर उसे किसी कदर इत्मीनान भी हासिल हुआ था कि उसका हुक्म टालने की अभी तक किसी में जुर्रत नहीं हुई। सुनारिया के लोग उसकी जुबान की एक जुम्बिश पर घरों का आराम छोड़कर गली-गली, कूचे-कूचे घूमते फिर रहे हैं। ईरोज जानता था कि सुनारिया वाले उसे अच्छी निगाह से नहीं देखते, लेकिन शोला की तलाश में दरवेश के कत्ल का जज्बा भी था और इसलिये उसने जिस हकीमत अम्ली से काम लिया था, उस पर वह आज तक फख्र करता था। उसने अपने आदमियों के साथ खामोशी से पहाड़ों, दर्रों और वीरानों में शोला को तलाश किया। वह पूरी तरह उसकी तलाश में मारा-मारा फिर रहा था। उसे न जाने क्यों यह यकीन था कि शोला अवश्य कहीं न कहीं नजर आ जायेगा। शायद यह उसकी तकदीर ही थी कि उसने एक बुलन्द चट्टान के एक हिस्से में शोला के बोदे को देख लिया। बोदे की पुश्त बेशक खाली थी, लेकिन शोला का बोदा

हजारों में पहचाना जा सकता था। वह अपनी शारीरिक बनावट और सेहत के हिसाब से दूसरे बोदों से भिन्न था।

ईरोज के साथियों ने उसे पहचानने के बाद सरगोशी में कहा—"यह मैं...यही है...यकीन करो ईरोज! मैं इस बोदे को पहले भी देख चुका हूं। यह शोला का बोदा है।"

"तुम क्या कहना चाहते हो?" ईरोज ने कर्कश स्वर में कहा।

"यही कि वह यकीन यहीं कहीं मौजूद होगा। बोदे की यहां मौजूदगी शोला की मौजूदगी जाहिर करती है। लेकिन अगर हमने खामोशी और होशियारी से उसे न घेरा तो इससे अच्छा मौका कभी हमें नहीं मिल सकता।"

ईरोज सोच में डूब गया, फिर उसने आहिस्ता से कहा—"मेरे ख्याल में इन पहाड़ियों को हमें चारों तरफ से घेर लेना चाहिये।"

"ईरोज! अगर हम इन पहाड़ों में चारों तरफ फैल गये तो फिर यहां से शोला का निकलना सम्भव न होगा।" ईरोज के एक और साथी ने कहा।

"हां—अगर हमने उसके गिर्द तंग घेरा कायम किया तो हो सकता है कि वह जगह तलाश करके यहां से निकल जाय। हमें एक लम्बे-चौड़े इलाके को घेरना चाहिये।"

"ठीक है...लेकिन यह अन्दाजा लगाने की भी तो कोशिश करो कि वह इस वक्त कहां हो सकता है।" ईरोज ने कहा।

"बोदे को यहां छोड़कर अधिक दूर नहीं जा सकता। करीब ही होगा।"

"तो फिर उसे तलाश करो। चारों तरफ फैल जाओ।" ईरोज ने कहा और वह बेआवाज आगे बढ़ने लगे। सतर्कता का यह आलम था कि वे पत्थर की एक कंकरी भी गिरने की आवाज नहीं पैदा होने दे रहे थे। वह जानते थे कि शोला हथियारों से लैस है और अगर वह चौकन्ना हो गया तो पत्थरों की ओट से भी उसके निशाने खाली नहीं जा सकते। ईरोज की खुशकिस्मती थी कि शोला उसकी आशा के अनुरूप यहां मौजूद था। वास्तव में वह इन चट्टानों में सीध, लाजा और कगोल का इन्तिजार कर रहा था। उसे इस बात का बिल्कुल अन्दाजा नहीं था कि ईरोज बजाते खुद उसकी तलाश के लिये निकल खड़ा होगा और सही जगह पहुंच जायेगा। पहाड़ों पर अंधेरा फैला हुआ था, लेकिन

अंधेरा इतना गहरा नहीं था कि हाथ को हाथ न सुझायी दे। शोला ने आज भी एक हथियारबन्द टोली से जंग की थी। वह यह तो जानता ही था कि सुनारिया के लोगों के पास हथियारों के नाम पर लाठी डंडे या कुल्हाड़ी होती थी, इसलिये वह ऐसी किसी टोली से नहीं भिड़ता था जो लाठी डंडों से लैस हो—क्योंकि उनके बारे में यह अन्दाजा था कि यह मासूम लोग बेगुनाह हैं और सिर्फ अपनी जिन्दगी बचाने के ख्याल से निकल खड़े हुए हैं। अत: उन्हें बेसूर समझकर वह बचता बचाता इन पहाड़ों में निकल आया था और अब वह यहां कगोल का इन्तिजार कर रहा था। जहन में उसके वही मंसूबा था जो कगोल ने पेश किया था। उसने फैसला किया था कि वह सीध, लाजा, कगोल के साथ दो और आदमी लेगा और छः आदमियों की टोली बनाकर खुद अपनी तलाश में सरगर्म हो जायेगा। इस तरह वह टोली की शक्ल में ईरोज की रिहाइशगाह पर हमला करने का ख्वाइशमंद था। वह अकेला भी यह सब कुछ कर सकता था, लेकिन कगोल का भी यही मशविरा था कि एक ऐसी पार्टी बनायी जाय जिस पर कोई शक न हो। कगोल ने उसके लिये सुनारिया वाला लिबास भी फराहम कर लिया था और बहुत सी ऐसी हिदायतें भी दे दी थीं कि वह दूर से देखने में सुनारिया का ही बन्दा मालूम हो। वैसे शोला के अपने ख्याल में यह ईरोज की मूर्खता ही थी कि उसने इस तरह की टोलियां बना डाली थीं। भला आग के हथियारों के सामने सुनारिया के लोग क्या टिकेंगे। लेकिन कगोल ने उसके इस ख्याल की पुष्टि कर दी थी और उसने कहा कि ईरोज जैसे शैतान के महल तक पहुंचना बड़ा मुश्किल काम है। टोलियां उसने अकारण नहीं बनायी होंगी। उसका मंसूबा यह भी हो सकता है कि वह शोला को बस्ती वालों से लड़ा दे। लड़ाई में यकीनन शोला के हाथों कुछ लोग मारे जायेंगे और इस तरह बस्ती के जो लोग थोड़े बहुत हमदर्द हैं, वह भी शोला के खिलाफ हो जायेंगे और उसका मकसद हल हो जायेगा। यानि कि सुनारिया वाले खुद शोला से अपनी मौत का इन्तकाम लेंगे। बात शोला की समझ में भी आयी थी। बहरहाल, इस वक्त वह कगोल का इन्तिजार कर रहा था। उसे यकीन था कि कगोल, लाजा और सीध को तलाश करके उस तक ले आयेगा। वह बिल्कुल बेफिक्र बैठा हुआ था और उसके

फरिश्तों को भी गुमान नहीं था कि दुश्मन उसे बड़ी चालाकी से घेर रहे हैं। उसे वह सरसराहटें भी नहीं सुनायी दी थीं जो ईरोज के आदमियों के आगे बढ़ने से पैदा हो रही थीं। ईरोज के आदमियों ने सतर्कता की हद कर दी थी। वह शोला के घोड़े से बचकर आगे बढ़ गये थे। शोला का घोड़ा अगर उनकी मौजूदगी से बाखबर होता तो अवश्य ही शोला को आगाह कर देता। वह शोला को देख चुके थे और अब वह बड़ी कामयाबी के साथ उसके गिर्द घेरा डाल रहे थे। उन सबकी यही कैफियत थी जैसे किसी जंगली शेर का शिकार करने के लिये आगे बढ़ रहे हों। वह सब आहिस्ता-आहिस्ता उस घेरे को तंग करते जा रहे थे। वैसे शोला की बेखबरी पर भी उन्हें हैरत थी और वह इस खौफ का शिकार हो गये थे। कहीं वह उन्हें धोका तो नहीं दे रहा। खुद को उनकी मौजूदगी से बेखबर जाहिर तो नहीं कर रहा। ईरोज के एक साथी ने जो उसके निकट ही था उसके कान में सरगोशी की।

"आह! श्रीमान ईरोज! तुमने देखा कि वह शोला ही है ना...।"

"म...मुझे तो वही नजर आ रहा है। तुम्हारा अपना क्या ख्याल है?" ईरोज ने कांपती हुई आवाज में पूछा।

"मैं उसे कई बार देख चुका हूं...वह वैसे तो शोला ही है...लेकिन...लेकिन न जाने क्यों वह हमसे अनभिज्ञता जाहिर कर रहा है। जबकि वह इतना बेफिक्र नहीं हो सकता।"

"तुम ऐसा करो, बन्दूक संभालो। उसे मौका नहीं देना चाहिये।"

"ठीक है।" उसने कहा। ईरोज ने उसे गोली चलाने की अनुमति दे दी थी। अतः वह शख्स अभी गोली चलाने भी नहीं पाया था कि अचानक एक दिशा से लगातार दो-तीन गोलियां चलीं और उस चट्टान से टकरायीं, जिसके अकब में शोला का घोड़ा बंधा हुआ था। ईरोज गोलियों की आवाज पर उछल पड़ा था। उसने शोला को चौंकते हुए देखा और फिर शोला किसी सांप की तरह जमीन पर रेंग गया। शोला के किसी हमदर्द ने गोलियां चलाकर शोला को खतरे से आगाह कर दिया था। इसका मतलब तो यही है कि सचमुच शोला यहां अकेला नहीं है। कुछ भी था—ईरोज को गजबनाक कर देने के लिये यह अम्ल काफी था।

वह गुर्राकर बोला—"यह हरकत किस गधे ने की है?" उसकी आवाज में भेड़ियों जैसी गुर्राहट थी। अभी वह कुछ और भी कहने वाला था कि उसे अपनी जिन्दगी बचाने के लिये बड़ी फुर्ती से जमीन पर लेट जाना पड़ा—क्योंकि उसी चट्टान से गोलियां उसकी सिम्त आयी थीं जहां ईरोज खड़ा हुआ था। ईरोज के नजदीक खड़े हुए शख्स को उन लोगों से अत्याधिक नुकसान पहुंच गया था। वह ईरोज की तरह न तो फुर्तीला था और न ही खतरे को इतनी जल्दी भांपने वाला। लिहाजा कुछ गोलियां उसे चाट गयीं और उसकी दिल दहला देने वाली चीख पहाड़ों में गूंज उठी। उसके सीनों से खून का फौव्वारा फूट पड़ा था। यह सूरतेहाल ईरोज के लिये आशा के विपरीत थी। उसका साथी चंद कदम फासले पर पड़ा तड़प-तड़पकर ठण्डा हो रहा था। अब ईरोज के साथियों ने भी चट्टान की तरफ गोलियां चलाना शुरू कर दीं। दोनों तरफ से बराबर फायरिंग हो रही थी। लेकिन उसी वक्त ईरोज को बौखलाना पड़ा जब एक और सिम्त से भी गोलियां बरसना शुरू हो गयीं। उधर से ईरोज के साथियों को चुन-चुन कर निशाना बनाया जाने लगा। न जाने कौन था—कैसा गजब का निशाना बना था जो रात के इस अंधकार में ऐसा सही निशाना लगा रहा था जिस पर जादूगरी का गुमान हो। ईरोज के लिये यह जानना दुश्वार हो गया था कि दोनों तरफ से गोलियां खाने वाले शोला के मददगार हैं या महज ईरोज के विरोधी या कहीं शोला जानबूझकर उनसे अनभिज्ञता का इजहार तो नहीं कर रहा था। यह भी मुमकिन था कि उसके आदमी इन चट्टानों में बिखरे हुए हों और उन्हें ईरोज के आगमन का इल्म हो गया हो। अब सूरतेहाल संभालना ईरोज के बस से बाहर हो गया था। उसके साथियों के पांव उखड़ गये। उनमें भगदड़ मच गयी। वह लोग जो अपनी कामयाबी का यकीन लेकर शोला को हलाक करने के लिये चट्टान की ओर बढ़ रहे थे, अब अपनी जानें बचाने के लिये इधर-उधर भागने लगे और इस तरह घबराकर भागने से उन्हें जानी नुकसान पहुंचने लगा। अनजानी दिशा से चलाई जाने वाली गोलियां उन्हें चाट रही थीं। देखते-ही-देखते उनके पांच आदमी मौत के घाट जा उतरे। बाकी लोग अपनी जान बचाकर भाग खड़े हुए थे। भागने वालों में ईरोज खुद भी शामिल था। भागते हुए उनके दो

आदमी जख्मी हो गये थे। वह इस तरह भागे थे जैसे मौत उनका पीछा कर रही हो। मैदान साफ हो चुका था। लेकिन शोला अपनी जगह हैरान खड़ा था। वह इस पूरे मुआमले को समझ ही नहीं पाया था। वास्तव में वह तो इस सारे मुआमले से ही अनजान था। लेकिन गोलियां चलाने वाले के तरीके से वह समझ गया कि विभिन्न दिशाओं से गोलियां चलाने वाला एक ही इन्सान है। शोला की समझ में नहीं आ रहा था कि वह कौन हो सकता है। वह अपने इस हमदर्द को देखने की खातिर चारों तरफ का जायजा ले रहा था कि अचानक ही फजा में एक कहकहा बुलन्द हुआ और इस कहकहे को सुनते ही शोला की रग-रग में सनसनाहट दौड़ गयी। पर कहकहा फिट के अलावा किसी का नहीं हो सकता था। फिर तो गोलियों के निशाने भी फिट के ही होंगे।

"फिट!" शोला की आवाज पहाड़ों में गूंज उठी—"मेरे सामने आओ मेरे भाई। सामने आ—क्यों छुपा हुआ है। कहां है तू फिट। लेकिन पहाड़ों में फिर खामोशी फैल गयी थी। न कोई आवाज, न आहट। शोला फिट के कहकहे को वहम का नाम तो नहीं दे सकता था। वह लाखों में इस आवाज को पहचानता था, लेकिन फिट कहां है। वह कहां से यहां आ गया। क्या चाहता है वह। शोला यह सोचता हुआ उस दिशा में दौड़ पड़ा जिधर से कहकहे की आवाज आयी थी। उसके चेहरे पर अत्याधिक जोश के भाव थे। शोला उसे विभिन्न दिशाओं में दौड़-दौड़कर तलाश कर रहा था। मगर फिट का कहीं पता नहीं था। इसी तरह वह धीरे-धीरे चलता हुआ अपने बोदे के पास आ गया। यह जगह देख ली गयी थी। ईरोज और उसके साथी दोबारा यहां आने की कोशिश कर सकते थे। सम्भव है उस वक्त उनकी संख्या बहुत अधिक हो जब वह दोबारा इस तरफ आयें। अतः अब वह जगह छोड़ देनी चाहिये। यह सोचकर उसने मायूसी जैसे अन्दाज में बोदे की लगामें पत्थर के नीचे से निकालीं और बोदे की पुश्त पर सवार होकर उसे धीरे-धीरे आगे बढ़ाने लगा। अब कगोल का इन्तिजार भी नहीं किया जा सकता था। कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि फिट कहां गायब हो गया। कहकहा उसी का था। क्या करना चाहिये, क्या होना चाहिये। वह सोचता रहा और उसके बाद उसने बस्ती की तरफ रुख किया। एक अजीब-सी कैफियत उस पर

तारी हो गयी थी। उसने इरोना के कहवाखाने का रुख किया था और अपने दिल में कुछ फैसले भी किये थे। असल में फिर की आवाज ने उसे बेहद जज्बाती कर दिया था। इस वक्त उसकी तलाश में हर तरफ टोलियां फिर रही थीं। अगर उनसे कहीं टकराव भी हो जाता तो शोला के लिये यह फैसला करना मुश्किल था कि उसे क्या करना चाहिये। बहरहाल उसने अपना घोड़ा एक विशेष जगह छोड़ दिया और इरोना के कहवाखाने के पिछली सिम्त पहुंचकर वह एक खिड़की के करीब पहुंच गया। जहां एक खिड़की से रस्सी लटकी हुई थी। ईरोना ने यह प्रबन्ध पहले से कर रखा और उसे अच्छी तरह बता दिया गया था कि शोला कभी भी उधर का रुख कर सकता है—वह रात के वक्त यह इन्तजामात हमेशा रखेगी। शोला को यह बात याद थी अतः वह उसी तरफ चल पड़ा था। जब वह रस्सी के जरिये ऊपर पहुंचा तो ईरोना उसे जागती हुई मिली। शोला को देखकर उसने किसी हैरत का इज़हार नहीं किया था, बल्कि उसके होठों की मुस्कराहट बताती थी कि जैसे उसे शोला का इन्तिजार हो।

अब जरा शोला को हैरत हुई और उसने कहा—"तुम जाग रही हो इरोना?"

"हां।"

"कोई खास वजह?"

"नहीं, मैं तुम्हारा इन्तिजार कर रही थी।"

"झूठ—भला मेरे इस वक्त यहां आने की क्या सम्भावना थी।"

"यह बातें तुम नहीं समझोगे और मैं तुम्हें समझाना भी नहीं चाहती। बस मुझे यकीन था कि तुम आओगे।"

"तआज्जुब की बात है। मैं तो संयोग से इधर आ गया हूं। वैसे वह कहां है?"

"कौन?"

"कहवाखाने का मालिक।"

"वह गहरी नींद सो रहा है।" इरोना के होठों पर एक मद्धिम सी मुस्कराहट फैल गयी। फिर उसने शोख लहजे में कहा—"मैंने उसे नींद लाने की दवा दी है। ताकि जब तुम यहां आओ तो वह कोई विघ्न न डाल सके।"

"तुम तो जादूगरों का सा अम्ल कर रही हो इरोना।"

"अच्छा यह बताओ, खाने का क्या बंदोबस्त करूं?"

"अगर इस वक्त कुछ मेहरबानी करना चाहती हो तो सिर्फ कहवा पिला दो, वह भी अगर सम्भव हो सके क्योंकि मैं बहरहाल लाजमी तौर पर अपने आपको बिन बुलाया मेहमान समझ रहा हूं।"

"जबकि मैंने तुम्हारे लिये खाने का बन्दोबस्त भी करके रखा है।"

"नहीं इरोना! इस वक्त तो तुम मुझे कुछ भी पिला दो तो तुम्हारी मेहरबानी होगी।"

इरोना ने एक रहस्यमय मुस्कराहट से शोला को देखा और फिर बाहर निकल गयी। लेकिन शोला ने इस पर गौर नहीं किया था। वह तो इस वक्त भी फिट के बारे में सोच रहा था। फिट आखिर गया कहां?

❑❑❑

कगोल, लाजा और सीध आगे बढ़ रहे थे कि उन्होंने गोलियों की आवाजें सुनीं और उनके चेहरे उतर गये। कगोल ने दोनों हाथ बढ़ाकर उन्हें आगे बढ़ने से रोका था। फिर उसकी परेशानी भरी आवाज उभरी—"य...यह...क्या हुआ? यह कैसे हो गया?"

"क्या मतलब?"

"वह जो चट्टान सामने नजर आ रही है, उसी के अकब में शोला को होना चाहिये था—लेकिन यह गोलियां...।" दोनों भाई भी एकदम गमजदा हो गये थे।

लाजा ने कहा—"अगर शोला दुश्मनों के चंगुल में फंस गया है तो हम उसकी मदद भी नहीं कर सकते—क्योंकि इस वक्त हमारे पास अग्नेय शस्त्र नहीं हैं।"

"नहीं, अगर अग्नेय शस्त्र भी होते तो इस वक्त उसकी मदद सम्भव नहीं थी। क्योंकि हम खुल्लम-खुल्ला साथ नहीं दे सकते। आह! हालात ने एक अजीब रुख इख्तियार कर लिया है।" कगोल ने बेचैनी से हाथ मलते हुए कहा।

"एक बार फिर बताओ कगोल! वह कौन-सी जगह थी जहां शोला से मुलाकात होनी थी।" सीध ने सवाल किया।

"बताया न, बस यही जगह है। वह जो चट्टान सामने नजर

आ रही है, लेकिन अब उसकी तरफ बढ़ना बेहद खतरनाक होगा। आओ, वापस चलें। हमें अपनी जिन्दगी बचाने का सामान भी करना है।"

"नहीं, अगर शोला किसी मुश्किल में फंस गया है तो हमें उसकी मदद करना चाहिये।" सीध ने कहा।

"मेरे प्यारे दोस्त! अगर यह सम्भव होता तो मैं कभी इन्कार न करता। लेकिन अफसोस इस वक्त कुछ नहीं किया जा सकता और वह जिसका नाम शोला है उसे मैंने बहुत करीब से देखा है। अगर वह तन्हा हो और खतरात उसे चारों तरफ से घेर लें तो वह गीदड़ों के गोल में घिरा हुआ चीता लगता है। चालाक और खुंख्वार और इस वक्त हमारा कोई भी हस्तक्षेप उसके लिये नुकसानदेह हो सकता है। बस अब इस ख्याल को दिल से निकाल दो और यहां से चल पड़ो।" कगोल ने कहा और दोनों भाई सोच में पड़ गये।

फिर सीध ने पुरख्याल अन्दाज में गर्दन हिलाते हुए कहा—"मेरे ख्याल में कगोल ठीक कहता है। हमें जल्दबाजी और जज्बात की रो में बहकर काम नहीं लेना चाहिये। आओ, वापस चलें।"

कगोल उसका कंधा थपथपाते हुए बोला—"एक बार फिर मैं तुम्हें यकीन दिलाता हूं कि अगर सौ आदमियों ने भी शोला को घेरा होगा तो वह उनके दरमियान से साफ निकल आयेगा और मैं तुम्हें यकीन दिलाता हूं। मेरे साथ चलो। मैं बहुत जल्द तुम्हारी उससे मुलाकात करवा दूंगा।"

"क्या मतलब...क्या अब भी...अब भी?"

"हां—अब भी...।" कगोल के स्वर में एक ठोस विश्वास था। दोनों भाई एक-दूसरे की शक्ल देखते रह गये। उनकी आंखों से साफ-साफ इस बात का इजहार हो रहा था जैसे वह कगोल को पागल समझते हों। इस वक्त तो सचमुच एक दीवानगी वाली बात कही थी कगोल ने। अगर उसके कहने के मुताबिक शोला यहां मौजूद था तो फिर कगोल किस जगह ले जाकर उनकी उससे मुलाकात करायेगा? यह तो एक अविश्वसनीय सी बात थी। कगोल के ऊपर वैसे भी भरोसा जरा मुश्किल से ही किया जा सकता है। लेकिन इस वक्त तो बात बहुत आगे बढ़ चुकी थी।

अतः वह उसके साथ चल पड़े।

कगोल ने उन्हें सम्बोधित करते हुए कहा—"और अभी बेहतर है कि मुझ पर उस वक्त तक भरोसा करो जब तक कि तुम्हें उस बात का यकीन न हो जाय कि मैं पागल हूं। जो कुछ भी कह रहा हूं, इस वक्त वही करो। हमें अभी बहुत से काम करने हैं। बुजुर्ग महिला जुनाबिया की हिदायत के अनुसार खण्डरात में अपने समर्थकों की सभा भी करनी है। यह बताओ पहली मुलाकात किससे करोगे?"

"मैंने चंद लोगों का चयन किया है। तुम मेरे दोस्त बल्कि खास दोस्त को जानते होगे। मैं उसका नाम तुम्हें बाद में बताऊंगा। वह पन्द्रह लोगों का एक गिरोह रखता है और यह बात मुझे बखूबी मालूम है कि वह गुरबान का बदतरीन दुश्मन है। जब भी उसे मौका मिला, भेड़िये की तरह कूद पड़ेगा। यह दुरुस्त है कि उसकी अपनी हैसियत इतनी नहीं कि वह गुरबान के मुकाबले में आ सके। लेकिन उसकी चंद विशेषतायें आम लोगों के इल्म में भी हैं और शायद ईरोज भी जानता है।" लाजा ने कहा।

"तुम साने की बात तो नहीं कर रहे—साने...।" कगोल ने कहा और दोनों भेड़ियों के सिर चकरा गये।

"आह! तुम उसके बारे में जानते हो?"

"हां...यकीनन उसके बारे में इतना ही जानता हूं मैं और यह बात भी कहता हूं कि तुमने उम्दा आदमी का चयन किया है। आओ, चलो इस काम की शुरूआत करते हैं।" कगोल ने कदम बढ़ाते हुए कहा।

तीनों तेजरफ्तारी से चल पड़े लेकिन वह उस रास्ते पर नहीं मुड़े थे जिस रास्ते से आये थे। उनका रुख साने की रिहाइशगाह की ओर था। कुछ देर बाद वह उस जगह पहुंच गये, मगर साने इस वक्त घर पर मौजूद नहीं था। पता चला कि वह गुरबान के हुक्म के अनुसार टोली लेकर शोला की तलाश में निकला है। थोड़े फासले पर उनकी मुलाकात एक और शख्स से हो गयी और उन दोनों ने उसे अपने मंसूबे से आगाह किया तो वह हैरत का शिकार हो गया।

उसने कहा—"क्या तुम जागती आंखों से ख्वाब नहीं देख रहे?"

"उसके बारे में मैं तुम्हें बताता हूं।" कगोल ने कहा और फिर कगोल ने जो विवरण उसे बताया, उससे वह एकदम संतुष्ट हो गया। उसकी आंखों में हर्ष की किरणें जगमगा उठी थीं।

उसने खुशी से कहा—"आह! इसका मतलब है मेरा यह आखरी ख्वाब भी गलत नहीं है।"

"आखरी ख्वाब?"

"हां—मेरे दोस्त। सम्भव है तुम मजाक उड़ाओ। मैं कई दिन से यह ख्वाब देख रहा हूं कि एक मुकद्दस बुजुर्ग मेरे सामने आकर कहते हैं कि बस अब वह वक्त दूर नहीं है कि जब सुनारिया की तकदीर जागेगी और इस तकदीर को जगाने वाला तुम्हारे दरमियान पहुंच गया है। यह ख्वाब मैंने रात को भी देखा था। यह शख्स शोला ऐसा लगता है जैसे वाकई हमारी तकदीर जगाने आया हो। लेकिन तुमने मुझे जो मंसूबा बताया है यह वाकई संगीन मंसूबा है। इसमें कोई शक नहीं है कि तुम लोगों ने बड़ी जहानत से यह सारा काम किया है। बहरहाल जब तक हम अपने तौर पर कुछ करने पर अमादा नहीं हो जायेंगे, भला हमारे उद्देश्य की पूर्ति कैसे होगी?"

"तो फिर तुम मंसूबे के मुताबिक खण्डरात में पहुंच जाओ। वहां तुम्हारा इन्तिजार किया जायेगा।"

"मैं यकीनन वहां पहुंच जाऊंगा, लेकिन किस वक्त?"

"रात के उस पहर जब टोलियां शोला की तलाश में निकलेंगी। इस बात का तो हमें यकीन है कि आज की रात निर्णायक नहीं होगी। शोला इतनी आसानी से तो ईरोज के शिकंजे में फंस जाने वालों में से नहीं है।"

"अगर तुम इजाजत दो तो मैं अपने कुछ और साथियों को इस बारे में सूचना दे दूं।" वह शख्स जोशीले अन्दाज में मुट्ठियां खोल और बन्द करता हुआ बोला।

"यही तो हम चाहते हैं कि एक शख्स के साथ अगर दस और लोग शामिल हों तो हमारी संख्या बड़ी तेज रफ्तारी से बढ़ेगी। जितने भी लोग सम्भव हों, कल रात खण्डरात में जमा हो जायें ताकि जल्द से जल्द हम शोला से यह कठिन वक्त वापस ले लें। वह बेचारा अकेला अपनी जिन्दगी हमारे लिये दांव पर लगाये हुए है। सुनारिया के लोग निःसंदेह ईरोज के सितमनाक पंजे में फंसे

हुए हैं। लेकिन वह बुजदिल या बेगैरत नहीं है कि बाहर से आने वाले एक मेहमान को अपने मकसद के लिये कुर्बान कर दें।''

''ठीक है, ऐसा ही होगा जैसा तुम चाहते हो। मैं ज्यादा से ज्यादा लोगों को अपना साथी बनाने की कोशिश करूंगा—बेफिक्र रहो।'' उस शख्स ने गर्दन हिलाते हुए कहा।

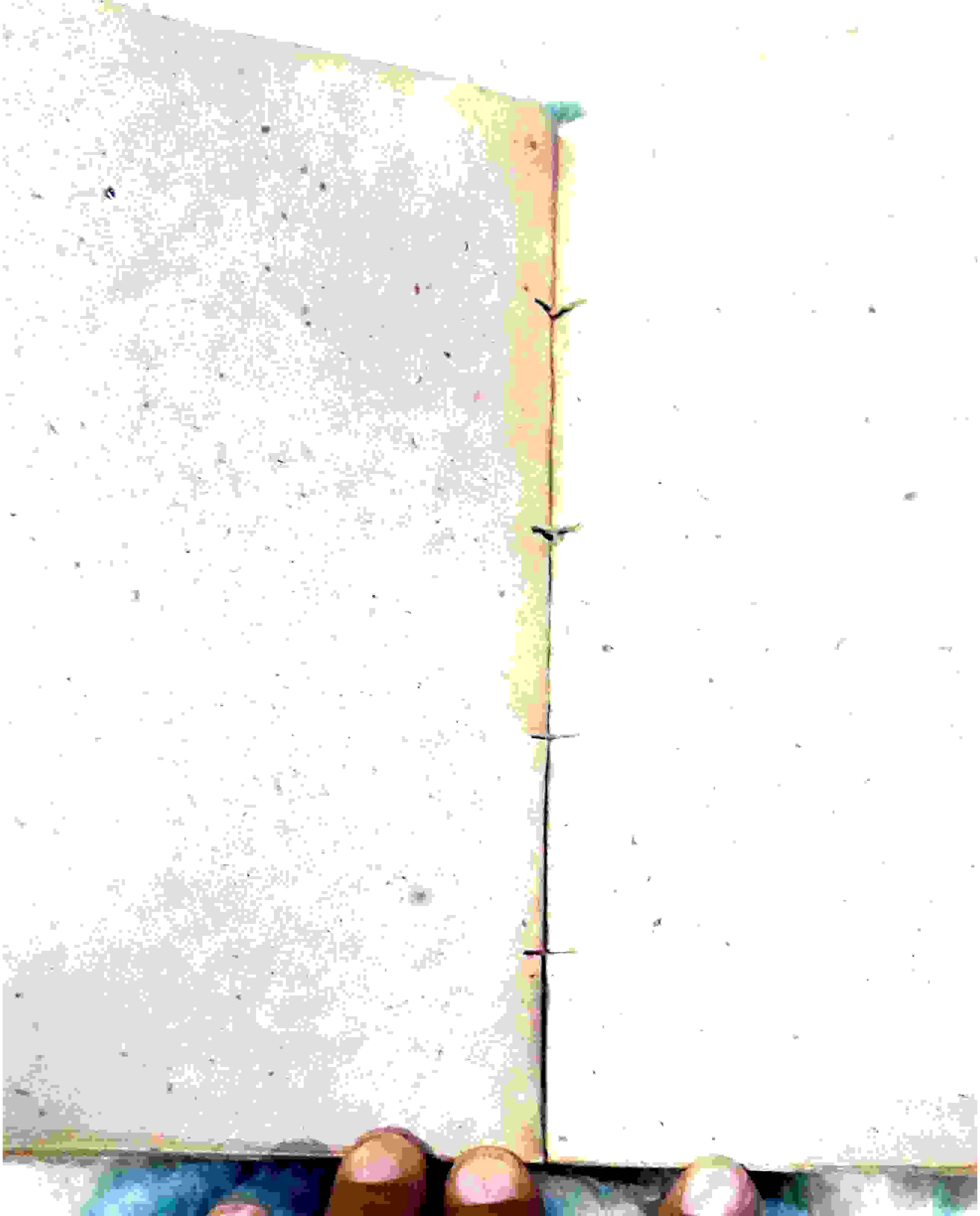
आज की रात का मिशन यही रहा था। कगोल, सीथ और लाजा ने इस रात काफी कामयाबियां हासिल कर लीं। लगभग ऐसे चालीस लोगों से मामलात तय हो गये थे जो ईरेज और गुरबान से अत्यधिक नफरत करते थे और मौका मिलने पर उनके खिलाफ सब कुछ करने पर अमादा हो सकते थे। इन चालीस लोगों के जरिये तकरीबन इतने ही और लोगों के आने की उम्मीद थी। यह तय हुआ था कि जब टोलियां शोला की तलाश में चल पड़ेंगी तो वह लोग विभिन्न दिशाओं से होते हुए आहिस्ता-आहिस्ता उसी जगह का रुख करेंगे जहां यह खण्डहरात बिखरे हुए हैं और फिर उस जगह जमा हो जायेंगे जो इस काम के लिये चुनी गयी है। इन कामों से फारिग होकर वह अंततः वापस अपनी रिहाइशगाह की तरफ चल पड़े थे। तीनों के चेहरे पर थकावट के लक्षण थे, लेकिन जो कार्यवाही उन्होंने की थी, वह इस कदर कामयाब थी कि वह खुश भी थे। कगोल उन्हें छोड़ने के बाद वापस लौट रहा था कि लाजा ने उसे रोक लिया।

''सुनो! कगोल! तुम्हारे इत्मीनान से जाहिर होता है कि तुम शोला के दूसरे ठिकाने से भी वाकिफ हो क्योंकि वहां न मिलने के बाद तुमने इस बेचैनी का इजहार नहीं किया जो उसूली तौर पर होनी चाहिये थी।''

कगोल ने चौंककर लाजा को देखा और फिर हंसकर बोला—''आह! वाकई यह जहानत ही तो हमें कामयाबी दिला सकती है। बिल्कुल ठीक कह रहे हो। मैं इस बात से वाकिफ हूं कि अगर वह सचमुच किसी बड़ी मुश्किल का शिकार नहीं हुआ है तो इस वक्त वह कहां मिल सकता है।''

''तो फिर तुमने वादा किया था कगोल कि दिन निकलने से पहले तुम हमारी मुलाकात शोला से कराओगे, जबकि तुम तो वापसी का सफर तय कर चुके हो।''

''हां—वादा किया था और उस वादे पर मैं अब भी कायम



तो कगोल के होठों पर मुस्कराहट फैल गयी।

फिर उसने राजदारी से कहा—"एक बात बताओ इरोना क्या तुम्हारे कहवाखाने के मालिक को इस बात का इल्म है कि आज रात यह शख्स यहीं कमाल करेगा।" कगोल ने सवाल किया।

इरोना के चेहरे पर मद्धिम-सी मुस्कराहट फैल गयी—"नहीं, उस बूढ़े को मैंने कुछ नहीं बताया। अलबत्ता उसे मैं हर रात नींद की दवा देकर सुला देती हूं। वह दिन चढ़े उठता है। इसलिये उसकी बिल्कुल चिन्ता न करो।" इरोना ने जवाब दिया और फिर उन तीनों को लेकर उस कमरे में दाखिल हो गयी जहां शोला मौजूद था।

इस वक्त भी शोला मसहरी पर पांव लटकाये बैठा दरवाजे की तरफ देख रहा था। उसका खूबसूरत और पुरवकार चेहरा किसी गहरी सोच में डूबा हुआ था। चौड़े ललाट पर चिन्ता की लकीरें नमूदार हो गयी थी। होंठ एक-दूसरे में पेवस्त होकर उसकी अन्दरूनी कैफियत का इजहार कर रहे थे। गहरी स्याह अकाबी आंखें सोच में डूबी हुई दरवाजे को तक रही थीं। कमरे में बहुत मद्धिम रोशनी हो रही थी जिसका इन्तजाम कुछ इस तरह रखा गया था कि बाहर से उसे न देखा जा सके। कमरे में दाखिल होते ही सीध और लाजा पुरजोश अन्दाज में शोला की तरफ बढ़े और शोला ने गर्दन उठाकर उन्हें देखा। उन दोनों को देखकर शोला के होठों पर मुस्कराहट दौड़ गयी थी।

"तुम लोग इस वक्त यहां कैसे?" उसने सवाल किया।

"तुम अपनी कुशलता बताओ। हम तो कगोल के साथ यहां आये हैं।" सीध ने कहा—"जब हम तुमसे मुलाकात करने वहां पहुंचे तो गोलियां चल रही थीं। इसी वजह से हम तुम तक न पहुंच पाये, न ही यह जान सके कि गोलियां किन दो दलों में चल रही थीं। हम अपने आपको जाहिर भी नहीं कर सकते थे, जबकि हमारी ख्वाइश थी कि अगर यह गोलियां तुम पर चलायी जा रही हैं तो हम तुम्हारी मदद करें। बहुत सम्भव था कि हम जज्बाती होकर तुम्हारी ओर दौड़ पड़ते मगर कगोल ने हमें रोक दिया। यह कहकर कि शोला अपना बचाव खुद कर सकता है। फिर हमने ही इसे आखरी हद तक मजबूर किया कि हमें तुमसे एक बार

मिला दे, इसलिये हम इस वक्त यहां मौजूद है। हालांकि यह जगह हमारे लिये इन्तहाई अजनबी और हैरतजनक है और इरोना का किरदार भी। लेकिन हम सिर्फ यह सवाल करना चाहते हैं माननीय शोला, कि तुम्हें हमारा इस वक्त आगमन बुरा तो नहीं लगा।''

''नहीं बिल्कुल नहीं।'' शोला ने गर्दन हिलायी—''मगर तुम अपने पीछे किसी को लगा तो नहीं ले आये। बेचारी इरोना बेमौत मारी जायेगी।''

''तुम इस सिलसिले में बिल्कुल बेफिक्र रहो। हम बहुत सतर्क होकर यहां तक पहुंचे हैं।'' कगोल नें कहा।

''तब ठीक है और इस वक्त तुम्हारे आने में हर्ज नहीं है।''

''अब मैं तुमसे एक सवाल करना चाहता हूं शोला। क्या तुम मुझे बताओगे कि वहां पहाड़ों में तुम्हारे साथ क्या घटना घटी थी और गोलियां चलाने वाले कौन थे?''

''हां—उन लोगों ने मुझे उस चट्टान पर चारों तरफ से घेर लिया था और मुझे अपनी बेखबरी का बेहद अफसोस है। फिर एक शख्स मेरा सहयोगी बन गया वरना शायद मैं मारा जाता। उस शख्स ने सारी कहानी ही बदल दी। अगर तुम वहां पहाड़ों में चलकर देखोगे तो तुम्हें वहां बहुत सी लाशें नजर आयेंगी। मेरे दुश्मनों में भगदड़ मच गयी। वह मैदान छोड़कर भाग गये और मैं यहां पहुंच गया। मुझे तो यह भी नहीं मालूम कि मेरे दुश्मन कौन थे। अलबत्ता मैंने अपने मददगार की आवाज जरूर सुनी थी—और यह आवाज मेरे गुमशुदा दोस्त फिट की थी—लेकिन मुझे हैरानी इस बात की है कि वह मेरे सामने क्यों नहीं आया। बस मेरी चिन्ता का विषय यही है।''

शोला ने उन्हें सारा विवरण बताया। थोड़ी देर बाद ही वे अगली रात के कार्यक्रम के बारे में विचार विमर्श करने लगे। अगली रात सुनारिया में इन्कलाब की रात थी और उसकी सारी तैयारियां मुकम्मल हो चुकी थीं।

□□□

यह ईरोज की खुफिया मीटिंग थी। अब ईरोज को सुनारिया बस्ती के लोगों पर भरोसा नहीं रहा था। उसे यकीन था कि कोई बहुत गड़बड़ चल रही है और यह गड़बड़ी सुनारिया में ही थी। शोला तो सिर्फ बहाना था। उसे शोला से उलझाये रखा जा रहा

"उसकी एक खास वजह है।"

"क्या...मेहरबानी करके मुझे बताओ।"

"अब यह बात तो बस्ती के तमाम लोग जानते हैं कि गुरबान और उसके सहयोगी ईरोज ने हम लोगों पर जिन्दगी को किस तरह तंग कर दिया है। उस पर किसी को भरोसा नहीं रहा। वह किसी का दोस्त नहीं। हर शख्स अपनी जगह डरा हुआ रहता है कि न जाने कौन-सी घड़ी उसकी मौत की घड़ी बन जाय। इन हालात में जामा, अगर कुछ लोग बगावत पर आमादा होकर शौला का साथ देने पर तैयार हो जायें तो इसमें आश्चर्य की क्या बात है बल्कि मैं तो यह कहता हूं ऐसे ही लोग जालिमों से निजात दिलाने वाले होते हैं।" दोस्त गम्भीरता से बोला और जामा उसे अजीब सी निगाहों से देखने लगा।

फिर जामा ने गर्दन हिलाते हुए कहा—"कहते तो तुम ठीक हो, लेकिन ऐसी बातें तो दिल में रखी जाती हैं कि दीवारें भी न सुन सकें। तुम मेरे बहुत ही अच्छे दोस्त हो। यह बात मैं सिर्फ तुमसे ही कह रहा हूं कि मैं भी शौला का साथ देकर गुरबान के खिलाफ बगावत करने का ख्वाइशमंद हूं। लेकिन हमारे पास साधन नहीं है। हम अगर बगावत के बारे में सोचेंगे भी तो सिर्फ सोचकर रह जायेंगे। गुरबान और ईरोज की निगाहों में बस्ती वालों की हैसियत कीड़े-मकोड़ों से भला क्या ज्यादा है। इनकी मौत पर कौन दर्द का इजहार करता है। बताओ क्या मैं गलत कह रहा हूं?" जामा ने कहा और उसका दोस्त उसे अजीब निगाहों से देखता रहा। यों महसूस होता था जैसे उसके दोस्त बोन के दिल में कोई खास राज मचल रहा है। वह कुछ कहना चाहता है—लेकिन कह नहीं पा रहा है। आखिर ऐसी कौन-सी बात है—जामा ने सोचा और बोन के आगे बोलने का इन्तिजार करने लगा।

कुछ देर के लिये मुकम्मल खामोशी छा गयी। यों लग रहा था जैसे दोनों एक दूसरे का वजन कर रहे हों। बोन ने दिल की बात कह तो दी थी, लेकिन शायद उसके जहन में यह ख्याल था कि जामा बेशक उसका जिगरी दोस्त सही—इस बात को लेकर कहीं उसके लिये नुकसानदेह न साबित हो जाय।

अतः उसने कहा—"मगर इन बातों का जिक्र कहीं और न कर गुजरना दोस्त। मैंने तुम पर पूरा भरोसा किया है।"

"हरगिज नहीं। मैं तो बस यह सोच रहा हूं कि क्या तुम सचमुच गुरबान के खिलाफ बगावत में हिस्सा लोगे?"

"सिर्फ यही नहीं बल्कि अगर तुम मेरी बात पर पूरा भरोसा करना चाहो तो आज रात उस वक्त मेरे पास पहुंच जाओ जब रात एक पहर से ज्यादा गुजर चुकी हो। मैं तुम्हें ऐसी जगह ले चलूंगा कि तुम उसकी कल्पना भी न कर सकोगे।"

"आह! कहां? क्या तुम मुझे दोस्त नहीं समझते! अगर तुम मुझे दोस्त समझते हो तो सारी बात का खुलासा करो।"

"सुनो, वह जगह मैं तुम्हें अभी नहीं दिखा सकता। न उसके बारे में बता सकता हूं। बस यह समझ लो कि एक विशेष स्थान पर ऐसे लोगों की सभा होने वाली है जो गुरबान के खिलाफ बगावत करने वाले हैं।"

"क्या कह रहे हो—क्या तुम सचमुच जो कह रहे हो वह सच है। मेरी समझ में नहीं आ रहा कि बस्ती के लोग गुरबान के खिलाफ बग़ावत कैसे कर सकते हैं।"

"यह सब कुछ उस वक्त तुम्हारी समझ में आयेगा जब रात को तुम मेरे पास आओगे।"

"आश्चर्य की बात है...घोर आश्चर्य...खैर! मैं तो यह सोच भी नहीं सकता कि तुम इस तरह बागियों से सम्पर्क जोड़ चुके हो।"

"तहेदिल के साथ मैं उन लोगों की हिदायत का ऐलान कर चुका हूं। नाराज न होना मेरे दोस्त। मैं तुमसे तुम्हारे ख्यालात जाने बगैर कोई बात नहीं कर सकता। कहीं ऐसा न करना कि अपने जिगरी दोस्त के लिये मौत का बायस बन जाओ। अगर तुम मुझसे सहमत भी नहीं हो तो भी हमेशा के लिये अपनी जुबान बन्द कर लेना।"

"मगर यह सभा कहां होगी?" जामा ने पूछा।

"पहले तुम वादा करो कि अपनी जुबान बन्द रखोगे।"

"जुबान भी बन्द रखूंगा और तुम्हारे साथ भी जाऊंगा। मैं खुद भी इस बगावत का हिस्सेदार बनना चाहता हूं।"

बोन बेहद उत्साहित होकर बोला—"यह सभा उन खण्डरात में होगी जो पहाड़ी के उस तरफ है। लेकिन सचमुच तुम्हारा फैसला बुद्धिमानी का है। गुरबान के खिलाफ ज्वालामुखी फटने ही वाला है।"

जगह जा बैठा। उसके बाद जुनाबिया की बारी थी। उसने कहा कि बात सिर्फ एक शख्स की नहीं है। ईरोज और गुरबान ने न जाने कितने घरों के चराग बुझा दिये हैं। मेरा चराग भी बुझ चुका था और मैंने अपने पोतों को इस काबिल बनाया कि वह आज इस तरह आप लोगों को जमा करने का माध्यम बनें। जुनाबिया ने उन्हें सारा विवरण बताया। उसके बाद शोला को बुलाया गया। शोला इस वक्त सुनारिया वालों के लिये अवतार बना हुआ था। आज तक सुनारिया के लोग यह फैसला नहीं कर पाये थे कि वह एक जिन्दा मखलूक है या सिर्फ एक रूह। वह हैरान निगाहों से उस शख्स को देख रहे थे जो फांसी के तख्ते से कब्र तक और कब्र से उन तक जिन्दा सलामत पहुंचा था।

शोला ने एक नजर सभा पर डाली और फिर कहने लगा—"मुझे भाषण देने का शौक नहीं है। मैं सिर्फ आपसे यह कहना चाहता हूं कि आपको सब कुछ मालूम है। मैं और मेरा साथी जब यहां पहुंचे तो पहाड़ियों में हमने एक ऐसी लड़की को देखा जिस पर जुल्म की इन्तहा कर दी गयी थी। हमने उस लड़की के सामने यह प्रण किया कि उसके कातिलों को बेनकाब करेंगे और उन्हें सजा देंगे। लड़की की मौत के दर्दनाक मंजर ने हमें यह कसम खाने पर मजबूर कर दिया था। मैं आप लोगों को ज्यादा नहीं बता सकता। बस आप यह समझ लीजिये कि मैं और मेरा साथी कालकों के खिलाफ अम्ल करने का अज्म रखते हैं और यही सोचकर घर से निकले हैं। अब मैं आप लोगों के साथ हूं। मैं आपके साथ गुरबान और ईराज के खिलाफ मैदाने जंग में उतरा हूं और उसके लिये यह बुजुर्ग महिला कगोल और दोनों लड़के आप लोगों की सेवा में एक अहम तोहफा पेश करेंगे।" शोला इतना कहकर खामोश हो गया।

लोगों की आवाजें उभरीं—"वह तोहफा क्या है?"

इस पर बूढ़ी जुनाबिया ने खड़े होकर कहा—"मेरे इन दोनों पोतों ने सुनारिया के उन बहादुरों के लिये जो इस वक्त यहां मौजूद हैं, असलहे का प्रबन्ध किया है। यह असलहा हमारे दुश्मनों का है और उन्हीं के खिलाफ इस्तेमाल किया जायेगा। हमने यह असलहा बड़ी दुश्वारियों के साथ इकट्ठा किया है और आज हम आप लोगों की अमानत आपके हवाले कर रहे हैं।" जुनाबिया

उस पत्थर के सामने से हट गयी जहां वह बैठी हुई थी। उस पत्थर के पीछे एक गार था और वहीं तहखाना भी था। जब उसे सबके सामने खोला गया तो सुनारिया वालों ने वहां बेशुमार असलहा देखा। यह असलहा उनकी आवश्यकता पूरी कर सकता था। सबको जैसे सांप सूंघ गया था। वहां मौजूद हर शख्स स्तब्ध होकर रह गया। बूढ़ी जुनाबिया के पोतों ने वह काम किया था जिसे वह कभी नहीं कर सकते थे। आखिर वह सब वृद्धा से नतमस्तक हो गये।

उनमें से किसी ने कहा—"बेशक इन्कलाब ऐसे ही जज्बों से आते हैं।"

"यह सब तुम सबके हवाले है।" जुनाबिया ने ऐलान किया और उसके बाद सब लोग दीवानों की तरह असलहे की ओर लपक पड़े। उनकी हिम्मत कई गुना बढ़ गयी थी, यह सच है कि इससे पहले जब भी बगावत के बारे में सोचा गया तो सुनारिया वालों को यह एहसास हुआ कि अगर गुरबान के खिलाफ कोई कार्यवाही की जाती है तो इसमें बेशुमार जानों का नुकसान होगा। निहत्थे लोगों को गुरबान ने इसीलिये हर तरह के हथियारों से महरूम कर दिया था कि उसके खिलाफ किसी को कभी कार्यवाही की हिम्मत न हो और बगावत का सपना भी पूरा न हो सके। लेकिन आज वह अपने अन्दर एक नयी ऊर्जा महसूस कर रहे थे। उनकी खुशियां बेपनाह हो गयी थीं।

अभी उनके कहकहे सर्द भी नहीं पड़े थे कि अचानक बाहर मौजूद दोनों आदमियों ने जो पहरे पर थे, दौड़ते हुए करीब आकर उन्हें चौकन्ना कर दिया।

आने वाले भयभीत अन्दाज में बोले—"खामोश हो जाओ—बिल्कुल खामोश। हमारी साजिश खुल गयी है। यकीनन हमारे बीच कोई न कोई काली भेड़ मौजूद थी। ईरोज के आदमी हमारे सामने पहुंच गये हैं और अब वह इन खण्डरात को चारों तरफ से घेर रहे हैं।"

यह खबर एक खौफनाक धमाका थी। वह सब एकदम शाकित हो गये थे। बूढ़ी जुनाबिया ने उनके चेहरों पर हैरत और खौफ की झलक देख ली थी।

उसी वक्त उसने खड़े होकर कहा—"यह तो खुशकिस्मती

लेकिन वह नजर नहीं आयी। अफरा-तफरी का आलम था। हर शख्स अपनी जिन्दगी बचाने में लगा हुआ था। शोला ने अपनी जगह छोड़ दी और बचता-बचाता खण्डरात से बाहर निकल जाने की कोशिश करने लगा। लेकिन ज्यों ही उसने खण्डरात से बाहर कदम निकाला, एक जाल उस पर आ पड़ा। उसके साथ ही कुछ मशालें जल गयी थीं। शायद ईरोज हर तरह का प्रबन्ध करके आया था। शोला को जाल में जकड़ लिया गया। उसे किसी ऐसी हरकत का गुमान तक न था। मशालों की रोशनी में उसने जकड़ने वालों को देखा। वह सब हथियारों से लैस थे और बहुत सी बन्दूकें उसकी ओर उठी हुई थीं।

उसी वक्त एक भारी आवाज सुनायी दी—"अगर तुमने अपनी जगह से जुम्बिश की तो तुम्हारे जिस्म में बेशुमार सुराख हो जायेंगे।"

शोला ने बिफरे हुए शेर की तरह उन लोगों को देखा, लेकिन इस वक्त इस जाल से निकलना मुश्किल था और अकारण जिन्दगी किसी खतरे में डालना कोई अक्ल की बात नहीं थी।

"हथियार फेंक दो।" हुक्म दिया गया तो शोला ने अपनी बन्दूक एक तरफ फेंक दी और पिस्तौल भी नीचे डाल दिया। अब शोला निहत्था हो चुका था। वह लोग उसके निकट आने की हिम्मत तो नहीं कर पा रहे थे, लेकिन उसका तरीका उन्होंने यह किया कि जाल को खींचते हुए एक ओर ले चले। जाल में फंसा हुआ शोला अब हाथ-पांव मारना भी बेमकसद समझ रहा था। काफी दूर ले जाने के बाद अचानक उन्होंने उस पर हमला किया और उसे काबू में कर लिया। लेकिन जाल से उसे अब भी नहीं निकाला गया था। सुनारिया के मुट्ठी भर लोग जिन्होंने बगावत में शिरकत की थी, यह नहीं जान पाये थे कि अब शोला कहां है। वह अब शिकस्त के करीब पहुंच चुके थे। उनकी प्रतिरोधक शक्ति दम तोड़ चुकी थी। वह तो अभी इस मंसूबे की शुरूआत भी ठीक तरह से न कर पाये थे कि ईरोज उन पर आन पड़ा था और यही उस वहशी की माहिराना और शातिराना चालें थीं जिसने आज तक सुनारियों को उसके खिलाफ कुछ करने की हिम्मत नहीं पैदा होने दी थी। जरा सी देर में लड़ाई का फैसला हो गया। बगावत, जिसने अभी खण्डरात में सही तरह से सर भी नहीं उठाया

था, कुचल दी गयी। उनकी हिम्मत एक बार फिर दम तोड़ चुकी थी। शोला गिरफ्तार हो चुका था। खण्डरात में सुनारिया बस्ती के तीस बागी भी गिरफ्तार हुए थे। सत्ताइस इंसानों की लाशें भी खण्डरात से बरामद कर ली गयी थीं। इस मुकाबले में ईरोज के भी चंद लोग मारे गये थे और वह अलग थे जो इस दौरान शोला के हाथों मारे गये थे।

दूसरे रोज गुरबान के दुश्मनों के कब्रिस्तान के करीब एक बहुत बड़े मैदान में सुनारियों की सभा बुलायी गयी। सभा में उसने गुरबान का ऐलान लोगों को सुनाया।

बेशुमार लोगों के दरमियान उसने कहा—"और मैं सुनारिया वालों को बेगुनाह समझता हूं क्योंकि वह हमारे लिये दिल में बुराई रखने के बावजूद कभी सर उठाने की जुर्रत नहीं कर सकते थे। उन्हें केवल शोला ने बगावत के लिये आमादा किया, वरना वह हरगिज बगावत न करते। लेकिन कानून यही है कि बागियों की सजा-ए-मौत दी जाय। अतः महान गुरबान का हुक्म यही है कि बागियों को फौरन मौत के घाट उतार दिया जाय। इस काम के लिये एक बड़ी कब्र तैयार हो रही है और दुश्मनों के कब्रिस्तान में शोला की कब्र उसका इन्तिज़ार कर रही है। ज्यों ही सूरज की लाली फैलेगी बागियों को उस बड़ी कब्र के किनारे खड़ा करके गोली मार दी जायेगी। सुनारिया का जो भी शख्स यह तमाशा देखना चाहे उसे इसकी इजाजत है।"

सुनारिया वाले खौफ व दहशत के शिकार हो गये। तमाम लोगों में एक बेचैन लहर दौड़ गयी। वह आपस में सरगोशियां करने लगे। कैदी वहां मौजूद नहीं थे, लेकिन तमाम सुनारियों को अपने हमवतन लोगों से लगाव तो था ही। वह उनका यह अन्जाम सुनकर दुखी हो उठे। लोग धीरे-धीरे दुश्मनों के कब्रिस्तान की ओर जाने लगे। फिर सूरज का हिस्सा लाल होने लगा। अब रात होने में देर न थी।

ईरोज कैदियों के साथ खुद आया था। वह कोई ऐसा काम नहीं करना चाहता था जो खतरनाक हो। कैदियों में शोला भी था। मगर उसे दूसरे कैदियों से अलग रखा गया था। उसके साथ कगोल चल रहा था। बहुत बड़ा गड्ढा तैयार हो चुका था जिसमें बागियों की लाशें दफनायी जाने वाली थीं। उन बागियों को भी

गड्ढे के किनारे खड़ा कर दिया गया, इन्हीं में वह दोनों कन्या और उनकी दादी जुनाबिया थी। उसे औरत समझकर भी मुआफ नहीं किया गया था। फिर शोला को एक बुलन्द जगह पर खड़ा किया गया। उसके चारों तरफ सख्त पहरा था और उसकी एक-एक जुम्बिश पर गहरी निगाह रखी जा रही थी। ईरोज की आंखों में हर्ष की चमक थी। थोड़ी देर बाद दूर से कुछ बोदे सवार आते नजर आये। आने वालों की रफ्तार काफी तेज थी और वह ईरोज के पास आकर रुक गये। उनकी संख्या बीस पच्चीस थी। उसके आगे एक बोदे पर एक नकाबपोश मौजूद था। यह नकाबपोश गुरबान था। देखने वालों में ईरोज भी था जिसकी आंखें हैरत से फैल गयी थीं। बर्क रफ्तार बोदे देखते ही देखते वहां पहुंच गये और लोगों ने सम्मानपूर्वक उन्हें जगह दे दी। गुरबान के साथ उसके तमाम खास लोग मौजूद थे जो उसके महल में उसके खास आदमियों की हैसियत रखते थे। वह सब शस्त्रधारी थे। फिर अचानक ईरोज ने गुरबान के सामने अदब से गर्दन झुकायी।

"महान गुरबान को यहां आने की जरूरत क्यों पेश आ गयी?"

"शुक्र है ईरोज कि मैं ठीक वक्त पर यहां पहुंच गया और तेरी यह गंदी चाल सामने आ गयी। सुनारिया के लोग गद्दार नहीं हैं बल्कि तूने उन्हें गद्दारी पर मजबूर किया है। तूने सुनारिया के मासूम लोगों के खिलाफ जो साजिशें की हैं उनकी खबर मुझ तक पहुंच चुकी है। मैं अपने आपको उन सुनारियों का कुसूरवार समझता हूं जिन पर तुझ जैसे नमक हराम इन्सान को मैंने तैनात किया।" गुरबान की गर्जदार आवाज फजा में गूंज रही थी और सबको सांप सूंघ गया था। गुरबान की आवाज हर कान तक पहुंच गयी।

गुरबान कैदियों की निगरानी करने वाले लोगों की तरफ रुख करके बोला—"हरामजादो! इन सबको आजाद कर दो और ईरोज को गिरफ्तार कर लो।"

ईरोज बौखलाकर बोला—"मगर महान गुरबान! मेरा क्या कुसूर है?"

"सुना नहीं तुमने कुत्तो! ईरोज को गिरफ्तार कर लो।" गुरबान की खूंख्वार आवाज फिर उभरी और उसके साथियों ने

ईरोज को गिरफ्तार कर लिया। ईरोज के छक्के छूट गये। लेकिन थोड़ी ही देर बाद उसे जैसे होश आ गया हो।

उसने उखड़े हुए लहजे में कहा—"यह क्या बकवास है? बदतमीज! मेरा गुलाम होकर मुझसे गुस्ताखी कर रहा है।"

सुनारिया वाले एक बार फिर हैरान हो गये थे।

गुरबान ने कहा—"खामोश गुस्ताख! तू गुरबान को अपना गुलाम कह रहा है—गुरबान को जिसके तुझ जैसे कुत्ते तलुवे चाटते हैं। तूने सुनारिया के लोगों को जीने से अजीज कर दिया है। खुद तूने खण्डरात में असलहा पहुंचाया और खुद ही वहां चढ़ाई कर दी। शुक्र है कि तेरी साजिश खुल गयी। मैं गुरबान तुझे इन बेगुनाहों की जिन्दगी से खेलने की इजाजत नहीं दे सकता। तूने मेरे नाम पर यह जुल्मोसितम किये हैं। मैं तेरे लिये सजा-ए-मौत का हुक्म सुनाता हूं।" गुरबान गरजता हुआ बोला।

"बकवास मत कर! सुनारिया में किसी गुरबान का वजूद नहीं है। तू झूठा है, फरेबी है। नकाब उतार...नकाब उतार...।" ईरोज चीखा।

"सुअर के बच्चे! हमारी शान में गुस्ताखी कर रहा है। गुरबान अगर झूठा है तो तू कौन है और कहां से सच्चा है।"

अब ईरोज लोगों की तरफ मुंह करके बोला—"सुनारिया वालो! यह नकली गुरबान है। असली गुरबान तो कभी का मर चुका है। मैंने...हां...मैंने तुम लोगों से उसकी मौत की खबर छुपायी थी। अब इस बहरूपिये से कहो नकाब उतारे।"

"वाह...। देखा तुमने...इसे कहते हैं नमक हराम। इस कमबख्त को देखो, पहले मुझे गुरबान गुरबान कहकर लोगों के सामने पेश करता रहा है और अब अपना काम निकल गया तो कैसी आंखें फेर रहा है। मुझे खुद तो नकाब पहनायी और अब हरामजादे! कहता है नकाब उतार दूं। ऐ बेवकूफ कुत्ते के पिल्ले! अगर मैंने नकाब उतार दी तो तू कुत्ते की मौत मर जायेगा। देख ले कैसे ऊपर वाले ने तेरा मुंह काला किया है।" गुरबान चीख-चीखकर कह रहा था।

भीड़ चिल्ला पड़ी—"महान गुरबान! नकाब उतारो—नकाब उतारो।"

"मैंने अगर नकाब उतार दी तो मेरे इस दोस्त का क्या होगा

जो बंधा खड़ा है।" अचानक ही शोला ने उसकी आवाज पर गौर किया और फिर वह अपनी जगह से इस तरह उछला जैसे बिच्छू ने डंक मार दिया हो। तीव्र जज्बात से उसका चेहरा सुर्ख हो गया और उसकी आंखों में रोशनी की चमक उभर आयी।

उसने कगोल से कहा—"कागोल! यह मेरा साथी फिट है। वह सचमुच बहुत जहीन है। मजाक ही मजाक में वह सब कुछ कर गुजरता है जो दूसरों के बस का रोग नहीं होता। देखो, मैं किस हाल में खड़ा हूं और वह कहां पहुंच गया है। मैदान अब उसके हाथ में है। मुझसे अलग रहकर उसने कैसा कारनामा अन्जाम दिया है।" शोला की आवाज में बड़ा प्यार था।

"मैं कुछ समझा नहीं।" कगोल की आंखों में हिमाकत के आसार नजर आये।

"वह गुरबान नहीं मेरा साथी फिट है।"

"क...क्या...कह रहे हो?"

"बस देखते रहो, क्या होने वाला है।"

गुरबान चीखकर कह रहा था—"इस पागल दीवाने को इस गड्ढे में डालकर जिन्दा दफन कर दो जो इसने तुम लोगों के लिये खोदा है। तुम्हारा आका तुम्हें हुक्म देता है।" यह हुक्म कानों में पड़ने की देर थी कि भीड़ बेकाबू हो गयी और इन्तकाम की प्यास बुझाने के लिये लोग ईरोज पर टूट पड़े। आनन-फानन में उसे मनों मिट्टी के नीचे दबा दिया गया। उसका एक भी आदमी प्रतिरोध नहीं कर सकता था। उन्हें खुद अपना अन्जाम नजर आ रहा था। उसके बाद गुरबान ने भीड़ को सम्बोधित करके अपना नकाब उलट दिया और लोगों की हैरत की चीखें निकल गयीं। एक खूबसूरत नौजवान गुरबान के भेष में उनके सामने था। सब हैरत से उसे देखने लगे। गुरबान बोदे से उतरकर दौड़ता हुआ उस जगह तक पहुंचा जहां शोला बंधा हुआ था और उसने जल्दी-जल्दी हाथ खोले।

फिर हाथ उठाकर बोला—"कहो पाताल के शहंशाह! अगर जरा-सी देर हो जाती तो बस जिन्दगी भर रोना ही पड़ता मुझे--क्या ख्याल है।"

"बस-बस फिजूल बातें न कर—बहुत बड़ा एहसान किया है तूने मुझ पर।"

"खैर, यह एहसान तो कुछ भी नहीं है। मैं जो एहसान करके आया हूं, तुम सोच भी नहीं सकते। लम्बे अरसे से मैं गुरबान के किले में रह रहा था और क्या मजे थे वहां। हर तरफ लड़कियां ही लड़कियां...सिर में तेल डालने के लिये अलग। मुंह हाथ धुलाने के लिये अलग। रोज सुबह को जगाने के लिये अलग। याद रखना—तुम्हारे लिये मैंने वह जन्नत छोड़ दी है। अब एक शब्द न कहना मेरे बारे में।"

भीड़ बेताब हो रही थी। उसने आगे बढ़कर शोला और फिट को कांधे पर उठा लिया। आज उनकी आजादी उनकी मुक्ति का दिन था। वह खुशियां मना रहे थे। उधर जुनाबिया और उसके दोनों पोते खुशी से पागल हुए जा रहे थे। उनका बस नहीं चल रहा था कि वह उन्हें क्या मुकाम दे। आखिरकार बामुश्किल तमाम जुनाबिया उन दोनों को अपने घर ले जाने में कामयाब हुई। वह बड़ी मुहब्बत का इजहार कर रही थी।

बड़ी मुश्किल से रात को कुछ वक्त उन्हें आराम करने को मिला।

शोला ने फिट को देखते हुए कहा—"तेरी दास्तान मेरे जहन में अभी तक उलझी हुई है। यह सब कुछ कैसे हो गया?"

"बात दरअसल यह है कि कोरसार के पवित्र मजहबी पेशवा फर्लांग ने हम दोनों के सुपुर्द कुछ जिम्मेदारियां सौंपी हैं। कभी-कभी उन जिम्मेदारियों को पूरा करने के लिये कुछ ऐसे काम भी करने पड़ते हैं जो जरूरी हों। मैंने यहां के हालात देखे और न जाने क्यों मुझे एहसास हुआ कि आने वाले वक्त में हम दोनों के लिये कुछ मुसीबतें तैयार खड़ी हैं। मैंने सोचा कि बेहतर है दोनों एक साथ इन मुसीबतों में गिरफ्तार न हों, बल्कि हममें से एक आजाद रहे और होशियार रहे। अतः मैं गायब हो गया। लेकिन मेरा इस तरह गायब होना किस कदर कारआमद हुआ है। इसका तुम्हें पूरा-पूरा अन्दाजा हो गया होगा।

"हां—लेकिन अगर तुम्हें ऐसे ही गायब होना था तो कम से कम मुझे बता देते। मैं भी तुम्हारे साथ निकल चलता।"

"नहीं, फिर बात कहां बनती। वैसे जिस वक्त उन लोगों ने तुम्हें सजा-ए मौत दी थी, उस वक्त मैं यहां मौजूद नहीं था। लेकिन बाद में जब मुझे तमाम सूरतेहाल का इल्म हुआ तो मैंने

अपने आप पर एक हजार बार लानत भेजी। आइन्दा इस बात का ख्याल रखूंगा....मैं ही तुम्हें लेकर आया और तुम्हारी हिफाजत न कर सका, लेकिन यह भी यकीन था कि ये लोग पाताल के शहंशाह को इतनी आसानी से मौत के घाट नहीं उतार सकेंगे।"

उसके बाद फिट ने बताया कि वह कैसे गुरबान बना। फिर जब गुरबान के किले में घुस गया तो एक रात वह गुरबान के शयन कक्ष में पहुंच गया। वह गुरबान को बेबस करके कालकों के अड्डे का पता मालूम करना चाहता था। लेकिन गुरबान को बेबस करने के बाद उसे पता चला कि वह शख्स कुछ भी जानकारी नहीं रखता। वह तो गुरबान की भूमिका अदा करने वाला ईरोज नाम का एक अदना सा गुलाम है और गुरबान तो मर चुका है। बस फिर सारी मालूमात हासिल करके फिट ने खुद गुरबान की गाह ले ली और ईरोज के उस गुलाम को खत्म कर दिया।

"उसके बाद तो गुरबान बनकर मैंने पूरी ऐश लूटी। गुरबान किले में भी नकाब में ही रहता था। किसी ने उसकी शक्ल नहीं देखी थी—यहां तक कि उन लड़कियों ने भी उसे नहीं देखा था जो उसके हरम में थीं। मैंने इसका पूरा-पूरा फायदा उठाया और ईरोज का सारा खेल खत्म कर दिया। अब बताओ, आगे का क्या प्रोग्राम है।"

"हमारा मिशन कोरसार में बाहर से आये लोगों को खत्म करना है—जिन्हें यहां कालका कहा जाता है और सुनारिया में उनका कोई अस्तित्व नहीं है। अगर ईरोज का उनसे सम्पर्क रहा भी होगा तो वह खत्म हो चुका। अब सुनारिया हर जुल्मोसितम से मुक्ति पा चुका है। अगर हम यहां रुके रहे तो ये लोग हमें अपनी बस्ती का सरदार बना देंगे और फिर हमारा मिशन अधूरा रह जायेगा।"

"वैसे मैं पाताल के शहंशाह को एक बस्ती के सरदार के रूप में देखकर काफी खुशी महसूस करूंगा।"

"मजाक मत करो फिट।"

"मैं भी दरअसल यही चाहता था कि हम यहां से निकल चलें।"

"यहां मुझे एक खतरा और भी है।" शोला ने कहा—"यहां एक खतरनाक लड़की भी रहती है जिसका नाम इरोना है। अब

इन हालात से निमटने के बाद वह यकीनी तौर पर मेरी तरफ रुख करेगी।''

''अरे वाह—फिर तो हमें यहां रुकना चाहिये।'' फिट ने शरारत भरे स्वर में कहा।

''नहीं फिट...मैं उस लड़की का दिल नहीं दुखाना चाहता। वह जिन्दगी भर के लिये मुझे अपने पल्लू से बांधने की सोचे बैठी है जो कि सम्भव ही नहीं। बेहतर है कि अभी से किनारा कर लिया जाय। सब लोग इस वक्त थके हुए हैं और गहरी नींद सो गये हैं। मैं चाहता हूं कि खामोशी से रात में हम लोग यहां से निकल जायें।''

''मुंह धो रखो जनाब! सारी बस्ती जश्न मना रही है। बाहर निकलकर देखिये...हर घर में दीपावली मनायी जा रही है।''

''मैं देख चुका हूं। एक सीधा रास्ता ऐसा है जो खुफिया जगह से होता हुआ आबादी से बाहर निकल जाता है। मेरी बात मान तो डियर फिट।''

''मान ली यार। तुम्हारी हर बात मानने के लिये ही फिट पैदा हुआ है। वैसे मैं तुम्हें एक बात और बता दूं। मैं बचपन से ही अनाथ हूं।''

''क्या मतलब?''

''जब मैंने होश संभाला तो मजहबी पेशवा की खानकाह में अपने को मजहबी तालीम हासिल करते पाया। मुझे आज तक यही नहीं मालूम कि मेरे मां-बाप कौन हैं। बचपन से ही मुझे कोरसार की खिदमत में लगा दिया गया था। काश कि मुझे अपने खानदान का पता होता।''

शोला ने उसे इसका कोई जवाब नहीं दिया—क्योंकि शोला खुद भी तो अनाथ ही था। उसकी परवरिश भी किन्हीं और रहस्यमय इन्सानों ने की थी। उसने एक जलती हुई औरत के गर्भ से जन्म लिया था—एक बिल्ला अण्डीलो उसे मुंह में दबाकर ले भागा था जिसने उसे महामाया नामक औरत तक पहुंचाया और महामाया ने उसे वृन्दास्वामी की मौत का हथियार बना डाला। महामाया न जाने कितने जन्मों से वृन्दा स्वामी से जंग लड़ रही थी। वह भी जादूगरनी थी। अण्डीलो बिल्ला वास्तव में जिन था। शोला का एक ही मकसद बनकर रह गया था—वृन्दास्वामी का

खात्मा—लेकिन वृन्दास्वामी भी शैतान की तरह मर-मर कर फिर जिन्दा हो जाता था।

रात के आखरी पहर जब सुनारिया का जश्न खत्म हो गया और चारों तरफ गहरी खामोशी छा गयी तो दोनों ने अपने बोदे संभाल लिये और फिर उनका एक नया सफर शुरू हो गया। उनके बोदे बर्क रफ्तारी से सफर करने लगे।

□□□

यह एक बड़ी सच्चाई थी कि सरजमीन कोरसार में बड़े रहस्यमय तरीके से कार्यवाही हो रही थी। गनीमत थी कि पाताल के दूसरे हिस्से में जिसमें सोने और हीरों के पहाड़ थे, वहां तक यह सरगर्मियां नहीं पहुंची थीं। पलोठाओं में उस सरहदी हिस्से में अब माहोर तैनात थे। अगर पलोठा के गृहयुद्ध और उथल-पुथल न होती, जंगें न होतीं तो शायद कोरसार वाले कभी उस तरफ का रुख न करते। शोला कालकों की बढ़ती सरगर्मी को रोकने के अलावा यह भी जानना चाहता था कि वह कौन से रास्ते से इस धरती में आते हैं। मुमकिन है यह कोई खास किस्म की आर्गेनाइजेशन हो जो अपना हेडक्वार्टर-कोरसार में बनाना चाहते हों। यह मुजरिमों का गिरोह भी हो सकता था क्योंकि विज्ञान ने अभी इस लोक की खोज नहीं की थी। यह कोई बड़ा गिरोह भी हो सकता था जो कोरसार की तमाम बस्तियों पर कब्जा करने का अभियान चलाये हुए थे। हथियारों की खेप उन्होंने ही यहां उतारी थी और कोरसार की बस्तियों में ईरोज जैसे लोग उनके सहयोगी बन गये थे। ईरोज का साथ देने वाले कालके परिस्थिति के बदलते ही फरार हो गये थे। चूंकि वह आम लोगों के भेष में थे इसलिये उनकी शनाख्त नहीं हो पायी थी। लेकिन यह तय था कि बस्ती सुनारिया पर से उनका शिकन्जा खत्म हो गया था। फिर भी उनकी कोशिशें जारी थीं। शोला को इस बात का भी एहसास हो गया था कि कालके अभी भरपूर तरीके से यहां काम शुरू नहीं कर सके थे।

बेशक वह कालकों को भारी नुकसान पहुंचाते जा रहे थे लेकिन अभी उनका कालकों से सीधा आमना-सामना नहीं हुआ था और न ही उन्हें यह जानकारी थी कि उनका हेडक्वार्टर कहां पर है, जहां से यह सारा काम संचालित हो रहा है और उसका

संचालक कौन है। कालके कुछ कर रहे थे या नहीं, यह अलग बात थी लेकिन कोरसार की सरजमीन पर बहुत से ऐसे किरदार आ चुके थे जो अद्भुत थे। उस वक्त भी एक रहस्यमय और वीरान इलाके में एक अजीब काम का आगाज हुआ था। वह असमतल चोटी चट्टान से काफी आगे निकली हुई थी और एक अजीबो-गरीब हाथ उस चोटी को पकड़े हुए नजर आ रहा था। इस हाथ के अलावा बाकी बदन का कहीं नामोनिशान नहीं था। हर तरफ खामोशी थी। किसी किस्म की कोई आवाज सुनायी नहीं दे रही थी। फिर फिजा में खौफनाक फड़फड़ाहटें आती सुनायी दीं। वह गिद्धों का एक गोल था जो जमीन पर पाये जाने वाले गिद्धों से लगभग दुगने बड़े आकार का था। यह गोल शोर मचाता हुआ उस तरफ आ रहा था। उनकी लम्बी-लम्बी गर्दनें आगे की ओर बढ़ी हुई थीं। लम्बे-लम्बे पांव नीचे लटके हुए थे और भारी भरकम बदन परों की मदद से आगे बढ़ रहे थे। उनका रुख उसी चट्टान की ओर था जिधर यह हाथ नजर आ रहे थे। शायद उनकी तेज दृष्टि ने दूर से अपनी खुराक को देख लिया था और उनकी सोच इस सिलसिले में काफी साफ नजर आ रही थी क्योंकि चंद ही लम्हों बाद वह उस चट्टान के गिर्द दायरों की शक्ल में चकराने लगे थे। वह उड़-उड़ कर ऊपर नीचे हो रहे थे और यकीनी तौर पर कहा जा सकता था कि उन्होंने अपना शिकार देख लिया है और वास्तव में उनका शिकार उस नोकदार चट्टान को पकड़कर झूल रहा था और अपने बाकी जिस्म को चट्टान के ऊपर पहुंचाने की कोशिश कर रहा था। यह बड़ी अजीब बात थी कि इतनी दूर से उसका यह संघर्ष जो न जाने कितनी देर से चल रहा था इन भयानक आदमखोर गिद्धों की निगाहों में एक नाकाम संघर्ष था और उन्होंने यह फैसला कर लिया था कि अभी थोड़ी देर के बाद उनका यह शिकार अपने संघर्ष से महरूम होकर जिन्दगी खो बैठेगा और उसके बाद उन्हें एक उम्दा गोश्त और खून नसीब होगा। लेकिन शायद अभी यह गोश्त और खून उनके भाग्य में नहीं था क्योंकि थोड़ी ही देर के बाद वह आदमी अपनी कोशिश में कामयाब हो गया और चट्टान में चढ़ने में कामयाब हो गया। उसका कद लम्बा था और उसके जिस्म पर बाकायदा लिबास था। चौड़े चकले कंधों पर लम्बी गर्दन और खूबसूरत मगर सख्त चेहरा नजर आ

रहा था। इस वक्त उसके जिस्म के विभिन्न हिस्सों से खून रिस रहा था। वह उस चट्टान पर थककर लेट गया। उसके साथ ही उसने अपनी रायफल भी रख ली थी जो कंधे से लटक रही थी। कंधों पर कारतूसों की पेटी भी पड़ी हुई थी और कमर से पिस्तौल उस पेटी से बंधा हुआ था। यानि कि अपने प्रतिद्वंदी से निपटने के लिये उसके पास खास प्रबन्ध था। अगर वह गिद्ध बुलन्दी पर उसके ऊपर मंडलाने लगे। वह उसके मरने का इन्तिजार कर रहे थे। लेकिन चट्टान पर लेटा हुआ इन्सान यह बात जानता था कि इन मंडलाते जानवरों की मौजूदगी में उसकी जिन्दगी के लिये अत्यधिक खतरा है। अगर उसे गश आ गया या वह बेहोश हो गया तो यह गिद्ध उस पर टूट पड़ेंगे। इसके अलावा एक और खतरा भी था—वह यह कि गिद्ध जिस तरह उसके ऊपर परवाज कर रहे हैं, अगर उन्हें दूर से देख लिया गया तो वह लोग जो उसे तलाश कर रहे हैं, उसकी तरफ आकर्षित हो जायेंगे। अब यह अलग बात है कि वह उसकी जिन्दगी और मौत के बारे में किस अन्दाज में सोचते हैं। अतः वह फुर्ती से चट्टान पर उठकर बैठ गया और फिर खड़े हुए बगैर हाथों और पैरों के बल एक ऐसी जगह रेंगने लगा जहां चट्टान में एक कटाव बना हुआ था। अगर वह वहां तक पहुंच जाय तो वह न सिर्फ धूप और रेत से भरे हुए हवा के झोकों से महफूज रह सकता है बल्कि यह गिद्ध भी यहां से मायूस होकर जा सकते हैं।

वह आगे बढ़ता रहा और अचानक ही उसे उस चट्टान के अजीबो-गरीब होने का एहसास हुआ। उसके दायें-बायें दोनों तरफ गहरी वादियां थीं। जिनमें कहीं-कहीं घास, पेड़ और खेत थे और कहीं सिर्फ रेत-ही-रेत! एक तरफ की वादी बड़ी संग नजर आ रही थी और उसे देखकर फौरन अन्दाजा हो जाता था कि किसी इन्सान का यहां से गुजरना असम्भव है या फिर अगर कोई बदनसीब पैदल या घोड़े पर सवार होकर इधर आ ही जाय तो गर्मी और प्यास उसकी जिन्दगी छीन लेती होगी। उसूली तौर पर इस वादी में इन्सानी ढांचों की मौजूदगी जरूरी थी, क्योंकि बहरहाल गलती इन्सानों से ही होती है। इस चट्टान की बनावट कुछ ऐसी थी जैसे अपने दोनों बाजू फैलाये हुए कोई चील खड़ी हो। यह दोनों बाजू तांबे जैसी रंगत के हो गये थे। लेकिन हैरतनाक बात यह थी कि

उन बाजुओं के नीचे गारों के दहाने भी नजर आ रहे थे। ऐसा लगता था जैसे इन गारों पर यह बाजू सायबान का दर्जा रखते हों। वह गार बेशक अंधेरे थे। चट्टान कहीं से सीधी खड़ी हो गयी थी। इन सीधी चट्टानों के अन्दर पानी मौजूद था। क्योंकि हल्की-हल्की दराड़ें नजर आ रही थीं। वहां से पानी के कतरे रिस रहे थे और यह पानी निःसंदेह इन भयानक और चटियल मैदानों में सफर करने वालों के लिये जिन्दगी ही था। समझ में नहीं आता था कि कुदरत ऐसे कारनामे जाहिर करके इन्सानों को अपने बारे में और क्या बताना चाहती है क्योंकि हर आम इन्सानों के लिये जिन्दगीबख्श होता है।

बहरहाल, वह जख्मी कोशिश करके चट्टान के सायबान तक पहुंच चुका था। उसने एक नजर भी इधर-उधर नहीं डाली थी कि इन पहाड़ों में पानी वगैरह है या नहीं क्योंकि उसकी हालत काफी खराब नजर आ रही थी। वह जिस तरह चल रहा था, उससे पता चलता था कि अब उसमें और अधिक चलने की हिम्मत नहीं है। थोड़ी देर के बाद वह उन बाजुओं के नीचे पहुंच गया जो वास्तव में इस वक्त मां की आगोश की मानिन्द थे और उसका अन्दाजा बिल्कुल दुरूस्त निकला। सबसे पहले तो वह गिद्ध अपनी नाकामी का एहसास करके वहां से वापस उड़ चले थे। जख्मी अपने तौर पर यह सोच रहा था कि अब उसके दुश्मन उसे तलाश कर रहे होंगे। लेकिन जख्मी ने हिम्मत करके जिस तरफ का रुख कर लिया था, वहां उसके दुश्मनों को इसका गुमान नहीं होगा, क्योंकि इस चट्टान पर चढ़ना अत्यंत दुश्वार था और उन्हें कम से कम यह अन्दाजा तो था ही कि उनका शिकार अत्यधिक जख्मी हालत में है।

जख्मी की कमीज खून में डूबी हुई थी और यह खून जगह-जगह से खुश्क होकर जम गया था। वह अपनी इन्तहाई कुव्वतों का इस्तेमाल करते हुए अपने आपको बेहोश होने से बचा रहा था। बेहोश होने का मतलब है सीधी-सीधी मौत क्योंकि उसके बाद जिन्दगी की हर जद्दोजहद का तसव्वुर खत्म हो जाता है। वह हवाओं के होश पर अपने दुश्मनों के कदमों की आहटों तक पर गौर कर रहा था कि अचानक उसे घोड़े की टापों की आवाज सुनाई दी। यह आवाज हवा के दोश पर आयी थी। जख्मी

असाधारण योग्यताओं का स्वामी था, क्योंकि वह इन टापों की आवाज से अपने दुश्मनों के फासले का बखूबी अन्दाजा लगा सकता था। वह जानता था कि वह सब भूके भेड़ियों की तरह उसकी तलाश में व्यस्त हैं। घोड़े की टापों की आवाजें करीब होते-होते उसे दहशतजदा भी कर रही थीं। आखिरकार फासले कम हो गये और यह आवाजें अब बिल्कुल करीब पहुंच गयीं। जख्मी ने दिल में सोचा कि आखिरकार वह यहां आ ही गये। सही मायनों में अब कठिन घड़ी आयी है। इस हालत में उनका भरपूर मुकाबला भी नहीं किया जा सकता। वह उन घोड़ सवारों को देख भी नहीं सकता था। क्योंकि वह बिल्कुल करीब आ चुके थे। अगर वह चट्टान के दूसरी तरफ न जायें तो उसके खून के धब्बे उनकी रहनुमायी चट्टान के ऊपर तक करेंगे और उसका घोड़ा जिसे उसने एक दर्रे में बांध दिया है, देख लिया जायेगा। बजाहिर चट्टान पर चढ़ने का कोई आम रास्ता नहीं है। बहरहाल, अब देखना यह है कि होता क्या है। उसे उन सुर्ख आंखों और सख्त चेहरों वाले सात खतरनाक आदमियों का पूरी तरह अन्दाजा था जो उसके खून के प्यासे थे। अचानक जख्मी के पूरे बदन में एक जुम्बिश सी हुई क्योंकि फायर की आवाज के साथ गोली एक चट्टान से टकरायी थी। शायद किसी ने चट्टान के ऊपर फायर किया था। लेकिन यह एक बेहतर अम्ल था। चूंकि कुछ देर बाद घोड़ों की टापों की आवाजें दोबारा सुनायी दीं जो निरन्तर दूर होती जा रही थीं। जख्मी होने वाला शख्स मुस्कराये बगैर न रह सका। वैसे वह इन इलाकों के बारे में सोच रहा था न ज़ाने कौन-सी जगह है। खुशकिस्मती यह थी कि इस चट्टान तक किसी न किसी तरह पहुंच गया और उन सवारों से जान बचाने में कामयाब हो गया था। बहरहाल उसने चट्टान से रुखसार टिका दिया। अत्यधिक घायलावस्था में भी वह लम्बा सफर कर चुका था और उसके जख्म से खून भी बहुत अधिक बह गया था। अतः अब जब जिन्दगी की उम्मीद पैदा हो गयी थी तो उसका सिर भारी होने लगा। जबान तीव्र प्यास से खुश्क थी और होंठ बुरी तरह फट गये थे। उसे लग रहा था अगर उसे फौरी तौर पर मदद न मिली तो भूख-प्यास और जख्मों की पीड़ा उसकी जिन्दगी छीन सकती है। उसे अपने पूरे वजूद में बुखार भी महसूस हो रहा था। लेकिन अत्यधिक मजबूत आत्मशक्ति का

मालिक था क्योंकि उसके होशोहवास मुकम्मल तौर पर बरकरार थे। हालांकि आंखों के हलकों में दर्द की टीसें उभर रही थीं लेकिन वह अपना संतुलन बनाये हुए था। इस वक्त उसे आराम की सख्त जरूरत थी और साथ ही जख्म की देखभाल की थी। वह सोचने लगा कि उसे कौन-कौन सी चीजों की आवश्यकता है और थोड़ी सी आग भी दरकार है। उसमें इतनी हिम्मत नहीं थी कि उठकर सूखी लड़कियां इकट्ठी कर सके और फिर पानी कहां है। गर्म करने के लिये बर्तन कहां है। वह सोचता रहा और दर्द बढ़ता रहा। दिन अन्तिम पड़ाव पार कर रहा था। उसके साथ-साथ हवा में खनकी बढ़ती जा रही थी। उसका जहन डूबने लगा था। फिर उसकी आंख मुंद गयी हवा के सर्द झोंके उसे बेअसर मालूम हो रहे थे। रात हो चुकी थी और बेहोश और लावारिस शख्स उसी तरह जमीन पर पड़ा हुआ था। रात उसी अन्दाज में गुजर गयी। लम्हात ऐसे ही गुजर जाते हैं। फिर दिन निकल आया। हवा के तेज झोंके रेत को उड़ाये लिये चले आ रहे थे। सारी रात इसी तरह गुजर गयी थी। सूरज की तेज रोशनी ने आग दौड़ाई तो उसके जिस्म में हल्की सी जुम्बिश पैदा हो गयी और फिर एक तेज कराह के साथ उसकी आंखें हिलने लगीं। दिमाग उसे एक बार फिर होश में लाने की कोशिश कर रहा था। अभी उसने आंखें नहीं खोली थीं कि अचानक उसका एहसास जाग गया। उसे यों लगा जैसे उसके चेहरे पर किसी ने कोई बड़ी-सी चीज डाली हो। फिर उसे ऐसा लगा जैसे उसकी कमर में बंधी बेल्ट किसी ने खोली हो। उसका जहन पूरी तरह सोचने समझने की कोशिश में नाकाम हो रहा था। अचानक ही उसने आंख खोल दीं। चट्टान पर उस वक्त वह चित्त पड़ा हुआ था। उसने सिर उठाये बगैर अपनी आंखें खोलकर इधर-उधर देखा और उसे एकदम यों लगा जैसे उसके सिर पर कोई साया-सा हो। कदाचित कोई इन्सानी वजूद था जो उसके बिल्कुल करीब बैठा हुआ था। उसे फौरन ही खौफ का एहसास हुआ और वह सिर झटक कर देखने की कोशिश करने लगा। लम्बे-लम्बे घने स्याह बाल झुके हुए थे और उसके चेहरे पर भी चिपके हुए थे। इसका मतलब है कि उसके पास जो इन्सानी वजूद है वह किसी लड़की का है। यकीनन वह कोई लड़की थी जो उसके चेहरे पर झुकी गीले कपड़े से उसका चेहरा साफ कर

रही थी और उस गीले कपड़े की ठण्डक उसने महसूस की थी। लड़की उसकी सुर्ख-सुर्ख आंखें देखकर संभली, हालांकि इस वक्त उसकी आंखें भावरहित थीं। क्योंकि अभी तक उसका दिमाग ठीक तौर पर सोचने में असमर्थ था।

फिर एकाएक लड़की की सुरीली आवाज उभरी–"कैसे हो?"

लड़की के इस सवाल पर उसने देखा सुना महसूस किया। यह सवाल उसके जहन तक पहुंच गया था। उसने कई बार अपने होठों को जुम्बिश देने की कोशिश की और इन्तहाई कोशिशों के नतीजे में उसके मुंह से निकला–"ठीक।" उसके साथ ही उसकी खुश्क जबान होठों को तर करने लगी। प्यास और बुखार से होंठ तड़ख रहे थे। लड़की ने एक निगाह उसके चेहरे पर डाली। फिर जल्दी से अपने करीब रखी हुई पानी की छागल उठायी और उसे खोलकर उसके मुंह पर लगा दी। वह लेटे ही लेटे सारा पानी पी गया। लेकिन पानी पीकर कमजोरी ने फिर हमला किया और उसका जहन डूबने लगा। उसने अपने आपको लाख समझाने की कोशिश की थी, लेकिन वह बेखबर हो गया। तब लड़की जल्दी से उसके पास से उठ गयी। वह खोजी दृष्टि से उसे देख रही थी। कुछ देर तक वह उस पर निगाहें जमाये रही फिर अपनी जगह से उठी और अपने आसपास पड़ी सूखी लकड़ियां जमा करने लगी। लकड़ियों का एक गट्ठर जमा करने के बाद उसने उसे तरतीब से लगाया और फिर आग रोशन कर दी। जख्मी दुनिया से बेखबर हो चुका था और आखिरकार उसे जब दोबारा होश आया तो शाम के साये गहरे होने लगे थे। न जाने कहां से उसके बदन में एक कुव्वत पैदा हो गयी थी। उसने अपने सिर को दो-चार बार जुम्बिश दी और फिर खुद को संभालकर बैठने की कोशिश करने लगा। लेकिन हकीकत यह थी कि उसका जिस्म उसका साथ नहीं दे रहा था। थोड़ी सी कोशिश के बाद वह थक-सा गया और लेटे ही लेटे उसने उस चट्टान के आसपास निगाह दौड़ाने की कोशिश की। जहन पर जोर भी डालता जा रहा था। फिर उसने कुहनी के बल थोड़ा-सा उठकर अपने जख्म को देखा और उसे जरा-सी हैरत हुई क्योंकि जख्म धोकर साफ कर दिया गया था और अब उस पर पट्टी बंधी हुई थी। उसने देखा कि उसके घोड़े की जीन भी उसके

बराबर में पड़ी हुई है। उसकी रायफल और दोनों पिस्तौल भी उसके हाथों की पहुंच से दूर नहीं थे। वह सफरी थैला जिसमें उसकी आवश्यकता का सामान था, वह भी पास ही रखा हुआ था। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि यह सब कैसे हो गया। बहुत सी चीजें तो उसके पास थीं भी नहीं लेकिन उन्हें यहां लाकर रख दिया गया था। फिर उसके जहन में वह लड़की उभर आयी। दिमाग एहसास दिला रहा था कि जैसे वह सपने की बातें हों, लेकिन जख्म की पट्टी और उन चीजों की मौजूदगी यह जाहिर करती थी कि वह सिर्फ सपना नहीं था। इसका मतलब है कि उस लड़की ने उसकी मरहम पट्टी की है और यह घोड़े की जीन और सफरी थैला वगैरह भी वहीं चट्टान के ऊपर लायी है। वह कौन है—क्या वह यहां तन्हा है या उसके साथ कुछ और लोग भी हैं। आह! कहीं वह मेरे दुश्मनों से तआल्लुक तो नहीं रखती है या उसने किसी को मेरे बारे में कुछ बता तो नहीं दिया है। अचानक उसे ख्याल आया कि यह लड़की यहां तक पहुंची कैसे? अगर वह इस जगह को जानती है तो फिर दूसरे भी जान सकते हैं। और वह दूसरे उसके वह दुश्मन भी हो सकते हैं जो उसकी जिन्दगी छीनने के लिये आसपास घूम रहे होंगे। अगर उन्होंने लड़की को यहां आते हुए देख लिया तो फिर क्या होगा। लेकिन उसके इन सवालों का जवाब कहीं भी नहीं था। लड़की भी आसपास मौजूद नजर नहीं आती थी। फिर थोड़ी देर गुजरी थी कि अचानक आहट हुई। वह फौरन ही मुड़कर देखने लगा। हो सकता है कोई जंगली चूहा या खरगोश, लेकिन यह तसव्वुर गलत साबित हुआ। यह सुबह वाली लड़की ही थी जो बहुत ही खुश्क लकड़ियां दोनों हाथों में उठाये एक तरफ से प्रकट हुई थी। जख्मी अजनबी ने पहली बार उसे गौर से देखा। लड़की का चेहरा हर प्रकार के जज्बात से कोरा था। न दोस्ती न दुश्मनी। अचानक ही एक ख्याल जख्मी के जहन में आया—क्या यह सुबह से अब तक यहीं मौजूद है? लेकिन क्यों? वह खामोशी से लड़की को काम करते हुए देखता रहा। लड़की ने एक बार फिर लकड़ियां जलाकर आग रोशन कर दी और उस सफरी थैले से एक बर्तन निकालकर पानी गर्म करने लगी। जख्मी खामोशी से लेटा उसे काम करते देखता रहा। पहली बार उसने एक मर्द की निगाह से लड़की को देखा। वह खूबसूरत नयन नक्श रखती थी। स्याह

घने बाल, सुर्ख व सफेद रंगत, लम्बा कद और मजबूत जिस्म। चेहरे पर बड़ी-बड़ी आंखें जिस प्रर पलकें झुककर सायबानी कर रही थीं। सुतवां नाक और दरमियानी दहाना लिबास स्थानीय तर्ज का और दाग धब्बों में साफ था। उसके चेहरे पर नारी की कोमलता की बजाय मर्दानगी की पुख्तगी छायी हुई थी। सम्भव है उसे यह एहसास न हो कि वह होश में है।

जब पानी गर्म हो गया तो वह बर्तन उठाकर जख्मी के पास आकर दो जानू बैठ गयी, और उसका जख्म खोलकर धोने लगी। अब भी उसने उसके चेहरे पर निगाह नहीं की थी। जख्मी ने भी बिल्कुल खामोशी इख्तियार कर ली। लड़की ने ज़ख्म साफ करके उस पर कोई दवा लगायी जो वह अपने साथ लेकर आयी थी। फिर उसने उसके जख्म पर एक साथ पट्टी बांध दी और उसके बाद उसने बर्तन में से कोई तरल उड़ेल लिया और उसे लेकर जख्मी की तरफ आकर्षित हुई। लेकिन जख्मी की निगाहें अपने ऊपर केन्द्रित देखकर वह जैसे किसी ख्वाब से चौंक पड़ी। फिर उसके होठों पर एक मद्धिम-सी मुस्कराहट फैल गयी।

"अरे! तुम होश में हो?"

जख्मी के होठों पर भी मुस्कराहट के जवाब में मुस्कराहट आ गयी और उसने आहिस्ता से कहा—"जब तीमारदार इस कदर हमदर्द और मुहसिन हो तो इन्सान होश में क्यों नहीं आयेगा।"

लड़की जानदार तरीके से मुस्करा दी। फिर उसने नौजवान का सिर अपने हाथ से ऊपर उठाया और तरल पदार्थ के छोटे-छोटे घूंट उसे पिलाने लगी। जख्मी को अपने जिस्म में जैसे नयी जान पड़ती महसूस हुई। तरल खत्म करने के बाद उसने लड़की की तरफ देखा।

बोला—"अगर इन्सानों के दिल में इन्सान के लिये यह हमदर्दी न हो तो हम अपने आप इन्सान होने का हक खो बैठेंगे।"

"क्या हुआ था तुम्हारे साथ?"

"बस कुछ दुश्मन हैं मेरे जो मुझे जिन्दगी से महरूम करना चाहते हैं। है ना अजीब बात! कुछ ऐसे हैं जो जिन्दगी छीन लेने के इच्छुक होते हैं और कुछ ऐसे हैं जो जिन्दगी बांटते फिरते हैं।"

"बोलते बहुत हो।" लड़की बोली।

"मना करो तो नहीं बोलूंगा।"

"क्या नाम है?"

"ताम्बोस। तारजीला का बाशिन्दा हूं।"

"मेरा नाम सनोबा है। मेरी बस्ती यहां से थोड़े ही फासले पर है। उसका नाम केका है।"

"मैंने उस बस्ती का नाम सुना है। तुम केका की रहने वाली हो। अच्छा बताओ, केका या उसके आसपास तुमने शोला या फिट का नाम सुना है?"

"शोला और फिट? नहीं, मैंने यह नाम नहीं सुने। क्यों खैरियत।"

"देखो, मैं जख्मी हूं और यह नहीं कह सकता कि जिन्दगी कितनी देर मेरा साथ देगी, मुझे यों लग रहा है जैसे मेरी जिन्दगी ज्यादा लम्बी न हो। अव्वल तो मेरे दुश्मन...फिर मेरा जख्म तुम देख चुकी हो। मैं नहीं जानता कि जो कुछ मैं कह रहा हूं वह ठीक है या गलत। लेकिन बस एक आसमानी आवाज मेरे कानों तक गूंज रही है। मैं तुम्हें अपने बारे में सब कुछ बता देना चाहता हूं सनोबा।"

लड़की ने हमदर्द निगाहों से उसकी तरफ देखा। फिर न जाने क्यों वह कुछ देर उस नौजवान पर निगाहें जमाये रही। ऐसा कड़ियल, ऐसा हसीन नौजवान अगर जिन्दगी से महरूम होने जा रहा है तो यह वाकई गम की बात है। ऐसा होना तो नहीं चाहिये। वह सोच रही थी और उसकी निगाहें नौजवान के चेहरे पर जमी हुई थीं।

फिर उसने कहा—"अगर तुम मुझे कुछ बताना चाहो ताम्बोस तो बता सकते हो। मैं किसी भी तौर तुम्हारे लिये नुकसान- देह साबित नहीं हूंगी।"

"जैसा कि मैं तुम्हें बता चुका हूं कि मैं बस्ती तारजीला का रहने वाला हूं। मेरे मां-बाप मर चुके हैं, लेकिन वह मेरे लिये अच्छी खासी दौलत छोड़ गये थे और मैंने उससे हमेशा ऐशोइशरत की जिन्दगी गुजारी, लेकिन मेरे दिल में कोरसार के मुकद्दस पेशवा फर्लांग का मान बहुत बड़ा है। फर्लांग कोरसार के राजगुरु भी हैं। जब मैं उनके हुक्म पर उनके पास पहुंचा तो उन्होंने मुझे शोला और फिट के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि ये दोनों कोरसार के कालकों की जड़ें उखाड़ फेंकेंगे। वह दोनों इसी इलाके में कालकों

की तलाश में भटक रहे हैं। पवित्र राजगुरू ने मुझे एक काम सौंपा। उन्होंने मुझे मुहरशुदा दस्तावेज दिया और कहा कि इसमें कालकों का राज छुपा हुआ है। यह जिस तरह भी सम्भव हो शोला तक पहुंचा दिया जाये। मैंने इस जिम्मेदारी को स्वीकार कर लिया और उसके बाद मैं वहां से चल पड़ा। एक छोटी-सी बस्ती में मैंने उनके बारे में जानकारी हासिल की और मेरी बदकिस्मती ने मुझे ऐसे लोगों तक पहुंचा दिया जो कालकों के नुमाइन्दे थे। उन्होंने मुझे विश्वास में लेकर मुझसे मेरे मिशन के बारे में जानकारी हासिल की और फिर यह सूचना कालकों को दे दी गयी। बस उस वक्त से मेरे पीछे दुश्मनों का एक ग्रुप लग गया। मुझे एकदम अंदाजा हो गया था कि मुझसे गलती हो गयी है। लेकिन अब क्या कर सकता था। यह गलती जो हो गयी थी। बस उसके बाद से अपने दुश्मनों से आंख मिचौली खेलता फिर रहा हूं और वह मेरे पीछे लगे हुए हैं। बहुत बड़े इलाके की छानबीन कर चुका हूं मैं। शोला और फिट के बारे में थोड़ा अर्सा पहले यह पता चला कि वह बस्ती सुनारिया में थे और वहां उन्होंने एक बहुत बड़ा काम किया और उसके बाद वहां से निकल आये। मेरे दुश्मन निरंन्तर मेरे पीछे लगे हुए हैं। आखिरकार उन्होंने मुझे सुनारिया के बाहर तलाश कर लिया और उसके बाद मेरे और उनके दरमियान एक छोटी सी जंग हुई। लेकिन यहां भी मेरी एक गलती ने मुझे जख्मी कर दिया और अब मैं यहां मौजूद हूं। सुनो सनोबा! फर्लाग के बारे में अगर तुम जानती हो तो तुम्हें इस बात का अन्दाजा होगा कि वह बहुत बड़ी शख्सियत है। उनका यह पैगाम हर कीमत पर शोला तक पहुंचाना है। तुमने मेरे सीने के करीब जो पट्टी बंधी हुई देखी है, उसके नीचे वह दस्तावेज मौजूद हैं। सनोबा! तुम लड़की हो। नहीं जानता कि तुम यह काम कर सकोगी या नहीं, लेकिन यह दस्तावेज कालकों के हाथ में भी नहीं जाना चाहिये। तुम इसे अपनी कस्टडी में ले लो। वैसे मैं तुमसे अभी यह नहीं कह सकता कि यह काम तुम करो। लेकिन अगर कभी शोला नजर आ जाये तो सनोबा तुम यह काम अवश्य करना। यह दस्तावेज मैं तुम्हें देना चाहता हूं।''

ताम्बोस ने खुद अपने हाथों से दस्तावेज खोला और उसे सनोबा की तरफ बढ़ा दिया। सनोबा ने कांपते हाथों से यह दस्तावेज ले लिया।

उसने किसी कदर हमदर्दी भरे लहजे में कहा—"मायूसी का शिकार न हो। अभी थोड़ी देर तुम्हारे पास रुकने के बाद मैं अपनी बस्ती में वापस जाऊंगी और अपने भाई को साथ लेकर आऊंगी। मेरा भाई बस्ती का सबसे ताकतवर नौजवान है। हम तुम्हें पनाह देंगे। अब बेफिक्र रहो। तुम्हारा यह संदेश जो अब मैंने अपने कब्जे में ले लिया है, मैं इसे शोला तक पहुंचाऊंगी। तुम्हें इत्मीनान रखना चाहिये।"

नौजवान की आंखों में एहसानमंदी के आसार फैल गये।

फिर उसने कहा—"तुम क्या करोगी—कैसे जाओगी?"

"बस, तुम इसकी बिल्कुल फिक्र मत करो। मेरी बस्ती यहां से अधिक फासले पर नहीं है। तुम्हारा जख्म अगर इतना संगीन न होता तो मैं तुम्हें खुद अपने बोदे पर बिठाकर बस्ती में ले जाती। लेकिन अब तुम्हारे लिये थोड़ी-सी इमदाद करना जरूरी है, जरा-सा अंधेरा और फैल जाय तो मैं खामोशी से निकल जाऊंगी। वैसे तो मेरे लिये कोई मुश्किल नहीं है, लेकिन फिर भी मैं ताराब को जाकर बता दूंगी। वह फौरन मेरे साथ आ जायेगा।"

"बहुत-बहुत धन्यवाद।" नौजवान ने जवाब दिया। लड़की काफी देर तक उसकी दिलजोई करती रही। फिर जब रात हो गयी तो उसने ताम्बोस से इजाजत मांगी।

"देखो, यह काम मैं आज ही रात कर लूंगी। तुम हौसला रखना—किसी तरह की फिक्र न करना।"

"तुम्हारा बेहद धन्यवाद।"

फिर वह धीरे-धीरे चलती हुई उस जगह पहुंची जहां उसका और ताम्बोस का बोदा बंधा हुआ था। उसने अपने बोदे की रस्सियां खोलीं और उसकी पुश्त पर सवार हो गयी। उसने आहिस्ता-आहिस्ता अपने बोदे को आगे बढ़ाना शुरू किया। बोदे पर उसकी रायफल और पिस्तौल भी मौजूद था।

खासा फासला तय कर लिया था कि अचानक उसे रुकना पड़ा। उसे एकदम से गोलियां चलने की आवाजें सुनायी दीं और यह आवाजें उसी दिशा से आ रही थीं जहां ताम्बोस मौजूद था। सनोबा के दिल में एकदम दहशत-सी उभरी। उसने अपनी रायफल उतारकर हाथ में रख ली और बोदे की पुश्त पर जमकर बोदे को वापस उसी ओर दौड़ा दिया। थोड़ी ही देर बाद उसने चिंगारियां

उड़ती हुई देख ली थीं। उसे साफ पता चल गया था कि गोलियां चट्टान पर बरसायी जा रही हैं और चट्टान से भी जवाब दिया जा रहा है। गोया ताम्बोस और उन लोगों के दरमियान मुकाबला शुरू हो गया था। एक लम्हें के लिये तो सनोबा परेशानी के अन्दाज में खड़ी रही। फिर अचानक ही उसने यह फैसला किया कि उसे खुद भी इस जंग में शामिल हो जाना चाहिये। अतः वह ऐसी जगह का चयन करने लगी जहां से वह उन लोगों को मुकाबला कर सके।

रात के अंधकार की वजह से यह नजर नहीं आ रहा था कि ताम्बोस पर हमलावर लोग कहां छुपे हुए हैं। वह आंखें फाड़ती रही और उधर मुकाबला तेजी पकड़ता चला गया। फिर उसने उन लोगों को देख लिया। उन्हें अभी तक किसी और की मौजूदगी का एहसास नहीं हुआ था। यकीनी तौर पर उन्होंने अकेले ताम्बोस को ताड़ लिया था और अब उसकी मौत की प्रतीक्षा में थे। न जाने इन लोगों की संख्या कितनी है--सनोबा ने सोचा। फिर पहले दो लोग उसके निशाने पर आये तो उसने उन्हें भून डाला, थोड़ी ही देर के बाद उसे एहसास हुआ कि वह लोग फरार हो रहे हैं। सनोबा ने कुछ और गोलियां चलायीं। एक और चीख सुनायी दी और उसके बाद खामोशी छा गयी। बाकी हमलावर भाग गये थे। लेकिन सनोबा के जहन में तूफानी झक्कड़ चल रहे थे। वह ताम्बोस के लिये चिन्तित हो गयी थी। न जाने बेचारे पर क्या गुजरी। अतः थोड़ी देर बाद वह अपने बोदे सहित उस चट्टान पर पहुंच गयी। बोदे की पुश्त पर चढ़कर चट्टान पर चढ़ना पहले की अपेक्षा ज्यादा आसान साबित हुआ और वह फुर्ती से ऊपर चढ़ गयी। लेकिन ऊपर पहुंचने के बाद उसने जो मंजर देखा वह उसके लिये बहुत कष्टदायक था। उसने ताम्बोस के जिस्म को मुड़े-तुड़े देखा और एक लम्हे के अन्दर उसे यह अन्दाजा हो गया था कि ताम्बोल मर गया है। उसके जिस्म के विभिन्न हिस्सों से खून बह रहा था। सनोबा पथरायी निगाहों से उसे देखती रह गयी। ताम्बोस मर चुका था।

फिर उसने आहिस्ता से कहा--"मुझे मुआफ करना...मुआफ करना मुझे, मैं वह न कर सकी जो करना चाहती थी।" यह शब्द अदा करते हुए अचानक ही उसकी आंखों से आंसुओं का सैलाब बह निकला। वह जार-जार रोती रही। फिर बहुत देर गुजर गयी

वह अपनी जगह से उठी और चट्टान के नीचे उतर आयी। थोड़ा फासला तय करने के बाद उसने उस बोदे को भी खोल दिया—जो ताम्बोस का था और आहिस्ता से बोली—"तुम्हारा मालिक अब इस दुनिया में नहीं है। तुम यहां रहकर क्या करोगे।" यह कहकर वह अपने बोदे पर सवार हो गयी और सुस्त चाल से बोदा आगे बढ़ने लगा।

□□□

शुरूआत में तो ज्यादा तेज रफ्तारी से सफर करना पड़ा था। उनके जहन में यह ख्याल था कि सम्भव है सुनारिया के बाशिन्दे जज्बाती होकर उनकी तलाश में निकल खड़े हों। विशेष रूप से सीध और लाजा को तो बेहद मायूसी हुई होगी। जब उन्होंने उन्हें न पाया होगा और यकीनी तौर पर ऐसा हुआ था। बस्ती सुनारिया के बाशिन्दे तो शोला को देवताओं का दर्जा दे रहे थे और सुनारिया के बाशिन्दों ने उन्हें दूर-दूर तक तलाश किया था लेकिन उन्हें नहीं पा सके थे। उधर शोला और फिट अपना यह सफर जारी रखे हुए थे। संयोग की बात थी कि मौसम भी उन्हें अच्छा ही मिल रहा था इसलिये वह बिला सोचे समझे आगे बढ़ते जा रहे थे। दिन भर सफर जारी रहता और फिर रात होने से पहले ही वह रात गुजारने का प्रबन्ध कर लेते और उनके बोदे उनकी निगरानी करते थे। आज भी ऐसी ही एक रात थी। वह ऐसी जगह रुके थे जहां दूर-दूर तक हरियाली का नामोनिशान तक न था, चारों तरफ भूरी-भूरी संगलाज चट्टानें सीना ताने खड़ी हुई थीं। पहाड़ी इलाका था और काफी दूर तक फैला हुआ था।

"यह जगह तो खासी दिलचस्प मालूम हो रही है मुझे।" फिट ने कहा।

"बिल्कुल! गधे के बारे में सुना है कि जब कहीं हरियाली का नामोनिशान नहीं होता तो वह बेहद तंदुरुस्त हो जाता है। यह सोचकर कि जमीन पर बिखरी हुई सारी घास खा गया है। जबकि मौसम बहार में वह दुबला होने लगता है। यह सोचकर कि वह कुछ खा ही नहीं रहा है—शायद उसकी तबियत नासाज है। तो यह भूरी और घास-फूस से खाली चट्टानें तुम्हें इसीलिये अच्छी लग रही हैं कि तुम्हारी फितरत में गधापन शामिल है।"

"तोबा...तोबा...तोबा। हर बात का अंधेरा पहलू देखना

तुम्हारी आदत बन चुकी है।"

"बेकार की बकवास मत करो।"

"कम से कम अक्ल का नहीं तो नाक का ही इस्तेमाल कर लो।"

"क्या मतलब?" शोला ने उसे ग़ौर से देखते हुए कहा।

"मुझे हवाओं में बारूद की बू महसूस हो रही है।"

"मेरा ख्याल है तुमने इतना अर्सा गुरबान के महल में गुजारा है और तुम जो कुछ मुझे वहां के बारे में बता चुके हो, उसके बाद तुम्हें तरह-तरह की बू महसूस होंगी। कोई ऐसी बात नहीं है।"

"खैर! मेरी बात तो छोड़ो। मैं तो कुछ और महसूस कर रहा हूं।"

"क्या?"

"तुम कुछ उदास-उदास से लग रहे हो।"

"तुम्हारे होते हुए इन्सान कुछ भी नहीं लग सकता।"

"खूब! खूब! वैसे एक सवाल मेरे जहन में बार-बार आता रहा है और मैंने सोचा कि कभी मौका मिलेगा तो तुमसे अवश्य पूछूंगा।"

"बको।" शोला ने मुस्कराते हुए कहा।

"कोरसार की हसीनाओं को तो खैर मैंने काफी करीब से देखा है। गुलाब के ताजा फूल जैसी लगती हैं—लेकिन तुमने ऊपर की दुनिया में खासा वक्त गुजारा है। क्या वहां किसी से दिल नहीं लगाया?"

"मैं तुमसे पहले ही कह चुका हूं कि गधे को जब मस्तियां सूझती हैं तो वह दोलत्तियां चलाता है और हलक से अपना गधा राग निकालता है। इन व्यर्थ बातों के अलावा तुम्हारे पास और कुछ बातें भी हैं?"

"ओफ्फो—यह व्यर्थ बातें नहीं हैं। यही उम्र तो है उस किस्म की बातें करने की। उसके बाद तो हमारे बच्चे ही हमारे कान खा जाया करेंगे।"

"बच्चे!" शोला हंस पड़ा।

"क्यों—तुम्हारा क्या ख्याल है—क्या जिन्दगी इसी तरह गुजार दोगे।"

"अपनी बात करो—अपनी।"

"मैं तुम्हें भी अपना ही समझता हूं शहंशाहे आजम।" फिर बोला और शोला हंसकर सामने देखने लगा।

बहरहाल, थोड़ी देर खामोशी के बाद शोला ने एक तरफ इशारा करते हुए कहा—"उधर देखो, उधर क्या है।"

"कुछ भी नहीं। अब भूरी चट्टानों में कोई हसीन चेहरा भी नजर कहीं आ सकता है? ठहरो मैं लकड़ियां इकट्ठी करके लाता हूं। उसके बाद कहवा वगैरह बनाया जाय। यहां तो बड़ी उदासी है।" फिट सचमुच अपनी जगह से उठा और लकड़ियां जमा करके उसने उनके ढेर में आग लगा दी। फिर बड़े-बड़े पत्थरों पर बर्तन रखकर वह पानी गर्म करने लगा।

मौसम सचमुच कुछ ठण्डा सा हो रहा है। हालांकि पहाड़ियां दिन भर तपती रही थीं। लेकिन इस वक्त वह ठण्डी भी कुछ ज्यादा से हो गयी थी। यों वक्त गुजरता रहा। चारों तरफ छाया सन्नाटा बड़ा रहस्यमय लग रहा था। आग अच्छी तरह दहक रही थी और वह दोनों किसी ख्याल में डूबे हुए थे। बहुत देर से फिट ने कोई चुटकुला भी नहीं छोड़ा था, लेकिन उसे ज्यादा सब्र करना कहां आता था किन्तु उसने एकदम से शोला को आवाज दी और शोला चौंक पड़ा। फिट का आवाज देने का अन्दाज कुछ ऐसा ही था जैसे कोई खास बात हुई हो।"

"क्यों क्या हुआ?"

"अभी तक तो कुछ नहीं हुआ।" फिट ने जवाब दिया—"अलबत्ता मैं तुम्हें कुछ बताना चाहता हूं।"

"बोलो...।"

"इस किस्म के पठारी इलाकों में रात को आवारा रूहें भटकती रहती हैं।"

"अब शायद तुम्हारा पेट खराब हो गया है—सारी दुनिया में हमसे ज्यादा भटकने वाली आत्मा भी भला कोई और हो सकती है।"

"नहीं—तुम यकीन करो। मेरे ख्यालात बड़े सनसनीखेज हैं। थोड़ी देर पहले की बात है कि मुझे फजा में बारूद की बू आ रही थी—दरअसल वह मेरा एक इशारा था इस बात की तरफ कि कुछ होने वाला है। यानि यह कि सुनारिया से निकलने के बाद हमने खासा अच्छा वक्त गुजार लिया और अब हम किसी न किसी हंगामें

से दो चार होने वाले हैं।''

''जाहिर है कि हम इन चट्टानों में सिर फोड़ने तो नहीं आये हैं। हंगामा तो होना ही चाहिये।'' शोला ने कहा और हंगामा उसी लम्हे शुरू हो गया। हवाओं के दोश पर अचानक ही गोलियों की आवाजें सुनायी दी थीं और रात के सन्नाटे को चीरती हुई चारों तरफ चट्टानों में फैल गयी थीं। शोला का मुंह हैरत से खुल गया। एक लम्हे के लिये तो फिट भी हैरान हुआ था, लेकिन फिर उसके होठों पर एक मुस्कराहट फैल गयी।

उसने सनसनीखेज लहजे में कहा–''ओह! लगता है निकट भविष्य में मुझे एक बहुत बड़े दरवेश का दर्जा हासिल होने वाला है। मेरी बात सच निकली।''

''अच्छा फिजूल बातें नहीं–ऐसा करो, यह आग बुझा दो।'' शोला ने कहा और फिट अपनी जगह से उठ गया। फिर उसने सचमुच जल्दी से आग बुझा दी और उसके साथ ही उन दोनों ने अपनी बन्दूकें संभाल लीं।

''कौन हो सकता है।''

''सम्भव है डाकू वगैरह हों–क्या कहा जा सकता है।''

''चलें।''

''कहां?''

''डाकुओं की तलाश में।''

''नहीं, डाकू हमें खुद तलाश करते हुए यहां तक आ जायेंगे।'' शोला ने जवाब दिया, एक बार फिर गोलियां चलीं और शोला आवाज की दिशा का चयन करने लगा। फिर उसने अपनी रायफल की नाल घुमाते हुए कहा–''इस तरफ–वह लोग इस तरफ हैं।''

''क्या ख्याल है–वाकई रुकें या आगे चलें।'' फिट ने सवाल किया। शोला कुछ न बोला।

चंद लम्हात बाद फिट बोला–''बिल्कुल...काफी तादाद है। तो फिर क्या कर रहे हो, आओ चलें।''

''बेवकूफ आदमी! हमारे चलने का कोई कारण भी तो हो। तुम क्या मेरी हिम्मत आजमाना चाहते हो।''

''अरे नहीं...नहीं। तुम्हारी हिम्मत के बारे में तो बाकायदा एक कविता लिखी है–मेरा मतलब उन दिनों जब मैं गुरबान के

महल में था।"

शोला ने कोई जवाब नहीं दिया। गोलियों की आवाजें थोड़े-थोड़े अन्तराल से अब भी आ रही थीं। बिल्कुल ऐसा लग रहा था जैसे दो गिरोह एक दूसरे पर हमलावर हो गये हों।

"हम इस तरह बैठकर जंग के खत्म होने का इन्तिजार पहले भी नहीं करते रहे हैं।"

"तुम्हारी अगर शामत आयी है तो दफाह हो जाओ। उसके बाद गायब हो जाना और जब मैं खीर पका लूं तो चमचा लेकर खाने के लिये बैठ जाना—क्या समझे।" शोला नागवारी से बोला और फिट खामोश हो गया।

सर्दी आहिस्ता-आहिस्ता बढ़ रही थी और आग बुझा देने के बाद मौसम खासा ठण्डा हो गया था। थोड़ी देर के बाद गोलियों की आवाजें बन्द हो गयीं और सन्नाटा छा गया। बहुत देर तक वह लोग इन्तिजार करते रहे कि कोई प्रतिक्रिया सामने आये लेकिन ऐसा न हुआ।

फिट ने कहा—"या तो जियाले खत्म हो गये या फिर लड़ाई दिन की रोशनी तक के लिये मुल्तवी कर दी गयी है।"

"कोरसार की इन बस्तियों में बड़े-बड़े सिरफिरे रहते हैं। हो सकता है दो गिरोह आपस में लड़ पड़े हों और उसके बाद थोड़ा सा नुकसान उठाकर नौ दो ग्यारह हो गये हों—क्या कहा जा सकता है।"

"तो फिर हम क्यों जाग रहे हैं। आराम से सो जाओ। वैसे एक बात और भी है।"

"क्या?"

"हो सकता है कुछ शिकारी टोलियां हों। जो शिकार पर गोलियां चला रही हों।"

"जो कुछ भी है, अब सुबह को ही देखा जायेगा। मैं आराम करना चाहता हूं।"

"ठीक है।" फिट बोला और फिर उन्होंने एक उचित स्थान तलाश किया और आराम करने के लिये लेट गये। बाकी रात सुकून के साथ गुजर गयी थी और दोबारा गोलियों की आवाज नहीं सुनायी दी थी। दिन निकलते ही फिट जाग गया और उसने शोला को भी जगा दिया।

कुछ देर बाद वह अपने बोर्डों पर बैठकर वहां से आगे बढ़ गये। शोला ने थोड़ा-सा फासला तय करते हुए अचानक रुख तब्दील कर दिया। फिट उस वक्त तो कुछ नहीं समझा था, लेकिन फिर फौरन ही उसकी समझ में आ गया कि शोला ने इस तरफ का रुख क्यों किया है। यह वही सिम्त थी जिधर से रात को गोलियां चलने की आवाजें आयी थीं। यह भी सम्भव था कि रात को किसी किस्म का शिकार खेला गया हो। आगे ज्यों-ज्यों रास्ता तय होता जा रहा था, विहंगम चट्टानें नजर आने लगी थीं। उनके दरमियान रास्ते की तलाश में खासी दुश्वारी पेश आ रही थी। कुछ दूर चलकर वह रुक गये। रवानगी से पहले अन्दाजा नहीं था कि किस किस्म की चट्टानों से साबका पड़ेगा। अभी वह अन्दाजे से आगे बढ़ने ही वाले थे कि उनके अकब में एक कर्कश आवाज उभरी।

"बन्दूकें जमीन पर डाल दो...वरना छलनी हो जाओगे।"

दोनों चौंककर रुक गये, लेकिन बहरहाल उन्होंने तुरन्त ही बन्दूकें जमीन पर डाल दी थीं।

"अब उधर मुड़ो लेकिन हाथ बुलन्द करके।" फिर हुक्म दिया गया। उन्होंने आवाज से अन्दाजा लगा लिया था कि उन्हें हुक्म देने वाली कोई लड़की है। बहरहाल वह पलटे और फिट ने हुक्म देने वाली लड़की को देखकर पलकें झपकायीं। वह तीखे नयन नक्श की एक खूबसूरत लड़की थी जो पिस्तौल ताने खड़ी नजर आ रही थी।

"मैं तुममें से किसी को जिन्दा नहीं छोड़ूंगी।" उसने गुर्राती हुई आवाज में कहा और शोला ने उसके चेहरे का ध्यानपूर्वक जायजा लिया।

लेकिन फिट तुरन्त बोला—"क्या हम तुम्हें जिन्दा नजर आ रहे हैं। बस तुम्हें देख कर तो वैसे भी मर जाने को दिल चाहता है।"

"बहुत ज्यादा जुबानदराजी की कोशिश मत करो। जुबान खींचकर हाथ पर रख दूंगी।" लड़की बोली और आहिस्ता-आहिस्ता चलकर उनके बोर्डों के पास पहुंच गयी।

"जुबान खींचकर हाथ पर रख दोगी। सवाल यह पैदा होता है कि जब तुम जुबान खींच रही होगी तो मेरा हाथ आगे क्यों होगा। उस वक्त तो मैं तकलीफ से पूरा टेढ़ा हो रहा हूंगा।" फिट ने

खौफनाक सा मुंह बनाकर दोनों हाथ पीछे किये और लड़की के अन्दाज में एक पल के लिये गड़बड़ाहट-सी नजर आयी। बस यही पल फिट के लिये काफी था। उसने बोदे से छलांग लगायी और लड़की के हाथ का पिस्तौल संभालते हुए नीचे आ रहा। एक लम्हे के अन्दर उसने लड़की के हाथ से पिस्तौल छीन लिया।

"बस, अब तुम ऐसा करो कि सबसे पहले मुझे मार दो। बल्कि ऐसा करो कि मेरी जुबान खींचकर मेरे हाथ में रख दो।" फिट ने अपना एक हाथ फैला दिया। लड़की हक्का-बक्का रह गयी थी। फिट उसके बिल्कुल सामने खड़ा हुआ था। और शोला के हलक से एक कहकहा निकल गया था।

लड़की की आंखों में नफरत और गुस्से की जगह खौफ की झलकियां नमूदार हो गयीं। वह उन दोनों को देख रही थी।

"हां अब क्या कहती हो। तुमने तो अपने कहे हुए शब्दों में से किसी एक का भी मान नहीं रखा। क्या ख्याल है, अब मैं तुम्हें गोली मार दूं।"

"न...न...नहीं...म...मैं मरना नहीं चाहती।" लड़की खौफजदा अन्दाज में पीछे हट गयी।

"और सुनाओ, कैसे मिजाज हैं तुम्हारे। वैसे यह गोलियां बोलियां खूब चल रही थीं। तुम बताओ, तुम हमें क्यों रोकना और मारना चाहती थीं?"

"तुम्हारे बारे में जानने के लिये। क्या...तुमने...तुमने रात को गोलियां चलायी हैं?"

"खूब! यह ख्याल तुम हमसे कर रही हो।" फिट ही बात कर रहा था।

"म...मैं जाना चाहती हूं।" लड़की ने खौफजदा लहजे में कहा।

"मगर हमें जिन्दा छोड़कर क्यों जा रही हो।"

"ब...बस...तुम मुझे मुआफ कर दो। रात को उधर उस चट्टान पर वह तारजीला का बाशिन्दा था और बेचारा...बेचारा किसी तलाश में मारा-मारा फिर रहा था। उसका नाम ताम्बोस था। मेरी उससे दोस्ती हो गयी थी। अब मुझे उसकी मौत का बहुत गम है। उसे कालकों ने मार डाला।"

शोला और फिट दोनों ही चौंक पड़े।

"लेकिन तुम लोग कालके तो नजर नहीं आते।"

"हम कालकों पर लानत भेजते हैं।"

"ठीक है, तुम मुझे मुआफ कर दो बस...मैं जाना चाहती हूं।"

"लेकिन तुमने हमें जो कहानी सुनायी है...।"

"वह कहानी है। इस चट्टान पर तुम उसकी लाश देख सकते हो। वह कालके ही थे जिन्होंने उसे मारा।"

"शायद! तुम हमारे साथ चलो। वरना यह समझ लो कि अब तुम्हारी भी खैर नहीं है, कहीं ऐसा न हो कि इस वीराने में गिद्ध तुम्हारी भी लाश घसीटते फिरें?" फिर बोला।

"क्या...ब...बकवास कर रहे हो।" लड़की खौफजदा अन्दाज में बोली।

"यह सही कह रहा है लड़की।" शोला ने पहली बार इस बातचीत में भाग लेते हुए कहा—"मुझे एहसास हो रहा है तुम्हारी जिन्दगी भी खतरे में है। जो लोग उसके कातिल हैं जिसके बारे में तुमने जिक्र किया है, वह यकीनन इस बात से वाकिफ होंगे कि तुम उसके साथ हो और उसके बाद वह तुम्हें भी जिन्दा नहीं छोड़ेगा। लेकिन क्या तुम बता सकती हो वह कौन है।"

"आओ मैं तुम्हें उसकी लाश दिखा दूं।" लड़की ने कहा और थोड़ी देर बाद शोला और फिट ने ताम्बोस की लाश देख ली जिसे देखकर उन्हें दुख हुआ था। लड़की कहने लगी—"मेरी बस्ती यहां से थोड़े फासले पर है। अगर तुम चाहो तो मेरे साथ चलो। तुम मेरे मेहमान बन सकते हो।"

"चलो ठीक है। वैसे भी तुम्हें बहिफाजत पहुंचा देना हमारा फर्ज है।" शोला ने कहा और लड़की ने पहली बार शोला को गहरी निगाहों से देखा, फिर सिर झुकाकर कुछ सोचने लगी।

फिर कहने लगी—"तुम मुझे मेरी बस्ती तक पहुंचा दोगे। वादा कर रहे हो मुझे किसी तरह का नुकसान तो नहीं पहुंचाओगे तुम।"

"अब इसके बारे में हम क्या कह सकते हैं। रास्ते में सोचेंगे कि तुम्हें नुकसान पहुंचाया जाय या न पहुंचाया जाय।" फिट ने कहा।

"बकवास बन्द करो...हां लड़की तुम क्या कहना चाहती हो?"

"मैं...मैं बस...मैं कौन हूं...क्या हूं और यहां क्यों आयी हूं? तुम यह सब कुछ मुझसे न पूछना।"

"हमें क्या जरूरत है। तुम एक लड़की हो, बस यही जानना काफी है हमारे लिये।"

"क्या यह शख्स बहुत ज्यादा बातें नहीं करता।" लड़की ने शोला से कहा।

"बेतकल्लुफी बिल्कुल बर्दाश्त नहीं की जायेगी अहमक लड़की! मैं ज्यादा बातें नहीं करता और खास तौर से तुम जैसी फिजूल लड़कियों से। वैसे तुम्हारा नाम क्या है?" फिट ने दोबारा अपने बोदे पर सवार होते हुए कहा।

"सनोबा।" लड़की सर्द लहजे में बोली।

"एक बात बताओ। इधर शिकार मिलता है।" शोला ने पूछा।

"नहीं, बिल्कुल नहीं और एक बात मैं भी पूछना चाहती हूं।"

"क्या वाकई?" फिट दांत निकालता हुआ बोला।

"तुम कौन हो?"

"हां, हम कौन हैं। सचमुच यह एक रहस्यमय सवाल है। लेकिन तुम यकीन करो, हम खुद यही तलाश करने निकले हैं कि हम कौन हैं।"

लड़की ने नागवारी से गर्दन झुकायी तो फिट फिर बोल उठा—"देखो लड़की! मैं बहुत भूखा हूं। अभी तक कुछ नहीं खाया। अगर ऐसी गजबनाक नजरों से घूरोगी तो कहीं ऐसा न हो कि तुम्हें ही कच्चा चबा जाऊं। वैसे भी मुझे इस वक्त ताजा गोश्त की तीव्रता से आवश्यकता महसूस हो रही है।"

"खैर, अब ऐसा भी नहीं। तुम मुझे इतनी आसानी से न मार सकोगे। आओ, मेरी बस्ती चलो। मैं वहां तुम्हारे खाने-पीने का प्रबन्ध कर दूंगी।"

"इसी में तुम्हारी जिन्दगी है।" फिट खौफनाक लहजा बनाकर बोला। लड़की ने नफरत से मुंह सिकोड़ लिया।

"क्या तुम पैदल ही चलोगी?" शोला ने सवाल किया।

"हां, बस्ती ज्यादा दूर नहीं है। तुम अपने बोदों की रफ्तार सुस्त रखो।"

"नहीं, यह उचित नहीं होगा। चलो फिट इसे अपने पीछे

बिठा लो।"

"मैं इसके साथ नहीं बैठूंगी। अगर तुम यह एहसान करना चाहते हो तो तुम मुझे अपने बोदे पर सवार कर लो।" लड़की ने कहा और फिट ने एक जोरदार कहकहा लगाया।

"चलो, फैसला हो गया कि लड़की किसके बोदे पर बैठेगी।"

"बकवास मत करो। लड़कियों का सम्मान करना सीखो।" शोला ने कहा और हाथ बढ़ाकर लड़की को फूल की तरह उठाया और अपने बोदे की पुश्त पर बिठा दिया।

रास्ते में उसने लड़की से पूछा—"तुम्हारी बस्ती का नाम क्या है?"

"केंका!" लड़की ने जवाब दिया।

"और तुम्हारा सरदार कौन है?"

"जार्स। जार्स बहुत खौफनाक आदमी है। यों समझ लो एक खौफनाक भेड़िया। बस, हम लोग उसे पसंद नहीं करते।"

शोला ने कोई जवाब नहीं दिया। बोदा लड़की के बतायी दिशा में बढ़ रहा था और सनोबा शोला की पुश्त से चिपकी हुई थी। वह खुद अजीबोगरीब कैफियत का शिकार थी, लेकिन शोला ने उसकी मौजूदगी को जरा भी महसूस नहीं किया था। बस उसके जहन में ताम्बोस की लाश चकरा रही थी...जिसे कालकों ने कत्ल किया था।

❑❑❑

पहाड़ी इलाकों की सड़कें आमतौर पर ऐसी ही चक्करदार होती हैं जैसे सड़कों ने पहाड़ियों को लपेट रखा हो और उनकी ढलान में हैरतनाक गहराइयां जरा-सी गफलत करने वालों को इस तरह पनाह देती थीं कि उनकी हड्डी पसलियों का भी पता न चले। लेकिन वह लड़की तूफान थी या बगोला। इन तेज पहाड़ी रास्तों पर वह इतनी तेजी से बोदा दौड़ा रही थी कि देखने वाले दहशत से कांप उठें। बोदे की रफ्तार बेपनाह तेज थी और उसके अन्दाज से यह महसूस हो रहा था जैसे वह खुले मैदान में बोदा दौड़ा रही हो। उसके साथ-साथ ही अगर वह कभी बोदे की रफ्तार को सुस्त महसूस करती तो दांत पीसकर उस पर हंटर बरसाना शुरू कर देती। वह एक इन्तहाई खूबसूरत लड़की थी। हसीनो जमाल। लिबास इन्तहाई कीमती पहना हुआ था और बिल्कुल उसी तरह का जैसा

शिकारी पहनते हैं। उसके गुस्से की शिद्दत का अन्दाजा हो रहा था। उसका निचला होंठ दांतों में दबा हुआ था जिससे यह एहसास होता था कि वह अपने आपको काबू में रखने की भरपूर कोशिश कर रही है। उसके नाक के नथुने गुस्से की ज्यादती की वजह से फूल पिचक रहे थे और सारा ललाट शिकनों से भरा हुआ था। आंखें खून की तरह सुर्ख हो रही थीं। बेशक वह एक खुशशक्ल लड़की थी, लेकिन इस वक्त गुस्से की ज्यादती ने उसके नक्शो निगार बिगाड़कर रख दिये थे। काले लम्बे घने स्याह बाल उड़-उड़ कर पेशानी पर लहरा रहे थे जिन्हें वह गर्दन के पीछे कर देती। शिकारी लिबास उसके जिस्म पर बहुत सज रहा था। यों लग रहा था जैसे किसी खास बात पर सख्त गजबनाक हो गयी हो। सीने पर कारतूसों की पेटी और कमर में दोनों तरफ पिस्तौल उड़से हुए थे। खौफनाक संगलाज पहाड़ी रास्ते तय होते जा रहे थे। यहां तक कि गहराइयों में एक बस्ती के आसार नजर आने लगे। बस्ती में जिन्दगी की रौनक थी। वह कुछ ही देर के बाद बस्ती में दाखिल हो गयी और फिर अपने बोदे को बस्ती के भिन्न-भिन्न रास्तों से गुजारती हुई एक कहवाखाने पर रुकी और यहां उसने बोदे को रोक दिया। उसके बाद वह बोदे से नीचे उतर आयी। कुछ लम्हे खामोश खड़ी कहवाखाने के सदर दरवाजे को इस तरह घूरती रही जैसे उसका भागा हुआ शिकार उसी कहवाखाने में छुपा हुआ हो। उसके बाद वह आंधी और तूफान की तरह कहवाखाने में दाखिल हुई। कहवाखाने का फर्श लकड़ी का बना हुआ था। उसके शिकारी बूटों की धमक से वहां मौजूद लोग उसे चौंक-चौंककर देखने लगे। उसे देखते ही एक तरफ बने हुए काउण्टर के पीछे से एक अधेड़उम्र आदमी निकला और तेजी से आगे बढ़कर उसके सामने पहुंच गया।

"त...तुम...तुम...यहां तुम...यहां कैसे आयीं। तुम्हें ऊपर वाले का वास्ता यहां से चली जाओ। इस वक्त तुम्हारी यहां मौजूदगी बहुत खौफनाक हो सकती है। चली जाओ, तुम्हें आसमान वाले का वास्ता—यहां से चली जाओ।"

"बकवास बन्द करो। मुझे बताओ कि वह ताम्बोस को कहां ले गये हैं?" उसने पथरीली आवाज में सवाल किया।

"तुम्हारे लिये भी खतरा है—चली जाओ। यहां से चली जाओ।" बूढ़े शख्स ने चारों तरफ देखते हुए सरगोशी के अन्दाज

में कहा और फिर उसकी नजरें एक ओर उठ गयीं। लड़की भी उधर ही देख रही थी।

उसने गुर्राती हुई आवाज में कहा—"इस काउण्टर के पीछे कौन है?" साथ ही उसका हाथ पिस्तौल के दस्ते की तरफ रेंग गया था।

"मैं कहता हूं, चली जाओ यहां से, वरना अच्छा नहीं होगा।" बूढ़ा आवाज दबाकर सख्त लहजे में बोला।

"मैंने तुमसे पूछा था कि पीछे कौन है।" लड़की के लहजे में बला की गुर्राहट थी।

"मरो, भाड़ में जाओ। मेरा क्या है—वही दोनों हैं।" बूढ़ा मुर्दा स्वर में बोला।

"इस तख्ते के पीछे?"

"नहीं—उसके पीछे जो कमरा है उसमें।"

"किन दोनों की बात कर रहे हो तुम?"

"सोमान और हारा। लेकिन एक बात मैं फिर कहता हूं कि यहां से चली जाओ। अगर तुमको कुछ हो गया तो मैं तमाम उम्र अफसोस करता रहूंगा। मैं अब इस बात का पूरा-पूरा ऐतराफ करता हूं कि मेरी बूढ़ी हड्डियां किसी की हिफाजत करने योग्य नहीं हैं। मैं जार्स को क्या जवाब दूंगा। चली जाओ सोगाला! यहां से चली जाओ।"

"मैं जरूर चली जाऊंगी लेकिन यह जानने के बाद कि वह ताम्बोस को कहां ले गये हैं। यह बात तुम जानते हो कि ताम्बोस आसानी से किसी के कब्जे में नहीं आ सकता। उसे धोखे से यहां से ले जाया गया है।"

"आसमान वाले की कसम—मैं नहीं जानता। वही दोनों जानते होंगे क्योंकि उनके साथ थे। हो सकता है वह तुम्हारे इन्तिजार में यहां रुके हों और तुम्हें भी अगवा करना चाहते हों, क्योंकि वह जानते हैं कि तुम उनके लिये ख़तरा साबित हो सकती हो। इसलिये मैं चाहता हूं कि तुम फौरन यहां से चली जाओ।" बूढ़े ने खौफजदा नजरों से एक बार फिर उस कमरे की तरफ देखते हुए कहा।

"मगर वह यह तो जानते होंगे कि ताम्बोस को कहां ले जाया गया है।" लड़की ने सवाल किया।

"जब वह उसके साथ थे तो जरूर जानते होंगे।"

"यह जानने के बावजूद कि वह दोनों ताम्बोस के अगवा करने वालों में शामिल हैं, तुम मुझे चले जाने का सुझाव दे रहे हो? तुमने उनसे खुद क्यों नहीं मालूम किया कि वह ताम्बोस को कहां ले गये हैं।"

"समझने की कोशिश करो। भलाई इसी में है कि उनको न मालूम हो कि मैं तुम्हारा हमदर्द हूं और जार्स का दोस्त।" बूढ़े ने पस्त लहजे में कहा।

"तो फिर तुम मेरा रास्ता न रोको। मैं खुद उन दोनों से मालूम कर लूंगी।"

"तुम समझती क्यों नहीं हो।" बूढ़े ने परेशान होकर कहा। जितनी देर वह बातें करते रहे उतनी देर में कहवाखाना लोगों से खाली हो चुका था। लोग खौफजदा अन्दाज में उठ-उठकर दरवाजे से बाहर जा रहे थे।

लड़की ने आहिस्ता से कहा—"ठीक है—मैं जा रही हूं।" इसके साथ ही वह चोर निगाहों से उस अकबी कमरे के दरवाजे का बगौर जायजा भी लेती रही थी। अभी उसने बाहर जाने के लिये कदम उठाया भी नहीं था कि कमरे का दरवाजा खुला और एक आदमी ने खोपड़ी निकालकर सतर्कता से दायें-बायें देखा। फिर तेजी से बाहर आ गया। उस कमरे से बाहर आने वाले ने शायद लड़की और बूढ़े को नहीं देखा था। वह शख्स अभी दरवाजे की ओर बढ़ ही रहा था कि अचानक लड़की की गुर्राहट उभरी।

"ठहरो चूहे! कहां भाग रहे हो?"

वह आवाज सुनकर वह शख्स एकदम उछल पड़ा और पलटकर उसने लड़की को देखा। फिर हैरत से उसका मुंह खुल गया। लड़की की पिस्तौल की नाल उसकी ओर उठी हुई थी। कहवाखाने का बूढ़ा मालिक थूक निगलकर रह गया। कमरे में जो शख्स नमूदार हुआ था, वह भी शस्त्रधारी था और उसकी कमर के दोनों तरफ पिस्तौल लटके दिखायी दे रहे थे। मगर वह उस लड़की को देखकर इतना हैरान हुआ था कि उसके हाथ पिस्तौल की ओर न बढ़े।

तब लड़की गुर्राकर बोली—"दोनों हाथ ऊपर उठाओ।" यह शब्द कहने के साथ-साथ ही वह आहिस्ता-आहिस्ता उसकी ओर

बढ़ने लगी थी। कहवाखाने का बूढ़ा आदमी अपनी जगह पर खड़ा रहा। अन्दर से आने वाले शख्स ने दोनों हाथ उठा दिये।

"कुत्ते! ताम्बोस कहां है?" लड़की उसके करीब पहुंचकर किसी खुंख्वार बिल्ली की तरह गुर्राई।

"वह...वह देखो तुम मुझे...तुम मुझे मार नहीं सकतीं।" वह शख्स घबराकर बोला और उसके चेहरे पर खौफ के ऐसे ही आसार नजर आने लगे जैसे वह लड़की से भयभीत हो।

"तूने सुना नहीं। मैं कहती हूं ताम्बोस कहां है?"

"तू यकीन कर...मैं नहीं जानता।" उसने थूक निगलकर कहा। लड़की का चेहरा उसी की तरफ था। लेकिन अचानक ही उसने हाथ में दबे हुए पिस्तौल का रुख तब्दील किया और धांय की आवाज के साथ गोली चली। निशाना उसी कमरे का दरवाजा था जिससे वह शख्स बाहर आया था। उस दरवाजे से एक पिस्तौल की नाल झांकी थी और उसके साथ ही एक कर्बनाक चीख सुनायी दी। शायद कमरे के दरवाजे से किसी ने लड़की का निशाना लेना चाहा था। बहरहाल कमरे के अन्दर एक कराह गूंजी और सामने खड़ा हुआ शख्स खौफनाक अन्दाज में कांपने लगा।

उसने घबरायी आवाज में कहा—"हारा...हारा अन्दर है...वह...वह।"

"बकवास बन्द कर! जैसे खड़ा है वैसे ही खड़ा रह।" यह कहकर लड़की उस दरवाजे की ओर बढ़ी जहां से पिस्तौल की नाल झांकी और अब पिस्तौल दरवाजे से बाहर आ गिरा था, सबसे पहले लड़की ने फुर्ती से पिस्तौल उठाया और अब उसके हाथों में दो पिस्तौल थे। एक उसका अपना और दूसरा अन्दर वाले का जिसने शायद निशाना बनाने की कोशिश की थी। लेकिन वह उसकी तरफ ध्यान दिये बगैर एक बार फिर बाहर खड़े शख्स की तरफ आकर्षित हो गयी जिसका नाम सोमान था।

उसने कहा—"हां, अब तू बता कि तेरे साथी ताम्बोस को कहां ले गये हैं। देख जिन्दगी बहुत कीमती चीज है। एक बार जाती है तो दोबारा कभी नहीं मिलती। मैं तेरे सीने में यह सारी गोलियां उतार दूंगी और दूसरा पिस्तौल उसके लिए छोड़ दूंगी जो अन्दर या तो कुत्ते की मौत मर चुका होगा या कम से कम उसका हाथ उसका साथ छोड़ चुका होगा।" लड़की के लहजे में सफ्फाकी

अविश्वसनीय थी।

"म...मैं...नहीं जानता...कसम ले लो, मैं नहीं जानता।" सोमान ने हकलाते हुए कहा।

"तुम दोनों यहां किसलिये रुके हुए हो?"

"म...मैं...।" सोमान का मुंह खुला और बन्द हो गया। फिर उसने आहिस्ता से कहा—"ब...ब...बस कहवा पीने और आराम करने के लिये इधर आ गया था।"

कहवाखाने का बूढ़ा मालिक अब किसी कदर पुरसुकून नजर आने लगा था।

लड़की बोली—"तो फिर ठीक है—तुम कहवा पी चुके हो। आराम कर चुके हो। अतः अब हमेशा आराम के लिये तैयार हो जाओ। कुत्ते के पिल्लो! मैं ताम्बोस के एक-एक दुश्मन का सफाया कर दूंगी। तुम दोनों के लिये तो मैं ही काफी हूं। उसे भी बाहर निकालो, ताकि तुम दोनों का किस्सा एक ही पल में पाक हो जाय।"

सोमान ने निचला होठ दांतों में दबाया और इधर-उधर देखने लगा।

लड़की फिर बोली—"चलो, दीवार की तरफ रुख करके खड़े हो जाओ।" उसने पिस्तौल की नाल से इशारा किया, लेकिन सोमान के बदन ने जुम्बिश नहीं की तो लड़की गुर्रायी—"जल्दी करो।" और उसके सिर के ऊपर से निशाना लेकर उसने गोली चला दी। सोमान जोर से उछला था और फिर उसकी हिम्मत जवाब दे गयी। वह दीवार की तरफ मुंह करके खड़ा हो गया और उसने दोनों हाथ ऊपर उठा दिये। लड़की फुर्ती से आगे बढ़ी और एक पिस्तौल पेटी में अड़स कर दूसरा जमीन पर फेंक दिया। फिर उसने सोमान की पेटी में हाथ डालकर दोनों पिस्तौल निकाल लिये। सोमान को अभी तक इस बात का ख्याल नहीं आया था कि वह खुद भी शस्त्रों से लैस है और अगर वह थोड़ी-सी हिम्मत कर ले तो लड़की से टक्कर ले सकता है। लेकिन अब क्या हो सकता था। उसके दोनों पिस्तौल अब लड़की के हाथ में थे।

"ठीक है घूम जा।" सोमान को एकदम ही एहसास हुआ था कि यह क्या हुआ है।

उसने कहा—"देखो, मैं बेकुसूर हूं...और तुम जो कुछ कर रही हो वह ठीक नहीं है।"

"मैं जो कुछ कर रही हूं वह ठीक है या गलत, इसे तुम रहने दो।" लड़की ने कहा। सोमान कुछ और कहना चाहता था। लेकिन अभी वह कुछ कहने भी नहीं पाया था कि अचानक गोली चलने की आवाज आयी और साथ ही उसकी गर्दन से खून का फौव्वारा फूट पड़ा। गोली बाहर से चलायी गयी थी और सोमान उसका शिकार हुआ था। या फिर शायद उसे ही निशाना बनाया गया था। लड़की एकदम उछलकर पीछे हट गयी और कहवाखाने का मालिक घबराकर सोमान को देखने लगा। सोमान औंधे मुंह गिरता जा रहा था और देखते ही देखते वह जमीन पर आ रहा। दो-तीन बार उसने पांव रगड़े और शायद उसके बाद दम तोड़ दिया। लड़की दौड़कर उस कमरे की तरफ बढ़ गयी जिनमें सोमान का दूसरा साथी हारा मौजूद था। कहवाखाने का मालिक भी उसके पीछे-पीछे ही था। वह दोनों कमरे में दाखिल हुए, लेकिन कमरा खाली था, अलबत्ता खून की बूंदें खिड़की तक गयी थीं और खिड़की सलाखों से खाली थी। लड़की ने दांत पीसते हुए बूंद की तरफ देखा।

"क्या इस खिड़की में सलाखें नहीं थीं?"

"नहीं।"

"ओह! तुम्हें पहले बताना चाहिये था। इसका मतलब है वह निकल गया। इधर ही से कूदकर बाहर भागा होगा और यह गोली भी उसी ने चलायी होगी। गलती हो गयी...गलती हो गयी।"

"क...क...क्या...मैं खिड़की से दूसरी तरफ उतरकर देखता हूं।"

"नहीं, मैं खुद देखती हूं।" वह खिड़की से दूसरी तरफ कूद गयी। वहां भी दीवार पर खून की बूंदें मौजूद थीं। फिर वह उस खिड़की के रास्ते कमरे में वापस आ गयी—"जाओ, अब कहवाखाने में तुम्हारा कोई ग्राहक नहीं है। मुख्य द्वार बन्द कर दो। गोली की आवाज से शायद लोगों का ध्यान इस तरफ आकर्षित हो गया। मैं नहीं चाहती कि ताम्बोस की गुमशुदगी का लोगों को पता चले।"

"समझता हूं।" बूढ़े ने कहा और सदर दरवाजा बन्द कर दिया।

"मुझे यकीन है कि वह ताम्बोस से अनभिज्ञ था। अलबत्ता

हारा यह बात जानता था लेकिन वह फरार हो गया है।''

''मुझसे बचकर नहीं जा सकेगा। वैसे यह दोनों कब तक कयाम के लिये यहां आये थे?''

''इन्होंने कहा था कि वह कल तक यहां कयाम करेंगे।''

''ठीक है, मैं चलती हूं।''

''मेरी बात सुनो—मेरे बारे में क्या सोचा है तुमने।''

''तुम्हारे बारे में?''

''हां—तुम क्या समझती हो वह इतनी आसानी से मुझे छोड़ देंगे।''

''तो मैं तुम्हें कुर्सी से बांध देती हूं।''

''मेरे जिस्म पर एक आध जख्म का निशानभी लगा दो ताकि उन्हें यह एहसास हो जाये कि मैं बिल्कुल ही बेबस कर दिया गया था।''

''ठीक है, मैं ऐसा किये देती हूं। रस्सी कहीं मिल सकेगी।''

''वह सामने काउण्टर के नीचे पड़ी हुई है।'' बूढ़े ने इशारा किया। लड़की उसे कुर्सी से बांधने लगी तो बूढ़ा बोला—''मगर अब तुम क्या करोगी। ताम्बोस के बारे में तो कुछ पता नहीं चला सका कि वह कहां है।''

''अगर उन्होंने ताम्बोस को कोई नुकसान पहुंचाया तो आसमान वाले की कसम मैं इन पर जिन्दगी तंग कर दूंगी।''

''होशियार रहना बेटी!''

''बेफिक्र रहो बाबा!'' लड़की ने जवाब दिया और उसके बाद कहवाखाने के दरवाजे की ओर बढ़ गयी। लेकिन वह घूमकर पिछली सिम्त आयी थी और उस खिड़की के करीब पहुंच गयी थी जहां से जख्मी फरार हुआ था। उसने जमीन पर खून की बूंदें तलाश करना शुरू कर दी। पथरीली जमीन पर खून की बूंदें ढूंढ लेना ज्यादा मुश्किल काम न था। वह उन बूंदों के पीछे चलती रही। फिर अचानक ही एक जगह जाकर वह बूंदें गायब हो गयीं। सोमाया की समझ में नहीं आ रहा था कि यहां से वह कहां गायब हो सकता है। आसपास कोई पनाहगाह भी नहीं थी। हो सकता है उसके जिस्म का खून बहना बन्द हो गया हो। अतः वह वापस खिड़की की तरफ पलट आयी। उसी लम्हे उसे कहवाखाने के अकब में एक चाप सुनायी दी और लड़की ने फुर्ती से पिस्तौल निकाल

लिया। फिर उसकी निगाह उस बूढ़े शख्स पर पड़ी जिसका चेहरा एक निगाह में उसे परिचित लगा था। मगर उसे कब और कहां देखा था, उसे याद नहीं आ रहा था। उस शख्स की भर्राई हुई आवाज उभरी।

"लड़की! तुमने जो कुछ किया है गलत किया है।"

"खूब! और तुम नसीहत करने वाले क्या अचानक ही आसमान से उतरे हो।" लड़की ने तुर्की-ब-तुर्की कहा।

"तुम जानती हो इसका अन्जाम क्या होगा।"

"शायद मैं नहीं जानती, लेकिन तुम मुझे बताओ।"

"पूरी बस्ती पर कयामत टूट पड़ेगी।"

"तो तुम्हारा क्या ख्याल है मेरा मंगेतर ताम्बोस क्या मामूली शख्सियत है। क्या मैं उसे अपने दुश्मनों के रहमो करम पर छोड़ दूं और यह दोनों—मैं अच्छी तरह जानती हूं इनके बारे में, यह बहुत अर्से से ऐशो इशारत की जिन्दगी गुजार रहे हैं और यह जिन्दगी इन्हें कालफों की दी हुई है। उनमें से एक को कालकों ने इसलिये मार गिराया कि कहीं यह मुझे उनके बारे में कोई महत्वपूर्ण जानकारी न दे दें—क्या पता यह लोग उनके किसी प्लान में शामिल हो रहे हों और ताम्बोस की गुमशुदगी इसी वजह से हुई हो।"

"मैं सिर्फ इतना कह सकता हूं कि और चाहता हूं कि जिस कदर जल्दी हो सके तुम यह जगह छोड़ दो।"

"मैं उस जख्मी की तलाश कर रही हूं। क्या तुम यह बात जानते हो कि वह किस तरफ गया है?"

बूढ़े शख्स ने इधर-उधर देखा फिर सरगोशी के अन्दाज में उंगली उठाकर बोला—"इस तरफ।"

लड़की ने चौंककर उसकी तरफ देखा और बोली—"मुझे धोखा तो नहीं दे रहे हो।"

जवाब में उस शख्स के होठों पर व्यंगात्मक मुस्कराहट फैल गयी फिर उसने कहा—"जब तक दुनिया पर ऐतबार नहीं करोगी, हकीकत तक नहीं पहुंच पाओगी।"

सोमाया ने एक निगाह इधर देखा जिधर बूढ़े ने इशारा किया था और फिर वह सदर दरवाजे की तरफ बढ़ गयी। यहां पहुंचने के बाद उसने अपने बोदे को खोला और एक बार फिर तूफान की तरह पहाड़ों पर चल पड़ी। कुछ दूर चलने के बाद गहराइयां

शुरू हो गयी थीं। उसने सतर्कता से घोड़े को पहाड़ की ढलवान पर उतारना शुरू कर दिया और अंततः एक साफ-सुथरी जगह पर पहुंचकर रुक गयी। घोड़े से उतरने के बाद उसकी निगाहें चारों तरफ का जायजा लेने लगीं। वह पहाड़ियों की बुलन्दियों को ध्यानपूर्वक देख रही थी। फिर उसने अपने घोड़े की लगामें एक पत्थर के नीचे दबायीं और अपना घोड़ा वहीं छोड़कर चढ़ाई की तरफ बढ़ने लगी। चट्टान की ऊंचाई की इन्तहा तक पहुंचकर वह सीने के बल लेट गयी और फिर कुहनियों पर जोर डालती हुई आहिस्ता-आहिस्ता आगे बढ़ने लगी। उसका रुख चट्टान के दूसरे सिरे की ओर था। दूसरे सिरे पर पहुंचकर उसने नीचे झांका। दूर-दूर तक किसी का वजूद नहीं था। काफी देर तक वह चट्टान के सिरे पर बेहसोहरकत पड़ी रही। फिर उस वक्त उसने चट्टान के दूसरी तरफ उतरने का इरादा किया ही था कि उसे आहट महसूस हुई और वह चौकन्ना हो गयी। फिर उसने नीचे की तरफ देखा। चट्टान की एक दराड़ से एक आदमी नमूदार हुआ था और फिर वहीं पत्थर से टेक लगाकर बैठ गया था। सोमया के लिये यह निर्णायक लम्हा था। वह उस शख्स को पहचानने की कोशिश कर रही थी, लेकिन अन्दाज बता रहा था कि वह हारा नहीं है, बल्कि कोई नयी शख्सियत है। यह उसे एक लम्हे के लिये एहसास हुआ था लेकिन रात की तारीकी में वह सही फैसला नहीं कर सकती थी, अलबत्ता वह बहुत सतर्कता से आगे बढ़ रही थी। यह उसकी असाधारण योग्यता थी जो कि उसने नौजवान को अपनी मौजूदगी का एहसास नहीं होने दिया और उसके करीब पहुंचकर उसकी गर्दन की पुश्त पर पिस्तौल की नाल रख दी।

उसके बाद गुर्राती आवाज में बोली—"अगर अपनी जगह से जुम्बिश न की तो जिन्दा रहने की सम्भावनायें हो सकती हैं।"

वह शख्स उछल पड़ा और फिर उसने गर्दन घुमाकर देखा। पिस्तौल की नाल ने उसे एहसास दिलाया था कि जिन्दगी मौत के बिल्कुल करीब है। लेकिन यहां सोमाया की जरा सी गलतफहमी हुई थी। यह जख्मी हारा ही था। वह हारा को कहरभरी निगाहों से घूरने लगी।

हारा बोला—"तुम्हारी गलतफहमियां हमें मरवाकर छोड़ेंगी। आखिर तुम मेरे पीछे क्यों पड़ गयी हो?"

"तुम्हें यह बताना होगा कि ताम्बोस कहां है और क्या तुम्हारा यह अमल होने वाले सरदार के लिये उचित था। तुमने गद्दारी क्यों की है।"

"यकीन करो हम कुछ नहीं जानते। हमें सिर्फ इतना पता है कि ताम्बोस के पास कुछ ऐसे दस्तावेज थे जो उन लोगों को नुकसान पहुंचा सकते थे। वे लोग ताम्बोस से वही दस्तावेज हासिल करना चाहते थे, लेकिन ताम्बोस उनके कब्जे में नहीं आया था। मेरे जहन में यही बात आती है कि ताम्बोस उन्हें पहाड़ों में चक्कर देता फिर रहा है। अलबत्ता मैं तुम्हें उनके एक आगामी प्लान की सूचना जरूर दे सकता हूं। जार्स को घेरने की तैयारी हो गयी है। तुम्हारा बाप जार्स कालेकों के कब्जे में आ जायेगा और शायद तुम्हें भी नहीं बख्शा जायेगा। जब से सुनारिया उनके कब्जे में से आजाद हुआ, वह बुरी तरह बौखलाये हुए हैं। या तो जार्स को उनका हुक्म मानना पड़ेगा या फिर वह जार्स को खत्म करके उसकी जगह किसी और को सरदार बना देंगे। जाहिर है कि जार्स की बेटी को भी वह नहीं छोड़ने वाले। मेरा अपना ख्याल है कि शायद जार्स उनकी शर्तें मान जाय।"

"कुत्ते! तुम अपने सरदार पर गद्दारी का इल्जाम लगा रहे हो।"

"नहीं, यह बात हमें बतायी गयी है कि जार्स तैयार हो गया है।"

"खैर! अब मैं तुम्हें हुक्म देती हूं कि तुम न सिर्फ ताम्बोस को तलाश करो बल्कि जार्स की गद्दारी का सबूत भी पेश करो, और जब तक तुम यह सबूत नहीं दे दोगे मुझे, जान लो मैं जार्स की बेटी सोमया हूं। जो कुछ तुम्हारे साथ करूंगी, तुम उसकी कल्पना भी नहीं कर सकते।"

हारा खामोशी से सामने देखता रहा। उसके चेहरे से अन्दाजा हो रहा था जैसे वह किसी कशमकश का शिकार हो। आखिर उसने एक नजर सोमाया को देखा फिर बोला—

"उन लोगों ने ताम्बोस को पकड़ने की कोशिश की थी और उसे वादी लायाला में घेरने की कोशिश की गयी थी। सुना है कि वह ताम्बोस पर काबू नहीं पा सके और ताम्बोस उनके चंगुल से निकल गया है।"

"इसके अलावा तुम्हें और क्या आदेश मिले थे।"

"शायद तुम्हें इस बात का इल्म न हो सोमाया कि ताम्बोस के निकल जाने के बाद जार्स पर हाथ डाल दिया गया है और यकीनी तौर पर तुम्हारा बाप और हमारा सरदार तुम्हें उस जगह नहीं मिलेगा जहां वह मौजूद होता था।"

"ओह! इसका मतलब है-उसे भी अगवा कर लिया गया है।"

"हां और उसके बाद तुम्हारी बारी थी। न सिर्फ मैं और सोमाया बल्कि दूसरे बहुत से लोग भी तुम्हारी ताक में हैं और शायद तुम इस बात पर यकीन न करो कि...।" अभी हारा इतना ही कह पाया था कि अचानक ही कुछ आवाजें सुनायी दीं और उनमें एक आवाज नुमाया थी।

"वह रही...।"

सोमाया चौंक पड़ी थी। उसने एक पत्थर की ओट लेते हुए उन लोगों को देखा। अचानक ही ऊपर से गोली चलायी गयी और गोली उसी बड़े पत्थर पर रगड़ खाते हुए दूसरी ओर निकल गयी जिनके पीछे सोमाया ने छलांग लगायी थी।

आवाजें फिर उभरीं—"घेर लो उसे...बहुत चालाक है, उधर देखो। निकलकर जाने न पाये। उसकी जद से बचते रहना।" किसी ने चीखकर हिदायत की और फिर बहुत से दौड़ते हुए कदमों से फजा कांपने लगी। सोमाया खुंख्वार शेरनी की तरह चारों तरफ का जायजा ले रही थी। अचानक ही उसके पिस्तौल से शोला निकला और किसी की चीख ने फजा का सन्नाटा तोड़ दिया। सोमाया का शिकार ऊपर से लुढ़कता चला आ रहा था और उसके बाद ही एकदम से आवाजें बन्द हो गयीं। उन्हें कदाचित अपने एक साथी की मौत का दुख भी हुआ था और अफसोस भी और शायद वह उसके इर्द-गिर्द इकट्ठा हो रहे थे।

सोमाया ने चट्टान का सहारा छोड़ दिया।

उसी वक्त हारा की आवाज उभरी—"ईश्वर के लिये...ईश्वर के लिये गोलियां मत चलाओ वरना वह लोग अंधाधुंध फायरिंग शुरू कर देंगे और तुम्हारे साथ मैं भी मारा जाऊंगा।" हारा के लहजे में बेहद खौफ था। लेकिन उधर एक खामोशी सी छा गयी थी। सोमाया एकदम पीछे हटने लगी और फिर अचानक ही वह

अपने बोदे के करीब पहुंची और उसने बोदे की पुश्त पर छलांग लगा दी। उसके बाद बोदा तूफान की तरह आगे बढ़ गया था। उन लोगों ने न तो दौड़ते बोदे पर गोलियां चलायी थीं और न ही उसका पीछा किया था।

❑❑❑

शोला ने सनोबा से सारी जानकारी प्राप्त की और उसके बाद उसने एक मशवरा दिया।

"लड़की! अगर तुम चाहो तो वापस अपनी बस्ती जा सकती हो। मैं यह सोच रहा हूं कि जिन लोगों ने ताम्बोस को नुकसान पहुंचाया है, वह जरूर उसके बारे में मालूमात हासिल करने की कोशिश करेंगे। अगर उनमें से कोई जिन्दा मेरे हाथ आ गया तो मैं उससे पूछूंगा कि ताम्बोस को क्यों हलाक किया गया है।"

"अगर ऐसी बात है तो मुझे भी अपनी बस्ती जाने की जल्दी नहीं है।"

"क्यों—क्या कोई तुम्हें तलाश नहीं करेगा?"

"नहीं, ऐसी बात नहीं है। मैं अक्सर लम्बे अरसे के लिये घर से गायब हो जाया करती हूं।"

"चलो फिर ठीक है।"

अतः वह वहां से तो हट गये थे। लेकिन थोड़े ही फासले पर उन्होंने अपने लिये एक जगह का चयन कर लिया था। फिट काफी दिलचस्पी महसूस कर रहा था। सनोबा वैसे भी एक जिन्दादिल लड़की थी। उस वक्त भी वह दोनों एक छोटे से झरने के किनारे खड़े हुए थे।

फिट ने कहा—"क्या ताम्बोस तुम्हारी मंजिल था?"

"सारी कहानी सुना दी तुम्हें—उसके बाद भी तुम यह सवाल कर रहे हो।"

"तो क्या मैं तुम्हारी मंजिल बन सकता हूं।" फिट बोला औ सनोबा चौंककर उसे देखने लगी।

फिर उसने कहा—"हम दोनों अजनबी हैं। तुम मुझे नहीं जानते और मैं तुम्हें नहीं जानती। उसके बाद यह बातें तो बिल्कुल व्यर्थ लगती हैं।"

"व्यर्थ बातों से आगाज होता है और उसके बाद बात आगे बढ़ जाती है।"

"मगर मैं बात आगे नहीं बढ़ाना चाहती। तुम वैसे तो बड़े शरीफ आदमी मालूम होते हो। लेकिन लड़कियों को देखकर अच्छे-अच्छे लोग फिसल जाते हैं।"

"नहीं—खैर ऐसी कोई बात नहीं है। अब तुम इतनी चिकनी भी नहीं हो कि मैं तुम्हें देखकर फिसल जाऊं।"

"फिर यह कहानियां क्यों सुना रहे हो?" सनोबा बोली।

शोला उन दोनों से कुछ फासले पर बैठा बखूबी उन दोनों की बातें सुन रहा था। सामने ही एक गार था जिसमें उन्होंने पनाह ली थी। अभी तक ऐसी कोई खास बात नहीं हुई थी जो उन्हें आकर्षित करती। लेकिन बहरहाल, शोला को इस बात का इन्तिजार जरूर था कि ताम्बोस के दुश्मन नजर आयें। अलबत्ता उसने यह फैसला कर दिया था कि ज्यादा अर्से यहां वक्त जाया नहीं करेगा। उधर सनोबा फिट की बजाय शोला के प्रति जरूर आकर्षित नजर आ जाती थी। बहरहाल, पूरा दिन वहीं गुजार दिया गया और फिर रात हो गयी थी। लेकिन आज की रात सर्दी कुछ कम थी।

फिट कुछ पिटा हुआ था। उसने सनोबा को फिर कुरेदा—"ताम्बोस तो मर गया है। क्या उसके दुश्मनों को तुम नजर नहीं आयीं।"

सनोबा चौंककर उसे देखने लगी, फिर बोली—"क्या मतलब?"

"बस्ती में तुम्हारा घर भी तो होगा।"

"हां क्यों नहीं।"

"तो फिर इन गारों में क्यों गुजर बसर कर रही हो।"

"पता नहीं तुम क्या कहना चाहते हो। तुम्हारी बातें मेरी समझ में नहीं आयीं।"

"क्यों, तुम कौन-सी जुबान समझती हो?"

"मैं हर जुबान समझती हूं। लेकिन तुम वास्तव में जहनी तौर पर भटके हुए नौजवान हो।"

"तुम्हारी उम्र कितनी है?" फिट ने अचानक पूछा फिर जल्दी से बोला—"ओहो...ओहो! जाहिर है कोरसार की लड़कियां हों या कहीं की भी, अपनी उम्र कोई भी लड़की नहीं बता सकती।"

"मैं तुमसे ज्यादा बातें नहीं करूंगी।"

"खैर! मैं खुद भी लड़कियों से ज्यादा बातें नहीं करता, तुम चाहो तो जाकर आराम से सो सकती हो।"

"क्या तुम्हारी बस्ती में कालके आते रहते हैं?" शोला ने पूछा।

"हां—मैंने उन्हें कई बार देखा है और उनमें से कुछ को मैं पहचानती भी हूं।"

रात का तीसरा पहर था। अचानक ही बोदों की हिनहिनाहट सुनायी दी और वह तीनों ही जाग गये। इस दौरान उन्हें नींद सी आ गयी थी। तीनों ने अपनी-अपनी बन्दूकें उठा ली थीं और चट्टानों की ओट में बैठ गये। गार का खुला दहाना अंधेरे में और भयानक नजर आने लगा था, काफी देर तक वह पत्थर के पीछे दुबके बैठे रहे। लेकिन दोबारा आहट नहीं सुनायी दी। बहरहाल, दूसरे दिन सूरज निकलते ही वह रवानगी के लिये तैयार हो गये। उजाला फैलते ही उन्होंने अपने बोद आगे बढ़ा दिये। लेकिन अभी वह थोड़ी दूर आगे बढ़े होंगे कि उन्हें बहुत से बोदों के हिनहिनाने की आवाज सुनायी दी। तीनों चौंककर आवाज की दिशा में देखने लगे। फिर उन्होंने उन बोद सवारों को देख लिया जो उनके चारों तरफ इस तरह फैल रहे थे जैसे उनका घेराव कर रहे हों। वह सब शस्त्रधारी थे और उनकी बन्दूकों की नालें उनकी तरफ उठी हुई थीं।

जैसे ही वह थोड़ा निकट आये सनोबा ने सरगोशी की—"यह वही लोग हैं—कालके हैं। ताम्बोस के कातिल।"

"अब तुम होश में रहो और सिर्फ परिस्थिति का अवलोकन करो।"

"ठीक है।"

बोद सवारों ने उनके इर्द-गिर्द हलका घेरा करना शुरू कर दिया था। अब वह उनके इतने करीब आ गये थे कि अब उनके चेहरे साफ देखे जा सकते थे। उनकी आंखें भी उन्हीं तीनों पर जमी हुई थीं।

फिट ने बड़ी शराफत से कहा—"क्या बात है सर जी! हमसे कोई काम है तुमको?"

उनमें से एक ने आगे बढ़कर कहा—"हां—यह लड़की कौन है और इसे कहां ले जा रहे हो तुम लोग?"

"हम... ।" फिट ने शोला का चेहरा देखा। शोला के अन्दाज से यह जाहिर होता था कि वह फिट की बातों में दखल नहीं देना चाहता। लेकिन कालकों की तलाश में वे लोग इतने समय से भटक रहे थे और यह पहला ग्रुप था जो उनके सामने आ गया था और शोला नहीं चाहता था कि वे लोग सही सलामत अपने ठिकानों पर लौट सकें।

"हम... ।" फिट कह रहा था—"हम नहीं ले जा रहे हैं सर जी! यह लड़की खुद हमें ले जा रही है।"

"ठीक है—लड़की को हमारे हवाले कर दो और तुम अपनी राह लो।" वही शख्स बोला।

"नहीं, यह भी सम्भव नहीं है।" फिट ने जवाब दिया।

"सम्भव है। अगर अपनी जान के दुश्मन नहीं हो तो कुशल इसी में है कि लड़की हमारे हवाले कर दो। यह बात हम अच्छी तरह ज़ानते हैं कि यह वही लड़की है जिसकी हमें तलाश है और तुम्हारा इससे कोई सम्बन्ध नहीं है।"

"बिल्कुल ठीक। हम मुसाफिर हैं और एक मजलूम हसीना को उसकी मंजिल तक पहुंचाने जा रहे हैं।"

"यह मजलूम नहीं है, बल्कि इन्तहाई खतरनाक लड़की है। इसने हमारे कई आदमी कत्ल कर दिये हैं।"

"निगाहे नाज से या हिरनी जैसी चाल से—कौन-सा हथियार इस्तेमाल किया था उसने?"

"देखो—फिजूल बात मत करो।"

"ठीक है, तो बताओ हमें क्या करना चाहिये?"

"उतारो इसे बोदे से उतारो।"

सनोबा ने भयभीत निगाहों से फिट की तरफ देखा। फिट ने कहा—"उतरो बोदे से। हम कोई तुम्हारे रिश्तेदार हैं जो तुम्हारे लिये मुसीबतें मोल लें। समझ रही हो ना—चलो उतरो।"

सनोबा ने गमजदा अंदाज में फिट को देखा फिर शोला को और उसके बाद सरगोशी की—"अगर तुम लोगों ने फैसला कर ही लिया मुझे इनके हवाले करने का तो मरने से पहले मैं तुम्हें कुछ देना चाहती हूं।"

सनोबा ने अपने लिबास में छुपा दस्तावेज निकाल कर शोला को दिया। शोला ने पूछा—"यह क्या है?"

"ताम्बोस की आखरी अमानत जिसे मैं शोला तक न पहुंचा सकी। अगर तुम्हें कोरसार की धरती से जरा भी मुहब्बत है तो यह दस्तावेज शोला और फिट नामक दो आदमियों तक पहुंचा देना। इन्हीं की वजह से उसे मारा गया था।"

"उतरो लड़की—उससे क्या बात कर रही हो?" कालका चीखा।

लड़की बोदे से नीचे उतर गयी। उसने एक बार फिर शोला की तरफ देखा। शोला का चेहरा भाव रहित था। जब सनोबा नीचे उतर गयी तो उनमें से दो सवार अपने बोदों से नीचे उतरे। अभी तक उनमें से कोई भी शोला के हाथ-पैरों की रेंज में नहीं था और फायरिंग खोलकर वह अपने आपको भी खतरे में नहीं डालना चाहता था। उन लोगों की बन्दूकें अभी भी उनकी तरफ तनी हुई थीं।

जब वह दोनों करीब आ गये तो फिट ने धीमे स्वर में कहा—"दो शिकार हैं—एक मेरा एक तुम्हारा।"

सनोबा के चेहरे पर खौफ के भाव थे। वह परेशान निगाहों से कभी आने वालों को देखती और कभी शोला और फिट की तरफ। उसे अपने इन दोनों हमदर्दों पर घोर आश्चर्य था जो एकदम बदल गये थे।

आने वाले करीब पहुंचे। उनमें से एक ने कहा—"लड़की को हमारे हवाले करके तुम जिधर चाहो जा सकते हो।"

"ठीक है, ठीक है ले जाओ—हमें इसका क्या करना है।" फिट ने लापरवाही से जवाब दिया।

और फिर ज्यों ही दोनों करीब आये, शोला ने अपनी बन्दूक को नाल की तरफ से पकड़कर डंडे की तरह से इस्तेमाल किया और बंदूक का कुन्दा उन दोनों में से एक के कंधे पर लगा। प्रहार इतना जबरदस्त था कि बन्दूक उसके हाथ से छूटकर नीचे गिर पड़ी। फिट ने भी एक्शन रिप्ले किया था। एक लम्हें में वह दोनों निहत्थे हो गये, लेकिन दूसरे ही लम्हे शोला और फिट ने जो कुछ किया, वह उन लोगों के लिये अविश्वसनीय था। उन्होंने जख्मी होने वालों को इतनी फुर्ती से उठाकर अपने बोदों पर बिठाया कि दूसरे लोग देखते ही रह गये और जब उन्हें एहसास हुआ कि यह क्या हुआ तो वह अत्यधिक आश्चर्य से मुंह बन्द करना भूल गये

क्योंकि शोला और फिट उन दोनों को अपनी ढाल बना चुके थे। अब सूरतेहाल यह थी कि हमलावर अपने साथियों की वजह से गोली भी नहीं चला सकते थे और नाकाम भी वापस नहीं जाना चाहते थे। शोला और फिट उन दोनों को ढाल बनाये हुए आहिस्ता-आहिस्ता हमलावरों की ओर बढ़े। शोला ने आगे बढ़कर अपने बाजू की इन्तहाई कुव्वत से काम लेते हुए सनोबा को उठाकर अपने बोदे की पुश्त पर बिठा दिया और दूसरे ही लम्हें उन लोगों ने बंदूकों को डंडे की तरह इस्तेमाल करना शुरू कर दिया। शोला यही चाहता था कि गोलियों का आदान-प्रदान न हो। अब जो वार छिड़ने वाली थी, वह कालकों को कयामत तक याद रहने वाली थी। शोला ने अपनी दोनों टांगें फ्री कर ली थीं।

फिर जैसे ही वह एक सवार के करीब से गुजरा—सवार ने चीखते हुए बन्दूक को डंडे की तरह इस्तेमाल करके शोला पर हमला किया। शोला ने बन्दूक की नाल पकड़कर उसके हाथ से छीन ली। अपनी बन्दूक उसने सनोबा को थमा दी थी। वह शख्स एक झटके से शोला के करीब आया ही था कि शोला की लात का प्रहार उसके नरखरे पर हुआ और यह ऐसा वार था जिसे उसने कोरसार में आने के बाद पहली बार इस्तेमाल किया था। उस शख्स का नरखरा टूट गया था और उसका सिर उसके कंधों पर ढलक गया। शोला ने उसकी बन्दूक छोड़ दी। अब वह बेजान होकर नीचे गिर चुका था। इस बीच फिट ने एक दूसरे कालके का सिर बन्दूक के बट से फाड़ डाला था।

वह कालकों के बीच गर्दिश कर रहे थे। शोला ने एक सवार के करीब पहुंचकर उसकी कमर पर लात मारी तो उसकी रीढ़ की हड्डी टूटने की आवाज सुनायी दी। एक और सवार की उसने दो उंगलियों से दोनों आंखें निकाल लीं। उसका चेहरा खून से लहुलुहान हो गया। एक और सवार का बाजू उसके हाथ में आ गया तो फिर वह शख्स उड़ता हुआ जमीन पर गिरा। परन्तु जिस वक्त वह गिरा उसके पास सब कुछ था। जिन्दगी भी थी—एक चीज जो उसके पास नहीं थी—वह उसका बाजू था। यह बाजू शोला ने पकड़ा हुआ था और उससे खून टपक रहा था। वह शख्स मारे दहशत के ही मर गया। फिट ने भी एक और को कमा लिया था। जो लोग जिन्दा थे और उन पर हमलावर थे, वह दहशतजदा हो

उठे। शोला उन लोगों को गाजर-मूली की तरह काट रहा था। किसी का सिर ही धड़ से गायब हो गया था और वह बिना सिर के घोड़े पर सवार नजर आ रहा था—किसी की आंतें निकलकर बिखर गयी थीं। एक ने जब देखा कि शोला टांगों से हमला कर रहा है तो उसने बन्दूक फेंककर टांग का ही इस्तेमाल किया। उसकी टांग गलती से घोड़े के मुंह पर पड़ी और शोला के घोड़े को भी जोश आ गया। उसने उस सवार का पांव मुंह से पकड़कर चबा डाला। कुछ कालके भाग खड़े हुए। वह बेहद खौफजदा हो गये थे। भागने वालों पर सनोबा ने गोलियां बरसाना शुरू कर दी। कुछ देर में ही वहां पन्द्रह लाशें पड़ी थीं।

"त...तुम कौन हो?" सनोबा जंग खत्म होने के बाद हकलायी।

"हम लोग भूत-प्रेत हैं।" फिट ने कहा—"और भूत-प्रेतों के साथ तुम्हारा रहना मुनासिब नहीं है—बेहतर है कि अब तुम्हें तुम्हारी बस्ती में छोड़ दिया जाय।"

और उसके बाद वह आगे बढ़ चले। माहौल अब गर्म हो गया था और कालकों में हाहाकार मच गया था—इसलिये वहां रुकना मुनासिब नहीं था।

❑❑❑

यह इमारत बेशक जंगानोस ने तामीर नहीं करायी थी, लेकिन आमतौर पर लोग इसे जंगानोस के नाम से जोड़ते थे और इसकी वजह शायद जंगानोस की खौफनाक शख्सियत थी। वैसे इमारत खासी पुरानी थी। अन्दर से वह खासी लम्बी-चौड़ी थी। लेकिन न जाने क्यों इतनी दूर वीराने में यह इमारत क्यों निर्माणित की गयी थी। इमारत के ऊपर एक छोटा-सा मीनार बनाया गया था। वैसे आस-पास की बस्तियों के लोग इस इमारत की तरफ का रुख नहीं करते थे। उनके ख्याल में यह बड़े जोखिम का काम था। आम लोग यही समझते थे कि इसमें भूत रहते हैं। उनका कहना था कि भटकती हुई रूहें इस इमारत में पनाह लेती हैं। मुद्दतों से किसी ने इस इमारत में कदम नहीं रखा था, लेकिन बस्ती के लोगों को यह बात मालूम नहीं थी कि रात के अंधकार में यह इमारत कभी-न-कभी रोशन हो जाती है। वह दिन के उजाले में तो हैबतनाक लगती थी लेकिन रात के अंधेरे में और ज्यादा

खौफनाक हो जाती थी। इस वक्त भी इस इमारत की खिड़कियों से अन्दर जलती हुई मशालों की रोशनियां झांक रही थीं और उसके अन्दर खतरनाक लोग मौजूद थे। वह सब हाथ बांधे खड़े थे और उन सबके चेहरों पर खौफ और आतंक के भाव नजर आ रहे थे। दरमियान में एक सिंहासन नुमा कुर्सी पर एक लम्बा चौड़ा मजबूत जिस्म का मालिक आदमी बैठा था। जिसके गले में बेशुमार कीमती हार पड़े हुए थे। उनकी उम्र चालीस साल के करीब रही होगी। उसके चेहरे पर कहर आलोद संजीदगी छायी हुई थी।

उसने एक चौड़े चकले बदन के मालिक शख्स को देखा और बोला—"कुत्ते! तू आखिर किसलिये मेरे टुकड़ों पर पलकर ताकतवर हो रहा है। मैं पूछता हूं—दो निहत्थे लोगों ने इतने आदमी कैसे मार डाले और वह लड़की तुम्हारे काबू में क्यों नहीं आयी?"

"वह कोई एक लड़की नहीं है आका! यह दो लड़कियां हैं। अभी तक हमें यही धोखा रहा कि वह एक ही लड़की है—यानि जार्स की बेटी। मगर ताम्बोस के पास जार्स की बेटी नहीं पहुंची थी। क्योंकि वह तो अभी भी ताम्बोस को तलाश करती फिर रही है। ताम्बोस की लाश के पास जिस लड़की ने फायरिंग की, वह कोई दूसरी थी और इस दूसरी लड़की को भी घेर लिया था, लेकिन उन दो अजनबियों ने जो कुछ किया, उस पर कोई भी यकीन करने को तैयार नहीं है।"

"और क्या बूढ़े जार्स ने जुबान खोली?"

"अभी तक नहीं अजीम आका।"

"आओ मेरे साथ।" जंगानोस अपनी जगह से उठते हुए बोला और उसके बाद वह इमारत में बहुत अधिक अंधेरे हिस्से में पहुंच गये।

जंगानोस के चेहरे पर एक रहस्यमय भाव था जैसे कोई अहम और निर्णायक बात करना चाहता हो।

❑❑❑

सनोबा को खतरे की दुनिया में साथ ले जाना मुमकिन नहीं था। सनोबा को सुरक्षित करने के लिये उसकी बस्ती की ओर मुड़ गये। सनोबा की बस्ती की सरहद में छोड़ने के बाद शोला ने कहा—"तुम्हारी अमानत सही हाथों में पहुंचाने की जिम्मेदारी अब हमारी है। जो दस्तावेज तुम्हें ताम्बोस ने दिये थे, उन्हें शोला तक

पहुंचा दिया जायेगा।"

सनोबा इस जंग में उनका साथ देना चाहती थी। लेकिन वे तैयार न थे। सनोबा को वहां छोड़कर दोनों आगे बढ़ गये। रास्ते में एक जगह रुककर उन्होंने दस्तावेज देखा। कोरसार के राजगुरु और मजहबी पेशवा फर्लांग ने कुछ महत्वपूर्ण जानकारियां दी थीं। कालके किस रास्ते से आते हैं और वह इलाका कहां है और किसकी मदद से वह यहां आते हैं—यह जानकारियां नक्शे सहित मौजूद थीं। फर्लांग ने कालकों पर सीधी कार्यवाही का भी निर्देश दिया था। उनके कत्लेआम का हुक्म दे दिया था। फर्लांग ने कहा था कि वक्त आने पर वह भी खुद मोर्चे पर उन्हें मिलेगा। कारनोस नामक शख्स की शनाख्त की गयी थी जिसकी मदद से कालके यहां काम कर रहे थे। वे लोग पूरे कोरसार को एक एम्पायर में तब्दील करके उसका हुक्मरान बनना चाहता था। इन जानकारियों के बाद वह चल पड़े।

फिर उन्होंने निर्धारित दिशा में चलते हुए सफर तय किया। अभी उन्होंने पहली ही रात का कयाम किया था कि एक सनसनीखेज वाकया पेश आ गया। रेत के टीलों के दरमियान पहली रात आ गयी।

अंधकार सिमट गया। कोरसार की रातें पलोठा की रातों की तरह चांदनी रात की तरह रोशन रहती थीं—यह अलग बात थी कि यहां चांद नहीं निकलता था। अगर आसमान पर बादल न हों तो रात रोशन रहती थी। अचानक उन्हें एक हल्की-सी आवाज सुनायी दी और वह उछल पड़ा। आवाज यकीनी तौर पर कहीं दूर से नहीं आयी थी, बल्कि उसका केन्द्र कहीं करीब ही था। यह आवाज किसी बच्चे के रोने की आवाज थी। आवाज सबसे पहले फिट ने सुनी। फिट एक लम्हे के लिये साकित रहा। उसे लग रहा था जैसे हवायें चीख रही हों या रेत के टीले अपनी जगह तब्दील कर रहे हों। उसने अपनी तमाम श्रवण शक्ति उस तरफ केन्द्रित कर दी थी जिधर से आवाज आयी थी और चंद ही लम्हों के बाद उसे आवाज दोबारा सुनाई दी और इस बार फिर अपने आपको शांत न रख सका। वह उछलकर खड़ा हो गया और खोजी दृष्टि से चारों तरफ देखने लगा। उसकी निगाहें शोला का जायजा ले रही थीं जो कुलबुला रहा था। कदाचित उसकी नींद भी टूट गयी

थी और यकीनी तौर पर उसने भी बच्चे की आवाज सुनी होगी। वह समझ न आने वाले अन्दाज में इधर-उधर देख रहा था कि आवाज एक बार फिर सुनायी दी और इस बार फिट को दिशा का अन्दाजा हो गया।

"यह कैसी आवाज है?" इस बार शोला ने पूछा।

"अगर तुम अपनी खूबसूरत नींद को तर्क कर दो तो शायद हकीकत मालूम हो सके। मैं दावे से कह सकता हूं कि इस वक्त कोई आवारा रूह इस सहरा में भटकती फिर रही है और ऐन मुमकिन है कि कुछ लम्हों बाद यह हमारे करीब ही पहुंच जाय।"

शोला उठकर बैठ गया, लेकिन उसका जहन अभी नींद में डूबा हुआ था। उसने एक बार फिर वही सवाल किया।

"मगर हुआ क्या है?"

"ओह...शेरों के शेर! उठकर बैठ जाओ...वरना किसी मुसीबत में गिरफ्तार हो जाओगे।"

"यह आवाज कहां से आयी थी। शायद किसी बच्चे के रोने की आवाज थी।"

"इसका मतलब है कि मैंने सच ही सुना।" फिट बोला।

"लेकिन तुम्हें अन्दाजा नहीं हो सका कि आवाज कहां से आयी है।"

"खबीस रूहें भला अपना कोई ठिकाना बताती हैं।" फिट ने जवाब दिया।

"आओ, देखें—तलाश करें।" शोला अब पूरी तरह जाग उठा था और कुछ लम्हों के बाद वह वहां से आगे बढ़ गया। फिट ने भी अपनी जगह छोड़ दी थी। बोदे मजे से रेत पर खड़े हुए गहरी नींद सो रहे थे। वह दोनों आगे बढ़ते रहे और चंद लम्हों बाद वह टीलों के अकब में पहुंच गये जहां से आवाज आ रही थीं। लेकिन यहां जो कुछ नजर आया उसे देखकर उनकी आंखें हैरत से फैल गयीं।

वह दोनों निहायत ही अजीबो-गरीब मंजर देख रहे थे। वह एक इन्सानी सिर था जो रेत पर पड़ा हुआ था और उसके पास ही एक बच्चा अंगूठा चूस रहा था। कदाचित भूख की शिद्दत की वजह से बच्चे के हलक से रोने की आवाज निकल रही थी।

वह दोनों एक लम्हे तक यह मंजर देखते रहे फिर फिट ने

आहिस्ता से कहा—"आओ, यकीनी तौर पर यह इस रेगिस्तान का जादू है...लेकिन...अब...अब...हम क्या करें।"

फिट का वाक्य पूरा होने से पहले ही शोला आगे बढ़ा और उस इन्सानी सिर के पास पहुंच गया। उसने फटी-फटी आंखों से उस खूबसूरत बच्चे को देखा और फिर इन्सानी सिर को। तभी उसे यह एहसास हुआ कि वह सिर्फ सिर ही नहीं, सिर के नीचे बाकी जिस्म भी मौजूद है। वह रेत में दफन कर दिया गया है या फिर खुद-ब-खुद रेत में दफन हो गया है। लम्बे-लम्बे बाल रेत से अटे हुए थे और चेहरे पर बिखरे हुए थे और वह आंखें बन्द थीं। शोला ने झुककर उसे गौर से देखा। चेहरा किसी खूबसूरत नौजवान लड़की का था। शोला तमाम बातें नजरअन्दाज करके उसके करीब बैठ गया। उसके पीछे फिट भी पहुंच गया था।

"यह रेत में दफन है। तुम इस बच्चे को गोद में उठा लो। मैं इसे रेत से निकालता हूं।"

"लेकिन क्या वह जिन्दा है?"

"अभी कुछ नहीं कहा जा सकता। हो सकता है यह मर चुकी हो।

फिट ने खामोशी से बच्चे को उठा लिया। उस वक्त सूरतेहाल ऐसी नहीं थी कि वह कोई विलम्ब करता। नन्हें से खूबसूरत बच्चे को उठाकर वह चंद कदम पीछे हट गया और शोला तेज रफ्तारी से अपने दोनों हाथों से उस रेत को हटाने लगा जिसने उस लड़की के जिस्म को छुपा रखा था। लड़की के चेहरे के बारे में सिर्फ यह अन्दाजा लगाया जा सकता था कि वह एक इन्तहाई दिलकश चेहरा है। वह जिन्दा है या मर चुकी, इसका अन्दाजा तो बाद में ही हो सकता है। हां, करीब से देखने से उसके दहाने के दोनों तरफ खून की लकीरें नजर आयीं। शोला ने उसके कंधों तक रेत हटा ली थी। फिर वह उसे कंधों से पकड़कर रेत से बाहर निकालने लगा। इस काम में उसे ज्यादा दिक्कत नहीं हुई थी। उसने उसकी बगलों में हाथ डालकर अंततः उसे ऊपर खींच लिया और उसके बाद उसे वहां से हटाकर साफ सुथरी नर्म रेत पर लिटा दिया। फिट उसके सीने से कान लगाकर उसके दिल की धड़कनों को सुनने की कोशिश करने लगा और यह अन्दाजा लगाकर उसे बेपनाह खुशी हुई कि लड़की के जिस्म में जिन्दगी मौजूद थी।

उसके कंठ से हांफते स्वर निकला—"यह जिन्दा है।"

फिट उसे देखने लगा फिर बोला—"मगर अब हम क्या करें।"

"हम इसे कहां ले जा सकते हैं। अगर वापसी का सफर इख्तियार करें तो इतना फासला तय कर चुके हैं कि जंगलों में वापस पहुंचना मुश्किल हो जायेगा—और क्या मालूम वहां किस किस्म के खतरे से सामना करना पड़े। लेकिन कुछ न कुछ तो करना ही होगा। ठहरो! मैं इसे पानी पिलाने की कोशिश करता हूं।" और उसके बाद शोला ने पानी की छागल निकालकर लड़की के मुंह से लगा दी। वह उसका चेहरा भी साफ कर रहा था। लड़की का चेहरा तो साफ हो गया, लेकिन उसकी पलकों के पपोटे में कोई जुम्बिश महसूस नहीं हो रही थी। इसका मतलब था वह होश में नहीं आ रही है।

शोला परेशानी से चारों तरफ देखने लगा फिर बोला—"मेरा ख्याल है हमें इस वक्त आगे के लिये सफर शुरू कर देना चाहिये। हो सकता है आगे चलकर हमें ऐसी जगह मिल जाय जहां इसके लिये कुछ करना सम्भव न हो सके। पता नहीं कौन है और इस रेत में दफन क्यों हुई थी।"

"रेत का स्नान कर रही होगी।" फिट की जुबान इस वक्त भी खामोश नहीं रह सकी थी।

शोला ने झल्लाये हुए अन्दाज में उसे देखा और बोला—"वक्त और मौके की नजाकत का ख्याल किया कर। एक इन्सानी जिन्दगी खतरे में है। चल बच्चे को लेकर अपने बोदे पर सवार हो जा और जल्द से जल्द अपना यह सामान उस पर लाद ले।"

फिट ने उस वक्त कुछ न कहा, लेकिन उसके होंठों पर मुस्कराहट फैली हुई थी। वैसे यह हकीकत थी कि पहली बार उन्होंने इस इलाके में किसी लड़की को देखा था और फिट यह बात स्वीकार किये बिना न रह सका कि लड़की बेहद दिलकश थी। बहरहाल शोला उसे संभालकर अपने बोदे पर बैठ गया और आहिस्ता-आहिस्ता बोदे को आगे बढ़ाने लगा। लेकिन उस वक्त अगर वह फिट के होंठों की मुस्कराहट देख लेता तो शायद फिट को अपनी जिन्दगी बचाना मुश्किल हो जाता।

शोला बहुत संजीदा नौजवान था, ऐसे आलम में वह किसी किस्म का मजाक बर्दाश्त न करता।

वह लोग धीरे-धीरे बढ़ते रहे। उनकी निगाह दूर-दूर तक का जायजा ले रही थी। फिर काफी फासला तय कर लिया गया तो एकाएक शोला के मुंह से आवाज निकली—"फिट उधर देखो—उधर वह जो धुंधले-धुंधले साये नजर आ रहे हैं...शायद दरख्त के साये हैं।"

शोला के इशारे पर फिट ने इधर-उधर देखा और उसे भी अन्दाजा हो गया। अतः बोदों के रुख बदल दिये गये। कुछ और आगे बढ़े तो उन्हें पानी की नमी का एहसास हुआ और बोदों की रफ्तार खुद-ब-खुद तेज हो गयी।

यहां दरख्त बेशक बहुत कम थे लेकिन दूर-दूर तक फैले हुए थे। जमीन समतल दिखायी देती थी और आगे चलकर पथरीली चट्टानें नजर आने लगी थीं, गोया रेगिस्तान का सिलसिला इस सिम्त खत्म हो गया था। अंततः वह वृक्षों के नीचे पहुंचकर रुक गये। दिन निकलने के आसार महसूस होने लगे थे। परिन्दों ने चहचहाना शुरू कर दिया था।

फिट ने भी बच्चे को बड़ी ऐतहात से सीने से चिपका रखा था। अंततः उन्होंने अपने बोदे रोक दिये। शोला ने बड़ी सतर्कता के साथ लड़की को नीचे उतारा और दूसरी तरफ फिट भी अपने बोदे से नीचे उतर आया। बच्चा ठीक हालत में था और जाग रहा था। फिर ने एक मुनासिब जगह देखकर बच्चे को लिटा दिया और फिट दोनों ही लड़की की तरफ आकर्षित हो गये। वह उसे चश्मे की ओर ले गये।

शोला ने फिट से कहा—"चल अब इधर आ और इसके पांव पकड़।"

"लानत भेजता हूं ऐसे काम पर जिससे मेरी शख्सियत हमेशा के लिये दागदार हो जाय।" फिट ने मुंह मोड़कर कहा।

"क्या बकवास कर रहा है?"

"तुम जिन्दगी भर लोगों से कहते फिरोगे कि मैंने किसी औरत के पांव पकड़े थे।" फिट नाक चढ़ाकर बोला और शोला बेइख्तियार हंस पड़ा।

"ओह निकम्मे! ओ बेवकूफ! ऐसे मौकों पर भी तू अपनी

हरकतों से बाज नहीं आता। चल तू इसे कंधों से पकड़ ले। इसके पैर मैं पकड़ लेता हूं।" और फिट इस बात के लिये तैयार हो गया। दोनों लड़की को इस तरह उठाये पानी के करीब लाये। स्वच्छ जल देखकर शोला ने गहरी सांस ली। उसके दिल में हमदर्दी का समन्दर मचल रहा था। वह अपने लिबास का कपड़ा भिगोकर लड़की के चेहरे पर निचोड़ने लगा, लेकिन लड़की के बदन में अब भी कोई जुम्बिश नहीं हुई थी। उसके होंठ सख्ती से भिंचे हुए थे और चेहरे पर मुर्दनी छायी हुई थी।

शोला ने मायूसी से कहा—"नहीं...शायद मर चुकी है या मरने वाली है।"

"अगर यह मर गयी तो इसके बच्चे का क्या होगा?" फिट बोला

"हमें इसकी जिन्दगी बचाने की आखरी कोशिश कर लेनी चाहिये।"

"तो मैं कब मना कर रहा हूं। इसके पूरे बदन में रेत भरी हुई है। इसे कैसे साफ करोगे?"

"इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। इस रेत से यह मर नहीं जायेगी। बस होश में आ जाय।"

"तो फिर तुम इसे कोई ऐसी कहानी सुना दो जिससे यह डरकर होश में आ जाय।"

"तेरे पास इन बातों के अलावा और कोई काम की बात नहीं है।" शोला ने थके-थके लहजे में कहा। लड़की की लम्बी बेहोशी से वह अब कुछ मायूस-सा हो गया।

इधर शोला और फिट हैरतअंगेज सफर तय कर रहे थे और उनसे न जाने कितनी दूर, कितने फासले पर रेत के टीलों के दरमियान जहां हल्की-हल्की हवा से रेत उड़ती हुई महसूस हो रही थी और उनमें स्याह धब्बे उभरे हुए थे। यों लगता जैसे छोटी-छोटी अनगिनत चट्टानें एक ही अन्दाज में वहां उभर आयी हों। लेकिन गौर से देखा जाता तो यह ख्याल गलत साबित हो जाता कि यह चट्टानें हैं क्योंकि उनमें हल्की-हल्की जुम्बिश भी थी। छोटे-छोटे एक ही कद के तोदे बहुत दूर तक बिखरे हुए थे और उनमें कोई तरतीब या कतार नहीं थी। कुछ फासले पर रेत के एक बड़े अजीम आलीशान तोदे के अकब में एक इन्सानी बदन स्तम्भ की तरह

खड़ा था। इस मद्धिम रोशनी में वह एक काले रंग का स्तम्भ नजर आ रहा था। लेकिन ज्यों-ज्यों रोशनी बढ़ती गयी, उन छोटे-छोटे टीलों की असलियत साफ होती चली गयी। यह इन्सानी बदन थे जो नतमस्तक के अन्दाज में रेत पर पड़े हुए थे और वह शख्स जो स्तम्भ के रूप में नजर आ रहा था, अजीबोगरीब जिस्म का मालिक था। उसका बदन आबनूस से बना हुआ मालूम होता था। ऊपरी जिस्म से नग्न लेकिन इस तरह साकित कि मानो किसी संगतराश ने एक काले संगमरमर का मुज्जसमा तराशा हो और उसे रेत में गाड़ दिया हो। वह आसमान की तरफ देख रहा था और खामोश खड़ा शायद सूर्योदय की प्रतीक्षा में था। जब सूरज निकला तो उसमें जुम्बिश पैदा हुई। उसने गर्दन में पड़े हुए नाकोस को उठाया और उसे होठों से लगाकर फूंकने लगा। एक हौलनाक आवाज ने रेगिस्तान में चलने वाली हवाओं को साकित कर दिया और उसके साथ रेत में पड़े हुए तोदों में जुम्बिश हुई। वह सब के सब खड़े हो गये।

नाकोस की सदायें बुलन्द होती जा रही थीं। रेत से उठने वालों के चेहरों से रेत झड़ने लगी। उनके बाल बेतरतीब थे। आंखों से वहशत झांक रही थी। नाकोस की आवाज जब तीसरी बार फजा में उभरी तो अचानक ही भूचाल-सा आ गया। रेत पर खड़े हुए इन्सान नुमा जानवरों ने अचानक ही छलांगें लगायीं और चीखते चिल्लाते दौड़ने लगे। अब स्तम्भ नुमा शख्स अपनी जगह से हटकर एक बुलन्द टीले पर जा खड़ा हुआ था। वह उन दौड़ने वालों को देख रहा था जो जिन्दगी की बाजी लगाकर एक-दूसरे से बाजी मारने की कोशिश में छलांगें लगा रहे थे। तब उसके मोटे काले होठों पर मद्धिम सी मुस्कराहट उभर आयी। वह दौड़ने वालों को देखता रहा जो मैदान में बहुत दूर चले गये थे और कदाचित इनकी मंजिल वह जगह थी जहां पिछली रात एक अनोखा खेल खेला गया था, यह वही जगह थी जहां शोला और फिट को वह लड़की रेत में दफन मिली थी और नन्हा-सा बच्चा उसके करीब दुनिया के अजोबो-गरीब ख्यालों से बेखबर हवाओं की आगोश में जी रहा था। वैसे यहां पर निशान मिट चुका था लेकिन यहां पहुंचने वालों ने सही जगह का चयन किया था और उस जगह पहुंचकर वह हैरान रह गये थे। उनकी निगाहें रेत का जायजा ले रही थीं। शायद

उन्हें उस बच्चे और औरत की तलाश थी लेकिन वह दोनों मौजूद नहीं थे। उनकी हैरतभरी आवाजों से उनकी बौखलाहट का पता चलता था।

उनमें से एक ने कहा—"जगह तो यही है...लेकिन... लेकिन... ।"

"भला गलतफहमी का क्या सवाल है। हमने तो एक-एक कदम नाप लिया है।"

"मगर वह नहीं है।"

"उन्हें यहीं होना चाहिये। आह! कहीं ऐसा तो नहीं हुआ कि वह दोनों रेत में दफन हो गये हों।"

"रात को चलने वाली हवायें इतनी तेज नहीं थीं और फिर कुछ तो निशान मिलना चाहिये था। तलाश करो...बिखरकर तलाश करो। उनका मिलना जरूरी है।"

और उसके बाद वह रेत के तोदों को कुरेदते रहे। हर उस टीले की तरफ दौड़ रहे थे जो किसी और वजह से बना था, लेकिन उन्हें कुछ नहीं हासिल हो रहा था।

"यह तो हो नहीं सकता कि वह रेत से निकलकर और बच्चे को लेकर चली जाय।"

"नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। उसका होश में आना सम्भव न था।"

"तो फिर आखिर वह कहां गयी। क्या आसमान की बुलन्दियों की तरफ परवाज कर गयी या जमीन की गहराइयों में उतर गयी।"

"यह बात तो रूह अजीम ही जान सकती है। हम भला कैसे जान सकते हैं।"

"बेवकूफो! रूह अजीम ने यह जिम्मेदारी हमारे सुपुर्द की है। वह हम पर अजाब नाजल करेगी और उसके बाद...उसके बाद जो कुछ होगा, तुम तसव्वुर भी नहीं कर सकते।"

"तब मुकद्दस जोगन से मदद ली जाय।"

"जोगन हमारे जिस्मों की खाल उतार देगा। उसे तलाश करो, वरना...वरना...मुसीबतें हमारी राह देख रही हैं।"

और उनकी कोशिशें जारी रहीं। अब तेज धूप फैली हुई थी। उधर वह शख्स जो सारी रात अपनी जगह पर पत्थर की तरह

साकित खड़ा गुजरने वाले वक्त का इन्तिजार कर रहा था और जिसका नाम जोगन था, अब खुद बेचैन नजर आने लगा था। उसके मुंह से बड़बड़ाहटें निकल रही थीं।

"आ जाना चाहिये था—आ जाना चाहिये था। आखिर वह कहां रह गये।" फिर वह अपनी जगह से जुम्बिश करके आगे बढ़ा और फासला तय करने लगा। दूर से उसे कुछ लोग नजर आये। यह वही कलूटे थे जिनकी हालत बहुत खराब हो रही थी। जो रेत पर किसी की तलाश में भागे-भागे फिर रहे थे। जोगन उनके करीब पहुंच गया।

"तुम लोग क्या करते फिर रहे हो? वह कहां है?"

"मुकद्दस जोगन...एक अजीब वाकया हो गया है।"

"क्या?"

"लड़की और उसका बच्चा यहां मौजूद नहीं हैं। ख्याल था कि रेत की गहराइयों में दफन हो गये। लेकिन उन गहराइयों को भी तलाश किया गया। वह हमें वहां भी नहीं मिले।"

"क्या बकते हो! इस सहराये अजीम में वह कहां जा सकते हैं और भला उसकी क्या मजाल कि वह रेत की कब्र से निकल सके और वह बच्चा...ओह! क्या तुम लोग अपनी जिन्दगी से उक्ता चुके हो—क्या बकवास कर रहे हो। रूह अजीम का कहर तुम्हें याद नहीं है।"

"लेकिन हमारा कुसूर नहीं है मुकद्दस जोगन। तुम जानते हो कि हम भी तुम्हारे सामने पूजा में व्यस्त थे और इसके पास नहीं थे।"

"तो तुम्हारा क्या ख्याल है—क्या आसमान से उतरने वाले या हवाओं पर सफर करने वाले उसे ले गये?"

"मुकद्दस जोगन अजमतों का मालिक है। उसका दिल रोशनियों से चमकता है। वह जो सोच सकता है वह हम नहीं सोच सकते। यह बात भी जोगन बेहतर जानता है कि इसमें हमारा कोई कुसूर नहीं है। हम जोगन के सामने ही पूजा कर रहे थे। जोगन इस बात का गवाह है।"

"बेवकूफो! यह वक्त इन बातों का नहीं है। अगर हम उसे तलाश न कर सके तो हम पर रूह अजीम का कहर टूट पड़ेगा और तुम जानते हो कि वह मुआफ करने वालों में से नहीं है।"

फिर जोगन की मनोस्थिति भी खराब हो गयी। यहां तक कि सूरज बुलन्दियों पर पहुंच गया। वह खुद भी उन लोगों के साथ इस लड़की और बच्चे को तलाश कर रहा था, लेकिन हर कोशिश बेसूद साबित हुई। उनकी जुबानें प्यास से बाहर आने लगी थीं। उनके पास न खाने का इन्तजाम था न पीने का। बस रेत के बगोले थे और रेत के टीलों में आवारागर्दी। यहां तक कि उनकी हालत बेहद खराब हो गयी। सबके चेहरों पर मुर्दनी छायी हुई थी।

तब उनमें से एक ने कहा—"इनसे कोई खता हो गयी है। मुकद्दस देवता हमसे नाराज हो गये हैं और अब वह वक्त आ रहा है जब हमें आतिशी बगोलों से भस्म कर दिया जाय। हम एक बहुत बड़ी तबाही से दो चार होने वाले हैं।"

जोगन ने परेशान अन्दाज में सबको देखा और उसके बाद वहां से आगे बढ़ गया। उसके चेहरे पर अंधेरों के साये नाच रहे थे। सूरज की तपिश से रेगिस्तान आग का गोला बन गया था, लेकिन उनकी खुशकिस्मती से उनका यह सफर खत्म हुआ और अब रेगिस्तान के दूसरी ओर हरियाली नजर आने लगी। चट्टानी सिलसिला शुरू हो गया था, लेकिन यहां भी वह सूरज की तपिश से सुरक्षित नहीं रह सकते थे। जब वह रेत की आग में झुलसने ही वाले थे कि उन्हें नदी का किनारा मिल गया। फिर उन्होंने नदी पार की और न जाने कैसे-कैसे खौफ को दिल में पालते वह उस बस्ती की ओर चल पड़े जो दूर से नजर आ रही थी। उनके खौफजदा चेहरों से अन्दाजा होता था कि वह अपनी जिन्दगी से मायूस हो चुके हैं।

जब वह बस्ती में दाखिल हुए तो उन्होंने ऊंची नोकदार झोंपड़ियों में रहने वालों को अपनी प्रतीक्षा में पाया। वह बेताब नजर आते थे। लेकिन जैसे-जैसे यह लोग उनके दरमियान से गुजरे उनके चेहरों पर मायूसियां फैलती चली गयीं और उनका सफर पहाड़ की बुलन्दी पर इबादतगाह पर खत्म हुआ जहां बहुत से बदशक्ल पुजारी गर्दनें उठाये उन्हें देख रहे थे और इबादतगाह के संगी फर्श पर खौफनाक शख्स आलथी-पालथी मारे बैठा उनकी प्रतीक्षा कर रहा था।

सिर्फ जोगन उसके सामने पहुंचा था। इससे पहले कि जोगन कुछ कहे उसने कहा—"आसमान पर नजर न आने वाले सितारों

का रंग सुर्ख है। यह नाकामी का निशान होता है, लेकिन यह नाकामी हमारी तबाही होगी। क्या तू हमें नाकामी की खबर सुनाना चाहता है?"

"रूह अजीम...ह...हम।"

"सिर्फ सच बोल।" उस शख्स की आवाज उभरी।

दूसरी ओर...

सूरज निकलने के बाद भी शोला और फिट लड़की को होश में लाने में कामयाब नहीं हो सके थे। फिट बच्चे को संभाले हुए था और शोला लड़की के पास परेशान बैठा था। अचानक फिट हंस पड़ा और शोला को घूरने लगा।

"यहां के लोग हमें देखेंगे तो क्या सोचेंगे?" फिट बोला।

"यही कि मैं इस औरत का विधुर पति हूं और तुम बच्चे की आया।" शोला ने मुस्कराकर कहा।

"अगर तुम इसे अपनी बीवी स्वीकार कर लो तो मैं खुशी से आया कहलाना पसंद करूंगा। वैसे मेरी बात मान जाओ शहंशाह-ए-आलम। खेल खत्म कर दो और इस लड़की को यहीं इसके हाल पर छोड़कर आगे बढ़ चलें। अब बहुत हो चुका।"

"अगर यह मर चुकी होती तो दूसरी बात थी। हम बच्चे को लेकर खामोशी से यहां से चल पड़ते और इसके बारे में कुछ न सोचते।"

"तो फिर यह नेक काम हम खुद क्यों न कर लें। तुम बच्चे को लेकर चलो। मैं यह काम निमटाकर अभी आता हूं।" फिट बोला।

शोला ने मुस्कराकर कहा—"क्या तू यह कर सकेगा?"

"मजबूरी है।" फिट ने कहा।

"देवताओं की कसम! अगर इस वक्त एक पूरा गिरोह भी इस लड़की की जान लेने पर अमादा हो तो मैं उससे भी जंग करूंगा और...।" शोला का वाक्य अधूरा रह गया।

फिट ने उसकी बात काटकर कहा—"ओह...इधर देखो... इसे देखो...यह होश में आ रही है।"

शोला को भी एहसास हुआ कि लड़की का बदन जुम्बिश कर रहा है। वह जल्दी ही लड़की पर झुक गया। लड़की होश में आ रही थी। फिर वह गर्दन को बेचैनी से पटखने लगी। उसके

बाद उसने आंखें खोल दीं, लेकिन अन्दाजा ऐसा था जैसे उसे कुछ नज़र न आ रहा हो।

शोला और फिट उसे देख रहे थे। लड़की बार-बार आंखें बन्द करके खोल रही थी, कदाचित अपनी आंखों की रोशनी बहाल करने की कोशिश कर रही थी। कुछ लम्हों के बाद उसकी आंख खुल गयी। तब उसने शोला के चेहरे पर नजरें जमा दीं, फिर जैसे उसके होशोहवास भी वापस आ गये और उसने बेइख्तियाराना अन्दाज में गर्दन घुमायी। गर्दन के अलावा शायद उसके जिस्म का कोई हिस्सा काम नहीं कर रहा था।

शोला ने फिट से कहा– "बच्चे को इधर ले आओ।"

फिट ने तुरन्त ही आज्ञा का पालन किया। लड़की की निगाहें बच्चे पर पड़ीं तो उसकी आंखों ने इस तरह का इजहार किया जैसे वह उसे करीब से देखना चाहती हो। शोला ने बच्चे को फिट से लेकर उसके पहलू में लिटा दिया। लड़की की आंखों में सुकून के आसार नजर आये। उसने शायद मुस्कराने की कोशिश की थी। लेकिन उसके दहाने से खून की लकीरें बाहर निकल पड़ीं और शोला चौंककर उसे देखने लगा। अचानक लड़की को उबकायी सी आयी और उसके बाद उसके मुंह में जमे खून के टुकड़े बाहर निकल पड़े। उसके मुंह में खून भरा हुआ था। शोला और फिट कांपकर रह गये। एक लम्हें में उन्हें अन्दाजा हो गया था कि लड़की की जुबान काट दी गयी है।

शोला के जहन में जुनून उतरने लगा और उसकी खौफनाक आवाज उभरी– "आसमान वालों की कसम! जिन लोगों ने यह काम किया है मैं उन सबको उनकी जुबानों से महरूम कर दूंगा।"

फिट ने शोला की गुर्राहट सुनी और उसका चेहरा देखा तो शोला उसे एक दरिन्दे की शक्ल में नजर आया। लड़की के साथ किये जाने वाले जुल्म ने उसे दीवाना बना दिया था। फिर आहिस्ता-आहिस्ता वह अपने आप पर काबू पाने लगा।

उसने कहा– "किसी पर इतना जुल्म करना क्षमा योग्य नहीं है। जिन्दगी का अर्थ सिर्फ यही नहीं है फिट कि तुम अपनी खुशियां समेटते फिरो। यहां इस वीराने में देवताओं ने हमारे लिये एक काम मुकर्रर कर दिया है और वह काम यह है कि इसके बारे में मालूम करें और जिन लोगों ने यह सलूक किया है उनसे इसका इन्तकाम

लें। आह! नन्हा सा बच्चा जिसे सूरज के नीचे गर्म रेत पर मरने के लिये छोड़ दिया गया था। न जाने कौन पागल है वह... न जाने कौन शैतान।''

लड़की खासी बेहतर हालत में नजर आ रही थी। यह समझ में नहीं आ रहा था कि अब क्या किया जाय।

''और अब तो यह अपने बारे में कुछ भी नहीं बता सकेगी।'' शोला ने कहा।

''इसका चेहरा साफ करो और इसे बेहतर हालत में लाने की कोशिश करो।''

दोनों व्यस्त हो गये। शोला ने हमदर्दाना अन्दाज़ में लड़की को सहारा देने की कोशिश की लेकिन उसका बदन पथराया हुआ था। बमुश्किल तमाम शोला ने उसका चेहरा साफ किया, लड़की की आंखों में आंसू बह रहे थे।

शोला कोमल स्वर में बोला—''लड़की! तू जो कोई भी है, हम नहीं जानते। हमने तुझे रेत में दफन देखा और तुझे तेरे बच्चे के साथ यहां ले आये। हमें अन्दाजा हो गया है कि तू बोल नहीं सकती, लेकिन यह अन्दाजा भी हो गया है हमें कि तेरे साथ जुल्म और दरिन्दगी हुई है। लेकिन इत्मीनान रख! हमारे हाथों तुझे कोई नुकसान नहीं पहुंचेगा।''

इन शब्दों को सुनकर लड़की की आंखों में आंसू छलक आये।

उसी समय एक घटना और घटी। उनके पीछे की फैली हुई चट्टानों से एक शख्स नमूदार हुआ। दुबला-पतला बूढ़ा इन्सान था, रंग तवे की तरह स्याह था। लेकिन बालों की सफेदी उसकी बुजुर्गी का अहसास दिलाती थी। वह उनकी तरफ चला आ रहा था। इस वीराने में किसी का इस तरह नजर आ जाना हैरत की बात थी। वह दोनों बूढ़े को देखने लगे। तब बूढ़ा उनके करीब पहुंचा। इस कदर बूढ़ा होने के बावजूद उसकी आंखों में जो चमक नजर आ रही थी वह अविश्वसनीय थी। करीब पहुंचकर उसने मुस्कराती निगाहों से उन्हें देखा फिर बच्चे को देखा और उसके बाद दोनों हाथ सीने पर रखकर घुटनों के बल झुका और अपना सिर जमीन पर टिका दिया। शोला और फिट पीछे हट गये थे।

तब शोला ने कहा—''ऐ बुजुर्ग! यह क्या मूर्खता है! हम तो आम इन्सान हैं। हमें यह देवताओं वाला सम्मान देने की जरूरत

नहीं। तुम कौन हो और यहां क्या कर रहे हो?''

''तुम दोनों का इन्तिजार सूरज के बेटो! तुम दोनों का इन्तिजार।'' बूढ़े ने जवाब दिया।

''क्या मतलब? तुम्हें हमारे आगमन का इल्म कैसे हुआ?''

''मैं मामूली सूझबूझ रखने वाला एक आम इन्सान हूं और तुम्हारा इन्तिजार कर रहा था।''

''हम इस वक्त अजीब मुश्किल में गिरफ्तार हैं। तुम हमारी क्या मदद कर सकते हो?''

''इस लड़की को यहां से ले चलो सामने वाले गारों में। मैंने अपना निवास वहीं बनाया हुआ है। आओ, मैं तुम्हें वहीं चलकर बताऊंगा और यह हकीकत है कि मैं तुम्हारी प्रतीक्षा में था। इस बात पर शक न करना। यह बात मैं बताऊंगा तुम्हें कि मुझे तुम्हारा इन्तिजार क्यों था।''

एक बार फिर उन्हें परिश्रम करना पड़ा। बच्चे को गोद में उठाकर बूढ़े के हवाले किया गया। शोला और फिट लड़की को लेकर गार में पहुंच गये। ठण्डे और चौड़े गार में घास के बिस्तर बने हुए थे। उनमें से एक पर लड़की को लिटा दिया गया और बूढ़े ने कहा—''मैं ऐसी जड़ी-बूटियों का प्रबन्ध करके लाता हूं जो इस लड़की के जख्म की पीड़ा दूर कर दें। यह जख्म कुछ समय बाद ठीक हो जायेगा।''

''क्या यह बोलने के काबिल नहीं हो सकती? हम मालूम करना चाहते हैं कि यह जुल्म इस पर किसने किया?

''यह नहीं बता सकेगी तुम्हें, लेकिन मैं बता दूंगा।''

रहस्यमय बूढ़ा यहां बिल्कुल अकेला था। काफी देर बाद वह आया तो अपने साथ जड़ी-बूटियों के अम्बार ले आया था। जड़ी-बूटियों का अर्क निकालकर उसने लड़की के मुंह में टपकाया।

''अब यह गहरी नींद सो जायेगी। जागेगी तो बेहतर हालत में होगी। यह कुछ फल हैं जो खास असर दिखाते हैं। इनका रस बच्चे को नयी जिन्दगी दे सकता है...और तुम्हारे लिये भी कुछ लाया हूं।''

इन तमाम कामों से फारिग होने के बाद उन्होंने बूढ़े से सवाल किया तो वह बोला—''मेरा नाम फोजान है और मैं बहुत पहले यहां से थोड़े फासले पर एक बस्ती में रहता था। वह बस्ती जो

अब गुनाहों का केन्द्र बन गयी है। मेरे बच्चो! बुराइयों के खिलाफ नेकियों की जद्दोजहद सृष्टि के निर्माण से ही चली आ रही है। इन्सान यह भूल जाता है कि वह सेहरा में उठने वाले एक कमजोर बगोले की मानिन्द है जो एक लम्हे में बुलन्द होकर अपनी तेजी को अपनी कुरवत समझकर हर शै को अपने हिस्सार में बहा ले जाना चाहता है लेकिन फिर हवाओं का जोर टूटता है और यह बगोला गुब्बारे से निकली हवा की तरह बैठ जाता है। बस शक्तिमान बनने की हवस, इन्सान को अपना गुलाम देखने की ख्वाइश इन्सान के दिल में दीवानगी जगाती रहती है और यह आबादियां ऐसी ही दीवानगी की शिकार हैं। वह जो परमेश्वर की पूजा करते हैं, अब पूजा के नाम पर गुनाहों का मीनार बना रहे हैं। आह! मैं उन नाकारा इन्सानों का जिक्र कर रहा हूं जो सोचते हैं कि अपने जैसे इन्सानों को अपना गुलाम बनाकर उनसे अपने आदेश मनवायें। ऐसे ही लोग इस वक्त गिरोह बनाये हुए हैं। यह लोग मासूम इन्सानों की बस्तियों में फैल गये हैं। और इन्होंने उन मजहबी पेशवाओं का कत्ल कर दिया है जो सचमुच नेकियों की राह दिखाते हैं और वह सब कुछ किया है उन्होंने जो उन्हें नहीं करना चाहिये था। बस्ती के लोग इनकी कुरवतों के आगे झुकते जा रहे हैं। मैं कोजान एक मामूली सा शख्स जो पुश्त दर पुश्त से अपने दादा परदादा से यह सीखता आया है कि आने वाले वक्त का इल्म क्या होता है और जब बुराइयां तूफानी शक्ल इख्तियार कर गयीं तो मेरे इल्म ने मुझे बताया कि सूरज के बेटे इन वादियों में नमूदार होंगे और लम्बा सफर तय करके यहां पहुंचेंगे और यही उन बदकार जादूगरों का सफाया करेंगे जो अपने करतूतों से इन्सानों को इस बुरे हाल में पहुंचाने की कोशिश कर रहे हैं।

मेरे बच्चो! यह लड़की एक बस्ती के सरदार की बीवी है। कहने को तो यह कहा जाता है कि बस्ती का सरदार जंगाल स्वाभाविक मौत मरा लेकिन मेरा इल्म कहता है उसे जादूगरों ने मारा और फिर वह जो अपने आपको रूह अजीम कहता है और जिसका नाम योगास है, अपने जादू की एक कहानी लेकर आया। उसने कहा कि जंगाल की बीवी और बच्चा जो सरदार का उत्तराधिकारी है और जिसे सरदार बनाया जाना परम्परा है, उसके लिये देवताओं का हुक्म है कि उसे रेगिस्तान में दफना दिया जाय,

इस तरह कि वह हिल न सके, परन्तु जिन्दा रहे और उसका सिर खुली हवा में रहे ताकि सूरज उसे अपनी गर्मी देता रहे। फिर वह औरत जब अपने बच्चे को रेत से बाहर निकलते ही तुरंत दूध पिलायेगी तो बच्चा कोरसार का सबसे ताकतवर सरदार बन जायेगा। इसलिये बच्चे को भी उसके पास ही रखा जाय। काहन उसे रेगिस्तान में ले गये। जादूगर योगास दरअसल हमेशा-हमेशा के लिये सरदार के खानदानी निजाम को खत्म करना चाहता था। यह दुनिया विवादे की बात थी जो उसने लोगों से देवताओं की कहानी बयान की। यह बच्चा वही है और यह औरत भी। लेकिन मेरे बच्चो! तुम दोनों के कंधों पर जो जिम्मेदारी आन पड़ी है, तुम उससे पीछे न हटना। इन बस्तियों में जाकर तुम्हें इन झूंठ जादूगरों को खत्म करना है। जो अपनी चालाकी से अपनी बुराई का निजाम ज्यादा से ज्यादा फैलाते जा रहे हैं। ये लोग कोरसार में एक नये देवता का प्रचार कर रहे हैं—इस देवता का नाम कारनोस है और इसके अभी किसी ने दर्शन भी नहीं किये—सिर्फ रूह अजीम पोगास ही इस देवता के दर्शन करता है और कोरसार में देवता के हुक्म सुनाता है। मेरा शक है कि कारनोस कोरसार की सरजमीन का नहीं है—किसी दूसरी सरजमीन से आया है जहां से कालके आये हैं। कारनोस देवता का हुक्म है कि कालकों को कहनों की मान्यता दी जाय क्योंकि वह सब देवता की संतानें हैं। पोगास जादूगर के पास जो काहन है, वह कालके ही हैं जो कोरसार में दूर-दूर तक फैल गये हैं। मेरे बच्चो! अगर जादूगरों और दरवेशों का काम इसी रफ्तार से चलता रहा तो बहुत जल्द कोरसार कालकों का गुलाम बन जायेगा। उससे पहले कि ऐसे हालात पेश आयें, तुम उन्हें कत्ल कर दो। इन जादूगरों का भरम खत्म कर दो।"

शोला ने फिट की ओर देखा फिर बूढ़े की तरफ।

"बूढ़े फैजान! तू हमारी रहनुमाई कर। हम बुराई के खिलाफ अपना काम सरअंजाम देंगे।"

"और अब इस लड़की और बच्चे की परवरिश की जिम्मेदारी मुझ पर छोड़ दो। उन लोगों ने इसकी जुबान इसलिये काट दी कि किसी वजह से अगर यह बच गयी तो अपने ऊपर गुजरी दास्तान किसी को न सुना सके।"

शोला और फिट तो अपनी मंजिल की तलाश में बस्ती-बस्ती

भटक रहे थे। अब उन्हें कारनोस तक पहुंचना था और कारनोस तक पहुंचने का रास्ता पोगास से गुजरता था। यों तो इनके छोटे-मोटे कमाण्डरों से वह अब तक टकरा चुके थे और उनमें से अधिकांश का खात्मा भी कर चुके थे लेकिन कारनोस को खत्म किये बिना उनका मिशन पूरा नहीं होता था।

शोला और फिट अपने अभियान पर रवाना हो गये। इस वक्त एक बस्ती उनकी निगाहों के सामने थी और वह पहाड़ों और चट्टानों में घूमकर पोगास के साथियों को तलाश कर रहे थे। इस दौरान उन्होंने एक बात और मालूम कर ली थी कि बस्ती वाले इन जादूगरों की शैतानी कुव्वत के दिल से कायल नहीं थे। इस ताकत का दौर-दौरा था और ताकत ने ही उन्हें बेबस कर रखा था। शोला और फिट निरन्तर अपनी कोशिशों में व्यस्त थे। इस वक्त वह कुछ ऐसे ही जादूगरों का पीछा कर रहे थे। घोड़े कहीं सुरक्षित जगह पर छोड़ दिये गये थे और शोला कुछ कालकों का पीछा करता हुआ एक ऐसी चट्टान तक पहुंचा जो काफी बुलन्द थी लेकिन ऊपर चढ़ने का रास्ता उसमें मौजूद था। वह दोनों उस चट्टान पर चढ़कर तय करने लगे, फिर कुछ आहटों को सुनकर रुक गये। चंद लम्हें वह आहटें जारी रहीं फिर जब वह खत्म हो गयीं तो वह आगे बढ़े और उस रोशनी के करीब पहुंच गये जो पहाड़ी सुराखों से निकल रही थी। अचानक शोला ने फिट को छुपने का इशारा किया। वह उन सायों को देख रहा था जो छुपने की कोशिश में व्यस्त थे। फिर न जाने उसके जहन में क्या ख्याल आया कि वह आहिस्ता-आहिस्ता अपनी जगह से रेंगता हुआ एक दूसरी चट्टान के अकब में पहुंच गया फिर यहां से ऐतिहात के साथ तेजी के साथ आगे बढ़ा और उसके बाद उन सायों से उसका फासला कम होता चला गया जो एक बड़ी-सी पथरीली, चट्टानी सिल की आड़ में मौजूद थे। छः सात लोग थे जो बड़े-बड़े लबादे और गले में इन्सानी हड्डियों की मालायें पहने हुए थे।

शोला की आंखों में खून उतरने लगा। वह थोड़ी देर तक चट्टान के अकब में छुपा रहा। और उसके बाद वह वहां से आगे बढ़ गये। एक कालका उस चट्टान की ओर आ रहा था जहां शोला मौजूद था। शोला ने थोड़ी सी जगह तब्दीली की और इस अन्दाज में तैयार हो गया जैसे वह कालके को अपनी गिरफ्त में लेना चाह

रहा हो। और यही हुआ। कालका किसी खास मकसद के तहत आगे बढ़ रहा था कि उसकी गर्दन एक फौलादी हाथ में आ गयी। शोला का फौलादी बाजू और कालके की नर्म गर्दन और शोला के वजूद में मौजें मारता हुआ जोश। पता ही न चला कि कब कालके का बदन बेगाना हो गया। शोला ने उसे वहीं लिटाया और अपना कुल्हाड़ा लेकर इधर-उधर देखने लगा। यह कुल्हाड़ा उसने बूढ़े के घार से लिया था। बन्दूकों और पिस्तौल के कारतूस सीमित थे इसलिये वह उनका कम ही इस्तेमाल करना चाहता था। अब वह कोई ऐसी सिम्त इख्तियार करके उस चट्टान के सामने के हिस्से तक पहुंचना चाहता था जिसके पीछे शेष कालके मौजूद थे। कुछ लम्हों के बाद वह आगे बढ़ा और उन कालकों के अकब में पहुंच गया। वह तो उस वक्त चौंके थे जब शोला चट्टान के ऊपर से गुजरकर उनके सिरों पर आ गया और कुल्हाड़े से उनमें से एक के सिर की हड्डी काटकर गर्दन तक पहुंचा दी। उसकी चीख भी बुलन्द नहीं हो सकी थी, लेकिन बाकी कालके चौंक पड़े थे। उन्होंने संभलने की कोशिश की, लेकिन शोला का रक्त सना कुल्हाड़ा उनमें से एक के सीने पर पड़ा और उसके हलक से दिल दहला देने वाली चीख निकल गयी। बाकियों ने शोला से निमटने की कोशिश की लेकिन उनके अकब में दूसरी बला मौजूद थी यानि फिट। एक तरफ शोला ने उन दो इन्सानों की गर्दन अपने बाजुओं में भींच ली थी, जो उसके करीब पहुंचे थे और उनके सिरों को पूरी कुव्वत से टकरा दिया था तो दूसरी तरफ फिट का खंजर उनके बदन सहला रहा था और वह बेजां हो रहे थे। शोला ने अपना कुल्हाड़ा सीधा किया और उसका सीधा वाला-हिस्सा अपने सामने वाले कालके सिर पर मारा और तड़ाख की आवाज के साथ उसके सिर की हड्डी बेशुमार हिस्सों में तक्सीम हो गयी। आखरी कालके ने भागने की कोशिश की, लेकिन खुद अपने लबादे में उलझकर गिर पड़ा और उसके बाद उसे यह भी पता न था कि उसकी गर्दन कैसे उसके शानों से जुदा होकर दूर जा पड़ी। तमाम कालके मौत की आगोश में पहुंच गये थे और उसके बाद वह खामोशी से वहां से वापस चल पड़े। उन्होंने काहनों के सफाये का आगाज कर दिया था और किसी को कानोंकान खबर भी नहीं हुई थी।

इबादतगाहों में खलबली मच गयी थी और जो पोगास के

हुक्म पर पूजागृहों के पुजारियों को खत्म करके उनकी जगह काबिज हो गये थे और काहन बने हुए थे। इन्हीं धर्मस्थलों से कोरसार का निजाम चलता था—यहीं से नियम कानून बनते थे। इन पर कालकों का राज कायम होता गया था। शोला की समझ में आ गया कि सुनारिया के दरवेश ने क्यों इनके इशारे पर उससे पंगा लिया था। इस इबादतगाह से कालकों का पूरी तरह सफाया करके शोला और फिट ने धर्मस्थल का अन्दरूनी निरीक्षण किया। वह यह जानना चाहता था कि यहां अन्दर क्या व्यवस्थायें की गयी हैं। हो सकता है इन धार्मिक स्थानों पर कम्यूनिकेशन की भी व्यवस्था की गयी हो। एक छोटी-सी सुरंग पार करके शोला कुर्बानगाह में पहुंच गया। इस जगह बलिवेदी बनी हुई थी और उसका पत्थर खून की वजह से कत्थई रंग का हो गया था। कोरसार में भी देवताओं को खुश करने के लिये बलिप्रथा थी। ये लोग अपने दुश्मनों की बलि चढ़ा देते थे और उसके खून से देवताओं की मूर्ति नहलाते थे। इनके कबीलों के अलग-अलग देवता थे—उनकी मूर्तियां भी अजीबो-गरीब शक्लों की हुआ करती थीं।

लेकिन शोला ने यहां जिस मूर्ति को स्थापित देखा, उसे देखकर वह उछल पड़ा। मूर्ति को एक लबादा पहनाया गया था। उसकी रंगत तांबे की थी। आंखें रोशन थीं जैसे दो बल्ब जल रहे हैं, उससे किरणें खारिज हो रही थीं और उसी से निकलने वाली रोशनी वहां फैली हुई थी। कमर से नीचे का हिस्सा सर्प जैसा बना हुआ था।

"क्या बात है—तुम इस मूर्ति को इस तरह क्यों घूर रहे हो?" फिट ने पूछा।

"क्या तुम जानते हो कि यह मूर्ति किसकी है?" शोला ने पूछा।

"इस कबीले के किसी देवता की होगी। यहां हर कबीले का अलग-अलग देवता हुआ करता है। किसी-किसी की शक्ल तो जानवरों की तरह होती है। जैसे यह आधा सांप, आधा इन्सान।"

"मेरे चौंकने की वजह यह है कि मूर्ति की शक्ल कुछ जानी पहचानी लग रही है। जिसने भी यह बनायी उसका फन काबिले तारीफ है। उसने हू-ब-हू शक्ल उतार दी है। ऐसा लगता है यह

मूर्ति नहीं कोई जीता जागता इन्सान है।"

"बेशक तुम ठीक कहते हो और इसकी आंखों से किरणें निकल रही हैं यह भी कम आश्चर्यजनक नहीं है। हमारे कोरसार में अभी तक बिजली नहीं बनती और यह करिश्मा बिना इलेक्ट्रिक करंट के नहीं हो सकता है। इसका मतलब यहां दूसरे भी उपकरण हो सकते हैं।"

"मैं उसी वजह से यहां आया हूं।"

"लेकिन तुम मूर्ति को देखकर हैरान क्यों हो गये?"

"क्योंकि जिस शख्स की यह मूर्ति है, उसे मैं जानता हूं।"

"क्या मतलब?" अब फिट उछल पड़ा।

"हां फिट—जिस शख्स की शक्ल इस मूर्ति से मिलती है वह हमारी उस दुनिया का बाशिन्दा है जहां का मैं रहने वाला हूं और उसका नाम वृन्दा स्वामी है। मैं इस शख्स से कभी न खत्म होने वाली जंग लड़ रहा हूं। यह शख्स बहुत बड़ा जादूगर है।"

"ओह! यह तो सचमुच हैरानी की बात है, लेकिन यह भी तो जरूरी नहीं कि यह मूर्ति उसी शख्स की हो। उसका निचला हिस्सा सांप की तरह बना हुआ है।

"बहरहाल! यह दिलचस्प बात है।"

दोनों इबादतगाह की तलाशी लेने लगे। लेकिन उन्हें कोई उल्लेखनीय चीज़ नहीं मिली। कुछ देर बाद ही वह बाहर निकले। उसके बाद उन्होंने इबादतगाहों में कालकों की लाशों का ढेर लगाना शुरू कर दिया। बहुत सी इबादतगाहों से कालके जान बचाकर भाग रहे थे। प्रत्येक इबादतगाह में जहां कालके थे वहां ऐसी ही मूर्ति स्थापित थी। उन्हें यह भी पता चल गया था कि यह मूर्ति नये देवता की है। कोरसार के तमाम धर्मस्थलों, पूजागृहों, इबादतगाहों में इसी मूर्ति को स्थापित करने का हुक्म कारनोस ने दिया। अपनी तरफ बढ़ने वाली मौत ने कालकों के होश उड़ा दिये थे। बोगास ने जो बड़ी इबादतगाह बनायी थी—कालके भागकर यहां शरणागत होते जा रहे थे और अब उन्होंने पोगास को ही बुरा भला कहना शुरू कर दिया था, जिसका जादू खत्म-सा हो गया था। पोगास समझता था कि अपने लम्बे अर्से में उसने इन आबादियों में जो दहशतगर्दी करके अपना मकाम बनाया था, अब वह दीवारें हिलने लगी हैं और कालकों की मौत से आबादियों

के नौजवानों और सरदारों के दिलों में यह ख्याल पैदा हो गया कि कालके अपराजित नहीं हैं तो फिर उनके खिलाफ बगावत हो जायेगी और यह भी सच था कि कालकों ने इबादत गाहों, धर्मस्थलों, पूजागृहों को जिस तरह अय्याशी का अड्डा बना दिया, उसके खिलाफ बेशुमार आवाजें उभरी थीं। यह अलग बात है कि पोगास के हुक्म से ऐसे आवाज बुलन्द करने वालों को उन्हीं इबादत गाहों में बलि चढ़ा दी जाती थी, कहीं वह सांपों के जहर का शिकार हो जाते किसी को जिस्म पर उबले पड़ने वाली मौत मिलती थी और पोगास जिस तरह यह सारी कार्यवाहियां कर रहा था, उसमें बेशक उसकी जहमत शामिल थी लेकिन अब जबकि जगह-जगह कालकों की लाशें मिलने लगी थीं तो उनके दिलों से यह खौफ मिटने लगा था कि कालकों को मौत नहीं आती और वह देवता के पवित्र काहन होने की वजह से अमर हैं और मौत पर देवता के बाद सिर्फ पोगास का अधिकार है। वही मौत और जिन्दगी का स्वामी है। पोगास का यह अधिकार छिन रहा था और इबादतगाह में इस वक्त बहुत से लोग थे। पोगास उन्हें अपनी शिक्षा दे रहा था। वह उन्हें बता रहा था कि यह सब कुछ जो हो रहा है यह भी रूह अजीम के हुक्म से हो रहा है और रूह अजीम जानती है कि कालदिप वाले जो पोगास का हुक्म दिल से कुबूल नहीं करते, आसमानी बला के शिकार हो रहे हैं। अतः अपने दिलों को साफ करें और यों सोचें कि उनके दरमियान से बुराई निकल रही है और जब हर बुरा इन्सान खत्म हो जायेगा यानि जो पोगास और देवता के कानून से बगावत कर रहा है तो उसके बाद बरकतों का दौर शुरू होगा। बस्तियों के लोग खुशहाली का झूला झूलेंगे, आसमानों से पानी बरसेगा। फसलें अनाज उगलेंगी।

पोगास देख रहा था कि वह सब बददिल थे जो उसके पैरोकार थे और उनके चेहरों पर मौत की पीलाहट छायी हुई थी। वह समझ रहे थे कि एक न एक दिन वह गुप्त मौत उन्हें भी आ जायेगी जो न जाने किस तरफ से आती है और किधर निकल जाती है और दिलचस्प बात यह थी कि अभी तक वह जिस पूजागृह में पहुंचे थे, मौत बरसाने वालों ने वहां एक भी शख्स को जिन्दा नहीं छोड़ा था। कोई ऐसा शख्स जिन्दा नहीं था जो यह बता सके मौत किस शक्ल में आती है। इन्सानी शक्ल में या अदृश्य रूप में—और

यही बात पोगास के लिये सबसे ज्यादा परेशानी की थी कि उसका कोई सुराग नहीं मिल सका था, लेकिन उसका जहन बर्क रफ्तारी से काम कर रहा था और वह यह सोच रहा था कि वह कौन हो सकते हैं। फिर जब कालकों के इस गिरोह को उसने रुखसत किया तो उसकी पेशानी खुद भी शिकन ओलाद थी और चेहरे पर चिंता की गहरी परछाइयां साफ नुमायां थीं। जोगन जो उसका विश्वासपात्र सेवक था, उसके करीब मौजूद था।

पोगास ने पत्थर की सिल पर हाथ रखकर अपना वजन उस पर लटकाते हुए कहा—"यह महसूस हो रहा है जोगान! यह सब इस मौत से खौफजदा हो गये हैं।"

"हकीकत तो यह है रूह अजीम! हम अपनी कोशिशों में कामयाबी के बाद नाकामी का मजा चख रहे हैं और इसकी शुरूआत उस वक्त हुई जब जंगाल की बीवी और उसके बच्चे को रेत के टीलों से गायब पाया गया और यह भी अन्दाजा न हो सका कि वह कौन-सी कुव्वत थी जिसने एक ऐसी औरत को रेत से आजादी दिलायी जो सूरज की गर्मी से झुलस चुकी थी। एक नन्हा-सा बच्चा गर्म रेत पर कैसे जिन्दा रहा। आखिर कोई न कोई तो होगा जो उन्हें किसी भी शक्ल में वहां से ले गया होगा ...जिन्दा या मुर्दा।"

"यह तो तेरा काम था जोगन! मैंने जिस मंसूबे को इतनी मुश्किल से तरतीब दिया था, उसे पूरा नहीं कर पाया।"

"हकीकत तो यह है रूह अजीम! मैं तुझे बता चुका था कि मैंने किस तरह अपना काम किया।"

"आह! तो फिर वह कहां गये—और मेरा जहन सिर्फ एक बात सोच रहा है।"

"वह क्या?"

"फोजान...बूढ़ा फोजान जो हमारा विरोधी है और भविष्यवाणियां करके लोगों में हमारा खौफ कम करता था और जो अब गायब हो गया है और जिसकी लाश भी तुम्हें अब तक नहीं मिली।"

जोगन गहरी सोच में डूब गया था फिर उसने कहा फिर—"तो फिर रूह अजीम! आपका नया हुक्म क्या है? लोग बददिल हो रहे हैं और ऐन मुमकिन है कि वह इबादतगाहों का रुख करने

की बजाय अपने लिये पनाहगाहें तलाश करने लगें।''

''लेकिन यह तो पता चले कि आखिर वह कौन है। बूढ़ा फोजान तो अपने जिस्म में ऐसी कुव्वत नहीं रखता कि यह सब कुछ कर सके।''

''रूह अजीम का इल्म हर चीज पर हावी है। हम तो खुद उससे इस बात के ख्वाइशमंद हैं कि वह पूजागृह के कातिलों को सजा दे।''

''आह! देखना होगा—देखना होगा। लेकिन जोगन! एक गिरोह ऐसा बना लो सिर्फ यह काम करे कि उन लोगों की तलाश करे और पूजागृहों के दरमियान गश्त करता रहे और जब भी यह अन्दाजा लगाये कि अम्ल करने वाला कौन है, फौरन उनके खिलाफ कार्यवाही करने की बजाय मुझे सूचना दे और तुझे यही काम करना है।''

''रूह अजीम के हुक्म की पाबन्दी जोगन का फर्ज है। सो मैं ऐसे लोगों का एक गिरोह लेकर उनकी तलाश में निकलता हूं।''

''जा—हम तेरी कामयाबी की प्रतीक्षा में हैं।'' पोगास ने कहा और उसके बाद खड़े-खड़े आंखें बन्द कर लीं। जोगन उसे अर्थपूर्ण निगाहों से देखता हुआ बाहर निकल गया था। कदाचित उसे खुद भी एहसास हो गया था कि रूहानी पेशवा जो आसमानों की खबर लाता है, खुद भी इतना ही परेशान है जितना दूसरे।

और उनकी परेशानी जायज थी। खानकाहों, इबादतगाहों, पूजागृहों और कुर्बानगाहों में अब अभी लोगों की बजाय कालके कत्ल हो रहे थे। वह जिन्हें यकीन दिलाया गया था कि बहुत जल्द ऐसा वक्त आयेगा जब वह बस्तियों में कोई उनका विरोध करने वाला न होगा। बस्तियों में रहने वालों की हर चीज उन्हीं कालकों की मिलकियत होगी और इस हसीन भविष्य के लिये उन्हें जद्दो जहद करनी है। खानकाहों और पूजागृहों में काहन बनकर फैल जायें और बस्तियों को अपना गुलाम बना लें। इसका नेतृत्व यहां कारनोस कर रहा था। रूह अजीम पोगास कारनोस का ही आदमी था। पूरे कोरसार में पोगास को मजहबी पेशवा बनाने का काम चल रहा था। कबीलों, बस्तियों की खानकाहों, पूजागृहों, कुर्बान-गाहों में नयी मूर्ति स्थापित की जा रही थी। पोगास का ऐलान था कि जब पूरे कोरसार में हर जगह देवता की मूर्ति स्थापित हो

जायेगी और उसकी पूजा होने लगेगी। लोग उसके सामने बलियां चढ़ाने लगेंगे और जिस दिन कोरसार पर कारनोस की हुक्मरानी कायम हो जायेगी—क्योंकि कारनोस देवता का पुत्र है। उस दिन कोरसार का हर इन्सान देवता के दर्शन करेगा। इस देवता को वह लोग काल कहते थे। और इसी देवता के नाम से काहनों को भी कालकों कहा जाता था। कारनोस देवता काल की पहली संतान थी और कालके बाद की संतानें थीं। जब देवता की इन संतानों का कत्लेआम शुरू हो गया तो तमाम मान्यताओं की दीवारें दरकने लगी थीं।

न जाने कौन-सी रूहें उनके दरमियान दाखिल हो गयी थीं। आबादी वालों की तो मजाल नहीं थी कि वह इन कालकों के खिलाफ कुछ कर सकें। वह किसी आबादी में नमूदार हो जाते तो पूरी बस्ती सकूत में डूब जाती थी। लेकिन यह सकूत अब इबादतगाहों में कायम हो गया था और यह इबादतगाह जो शोला और फिट को दूर से नजर आयी थी, मिट्टी चूने और घास से बनायी गयी थी लेकिन खास लम्बी चौड़ी थी। इतनी मजबूत थी और बड़ी थी कि इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी।

वह खामोशी से एक जगह छिप गये। काम उनका यही था कि वह खानकाहों का रुख करते और उनमें दाखिल होकर उनमें मौजूद कालकों को खत्म कर देते। फिट बेशक शोला का साथ दे रहा था, लेकिन कार्यवाही शोला की ही होती थी। वह इस तह तक पहुंचना चाहता था कि कोरसार जो पाताल का एक हिस्सा था। अल्तास और कोरसार दो हिस्सों की बहरहाल शोला को जानकारी थी। लेकिन हैरानी की बात यह थी कि यहां का देवता 'काल' वृन्दास्वामी का हमशक्ल था। ठीक इसी तरह अल्तास में अमरीना का सबसे बड़ा काहन या देवता अजरंग भी वृन्दा का हमशक्ल था। कहीं ऐसा तो नहीं अजरंग जिन्दा हो और कोरसार में अपना प्रभुत्व स्थापित करना चाहता हो और उसकी कमर से नीचे का हिस्सा सांप की शक्ल का इसलिये बनाया गया हो क्योंकि अजरंग माहोरों का भी खुदा था। क्या मालूम वह अजदहा का ही एक रूप हो। शोला जब धरती अल्तास पर उतरा था तो अल्तास का जादू जोयोटा के कम्प्यूटर के वायरस ने ब्लाक कर दिया था—और अजरंग का जादू ठप्प हो गया था—यही वजह थी कि

शोक ने उसे आसानी से शिकस्त दे दी। लेकिन अजरंग की प्रयोगशाला से वह जानकारी मिलती थी कि वह बहादुर जादूगर था। उसने अल्तास की उस मुकद्दस किताब से जादू सीखा था जो माहारों की एक खानकाह वासा में रखी थी। उस किताब में ऐसे भी जादू का उल्लेख था जब एक सर्प या अजदहा इन्सानी शक्ल धारण कर सकता था। सांप को इन्सान की ही एक योनि कहा जाता था। क्या मालूम अजरंग भी इसी योनि में रहता हो और जादू ब्लाक होने के बाद वह अजदहा या सांप की शक्ल धारण करने में असमर्थ हो गया हो और अब अजरंग कोरसार में आ गया हो। हो सकता है अजरंग को पहले कोरसार की जानकारी न हो। यहां आकर वह अपने आपको देवता के रूप में स्थापित करना चाहता हो। और उसने कालकों के लिये यहां का रास्ता खोला हो। अल्तास में सिर्फ अजरंग ही ऐसा जादूगर था जो पाताल और बाहरी दुनिया के आवागमन के ब्लैक होल्स और तिलस्मी रास्तों की जानकारी रखता था। अजरंग के लिये बाहरी दुनिया के लोगों को यहां लाकर काहन बना देना कोई मुश्किल काम न था। अमरीना में भी उसके काहन ही काम करते थे, लेकिन वह काहन अल्तास के ही निवासी थे।

और अगर यह नया देवता अजरंग नहीं था तो फिर कौन था। क्या वृन्दा स्वामी ने नया चोला धारण किया है। क्या उसका गिरोह यहां उतर गया है और क्या वह इसी रास्ते अल्तास तक पहुंचना चाहता है जहां हीरों और सोने के पहाड़ हैं। अगर वृन्दा स्वामी ने कोई रास्ता तलाश कर लिया है तब यह बहुत ही खतरनाक बात थी। पाताल पर अपनी सल्तनत कायम करने के बाद वह पूरी धरती को अपना गुलाम बना सकता था। पाताल से ही वह जहां चाहे भूकम्प पैदा कर देता है--जहां चाहे ज्वामुखी फाड़ देता। वह दुनिया के सबसे बड़े खजाने का मालिक बन जाता और फिर उसे खत्म करने के लिये किसी अवतार को ही धरती पर उतरना पड़ता। त्रेतायुग में जिसकी उत्पत्ति वैशाख शुक्ल तृतीया को हुई और जिसकी आयु 12,96,000 वर्ष थी। इस युग में पाताल का राजा अहिरावण था जिसे बजरंगबली ने पाताल में जाकर खत्म किया था। अहिरावण ने राम-लक्ष्मण को बंधक बना लिया था। त्रेता में तीन अवतार धरती पर उतरे। वामन, परशुराम और

रामचन्द्र। पहले वामन जी ने राजा बलि से तीन पैर पृथ्वी दान लेकर बाद में समस्त पृथ्वी को तीन पैर से नापकर राजा बलि को पाताल का राज्य दिया। बाद में इसी पाताल का राजा अहिरावण बना। इस युग में मनुष्य की आयु दस हजार वर्ष थी। तब कलयुग में क्या यह मुमकिन नहीं कि वृन्दास्वामी पाताल का स्वामी बन जाय और यहां उसकी पूजा अर्चना होने लगे। संसार की कोई भी सेना उस पर हमला करके उसका खात्मा नहीं कर सकेगी, क्योंकि यहां कोई पहुंच न पायेगा और पूरी पृथ्वी वृन्दा की पहुंच में होगी। ताशा जैसी खानकाह में तपस्या करके वह और भी शक्तिमान हो सकता है। शोला इस देवता को प्रकट होने के लिये विवश कर देना चाहता था—वह पाताल में अवतार बन चुका था और उसे अवतार का धर्म निभाना था। शोला की जिन्दगी का मकसद भी वृन्दा का खात्मा था। महामाया ने उसे जिन शक्तियों से नवाजा था, वह तब तक उसके पास थीं जब तक वृन्दा स्वामी नहीं मारा जाता। शोला को ध्यान आया कि वह एक बात तो कतई फरामोश कर गया था।

महामाया ने कहा था—"भले ही किसी जगह से तुम्हारी शक्तियों को अस्थाई रूप से कोई छीन ले और ऐसा भी सिर्फ वृन्दास्वामी कर सकता है। लेकिन वृन्दा स्वामी अधिक समय तक तुम्हारी शक्तियों को छीनकर नहीं रख सकता। अथवा वही शक्ति उसकी मौत का कारण भी बन सकती है—क्योंकि इस तरह उसका अपना जादू भी धीरे-धीरे खत्म हो जायेगा। लेकिन एक बात याद रखना शोला—जिस दिन वृन्दास्वामी का ख़ात्मा हो जायेगा, वह जादुई शक्ति जो तुम्हें साधारण मानव से महामानव बनाती है वह भी खत्म हो जायेगा—फिर अण्डीलो भी तुमसे हमेशा के लिये दूर चला जायेगा। तुम खुद गहरी निद्रा में चले जाओगे और जब यह गहरी निद्रा टूटेगी तो तुम बिल्कुल एक साधारण इन्सान बन जाओगे और तुम्हारी कहानी खत्म हो जायेगी। साधारण इन्सान बनने के बाद तुम जिस तरह चाहे जीवन यापन कर सकते हो—उससे पहले तुम्हारा अपने जीवन पर अपना कोई अधिकार नहीं होगा। अगर तुम अपने मिशन से मुंह मोड़कर भागना चाहोगे—अपनी जिन्दगी को आम आदमी की तरह बसर करना चाहोगे तो ऐसी हर शै जो तुम्हें तुम्हारे मार्ग से अलग करेगी, मिट

जायेगी—इसलिये याद रखो! कभी किसी से इस हद तक मुहब्बत न कर बैठना कि कोई औरत तुम्हारा जीवन साथी बनने का ख्वाब देखने लगे और तुम उसे जीवन साथी बनाने लगो। जब भी ऐसा तुम सोचोगे, वह औरत नष्ट हो जायेगी और तुम्हें वापस उसी रास्ते पर पटख दिया जायेगा जहां तुम्हें चलना है। इसलिये अपना ध्यान सिर्फ और सिर्फ वृन्दा तक केन्द्रित रखना।''

शोला महामाया के इन अल्फाज को कतई फरामोश कर चुका था। अब उसे ध्यान आया कि उसने मूर्ति को चाहा था। वह सब कुछ छोड़कर मूर्ति के साथ जीवन बिताना चाहता था। मूर्ति एक फिल्म आर्टिस्ट थी—हीरोइन थी—और बेपनाह खूबसूरत थी। हर लिहाज से वह शोला की पसंद पर खरी उतरती थी। मूर्ति भी उसे बेइन्तहा प्यार करती थी। फिर अचानक मूर्ति को उससे छीन लिया गया। वह यह समझता था कि मूर्ति को अफ्रीका का प्रिंस शोम्बी उठाकर ले गया है और इसमें गोली ने उसकी मदद की। वह मूर्ति की ही तलाश में निकला था। उसका दूसरा मकसद गोली को खत्म करना था—जो मूर्ति की जानी दुश्मन बन गयी थी और फिर शोला निनजा के साथ दक्षिण अफ्रीका के उस रास्ते में जा पहुंचा जिसे सुरखाब के नाम से जाना जाता था और एक बार फिर उसका मुकाबला वृन्दा स्वामी से हो गया—यानि शोला जिस ट्रेक से उतर गया था, वापस उसी ट्रेक पर आ गया था और अब उसकी दौड़ जारी थी। दौड़ते-दौड़ते वह पाताल में आ पहुंचा था। पहले अल्तास में फिर कोरसार में। शोला को ध्यान आया कि उसने फैसला कर लिया था कि वह सुरखाब के साथ अल्तास में ही जीवन गुजारेगा। उसके दिल में जो मुहब्बत मूर्ति के लिये थी वैसी ही मुहब्बत सुरखाब के लिये पैदा हो गयी थी। सुरखाव अब अल्तास की मलिका बन चुकी थी और शोला शहंशाह था। उसका मन इस दुनिया से वापस अपनी दुनिया मे जाने को नहीं करता था और अब यह नया चक्कर शुरू हो गया था। सुरखाब भी पीछे छूट चुकी थी और शोला एक नयी डगर पर बढ़ा चला जा रहा था।

अब उसे एहसास हो गया था कि दरअसल वह तो खुद कैदी है—महामाया का कैदी। और वह इस कैद से तब तक आजाद हो ही नहीं सकता जब तक वृन्दा स्वामी जिन्दा है और उसकी यह

दौड़ कोरसार में जारी थी।

इस वक्त वह फिट के साथ खानकाह के बाहर एक जगह छुपा हुआ था। काम उनका यही था कि वह खानकाह का रुख करते और उनमें दाखिल होकर उनमें मौजूद कालकों को खत्म कर देते। फिर बेशक शोला का साथ दे रहा था। लेकिन कार्यवाही शोला की होती थी। फिर वह उस खानकाह में दाखिल होने का रास्ता तलाश करने लगे और जब रात का आखरी पहर गुजरा तो वह इबादतगाह में दाखिल हो गये। उन्होंने कालकों जैसा ही लिबास पहना हुआ था जो उन्हें मुर्दा कालकों से हासिल हुआ था। अतः अन्दर दाखिल होने में उन्हें कोई दिक्कत पेश नहीं आयी। अन्दर बहुत लम्बी चौड़ी जगह फैली हुई थी, लेकिन दूर-दूर तक सन्नाटा छाया हुआ था, सिर्फ इक्का-दुक्का कालके नजर आ रहे थे जो रहस्यमय रूहों की तरह इधर-उधर गर्दिश कर रहे थे।

वह लोग अन्दर-ही-अन्दर आगे बढ़ने लगे। बड़ी अनोखी जगह थी और कुछ इस अन्दाज में बनायी गयी थी कि दिशाओं का अनुमान लगाना मुश्किल हो रहा था। सुरंगों के जाल बिछे हुए थे और यह अन्दाजा करना मुश्किल था कि किसी सुरंग से जो शाखें फूट रही हैं उनमें कौन-सी शाख कहां निकलती हैं। वह इस अजीबो-गरीब निर्माण का भी जायजा ले रहे थे। रास्ते में उन्हें कई कालके मिले थे। लेकिन किसी ने उनसे कोई सवाल नहीं किया था। इन दिनों वह ऐसी उदासी के शिकार थे कि एक दूसरे से बात करना भी गंवारा न करते थे। फिट अपने लम्बे कद की वजह से कमर झुकाकर चल रहा था ताकि उसकी पहचान न हो सके कि वह कोरसारी है।

बहरहाल वह आगे बढ़ते रहे और बहुत से रास्तों से गुजरते रहे, फिर एक जगह उन्हें दो कालके नजर आये और शोला ने अपना शिकार ताक लिया। यहां आस-पास कोई नहीं था और दोनों कालके के कुछ ऐसी ही कैफियत के शिकार थे ताहम उन्होंने गर्दनें उठाकर उन दोनों को देखा और उन्होंने विशेष अन्दाज में हाथ सीधे करके फजा में बुलन्द किये फिर नीचे झुका दिये। तभी वह दोनों उनके पास पहुंच गये और उनमें से एक ने कहा—

"क्या कर रहे हो तुम लोग यहां?"

"हम अपना काम करने के लिये यहां पहुंचे हैं। आसमानों

से हमें एक काम सौंपा गया है और उसे अन्जाम देना ही हमारा फर्ज है।"

शोला ने अचानक ही अपना एक हाथ बुलन्द किया। अपनी हथेली को सीधा किया और हथेली पर अपनी पूरी पावर एकत्रित करके खड़ी हथेली का वार कालके के सिर के ठीक मध्य भाग में कर दिया। हथेली हथौड़े की तरह कालके के सिर से टकरायी और इसमें शोला की ताकत का समावेश था। उसका सिर खील-खील होकर टुकड़ों में तक्सीम हो गया। दूसरे कालके ने शोला पर हमला करने की कोशिश की तो शोला ने अपना सीधा हाथ उसकी गर्दन पर मारा और उसकी गर्दन कंधों से दूर जाकर गिरी। शोला उछलकर पीछे हट गया था ताकि उसका जिस्म खून आलोद न हो जाय। फिर दोनों कालकों की लाशों को उसने दीवार के साथ सीधा लिटा दिया और दूर पड़ी खोपड़ी उसके शानों के साथ रखकर खामोशी से फिट का हाथ पकड़कर आगे बढ़ गया। उसने अभी उस कुल्हाड़े का इस्तेमाल नहीं किया था जो उसके लिबास में छुपा हुआ था। फिट कुछ अजीब अन्दाज में मुस्करा रहा था। अभी फिट कुछ कहने ही वाला था और अभी वह लोग चंद कदम ही आगे बढ़े थे कि एक और कालका नमूदार हो गया।

उसने चौंककर उन दोनों को देखा और बोला—"यह विशेष जगह है। तुम यहां कैसे निकल आये।"

"गलती से—लेकिन जरा उस तरफ चलकर देखो वहां क्या है।"

"क्यों क्या हुआ?" कालके ने बेइख्तियार पूछा और शोला ने उसके लिये रास्ता छोड़ दिया। कालका गर्दन झुकाकर उस सुरंग में दाखिल हो गया जहां वह दोनों लाशें पड़ी हुई थी। फिर जब उसने उन दोनों लाशों को देखा तो कांपकर रह गया। उसकी आंखें शोला और फिट की ओर उठीं।

और उसने कहा—"य...यह कैसे हो गया?"

"मैं बताता हूं कि यह सब कैसे हुआ।" शोला ने उसकी गर्दन पकड़ ली और उसे हवा में उठा लिया। कालका चीख भी न सका। थोड़ी देर तक उसके पांव हवा में हिलते रहे। उसी दरमियान शोला की उंगलियां उसकी गर्दन में पेवस्त हो चुकी थीं और गर्दन में पांच सुराख बन गये। जब उसने कालका को छोड़ा

तो उसकी पांचों उंगलियों से खून टपक रहा था। फिर हैरानी से शोला के कत्लेआम का यह हैरतअंगेज नजारा देख रहा था।

"मुझे लगता है मेरा अब कोई काम नहीं है।" फिट ने नाराजगी दर्ज की—"क्या मैं तुम्हारी नजर में नकारा हो गया हूं।"

"तुम चाहो तो खानकाह से बाहर आराम फर्मा सकते हो।" शोला ने जवाब दिया—"जब से मैंने इनके नये देवता की मूर्ति देखी है, खून मेरे सर पर चढ़कर बोल रहा है। ये लोग नरबलियां चढ़ाकर अपने देवता को खून में नहलाते हैं। आज मैं इनके रक्त से स्नान करने के मूड में हूं।"

फिट बुरा-सा मुंह बनाकर खानकाह से बाहर चला गया। कुछ देर बाद जब शोला बाहर निकला तो वह पूरी तरह खून में नहाया हुआ था। वह एक वहशी दरिन्दा लग रहा था।

"और तुम तो वाकई नहाकर आ रहे हो—क्या अब ऐसे ही आगे का सफर तय करोगे?"

"नहीं।" शोला ने एक पोटली दिखाते हुए कहा—"मेरे पास दूसरा लिबास है।" शोला ने जवाब दिया। इतना कहकर शोला ने लिबास तब्दील कर लिया। उसने बताया कि उसने देवता की मूर्ति को खण्डित कर दिया है।

शोला और फिट आगे बढ़ गये।

❑❑❑

बालकों के कत्लेआम की सूचना कारनोस को दहलाये दे रही थी। कोरसार में अपनी सल्तनत कायम करने के उसके सपने चकनाचूर होते जा रहे थे। इस खौफनाक शख्सियत की दास्तान भी बड़ी हाहाकारी थी। कारनोस पहले अपनी दुनिया तक सीमित था। वह एक समुन्द्री खाड़ी में रहता था और वहीं से शिकार किया करता था। जब कभी उसे शिकार करना होता तो खाड़ी से बाहर निकलता और किसी भी कोरसारी का शिकार करके उस इन्सानी खून और मांस से छककर वापस पानी में गायब हो जाता था। कारनोस सर्प योनि का अजदहा था और वह जब अपने विशाल स्वरूप में आता तो इन्सान को मुंह से ही निगल जाता था। उसका आतंक सारस की खाड़ी में था। खाड़ी के अन्दर ही उसकी खोह थी। सारस राज्य की आबादियों में आतंक फैला हुआ था। सारस को कारनोस के आतंक से निजात दिलाने की हर कोशिश नाकाम

हो चुकी थी। कानोस इन्सानी रूप धरकर किसी भी बस्ती में पहुंच जाता—इन्सानी शिकार करके वापस लौट जाता। फिर अचानक कारनोस का सूरज अस्त होने लगा। सारस में एक दरवेश के कदम पड़ गये थे। कोई नहीं जानता था कि यह दरवेश कहां से आया था। सारस के लिये वह अजनबी था। इस दरवेश को सारसवासी हुंगारा नाम से जानते थे। हुंगारा ने कारनोस को पकड़ लिया और उसे गिरफ्तार करके कैदखाने में डाल दिया गया। कारनोस के पास हुंगारा का कोई तोड़ नहीं था। हुंगारा के सामने आने के बाद वह अपना रूप नहीं बदल सकता था यानि कारनोस अजदहे की शक्ल धारण नहीं कर सकता था—इसी वजह से कारनोस पकड़ा गया था। सारस के सैनिक चाहते तो कारनोस का खात्मा भी कर सकते थे, लेकिन हुंगारा ने उन्हें ऐसा करने से रोक दिया। हुंगारा का कहना था कि कारनोस एक सर्प जाति का शहंशाह है और यह जाति समुन्द्र के भीतर किसी खत्ते में रहती है। अगर कारनोस को खत्म किया गया तो उसका सिर तन से जुदा हो जायेगा और यह सिर कटकर खाड़ी में जा गिरेगा। तमाम सर्पों को इसका पता चल जायेगा कि कारनोस को सारसवासियों ने मार डाला—ऐसी स्थिति में हजारों की तादाद में सांप सारस में पहुंच सकते थे और सारसवासियों की जिन्दगी खतरे में पड़ सकती थी। अगर कारनोस जिन्दा रहा तो वे यही सोचेंगे कि कारनोस अपनी इच्छा से कहीं चला गया है। उसे एक खुफिया कैदखाने में रखा गया था। हुंगारा अपना काम खत्म करके रूपोश हो गया था। कारनोस अब अजदहा नहीं बन सकता था और वह कैदखाने में किसी बेजान मुर्दे की तरह पड़ा रहता था। वह हुंगारा से इन्तकाम लेना चाहता था। मगर हुंगारा के जादू की काट उसके पास नहीं थी। सारसवासियों की मान्यता थी कि ऐसे दरवेश अपना काम खत्म करके वापस अपनी खानकाह में चले जाते हैं। कोरसार में एक ऐसी पवित्र खानकाह थी जिसका रास्ता कोई भी नहीं जानता था।

इस कैदखाने में और भी खतरनाक कैदी थे जिनमें से कुछ से कारनोस ने दोस्ती कर ली थी। कारनोस शैतानी अक्ल का मालिक था। वह कैदखाने में ही मंसूबाबन्दी करता रहा। उसके दोस्त उसे मुर्दनी हालत में देखकर काफी दुखी थे। उन्हें कारनोस से सहानुभूति थी।

"हमने कारनोस को गलत समझा था। हम इसे शेर समझते थे, लेकिन यह तो गीदड़ निकला।" वह कहते।

"हुंगारा ने शायद उसे इस तरह जिन्दा मुर्दा बनाकर छोड़ दिया। इस तरह की जिन्दगी से तो बेहतर था कि कारनोस हुंगारा से जंग करते हुए मारा जाता।"

कारनोस अनभिज्ञ बनकर उनकी बातें सुनता रहा। कारनोस ने उन्हें बताया था कि वह एक बहुत बड़े खजाने का मालिक है। उन्हें यह लालच था कि अगर वह कारनोस के किसी काम आ गये तो कारनोस उन्हें मालामाल कर देगा। कारनोस जाहिरा तो मुर्दे की तरह पड़ा रहता था लेकिन उसकी निगाहें कैदखाने के रक्षकों का भरपूर जायजा लेती रहती थीं और वह उनकी गतिविधियां नोट करता रहता था। उसकी मुर्दनी हालत देखकर रक्षक भी उसकी तरफ से निश्चिंत होते जा रहे थे—बल्कि उन्हें कारनोस की हालत पर तरस आता था।

एक शाम कारनोस उस वक्त अचानक उठ गया जब कैदखाने के रक्षक रूटीन के अनुसार उसके लिये खाना लाये थे। उसने खुंख्वार भेड़िये की मानिन्द उन पर हमला किया और उनकी गर्दनें दबोचकर उनके सिर इस जोर से कैदखाने की संगलाज दीवारों से टकराये कि उनके भेजे नाक के रास्ते बाहर बह निकले। रक्षक दरवाजा खोलकर अन्दर आते थे और खाना वगैरह दे जाते थे। शुरूआत में तो खाना देने वालों के साथ शस्त्रधारी रक्षक भी होते थे जो कैदखाने के दरवाजे के बाहर खड़े रहा करते थे लेकिन जब उन्होंने कारनोस की यह हालत देखी तो वह भी बेफिक्र हो गये थे और अब सिर्फ दो रक्षक खाना लेकर आया करते थे और कारनोस ने इस मौके का फायदा उठाकर उन्हें जिन्दगी से महरूम कर दिया।

फिर उसने फुर्ती से कहा—"अब खाने के चक्कर में न पड़ो। बाहर की दुनिया में हमारे लिये बहुत कुछ है। आ जाओ।"

और कारनोस के वह तमाम साथी मुस्तैदी से बाहर निकल आये। फिर कैदखाने के रक्षकों को संभलने का मौका नहीं मिला। कारनोस उनका कत्लेआम करता हुआ अंततः पहाड़ों से निकल भागा और सारी रात और सारा दिन सफर करके अंततः एक ऐसे सुरक्षित मुकाम पर पहुंच गया जहां सारस के सिपाही उन्हें तलाश न कर सकें।

सबके सब अत्यधिक हैरान थे। कुछ देर आराम करने के बाद कारनोस ने जंगलों का रुख किया। उसके सामने मुश्किल यह थी कि बिना अजदहे का रूप धारण किये वह समुन्द्र में उतरकर अपनी खोह में नहीं पहुंच सकता था। जंगल के अत्यधिक घने क्षेत्र में पहुंचने के बाद उसने अपने साथियों को हुक्म दिया कि मजबूत दरख्तों की लकड़ियां तोड़कर उनकी सीधी शाखें हासिल की जायें और उनके सिरे नोकीले करके उन्हें भालों की शक्ल दी जाय।

अतः सबसे पहले तीन शानदार नेजे तैयार किये गये। कारनोस ने उन तीनों नेजों को देखा। फिर उनमें से दो अपने उन दोनों साथियों को दिये जिनका नाम जोसान और चन्दरिया था और तीसरा नेजा खुद अपने हाथ में पकड़कर बोला—"मेरा ख्याल है कि हम इन नेजों को आजमा लें और जोसान और चन्दरिया जो कुछ मैं करूं, तुम्हें भी वही करना है।"

जोसान और चन्दरिया कुछ समझ नहीं पाये थे, लेकिन जब कारनोस का नेजा अपने ही एक साथी के हलक में पेवस्त होकर गर्दन से बाहर निकल गया तो जोसान और चन्दरिया ने भी वही अम्ल किया और साथी स्तब्ध रह गये। फिर सिर्फ जोसान और चन्दरिया बाकी बचे कारनोस ने बाकी साथियों को मौत की नींद सुला दिया।

उसने कहा—"संख्या जितनी कम हो उतनी ही बेहतर होती है। यह वह लोग थे जो मेरे लिये बड़ी-बड़ी बातें करते थे और यह तुम हो जिन्हें मैंने अपने दोस्तों में चुन लिया और यह फैसला तो मैंने उसी वक्त कर लिया था कि कैदखाने में रहकर यह जिन्दगी से महरूम हो या न हों, लेकिन मुझे इनकी जिन्दगी नापसंद है। जो कारनोस की ताकत पर एक करे उसका जिन्दा रहना मेरे हक में ठीक नहीं है।"

जोसान और चन्दरिया ने भी कारनोस से यही कहा कि वह खुद भी उन्हें पसंद करते थे। फिर कारनोस दिन और रात सफर करता रहा और उस वहशी के लिये शिकार करना मुश्किल काम नहीं था। उसका एक ही उसूल था—जो भी नजर आ जाये उसे मारकर खा जाओ। कारनोस अपने जहन में इन्तकाम की आग रोशन किये हुए था। फिर वह बड़ी चालाकी से बस्तियों का जायजा

लेने लगा। चूंकि वह सर्पों का शहंशाह था इसलिये इन बस्तियों का भी शहंशाह बनना चाहता था। वह दिन में आराम करता और रातों को बस्तियों की तलाश में निकलता। उसे मालूम नहीं था कि वह सारस से कितनी दूर निकल चुका है और किस खते में है। कई जगह उन्होंने बस्तियों वालों को कत्ल करके अपने लिये सामान जुटाया।

अचानक उसे पता चला कि दरवेश हुंगारा फिर अपनी खानकाह से बाहर आ गया है और उसकी तलाश जोर-शोरों से हो रही है। दरवेश हुंगारा अपनी जादुई ताकत से उसके निशान पता करके धीरे-धीरे उसकी तरफ बढ़ रहा था। उसने कारनोस के लिये जमीन तंग कर दी। कारनोस भागता रहा और फिर एक बर्फपोश पहाड़ी में जा छुपा। इसी पहाड़ी में एक खोह थी। खोह में पानी भरा हुआ था। लहरें खोह की दीवारों से पुरशोर अन्दाज में टकरातीं और वापस लौट जातीं। उसने जोसान और चन्दरिया को वहीं छोड़कर लहरों में पनाह ले ली। उसका ख्याल था कि वह लहरों के वेग में तैरता हुआ किसी दूसरे मुकाम पर पहुंच जायेगा—लेकिन यह लहरें उसे एक भंवर में ले गयीं। कारनोस भंवर की चपेट में आ गया। काफी देर तक वह हाथ-पांव पटककर भंवर से निकलने की कोशिश करता रहा—लेकिन भंवर उसे अपनी अथाह गहराई में ले गया और कारनोस बेहोश हो गया।

जब कारनोस को होश आया तो उसने अपने आपको एक किश्ती में पाया। वह हैरान रह गया कि यह जगह कौन-सी है। बोट में जो लोग मौजूद थे वह किसी भी लिहाज से कोरसारी नहीं थे। उनकी जुबान भी कोई और ही थी। उनके लिबास, कद काठी सब अलग ही सभ्यता के प्रतीक थे। उन्होंने कारनोस से बातें कीं तो कारनोस उसकी जुबान न समझ सका।

किश्ती उसे एक साहिल पर ले आयी। यह एक बस्ती थी—उसे देखकर लोग हैरान हो रहे थे। कारनोस का कद आठ फुट का था। वह काला भुजंग था। वे लोग उसे पहाड़ों में बनी एक खानका में ले गये और इसी खानकाह में उसे देवता ने दर्शन दिये—जिसने कारनोस की न सिर्फ जुबान समझ ली बल्कि उसे अपना बेदाग गुलाम बना लिया था। कारनोस काफी अर्से तक इस मठ में रहा। यहां कारनोस को गुलाम बनाने वाले देवता ने

अपने अन्य सेवकों को उसकी भाषा का ज्ञान करा दिया। अब वह उन सबके साथ अपनी जुबान में भी बात करता था और उनकी भाषा भी समझ लेता था। यों वक्त गुजरता रहा और फिर देवता ने उसे अपने बन्धन में बांधकर उसे उसकी खोई शख्सियत वापस लौटा दी। कारनोस अब इस देवता के हुक्म का गुलाम था। उसके बाद एक नयी दास्तान का आगाज हो गया। कारनोस का पहला काम देवता की पूजा का था। कालके उसके साथ थे। सागर में वह श्याम विन (ब्लैक होल) तलाश कर लिया गया जिसके रास्ते कारनोस आया था। ऐसी पनडुब्बियां तैयार हो गयीं जो भंवर में उतरकर ब्लैक होल में सफर कर सकती थीं और फिर इस तरह वे लोग कोरसार की धरती पर पहुंच गये। उनकी तादाद बढ़ती गयी। इन्हें भी कोरसार वासी कालके कहते थे। बाद में कई संगतराश देवता भी मूर्ति बनाने में जुट गये और देवता की मूर्ति पूजागृह की कुर्बानगाहों में लगायी जाने लगी। कालके अनगिनत तादाद में फैल गये थे।

कारनोस को हिदायत थी कि अभी वह यह जाहिर नहीं करेगा कि उसे अपना रूप मिल गया है। वह इन्सानों की शक्ल में ही रहेगा—क्योंकि अगर उसने ऐसा किया तो हुंगारा फिर उसके पीछे लग जायेगा। देवता फिलहाल हुंगारा से टकराव नहीं चाहता था। वह हुंगारा को भी अपना गुलाम बनाना चाहता था और कोरसार के पवित्र दरवेशों की खानकाह पर अपना आधिपत्य जमाना चाहता था। कारनोस को कोरसार का सुल्तान घोषित कर दिया गया था।

कारनोस का काम शुरू हो गया था।

चन्दरिया और जोसान ने काफी अर्सा उसी बर्फपोश पहाड़ी में छुपकर गुजारा था और जब कारनोस वापस आया तो उनकी बांछें खिल गयी थीं। कारनोस अकेला नहीं आया था। उसके साथ कालके भी थे। खुद कारनोस कालकों के लबादे में था।

कारनोस ने अपना मिशन शुरू कर दिया—कालके चारों तरफ फैलने लगे। अब कारनोस ने ताबड़तोड़ हमले शुरू कर दिये थे। इधर पागोस भी उसका हुक्म मान रहा था और खानकाहों पर उनका कब्जा होता जा रहा था। कारनोस अब दक्षिण की तरफ बढ़ रहा था। वह जंगलों और पहाड़ों में छिपता छुपाता आगे बढ़ रहा था। उसे हुंगारा से भी फिलहाल अपने को बचाकर रखना

था। एक लम्बा सफर तय करते हुए कारनोस अपने साथियों के साथ दक्षिण की आबादियों में दाखिल हो गया। यहां की बस्तियों में खुशहाली और ताजगी थी और इसकी वजह हरे भरे मैदान और उनमें बिखरी हुई नदियां थीं।

□□□

कारनोस ने एक पत्थर की खानका में डेरा डाला हुआ था जो वीरान पड़ी हुई थी लेकिन उसकी गहराइयों में एक बड़ी आबादी नजर आ रही थी। फिर जब कारनोस ने यहां आग रोशन की तो आबादी वाले उसकी तरफ दौड़े चले आये और उन्होंने तीन कालकों को देखा। उस वक्त भी कारनोस, जोसान और चन्दरिया के साथ वहां ठहरा हुआ था। कारनोस ने उन्हें शैतानी मुस्कराहट के साथ बरकतों की दुआयें दीं और उनसे कहा कि वह उनके और आसपास की आबादियों के लिये बरकतों की सौगात लाये हैं। वह कुछ ऐसा करना चाहते हैं कि आबादियां खुशहाल हो जायें और यहां के लोग अच्छी जिन्दगी गुजारें।

मासूम और सादा लोह लोग इन दरवेशों को देखकर बहुत प्रभावित हुए और उनके निर्देशों पर काम करने लगे। इस तरह कारनोस ने निहायत चालाकी के साथ इन लोगों को अपना हमनवा बना लिया था और फिर बस्ती के मोआज्जिज लोगों को जमा करके बोला—"अगर तुम्हारा ज्ञान इतना सीमित है कि तुम्हें दूसरी बस्तियों के बारे में कुछ मालूम नहीं तो तुम वास्तव में इसी स्थिति के अधिकारी हो जो तुम हो और अगर तुम जानते हो कि वहां क्या हो रहा है तो मुझे बताओ। क्या तुम जानते हो कि उत्तर की बस्तियों में इन दिनों क्या हलचल है।"

"हां—हम जानते हैं।" उन लोगों ने जवाब दिया—"उन बस्तियों में जालिम कालकों का साम्राज्य फैल गया है। और कालके कभी भी हमारी बस्तियों का रुख कर सकते हैं।"

"और तुम लोगों ने कालकों से बचाव के लिये क्या उपाय किये हैं?"

"हम क्या कर सकते हैं। उनके पास आग उगलने वाले हथियार हैं। हम उनका मुकाबला नहीं कर सकते।"

"तुम लाठी दे दो और नेजों से भी उनका मुकाबला कर सकते हो—लेकिन उसके लिये तुम्हें काल देवता की पनाह में जाना होगा।

कोरसार की पवित्र खानका में अब हमारा जैसे मक्कार, फरेबी दरवेशों का कब्जा हो चुका है—इसलिये हम सब विपत्तियों से घिरे हैं। हमारे देवताओं की ताकत खत्म हो चुकी। हम ऐसे देवताओं की पूजा करते हैं जो हमारा कुछ भी भला नहीं कर सकते—इसलिये ताकत के देवता की पूजा करो। अगर तुम सब लोग मिलकर दिल से काल देवता का आह्वान करोगे तो वह जरूर प्रकट होकर दर्शन देगा। काल देवता इन दिनों सर्प योनि में हैं। देवता को खुश करने के लिये हमें एक जवान लड़की की कुर्बानी देनी होगी—बोलो तैयार हो।"

सबने सलाह मशविरा किया और फिर तैयार हो गये। अतः एक दूसरी बस्ती से एक लड़की को उठा लिया गया और बस्ती की पौराणिक खानकाह से पुराने देवता की मूर्ति खण्डित करके उसे डरा दिया गया। कारनोस ने कहा था कि देवता के आव्हान के वक्त वह उनके बीच मौजूद नहीं रहेगा—लेकिन उसके दोनों साथी सारा काम अंजाम देंगे।

उस रात बस्ती के लोगों ने कुर्बानगाह पर एक अजगर के दर्शन किये जो काल देवता था। लड़की की बलि चढ़ा दी गयी। काल देवता ने बलि स्वीकार की। उसके बाद कारनोस ने दूसरी बस्तियों की तरह यहां की खानकाह में भी काल देवता की मूर्ति स्थापित करवा दी और बस्ती वालों से कहा कि तीस दिन में एक बार वह काल देवता को बलि चढ़ाते रहेंगे।

फिर एक दिन कुछ कालके वहां दाखिल हुये और कारनोस की एक ही घुड़की में कालकों ने हथियार डाल दिये—कालकों को बन्दी बना लिया गया।

"इसे कहते हैं अक्ल!" कारनोस ने अपने दोनों खास सिपहसलारों से कहा—"अब ये लोग काल देवता की पूजा सदियों तक करते रहेंगे और मैं इनका पैगम्बर कहलाऊंगा।"

बाद में पैगम्बर ने घोषणा की कि कालके देवता काल के पुजारी बन गये हैं—वे अब किसी बस्ती में जुल्म नहीं करेंगे बल्कि बस्तियों को तरक्की के रास्ते पर ले जायेंगे और चूंकि ये बहुत बुद्धिमान हैं इसलिये उन्हें काहन का दर्जा दिया जाय। कालकों को इस तरह काहन का दर्जा मिल गया। कारनोस ने इसी पैटर्न पर अपने को पैगम्बर बना दिया था और खानकाहों की पुरानी

मूर्तियों को खण्डित करके देवता की मूर्ति स्थापित करवायी थी। यह मूर्ति यों कालके ही बनाकर लाते थे।

लेकिन इन दिनों उसे अजीबोगरीब सनसनीखेज समाचार मिल रहे थे। पोगास उससे तुरन्त मुलाकात करना चाहता था। कोई अदृश्य ताकत कालकों का कत्लेआम कर रही थी। खानकाहों में काल की मूर्तियां खण्डित की जा रही थीं। इन खानकाहों में जो आकर दर्शन दिया करता था वह खुद कारनोस था और इस तरह उसका प्रिय भोजन भी उपलब्ध हो जाता था। पोगास भी इस हकीकत से वाकिफ नहीं था कि अजगर की शक्ल में दर्शन देने वाला देवता और कोई नहीं कारनोस ही है।

कारनोस ने कोरसार की मुकद्दस खानकाह का रास्ता दरयाफ्त कर लिया था। जब कालकों का कत्लेआम हो रहा था तो कारनोस ने काल देवता का आव्हान किया और काल देवता का सीधा सम्पर्क उससे हो गया। वह कांच का एक गोला था जिसमें देवता के दर्शन होते थे। कारनोस ने यह गोला एक खानकाह में स्थापित कर रखा था।

"यह कत्लेआम कोरसार की पवित्र खानकाह का करिश्मा है।" कालदेवता ने कहा—"कोरसार की मुकद्दस खानकाह ने ऐसे लोगों का टोला तैयार किया है जो अपने जादू के बल पर काम कर रहा है—वरना कोरसार में ऐसा कोई बहादुर योद्धा नहीं है जो इतना बड़ा काम सरअंजाम दे सके। कारनोस! अब तुम अपनी बची-खुची ताकत से इस मुकद्दस खानकाह पर आक्रमण कर दो। हुंगारा भी तुम्हें वहीं मिलेगा। मुमकिन है यह काम हुंगारा ही का हो। उसे खत्म कर दो।"

"और अगर हुंगारा ने मुझे फिर से गिरफ्तार कर लिया तो।"

"बेफिक्र रहो। मैं तुम्हारे साथ हूं। किसी भी दरवेश को पकड़ लो। वह तुम्हें उस खानकाह का रास्ता बता देगा और जैसे ही तुम्हें उसका रास्ता मालूम हो, मुझे उसकी सूचना दे देना। मैं ठीक वक्त पर तुम्हारी मदद के लिये पहुंच जाऊंगा। मुकद्दस खानकाह पर तुम्हारा कब्जा होने के बाद पूरे कोरसार में तुम अपना कानून लागू कर सकते हो और तुम्हें कोरसार का शहंशाह घोषित कर दिया जायेगा।"

कारनोस ने काल देवता के हुक्म का पालन किया। किसी

कोरसारी दरवेश को पकड़ना उसके लिये मुश्किल काम न था। दरवेश ने उसे कोरसार की पवित्र खानकाह का रास्ता बता दिया और फिर कारनोस कालकों की एक टुकड़ी के साथ खानकाह पर हमले के लिये रवाना हो गया।

खानकाह में हुंगारा से उसका जबरदस्त मुकाबला हुआ। कारनोस के साथ इस युद्ध में सर्पदेश की सेना भी शामिल थी। खानकाह में मौजूद सारे दरवेश मारे गये। इस जगह स्वयं देवता काल भी अपने एक छोटे लश्कर के साथ आ पहुंचा था। कालदेवता ने हुंगारा और दूसरे दरवेशों का जादू खत्म कर डाला और कोरसार की मुकद्दस खानकाह पर कब्जा करने के बाद वहां काल देवता की मूर्ति स्थापित कर दी गयी। यह खानकाह एक पहाड़ी पर मौजूद थी—इसमें बेशुमार तिलस्मी सुरंगें थीं—जिनके बारे में कुछ कहा नहीं जा सकता था कि वह कहां जाती हैं। कहा जाता था कि खानकाह के जादूगर इन्हीं सुरंगों के रास्ते कोरसार की विभिन्न बस्तियों में पहुंचते थे।

कारनोस ने अपनी रिहाइश इसी पहाड़ में बना डाली और ऐलान कर दिया कि वह कोरसार का हुक्मरान है और कालके कोरसार के मान्यताप्राप्त काहन हैं। इधर कारनोस की ताकत दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही थी। कालकों का पूरा एक गिरोह इस खानकाह में आबाद हो गया था। कारनोस की अगली योजना यह थी कि कालकों को कोरसारी दरवेश बनाकर विभिन्न बस्तियों में भेजा जाय ताकि वह नया कानून लागू कर सकें। उन्हें कोरसार का मुकद्दस निशान दे दिया गया जो उनका परिचय-पत्र था। अगर कोई भी सरदार इनका उलंघन करता तो उसे बागी करार दे दिया जाता। कारनोस को यकीन था कि इस खानकाह पर कब्जा करने के बाद उन जादूगरों का खेल भी खत्म हो जायेगा जो कालकों का कत्ल कर रहे थे। उनकी डोर यहीं से बंधी थी और अब यह डोर टूट चुकी है।

❑❑❑

"शोला! इस तरह हम अब तक छापामार जंग करते रहेंगे। ये कालके जितने भी खत्म होते रहेंगे उतने ही और आते रहेंगे। यह कालके तो बस्ती-बस्ती फैले हुए हैं। इनका दायरा काफी बढ़ा हुआ है। अगर हम सारी जिन्दगी इन आबादियों में भटकते रहेंगे

और इसी तरह कालकों का कत्ल करते रहें तो हमें कई जन्म लेने पड़ेंगे।"

"तो फिर इसके अलावा और क्या किया जा सकता है।"

"कोई ऐसा अम्ल जिसमें इन कालकों के कत्लेआम का बेहतरीन मौका मिल जाय।"

"हां—तू सच कहता है। वह तेरे सामने अपनी गर्दन झुकाकर खड़े हो जायेंगे और तुझसे कहेंगे कि लोमड़ी के पंजे वाले! हमें कत्ल कर दे। हमारी गर्दन तेरे सामने झुकी हुई है।"

"लोमड़ी का भेजा बहुत कारआमद होता है।"

"बता तेरा भेजा क्या कहता है?"

"सबसे पहले उस जगह का पता करना है जहां पोगास रहता है। पोगास ही वह जादूगर है जो हमें कारनोस तक पहुंचा सकता है और कारनोस के जरिये हमें एक तो यह बात पता चल जायेगी कि कालके किस रास्ते से यहां आते हैं। हम वह रास्ता खत्म कर देंगे—इस तरह उनका आना बन्द हो जायेगा—फिर जो यहां बस्तियों में फैल गये हैं, उन्हें कारनोस के हुक्म पर एक जगह एकत्रित करेंगे और उनका सफाया कर देंगे।"

"पहली मुश्किल तो यही है कि हमें यह पता ही नहीं कि पोगास कहां छुपा है। उसका ठिकाना कैसे मालूम होगा।"

"इसके लिये तुम्हें थोड़े वक्त के लिये कमान मेरे हाथ में देनी होगी—यानि जो मैं कहूंगा वही तुम्हें करना होगा।"

"ठीक है—यह भी कर लेते हैं।"

"ठीक है—तो अब देख मैं किस तरह पोगास का पता मालूम करता हूं। पोगास ने अपने बारे में एक बात मशहूर की हुई है—वह अंधों को आंखें दे देता है—गूंगों को जुबान दे देता है—बहुत सी बीमारियां चुटकियों में दूर कर देता है।"

"तो फिर...

"आओ किसी बस्ती में चलते हैं।"

दोनों एक बस्ती में दाखिल हुए।

"ओह शोला! क्या तेरी आंखों की रोशनी बहाल है।"

"क्या मतलब?"

"क्या तू देख सकता है। मैं तो अंधा हो गया हूं।" उसने हाथ हवा में लहराते हुए कहा—"आह! मैं अंधा हो चुका हूं और

उसूली तौर पर तुम्हें भी अंधा हो जाना चाहिये।"

शोला एक बार फिर चौंक पड़ा—"क्या मतलब?"

"दो अंधे अगर एक बस्ती में दाखिल हों तो लोगों का ध्यान आकर्षित कर लेंगे। फिर हम उनसे दरख्वास्त करेंगे कि हम आंखों की रोशनी के तलबगार हैं। हमें पोगास की इबादतगाह में पहुंचा दिया जाय। हम बहुत दूर से भटकते-भटकते यहां तक पहुंचे हैं। हम पोगास के पुजारी हैं। अगर हमारी आंखों की रोशनी वापस आ गयी तो हम सारी जिन्दगी पोगास की सेवा में न्योछावर कर देंगे।"

"आइडिया बुरा नहीं है। आजमा लेना चाहिये।"

"अंधा बनकर तुम्हें बड़ी शर्मिन्दगी महसूस हो रही होगी।"

"देख, यह बात मैं तुझे बताये देता हूं। मुझे गुस्सा दिलाने की कोशिश मत करना वरना मैं तेरे किसी मंसूबे में हिस्सा नहीं लूंगा।"

"अच्छा तो मुझे बता, क्या तुझे यह प्लान पसंद आया।"

"हां।" शोला भारी लहजे में बोला।

और फिर बस्ती वालों ने इन दो अंधों को देखा—जो लाठियां टेक टेक कर आगे बढ़ रहे थे और बस्ती में उनकी सदा गूंज रही थी...है कोई पुण्य आत्मा! जो हमें पोगास की इबादतगाह तक पहुंचा दे...देवता उसे लम्बी उम्र देगा।"

एक बस्ती—दूसरी बस्ती—फिर तीसरी बस्ती। वो अंधे बस्ती-बस्ती डोल रहे थे। तीसरी बस्ती में कुछ लोग उनके पास पहुंच गये।

"क्या बात है—क्या तुम लोग अपनी आंखों की रोशनी खो चुके हो?" इन लोगों ने पूछा।

"हां—हम सफर कर रहे थे कि हमें रास्ते में भूख लगी और हमने एक ऐसे पौधे से फल तोड़ कर खाये जो हमारे लिये अपरिचित था। फल खाने के बाद हम अंधे हो गये। अब हमें पोगास ही ठीक कर सकता है। अजीम पोगास, अजीम रूह हमें आंखों की रोशनी बख्श देगी। हां—तुममें से किसी को इतनी तकलीफ जरूर करनी होगी कि हमें अजीम रूह की बस्ती में पहुंचा दिया जाय। आह! हम खुद रास्ता तलाश करते हुए वहां तक नहीं जा सकते।"

लोग एक दूसरे को देखने लगे। एक बुजुर्ग ने कहा—"हालांकि

अजीम रूह इन दिनों किसी अजनबी से मुलाकात नहीं करना चाहती। लेकिन यह दोनों अजीम रूह के पुजारी हैं। इनका सम्मान करो। हमारे लिये यह जरूरी है कि इनकी मदद की जाय। अत: ऐ लोगों! तुम तैयार हो जाओ और इन्हें जिस तरह भी बन पड़े रूह अजीम की बस्ती तक पहुंचा दो।''

बुजुर्ग के हुक्म पर दो नौजवान तैयार हो गये और उन्होंने कहा—''हमें अच्छा खासा सफर करना होगा, लेकिन हम तुम्हारा मार्गदर्शन करेंगे।''

और फिर पूरे सफर के दौरान उन दोनों ने शोला और फिट की भरपूर सेवा की। ऐसे जैसे कोई बहुत बड़ा पुण्य का कार्य कर रहे हों। तब वह उस बस्ती की सरहदों तक पहुंच गये जहां पोंगास की इबादतगाह थी।

संगलाज पहाड़ों को तराशकर एक बाकायदा शक्ल बनायी गयी थी और सीढ़ियां उनकी गहराइयों में उतरतीं थीं। जहां एक छोटी-सी खुशनुमा बस्ती नजर आ रही थी और बस्ती के अन्तिम दौर पर वह अजीम इबादतगाह थी जिसमें एक अजीम आलीशान पहाड़ में एक बुत की शक्ल तराशी गयी थी और यही बोगास का गुप्त ठिकाना था। रास्ते पर फिट और शोला इस बात का प्रोपोगैन्डा करते चले आये थे कि अजीम रूह की बरकतों से जैसे ही वह बस्ती की सरहदों में कदम रखेंगे, उनकी आंखें रोशन हो जायेंगी और जब नौजवानों ने उन्हें बताया कि पोगास की अजीम इबादतगाह सामने ही है जहां उन्हें जाना है तो शोला और फिट तैयार हो गये।

जब उन्होंने पत्थरों की तराशी हुई पहली सीढ़ी पर कदम रखा तो एकदम ठिठक गये—''आह! हमारी आंखों की रोशनी वापस आ गयी।''

उन्हें साथ लाने वाले नौजवानों ने उन्हें हैरत से देखा तो फिट ने कहा—''तुम्हारा बहुत-बहुत धन्यवाद। हम हमेशा इस बात को याद रखेंगे कि तुमने हमारी किस तरह मदद की, अब तुम लोग यहां से वापस चले जाओ। हम अपनी आंखें पा चुके हैं और यह इस अजीम रूह का चमत्कार है कि वह अपने पैरोकारों को भला किस तरह अंधा रहने दे सकता है।''

नौजवान चले गये। शोला और फिट सीढ़ियां उतरने लगे।

शोला ने मुस्करा कर फिट की कमर पर घूंसा रसीद कर दिया था। जो काम बहुत मुश्किल था, फिट ने उसे आसान बना दिया था। अब सवाल यह था कि यहां पहुंचने के बाद करना क्या है। यहां कत्लेआम तो करना नहीं था। पोगास को जिन्दा पकड़ना था और बेबस करना था। जिन्दा पकड़े जाने के बाद यह भी मुमकिन नहीं था कि पोगास उन्हें कारनोस तक पहुंचा ही देता।

"आगे हमें यह सब काम कैसे करना है, इस बारे में कोई योजना मेरे पास नहीं है।" फिट ने कहा—"फर्ज करो, हम यहां मौजूद तमाम कालकों का कत्ल करके पोगास पर हाथ डालें तो क्या पोगास हमारे हाथों बचा रहेगा? और फिर दूर-दूर तक फैले कालके कुछ नहीं कर पायेंगे। हमें बड़ी सूझ-बूझ से काम लेना है।"

"यहीं हमारे लिये कोई रास्ता जरूर निकलेगा। सबसे पहले हमें यहां अपना ठिकाना बनाने की कोशिश करनी चाहिये। हरचंद कि हम कालकों के रूप में हैं और कालकों के लिबास में हैं। हमें देखने वाले हमारी ओर से शंकित नहीं हुए—लेकिन फिर भी दो अजनबी एक ऐसी जगह जिसके बारे में उन्हें मुकम्मल तौर पर इल्म नहीं है अपने वजूद को इस तरह छुपाकर नहीं रख सकते। आम लोग हमारा सम्मान करेंगे। यहां इस जगह कदम-कदम पर कालके नजर आ रहे हैं। इनमें से किसी को हम पर शक हो गया तो क्या होगा?"

उन्होंने अपने लिये उचित पनाहगाह तलाश करना शुरू कर दी। लेकिन हर काम इतनी आसानी से तो नहीं हो जाता। अलबत्ता उन्हें एक झोंपड़े के अकबी हिस्से में पनाह मिल गयी। जो एक दूर दराज इलाके में था और उसके अकब में दरख्तों के ऐसे झुंड थे जिनके पत्तों के दरमियान पनाह ली जा सकती थी। दरख्तों की शाखें पूरे झोंपड़े पर फैली हुई थीं और इतनी मोटी चौड़ी और घनी थीं कि उसमें ऐतहात से अपने लिये जगह बनायी जा सकती थी।

फिट ने यहां भी चालाकी से काम लिया था और जब तारीकियां मुकम्मल तौर पर माहौल को निगल गयीं तो फिट इस झोंपड़े में उतरा और खाने-पीने की चीजें तलाश करता शोला के पास पहुंच गया।

शोला ने हंसते हुए कहा—"यानि कि अब वह वक्त आ गया जब हम चोरी छिपे का खाना खायें।"

"खाना खा लो। खाने की चोरी चोरी नहीं होती। इस झोंपड़े में बहुत से लोग रहते हैं। जरा झांककर देखो, सब जमा हो गये हैं।"

शोला ने देखा कि कई मर्द और औरतें बैठे किसी का इन्तिजार कर रहे थे। जिसका वह इन्तिजार कर रहे थे, वह थके-थके अन्दाज में आया। उनके पास पहुंचा और वहां बैठ गया। वह दोनों कान लगाकर उनकी बातें सुनने लगे। आने वाला एक बुजुर्ग था।

उसने कहा—"वक्त बिगड़ता जा रहा है। बेहतरी की कोई सूरत नहीं है। लगता है काल देवता ने तो हमारी तरफ से आंखें बन्द कर ली हैं। आह! अब एक ही उम्मीद रह गयी है। वह है फोजान! फोजान हमारी फरियाद लेकर कोरसार की मुकद्दस खानकाह में जा सकता है। वह एक दरवेश है। वह हमारा सच्चा रहनुमा था। उसने हमेशा हमारी बेहतरी के बारे में सोचा था, अगर हम लोग उसे पा लें तो उम्मीद का दामन हाथ से न छूट जाता। हम पोगास की बातों में आ गये। फोजान प्रागोस के खौफ से रूपोश हो गया। अगर फोगान वापस आ गया तो हम कालकों के चंगुल से निकल जायेंगे। बस इसके अलावा कुछ नहीं होगा।"

"लेकिन तब तक तो पोगास दूर-दूर तक फैले दरवेशों को खत्म कर चुका होगा, जब तक फोजान वापस आयेगा। वह तो कहता है कि कोरसार की पवित्र खानकाह में भी अब कालदेवता की पूजा होगी और कालके आइन्दा यहां के दरवेश होंगे। न जाने फोगान वापस आयेगा।" एक मर्द ने कहा।

"कौन कह सकता है कि देवता हम पर कब रहम करें।"

"पोगास कुछ खास ऐलान करने की तैयारी में जुटा हुआ है। उसका कहना है कि कालदेवता स्वयं प्रकट होकर कोई महत्वपूर्ण घोषणा करने वाले हैं। पता नहीं फोजान कहां है और क्या कर रहा है।"

शोला ने सरगोशी के अन्दाज में फिट से कहा—"इसका मतलब है कि बूढ़ा फोजान इतनी मामूली शख्सियत नहीं जितना हम समझते थे।"

फिट ने कोई जवाब नहीं दिया।

आधी रात गुजर गयी तो फिट ने कहा—"चलो—अपने लिये कोई उपयुक्त जगह तलाश करते हैं।"

शोला ने गहरी सांस ली उसके बाद वहां से नीचे उतर आये।

अंधकार में आबादियां गहरी नींद सो गयी थीं और वह दोनों आहिस्ता-आहिस्ता आगे बढ़ रहे थे। आसपास कोई नजर नहीं आ रहा था। तब उन्होंने बुलन्दियों पर बने कुर्बानगाह की ओर रुख किया। क्या ही अजीम आलीशान मठ था। बड़े-बड़े पहाड़ों को तराशकर उसमें कबीनगाह बनायी गयी थी। उसके विशालकाय दरवाजे पर कालके आ-जा रहे थे और भिन्न-भिन्न कामों में व्यस्त थे। ऐसा लगता था किसी बहुत बड़े जश्न की तैयारी हो रही है। उन्होंने उनका खास अन्दाज देखा। वह जब भी एक दूसरे के सामने पहुंचते तो दोनों हाथ सीधे करके कोह के अन्दाज में झुक जाते।

फिट ने सरगोशी में कहा–"इस वक्त अपनी अकड़ी हुई शाही गर्दन झुकाने से गुरेज न करना। वक्त पड़ने पर गधे को भी बाप बनाना पड़ता है।"

शोला खामोश रहा–फिर जब वह बड़े दरवाजे पर पहुंचे तो कुछ कालके नजर आये, फिट ने दोनों हाथ सीधे किये और कोह के अन्दाज में झुका। उसने शोला को भी कुहनी मारी थी। शोला भी उसी अन्दाज में झुका। कालकों ने उन पर ध्यान नहीं दिया बल्कि खुद भी इसी अन्दाज में झुक गया–गोया अपनी शनाख्त करायी और इसी तरह वह अन्दर दाखिल हो गये। यह फासला तय करने के बाद वह एक ऐसी जगह पहुंचे जहां नीचे जाने का रास्ता एक ढलान की शक्ल में बना हुआ था और जब वह उस ढलान से गुजरकर बड़ी-सी जमींदोज जगह पहुंचे तो उनकी आंखें हैरत से फैल गयीं।

यह कालकों की ऐशगाह थी और सचमुच वहां किसी जश्न की तैयारी चल रही थी। ऐशगाह में जो कुछ हो रहा था वह अविश्वसनीय था। कदाचित कालकों ने आम लोगों को रूहानियत के जाल में जकड़कर अपने लिये अय्याशी के साधन जुटाये हुए थे। वहां छोटे-छोटे मुजरे बने हुए थे। अन्दर मशालों की रोशनी थी। बहुत-सी औरतें और लड़कियां मदहोशी के से आलम में वहां नंगी नजर आ रहीं थीं। कालके अश्लील हरकतों में क्रियाकलाप कर रहे थे। अन्दर कहकहे और ठहाकों की गूंज थी। कालका चाहे जिस लड़की को पकड़कर मुजरे में घुस जाता। वह लड़कियों को

उठा-उठाकर ले जाते। बहुत से मुजारों से लड़कियों की चीखें भी सुन गयी पड़ती थीं। वह दोनों आगे बढ़ते रहे।

फिर वह एक गार के दहाने पर पहुंच गये। अन्दर का हिस्सा सबसे ज्यादा खूबसूरत—और सबसे अधिक सजा हुआ था। बातें करने की आवाजें सुनायी दे रही थीं। वह एक जगह छिपकर अन्दर की बातें सुनने लगे।

एक आवाज उभरी—"लेकिन रूह अजीम! आखिर हम क्या करें।"

"मैं तुझे बताता हूं जोगन। शायद तुझे यकीन नहीं आयेगा। कालदेवता ने हमारी सरजमीन पर कदम रख दिया है और कोरसार की मुकद्दस खानकाह में वह प्रकट हो गया है। वहां अब कोरसार का कोई दरवेश जिन्दा नहीं बचा है। तमाम बस्तियों के मोअज्जिज लोगों को यहां बुलाया गया है। ताकि वह कालदेवता के दर्शन कर सकें और कुर्बानगाह की वह खोह जिसके सामने बस्ती का मैदान है—जब वहां जमा हो रहे हैं। बेशुमार कालक भी वहां मौजूद होंगे और नये दरवेश भी। सबके सामने काल देवता उन्हें मान्यता प्रदान करेंगे। पहले सूरज खुद आग से निकलकर प्रकट होगा। सूर्यदेवता आग से निकलकर जनता के सामने आयेगा। हम सब जानते हैं, पूरा कोरसार जानता है कि हमें जो जीवन मिलता है वह सूर्य देवता से मिलता है और जब भी कोरसार की मुकद्दस खानकाह में बदकारी होती है तो देवताओं की सबसे बड़ी ताकत प्रकट होती है और वह पुराने दरवेशों को खत्म करके नया निजाम लाती है और सूर्यदेवता उसकी अगुवाई करता है। वह शक्ति कोरसार में सबके सामने प्रकट होगी और सूर्य देवता इस नयी ताकत का अभिनन्दन करने के लिये खुद प्रकट होगा। और यह सब कोरसार की तरक्की, खुशहाली के लिये होगा। कबीलों के आपसी झगड़े खत्म करके इसे एक सूत्र में बांधा जायेगा—इसका एक शहंशाह होगा। हां—कारनोस हमारा नया शहंशाह होगा—स्वयं सूर्य देवता उसका तिलक करेगा। इस गुफा से पहले आग निकलेगी—सब जश्न मनायेंगे—सूर्य देवता का इस धरती पर उतरना कोई साधारण बात नहीं है। हजारों हजार साल बाद ऐसा होता है।"

"अजीम रूह! क्या कालकों का कत्लेआम करने वाले खत्म हो गये।"

"वह सब उन्हीं दरवेशों का कारनामा था—फोजान के अलावा सभी मारे जा चुके हैं। फोजन कहीं छिपा हुआ है। उसकी तलाश जारी है। लेकिन वह ज्यादा दिन तक छुपा नहीं रह सकेगा। चलो तैयारी करो—तुम बस्ती में पहुंच जाओ। फिर जैसे ही रात का आखरी पहर होगा—दिन निकलते ही जैसे ही जश्न खत्म होगा, सबसे पहले हमारे दर्शन होंगे। हमारे बाद गुफा जलने लगेगी और मेरे आव्हान पर सूर्य देवता प्रकट होगा।"

शोला ने फिट की तरफ देखा। फिट के चेहरे से हवाइयां उड़ रही थीं।

"क्या कालके भी बस्ती में पहुंच रहे हैं।"

"जोगन कालके उसी खोह से निकलकर बस्ती की अगली कतार में बैठेंगे। वे सब इस वक्त यहां जश्न मना रहे हैं। उनके निकलते ही मैं कारनोस के साथ बाहर आऊंगा। उसके बाद जब सूर्य देवता प्रकट होगा तो कुछ देर बाद आग बुझ जायेगी और सूर्यदेवता के आव्हान पर काल देवता का दर्शन होगा। तुम जाकर लोगों को हमारा पैगाम सुना दो। जैसे ही हजारों शेखों का नाद सुनायी देगा, कार्यक्रम शुरू हो जायेगा। जाओ, अब वक्त नहीं है।"

शोला ने फिट का हाथ पकड़ा और गार से बाहर आ गया। वे दोनों एक बार फिर कालकों के बीच शामिल हो गये।

"यह कौन-सा नया खेल है।" फिट कुछ बौखलाया हुआ था—"क्या पोगास कोई बहुत बड़ा जादू चला रहा है। आग के बीच से भला कोई इन्सान कैसे आग में चलता हुआ बाहर आ सकता है।"

"यही तो देखना है। आज हम भी कालदेवता के दर्शन कर लेंगे।"

"और कारनोस भी यहां मौजूद होगा।"

"हां—यह बेहतर मौका है। अब हमें पोगास को जिन्दा पकड़ने की जरूरत नहीं है—कारनोस भी यहां होगा और कालदेचता भी। मेरा ख्याल से आज जो कुछ यहां होने जा रहा है—वह सदियों तक याद रखने वाला किस्सा होगा और कोरसार के इतिहास का सबसे खून आलोद पृष्ठ होगा। फिट, आज तुम सिर्फ तमाशाई बनकर देखना।"

फिट की कुछ समझ में नहीं आया लेकिन इतना उसने साफ महसूस किया कि शोला के इरादे खतरनाक महसूस हो रहे थे। वह कालकों के बीच घूमते-फिरते वक्त काटती रही। फिर मठ में शंख घंटे बजने लगे और कालकों का जश्न खत्म हो गया। वे नंगी औरतों लड़कियों को छोड़कर मुजरों से बाहर आने लगे। एक सुरंग से और भी कालके आने लगे। सबके सब एक विशाल सुरंग में बढ़ रहे थे। फिर शंखनाद हुआ और कालके इस शंखनाद के साथ-साथ नारे लगाते हुए आगे बढ़ रहे थे। वे सब कालदेवता के नारे लगा रहे थे। भीड़ इतनी बढ़ गयी थी कि कंधे से कंधा हिलता था। इस रेल-पेल में फिट ने शोला को खो दिया। उसने इधर-उधर देखा। भीड़ में उसे शोला कहीं नजर आया। फिर वह कालकों के रेले के साथ आगे बढ़ता चला गया। उसने सोचा शोला भी इसी भीड़ में कहीं होगा। फिर एक खोह से कालकों के साथ बाहर निकला। बाहर एक विशाल मैदान में ढोल ताशे बज रहे थे—नगाड़ों की धमक से चारों दिशायें लरज रही थीं। वहां हजारों की तादाद में लोग मौजूद थे—कुछ बस्ती के मकानों की छतों पर, पेड़ों पर और अन्य टीकरों पर चढ़े हुए थे। कालकों को सबसे अगली कतार में बिठाया गया। जोगन और उसके साथियों ने पूरी व्यवस्था संभाल रखी थी। फिट कालकों की कतार में ही बैठ गया। उसने एक बार फिर शोला की तलाश में इधर-उधर निगाहें दौड़ाई—शोला कहीं नजर नहीं आया। शोगन के संकेत पर ढोल ताशों का शोर थम गया। उसने एक चबूतरे पर चढ़कर ऐलान किया कि अब सब लोग शान्त रहें, थोड़ी ही देर में रूह अजीम और कोरसार का शहंशाह तशरीफ लाने वाले हैं। उनके लिए एक अलग मंच बनाया गया था जहां उनके बैठने की व्यवस्था थी।

जब पोगास और कोरसार का शहंशाह कारनोस खोह से बरामद हुए तो उनकी जयजयकार के नारों से मैदान गूंज उठा। सबने झुककर उनका स्वागत किया। कालके भी खड़े हो गये थे। वे दोनों अपने चंद अंगरक्षकों के साथ चलते हुए मंच नुमा स्थान पर पहुंच गये। दोनों ने मंच पर अपना स्थान ग्रहण किया और अंगरक्षकों ने मंच को अपने घेरे में ले लिया। इन अंगरक्षकों के पास आग्नेय शस्त्र थे।

पोगास ने थोड़ी देर में ऐलान किया—"बस, अब दिन

निकलने ही वाला है—और कोरसार का सूरज आज धरती पर उतर रहा है। वह आग में स्नान करने के बाद तुम सबके सामने आयेगा और कोरसार की नयी व्यवस्था, नयी हुकूमत का ऐलान करेगा। सूर्यदेवता के आव्हान पर काल देवता प्रकट होंगे और कोरसार में बरकतों का युग शुरू हो जायेगा। यहां पर सभी कबीलों के बुजुर्ग और सरदार आये हुए हैं। वह सब आसमानों की आवाज ध्यान से सुनें और उसके प्रति अपने आपको पाबन्द रखने के लिये तैयार हो जायें। अगर किसी ने आसमानों के हुक्म की अनदेखी की तो वह बागी और शैतान करार दे दिया जायेगा। देवता स्नान करने के बाद खोह के सामने आयेंगे और हम उनका स्वागत करेंगे। उन्हें वस्त्र धारण करायेंगे।"

पोगास के इशारे पर रत्नजड़ित वस्त्रों का एक चोंगा बड़े से थाल में रखा गया और चार कुंवारी लड़कियां आगे बढ़ीं। खुद पोगास और भी आगे बढ़ चला।

फिर एक गूंजदार आवाज सुनायी दी और चारों तरफ एकदम गहरा सन्नाटा छा गया। यह आवाज ऐसी ही थी जैसे कोई साइरन बजा रहा हो। उसी वक्त एक साथ दो काम हुए। एक तो आसमान पर सूरज चमक उठा—साथ ही खोह से आग की प्रचण्ड लपटें उठने लगीं। लोग दम साधे खोह की तरफ देख रहे थे। पूरी खोह आग में घिरी थी—ऐसा लगता था जैसे पूरी पहाड़ी से ज्वालामुखी फटने वाला हो।

और फिर दम साधे लोगों ने देखा—चौड़ी खोह के अन्दर से एक जलता हुआ खाका नजर आया। वह हरकत कर रहा था और इन्सानी वजूद में था। यह खाका आग के करीब चलता हुआ आगे बढ़ रहा था। फिर उसकी शक्ल भी नुमायां हो गयी। वह एक अत्यंत शानदार नौजवान था। गठीला बदन—भरी पूरी मांसपेशियां—चौड़े से थे उन्नत ललाट। लम्बे-लम्बे स्याह बाल। वह पूरी तरह नग्नावस्था में था।

दम साधे लोगों में सबसे बुरी हालत फिट की हो रही थी—क्योंकि वह इस आग में गुसल करने वाले को पहचानने में कामयाब हो गया था। वह शोला था।

"वह अक्बूर है।" अचानक फिट ने चिल्लाकर कहा—"असली अवतार...।"

कुछ लोगों ने मुड़-मुड़कर पिट को देखा और फिर सामने की तरफ देखने लगे। जलती खोह से निकलने वाला इन्सान समूचा बाहर आ गया। पोगास जैसे ही लिबास उसे धारण करवाने के लिये और स्वागत करने के लिये आगे बढ़ा, वह ठिठक गया। उसके सामने एक अजनबी शख्सियत थी जो कि हरगिज उसका बनाया हुआ सूर्य देवता नहीं था। यह कोई और ही था। उसने तो ऐसा प्रबन्ध किया था कि उसका एक विश्वासपात्र आदमी सूर्यदेवता बनता। उसने एक मलहम बनाया था जिसे बदन पर अच्छी तरह मलने के बाद आग असर नहीं कर सकती थी। लेकिन यह वह शख्स हरगिज न था। उसे जैसे सांप सूंघ गया। आखिर कोई दूसरा इन्सान कैसे इस तरह आग पर चल सकता है। वह मलहम भी ऐसा था जिसे बदन पर लगाने के बाद उसे सूखने के लिये पूरे एक दिन चाहिये होता था। जब मलहम बदन पर पपड़ी की तरह जम जाता तो एक तरह से बदन पर एक नयी त्वचा का खोल चढ़ जाता था–जैसे सांप के बदन पर केंचुली होती है। अगर इस शख्स ने मलहम हासिल भी कर लिया होता तो फिर उसे सुखाने का वक्त इसे कैसे हासिल हो गया। पोगास ने उस शख्स को खुद अपने सामने मलहम लगाया था और बाकी बचा मलहम उसके पास सुरक्षित था। यह सम्भव ही नहीं था कि उसनें मलहम का इस्तेमाल किया हो।

"तुम कौन हो?" पोगास की घरघराती आवाज उसके कंठ से खारिज हुई।

"सूर्यदेवता।" शोला ने मुस्कराकर कहा–"क्या मेरा स्वागत नहीं करोगे। मैं सचमुच सूर्यदेवता हूं। तुम्हारा बनाया हुआ नकली सूर्य देवता अन्दर मुर्दा पड़ा है। यकीन न हो तो यह देखो।"

शोला का एक हाथ पीछे था। उसने हाथ सामने किया। उस हाथ में एक कटा हुआ इन्सानी सिर था–जिसके बाल शोला ने पकड़े हुए थे।

पोगास अन्दर ही अन्दर कांप गया, शोला ने कटा हुआ सिर खोह के अन्दर जलती आग में फेंक दिया।

"मैं तुम्हारे गुनाह मुआफ कर सकता हूं।" शोला ने सरगोशी में कहा–"दूसरी सूरत में तुम्हारा सिर भी इसी तरह काट दिया जायेगा।"

"म...मुझे मुआफ कर दो देवता...।"

"हां...लेकिन तुम्हें अपने पाप धोने के लिये कुछ पुण्य काम करने होंगे। कारनोस की ताजपोशी एक ही सूरत में मुमकिन है। वह मुझे बता दे कि कालके किस रास्ते से यहां आते-जाते हैं। तुम उसे यह राज उगलवाने के लिये किस तरह तैयार करते हो, मैं नहीं जानता। अगर उसने यह राज मुझे न बताया तो तुम्हारे साथ-साथ उसका भी सिर काट दिया जायेगा। देखो—मेरे पास कोई हथियार नहीं है—लेकिन मैं अगर फूंक मार दूं तो सिर कटकर अलग हो जाता है। चलो अब मुझे वस्त्र धारण कराओ और पलटकर तुरंत कारनोस के पास जा पहुंचो—उसका जवाब आते ही राजतिलक की तैयारी शुरू हो जायेगी।"

पोगास ने कांपते हाथों से शोला को वस्त्र धारण कराये।

उधर फिट ने सूर्य देवता की जय-जयकार के नारे बुलन्द किये। नारे गूंज रहे थे और पोगास लड़खड़ाते कदमों से वापस मंच पर जा पहुंचा। सब लोग श्रद्धा से झुक गये थे। सूर्य देवता के लिये अलग स्थान बनाया गया था। सूर्यदेवता अपने स्थान पर जाकर बैठ गया। अब उस पर फूलों की वर्षा हो रही थी।

उधर पागोस कारनोस से कानाफूसी कर रहा था—"सूर्य देवता का कहना है कि काल देवता अब नहीं आयेंगे—सारी रस्म वही अदा करेंगे—उसके बाद वह कालदेवता से मिलने आयेंगे इसलिये मुझे हुक्म दिया है कि देवता को वह रास्ता बताया जाये जहां से कालदेवता तक पहुंचा जा सकता है। वह आसमानों के रास्ते नहीं—एक अन्य इन्सान की तरह धरती के रास्ते जाना चाहते हैं और यह बात तुम जानते हो कारनोस। मुझे बताओ कि वह जगह कौन-सी है जहां से कालके यहां आते-जाते हैं।"

कारनोस धर्म संकट में पड़ गया। काल देवता का हुक्म था कि वह जीते जी इस राज को किसी पर प्रकट न करे। अगर उसने यह राज फाश कर दिया तो भस्म हो जायेगा।

"और जब तक तुम यह राज फाश नहीं करोगे, तुम्हारा राजतिलक नहीं होगा। एक बात अच्छी तरह जान लो कारनोस! अगर तुमने इन्कार किया तो न सिर्फ तुम्हारा सिर तन से जुदा हो जायेगा बल्कि मेरा भी सिर धड़ पर सलामत नहीं रहेगा और एक बात और भी समझ लो—मैं अपनी जान बचाने के लिये तुम्हें यह

सब बताने पर मजबूर भी कर सकता हूं।"

"क्या मतलब?" कारनोस चौंका। उसके दिमाग में खतरे की घण्टी घनघना उठी। कोई गड़बड़ महसूस हो रही थी। वह तुरन्त ही कालदेवता से सम्पर्क करना चाहता था।

"मुझे थोड़ा वक्त दो...।" वह बोला—"उस बीच तुम सूर्य देवता के स्वागत की बागडोर संभालो।"

"मेरे पास इतना वक्त नहीं कारनोस।"

कारनोस को अपने चारों तरफ खतरा मंडराता महसूस हुआ। ताकत के मुकाबले में पोगास की उसके सामने कोई अहमियत नहीं थी। यहां जितने भी कालके थे सब कारनोस के साथी थे। पोगास का साथ देने वाले कोरसारी ही हो सकते थे। कारनोस ने आसपास का जायजा लिया—जब उसने महसूस किया कि पलड़ा उसका भारी है तो उसका खौफ कुछ कम हो गया।

"गौर से देखो पोगास। इन लोगों की निगाह में भले ही तुम अजीम रूह हो सकते हो, मगर मेरी निगाह में तुम्हारी कोई अहमियत नहीं है। मेरे एक इशारे पर तमाम कालके तुम्हारे आदमियों पर टूट पड़ेंगे। मुझे तुम्हारे अन्दर आयी इस तब्दीली पर भी हैरानी है। मुझे सच-सच बताओ माजरा क्या है।"

"बेवकूफ कारनोस! सूर्य देवता सचमुच धरती पर उतर आये हैं। जिसे हम सूर्यदेवता बनाने चले थे, वह तो अन्दर मरा पड़ा है।"

खोह की आग धीरे-धीरे खत्म होने लगी थी। कारनोस के लिये अब यह जरूरी था कि वह काल देवता से सम्पर्क करे। जिन खानकाहों, इबादतगाहों में कालदेवता की मूर्ति स्थापित थी—वहां से वह सीधा कालदेवता से सम्पर्क कर सकता था। यह राज सिर्फ कारनोस या पोगास जानता था कि वह मूर्तियां बोलती भी हैं। कारनोस ने खोह की तरफ देखा—यही एक रास्ता था इबादतगाह तक पहुंचने का। कालदेवता के आव्हान के लिये पोगास के इशारे पर शंखनाद किया जाना था और यह तभी होता जब कारनोस का राजतिलक हो जाता।

"यह कोरसारी दरवेशों की चाल भी हो सकती है।" कारनोस ने कहा—"कुछ दरवेश ऐसे भी हैं जो हमारे हाथ नहीं आये और कहीं छुपे हुए हैं। अगर तुम आग में सुरक्षित रहने का मलहम बना सकते हो तो क्या दरवेश नहीं बना सकते। हिम्मत से काम लो

पोगास! तुम रूह अजीम हो। यहां तुम्हारा हुक्म चलता है और कालके भी तुम्हारे साथ हैं। इस शख्स को जो सूर्यदेवता बनकर आया है, घेर लो।"

"नहीं...अगर वह सचमुच सूर्यदेवता हुआ तो...।"

"यह मुमकिन नहीं है। अगर सूर्यदेवता को प्रकट होना होता तो क्या काल देवता को उसका पता न होता? यह कोई धोखेबाज है। यह भी हो सकता है कि तुम्हारा वह मलहम इसके हाथ लग गया हो—क्या तुम बता सकते हो कि यह मलहम कितनी देर तक कारगर रहता है। क्या आग में गुजरने के बाद वह पिघलता नहीं।"

"जरूर पिघलता है। आग से गुजर जाने के बाद उसका असर खत्म हो जाता है।"

"तब तो इसे दोबारा आग में डालकर इसका इम्तहान भी लिया जा सकता है। डरने की जरूरत नहीं। वह अकेला और निहत्था है।"

दरअसल कारनोस थोड़ा वक्त चाहता था—ताकि खोह की आग ठण्डी पड़ जाय। दूसरे वह इस सूर्यदेवता को उलझाये भी रखना चाहता था।

"मैं क्या करूं—मेरी कुछ समझ में नहीं आता।"

"ऐलान करो कि हमें शक है कि वह सूर्यदेवता नहीं है—वह एक बार फिर आग पर चलकर दिखाये।"

पोगास का मंच सूर्यदेवता के स्थान से ज्यादा फासले पर नहीं था। लोग सूर्यदेवता पर पुष्प वर्षा कर रहे थे—मन्नतें मांग रहे थे। दर्शनार्थी उसके सामने से होकर गुजरते जा रहे थे। सब सूर्य देवेता के करीब से दर्शन करना चाहते थे। अचानक पोगास उठ खड़ा हुआ। पोगास की हालत तो यह थी जैसे सामने कुवां हो और पीछे खायी। वह कारनोस का हुक्म नहीं टाल सकता था। कारनोस कोरसार का शहंशाह था। पोगास ने मन ही मन कुछ फैसला किया और फिर जोर से बोला।

"सब लोग शान्त हो जायें—सूर्यदेवता के सामने से हट जायें और अपनी-अपनी जगह चले जायें।"

सब लोग वहां से हटने लगे। पोगास ने जब देखा कि सब लोग अपने-अपने स्थानों पर चले गये हैं तो वह अपने मंच से नीचे उतरा और शोला के मंच वाले स्थान की तरफ बढ़ गया। शोला

के मंच के सामने आकर वह खड़ा हो गया।

"हे सूर्यदेवता!" पोगास ने कहा—"हमें शक है कि तुम सूर्यदेवता नहीं हो। तुम्हें हमारा यह संदेह दूर करना होगा।"

"किस तरह तुम्हारे संदेह का निवारण हो सकता है?" शोला ने पूछा।

"तुम्हें एक बार फिर आग पर चलकर दिखाना होगा।" पोगास ने कुटिल मुस्कराहट के साथ कहा।

"बस इतनी-सी बात है मूर्ख जादूगर! हम यह इम्तहान देने के लिये तैयार हैं। चल तेरी यह शंका भी मिटा देते हैं।"

पोगास ने पलटकर अपने आदमियों को हुक्म दिया कि वह लकड़ियों की चिता तैयार करें। पोगास के आदमी चिता बनाने में व्यस्त हो गये। शोला अपनी जगह बैठा मुस्कराता रहा। वह चाहता तो उसी वक्त लोगों को बगावत के लिये उकसा सकता था। यह कालकों के सामूहिक नरसंहार का बेहतरीन मौका था, लेकिन वह पोगास के दिल में अपना खौफ पैदा करके खुद पोगास के आदमियों को कालकों से भिड़ाना चाहता था। अगर पोगास को यकीन हो गया कि वह सूर्यदेवता है तो फिर पोगास उसके सामने दण्डवत हो जायेगा, और उस सूरत में कालकों का खेल खत्म करने में बड़ी आसानी हो जाती। शोला समझ गया कि कारनोस ने यह चाल चली होगी। दरअसल शोला कारनोस के दिल में भी दहशत पैदा करना चाहता था।

चुनांचि आनन-फानन में लकड़ियों की एक खासी बड़ी चिता मैदान में बना दी गयी। खोह की आग अब बुझ चुकी थी। चिता पर आग लगा दी गयी। पोगास शोला के पास आया।

"चलिये! जब तक मैं इशारा न करूं तुम इस आग से बाहर नहीं आओगे।"

"चलो।"

शोला ने अपना लबादा उतार फेंका। फिर हैरानी से यह दृश्य देख रहा था। पोगास ने ऐलान किया कि सूर्यदेवता एक बार फिर आग में स्नान करेंगे। उसके बाद कारनोस का राजतिलक होगा।

शोला इत्मीनान से चलता हुआ जलती आग में दाखिल हो गया और चिता पर आलथी-पालथी मारकर आसन में बैठ गया। आग धीरे-धीरे उसके चारों तरफ फैलने लगी। लपटें प्रचंड रूप

धारण करने लगीं। इस बीच कारनोस अपनी जगह से गायब हो गया था। अगर वह शख्स कोई मलहम लगाये होता तो हरगिज दोबारा आग में दाखिल न होता—तो क्या वह सचमुच सूर्य देवता है? उसने पोगास की शंका समाधान के लिये कोई विरोध भी नहीं किया था। बड़ी शालीनता से उसकी बात मान ली थी।

पोगास भी आंखें फाड़े शोला को देख रहा था। शोला ने जिस अग्नि शलाखा तिरखा का दूध पिया था, उस दूध में यह तासीर थी कि शोला का आग कुछ नहीं बिगाड़ सकती थी। वह धधकती आग में इत्मीनान से बैठा मुस्कराता रहा और पोगास सोच रहा था—उससे बड़ी गलती हो गयी जो उसने सूर्यदेवता की परीक्षा ली।

जब उसके सब्र का बांध टूट गया और उसे यकीन हो गया कि वह सूर्य देवता ही है तो उसने अपने आदमियों से आग बुझाने के लिये कहा और देवता को आग से बाहर निकलने के लिये प्रार्थना की। उसके मलहम का चमत्कार सिर्फ इतना ही था कि कोई भी शख्स सिर्फ उस खोह तक को पार कर सकता था। इतनी देर में मलहम पिघल जाता। लेकिन यहां तो नजारा ही कुछ और था।

शोला ने बाहर निकलते ही उस तरफ देखा जहां कारनोस को होना चाहिये था। कारनोस गायब था।

"वह कहां गया तुम्हारा वह शहंशाह?" शोला ने कहा—"उसे मेरे सामने पेश करो।"

पोगास शोला के चरणों में गिर पड़ा और क्षमा मांगने लगा।

"देखो पोगास! रूह अजीम! तुम जो साजिश कर रहे हो, उसकी हमें पूरी-पूरी जानकारी है। अगर कोरसार की पवित्र खानकाह पर इन शैतान कालकों ने कब्जा न किया होता तो मुझे कोरसार की धरती पर उतरने की आवश्यकता नहीं थी। उठो और मेरा हुक्म है—इन सबको खत्म कर दो। यहां से एक भी जिन्दा बाहर न जाने पाये।"

शोला तेजी के साथ आगे बढ़ा—उसी समय फिट उसके करीब आ गया।

"कारनोस कहां गया?" शोला ने उससे पूछा।

"वह उस खोह में दाखिल हुआ है।" फिट ने बताया।

"सुनो पोगास। मैं उसकी तलाश में जा रहा हूं। तुम वहीं

करोगे—जो मैंने कहा है। चलो शुरू कर दो।"

पोगास दौड़कर अपने मंच पर पहुंचा और फिर उसने ऐलान किया—"कोरसार के वासियो! सूर्यदेवता का हुक्म है कि कालकों को चुन-चुनकर मौत के घाट उतार दिया जाये। तुम लोग इनके चारों तरफ फैले हो—घेर लो इन्हें और चुन-चुनकर मौत के घाट उतार दो।"

फिट और शोला खोह की तरफ दौड़ पड़े। वहां अब आग नहीं थी।

❑❑❑

कारनोस कालदेवता की मूर्ति के सामने घुटनों के बल झुका हुआ था। उसने मूर्ति के सीने में लगा एक हीरा दबा दिया था और प्रतीक्षा कर रहा था। थोड़ी ही देर में मूर्ति से आवाज निकली, "ऐ कोरसार के शहंशाह! क्या तेरा राजतिलक हो गया? तूने मुझे क्यों पुकारा?"

"कालदेवता वह...वह सूर्यदेवता साक्षात धरती पर उतर आया है—मैं वहां से भागकर तुम्हारी शरण में आया हूं। वह चाहता है कि मैं वह राज बता दूं कि कालके किस रास्ते से यहां आते जाते हैं?"

"क्या बकवास कर रहा है! तुझे जरूर कोई धोखा हुआ है। वह सूर्य देवता हरगिज नहीं हो सकता—कोई धोखेबाज होगा।"

"उसका दूसरी बार इम्तहान लिया गया—आग उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकी।"

"आग कुछ नहीं बिगाड़ सकती—क्या वह पोगास का आदमी नहीं है?"

"नहीं देवता! और उसके बदन पर मलहम भी नहीं लगा है जिससे आग से बचा जा सकता है। वह सचमुच सूर्यदेवता है।"

"ओह! सुन कारनोस! तू अपने असली रूप में आ जा और उसका इसी जगह इन्तिजार कर। निश्चय ही वह यहां पहुंचने वाला होगा। मैं देखता चाहता हूं कि वह एक अजदहे से कैसे मुकाबला करता है।

"जैसा हुक्म।"

कारनोस ने शीघ्र ही अपना चोला बदल लिया—वह फर्श पर लेट गया...उसने दोनों हाथ तानकर आपस में जोड़े—पांवों

को एक-दूसरे से लपेटा और जैसे ही करवट बदली—उसकी जगह एक खौफनाक अजदहा प्रकट हो गया। यह अजदहा लगभग तीस फुट लम्बा था—उसने फन उठाया तो फन फर्श से छः फुट ऊपर तक उठ गया। उसकी आंखें सुर्ख थीं जैसे उनमें खून टपक रहा हो। उसकी दोशाखा जबान लपलपाने लगी। एक बार उसने पूरा मुंह खोलकर जैसे जुगाली ली और उसके बाद एक खौफनाक फुंकार मुंह से ली। यह कारनोस का वह रूप था जिससे वह इन्सान को समूचा ही निगल जाता था। अभी उसने दूसरी फुंकार मारी ही थी कि कुर्बानगाह में शोला ने कदम रखा। शोला के पीछे-पीछे फिट भी अंदर आ गया। शोला अपने सामने खौफनाक अजदहे को देखकर ठिठक गया। फिट को वहीं रोककर शोला दीवार के सहारे धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगा। वह जिधर बढ़ता अजदहे का रुख भी उसी तरफ हो जाता। अजदहे की आंखें शोला पर जमी हुई थीं।

फिर अचानक अजदहे ने अपना जबड़ा फाड़ा और एक खौफनाक उछाल भरी। शोला फुर्ती से अपनी जगह से हट गया। अजदहे का फन दीवार से टकराया। शोला निहत्था था। वह दीवार के सहारे एक वृत की शक्ल में दौड़ने लगा। अजदहा बार-बार घूमकर उस पर हमला करता लेकिन अभी तक वह शोला को छू भी नहीं पाया था। शोला ने अभी तक उस पर वार नहीं किया था। वह अजदहे को थका देना चाहता था। अजहदा क्रोध में आकर खौफनाक फुंकारें मार रहा था। जब अजदहा कई वार हमले करने के बावजूद भी उसे छू न पाया तो वह रुक गया। ऐसा लगता था जैसे वह रुककर सुस्ताना चाहता हो। उसका फन अभी भी छः फुट उठा हुआ था। अचानक शोला उछला और फिर उसकी एक लात अजदहे के फन पर पड़ी—फिर दूसरी लात, यह स्पिन किक थी—अजदहा चूंकि मर्शल आर्ट्स का योद्धा नहीं था इसलिये वह नहीं जानता था कि किक की चोट का क्या हश्र होता है। यह किक उसके फन के निचले भाग में पड़ी और दूसरी उससे एक फुट नीचे। दोनों जगह से उसकी खाल फट गयी और खून बहने लगा। अजदहे को न जाने क्या सूझा—अभी तक वह फन की तरफ से हमले करता रहा था—इस बार उसकी दुम का हिस्सा तेजी से हंटर की तरह घूम गया और शोला उसकी लपेट में आ गया। इस

हटर ने काफी दायरा कवर किया था। शोला जैसे ही उसकी लपेट में आया, उसने तेजी के साथ पलटी खाकर उसे पूरी तरह जकड़ लिया। शायद दुनिया का कितना भी ताकतवर इन्सान होता, वह उस ग्रिप से न निकल पाता।

उसी समय फिट ने एक रण हुंकार के साथ अजदहे पर हमला कर दिया। उसने लातों से ही हमला किया था। अजदहे के सामने अब दो शत्रु थे। उसकी ग्रिप कुछ ढीली पड़ गयी और शोला ने इसका पूरा लाभ उठाकर अपने बदन को सिकोड़ा और फिसलकर चिकनी मछली की तरह उसकी पकड़ से आजाद हो गया। शोला ने उसकी दुम पर कराटे के हमले शुरू कर दिये और उसकी काट-छांट करने लगा। यों लग रहा था जैसे कोई कसाई चापर हाथ में लिये गोश्त काट रहा है। अजदेह का निचला हिस्सा कटने लगा था। कुर्बानगाह में खून ही खून फैल गया था। अपना निचला हिस्सा कटने के बावजूद भी उसके कटे हुये टुकड़े उछल-उछल रहे थे और अजदहा हुंकारें मार रहा था।

एक बार अजदहे ने फिट की जांघ पकड़ ली। मुमकिन था कि वह फिट को निगल ही जाता लेकिन शोला ने उसके फन पर कराटे के प्रहार शुरू कर दिये और उसकी खोपड़ी तड़ाक-तड़ाक टूटने लगी। कुछ ही देर में उसका भेजा बिखर गया था। उसके बाद अजदहे ने अधिक देर तक मुकाबला नहीं किया। शोला ने उसके फन को अनगिनत टुकड़ों में बिखेर दिया और फिर सब खत्म हो गया।

अजदहे के कटे हुए हिस्से फर्श पर तड़प रहे थे। अचानक वह टुकड़े इन्सानी अंगों में तब्दील होने लगे। टांगें, हाथ-पैर सब कटे फटे थे—सिर एक तरफ पिचका पड़ा था और यह जो नयी इन्सानी शक्ल उनके सामने आयी उसे देखकर शोला और फिट दोनों ही हैरान रह गये। वह कारनोस था।

कारनोस खत्म हो चुका था।

शोला ने कुर्बानगाह में मौजूद मूर्ति को खण्डित कर दिया। उसे कारनोस की मौत का अफसोस था, लेकिन यह भी हैरानी की बात थी कि कारनोस अजदहा था और फिर अचानक एक और करिश्मा हुआ। कारनोस का कटा-फटा सिर फर्श से उठने लगा और देखते-देखते कुर्बानगाह से बाहर निकल गया। शोला

की समझ में नहीं आ सका कि यह क्या हुआ और काग्जोम का सिर कहां चला गया।

□□□

कबीले का नाम सोमता था। बहुत बड़ा कबीला नहीं था यह, लेकिन यहां के लोग मेहनतकश और अपनी जिन्दगी गुजारने का फन जानते थे। सरजमीन कोरसार का यह गोशा वैसे भी बड़ा उपजाऊ था और सोमता के रहने वाले मौसमी लिहाज से भी फायदा उठाते थे। यहां के मौसम भी भरपूर थे जिसकी वजह से बेमिसाल उपजाऊ जमीन, एक बहुत बड़ी झील, सोमता के लोगों के लिये मछलियां और पानी फराहम करती थीं। बारिशें होती थीं। गर्मी और सर्दी भी खूब पड़ती थी। इस लिहाज से सोमता कोरसार के बहुत से कबीलों से ज्यादा खुशनसीब था। इसका सरदार बहुत ही नेक तबियत और अच्छा इन्सान था। अतः और भी खुशहाली थी। लेकिन रंज-खुशी यहां भी सब कुछ मौजूद था। बहुत से घराने दुखों का शिकार थे और बहुत से इन्तहाई खुशियों की आगोश में परवरिश पा रहे थे। बहरहाल, यह खुशी और गम तो धूप-छांव है। आते-जाते रहते हैं, लेकिन बेचारे सोनाग की जिन्दगी में खुशी नहीं आती थी और उसके लिये पूरे इक्कीस साल गुजर चुके हैं—पूरे इक्कीस साल! इन इक्कीस सालों में सोनाग ने न जाने कैसे-कैसे लम्हे गुजारे थे। बड़ी जिम्मेदारियां थीं उसके ऊपर। उसकी बीवी दानिया उसकी सूरत देखकर जीती थी और सोनाग को उसकी बड़ी फिक्र थी। दानिया ने बड़ी मन्नतों मुरादों के बाद एक बेटे की मां बनने का फख्र हासिल किया था। बेटियों की तो खैर कोई कमी नहीं थी। चौदह बेटियां थीं उसकी और सिर्फ एक बेटा जो तीसरे नम्बर पर पैदा हुआ था। बड़ी बेटी आइका और ईवा की शादियां कर दी गयी थीं। वह थोड़े से फासले पर रहा करती थीं। और उन दोनों के मर्द हमेशा सोजग का दिल कहलाया करते थे। सोनाग ने अपने दिल का दाग कभी किसी पर जाहिर नहीं होने दिया था, लेकिन आइका और ईवा जानती थीं कि रोदा की पहाड़ियों में सोनाग के बनाये हुए अनगिनत मुजस्समें उसके दिल का दुख जाहिर करते हैं और वह उन मुजस्समों को देख चुकी थी। दाकिया औरत थी। सोनाग ने तो खैर यह गम बर्दाश्त कर लिया था, लेकिन जब भी कभी दुनिया की शिकायती निगाहें उसकी तरफ

उठती, सोनाग की समझ में नहीं आता था कि वह दानिया को किस तरह तसल्ली दे। किया धरा उसी का था—न वो बेटे के साथ नदी पार करता और न वह हादसा होता। बेटा पानी की तेज़धारा में बह गया था, और वह उसे दोबारा न पा सका था। लेकिन उस मासूम बच्चे की लाश भी नहीं मिली थी, इसलिये उसका ख्याल है कि वह बहता हुआ कहीं दूर चला गया और किसी के हाथ लग गया। दानिया यह खबर सुनकर ही पागल हो गयी थी। वह पत्थर के टुकड़ों को जमा करती रहती थी और इन्हें उसने अपने बेटे का नाम दिया था। उधर सोनाग की बेटियां पैदा होती चली गयीं और उनकी संख्या काफी बढ़ गयी थी।

सोनाग एक संगतराश था। देवी देवताओं की मूर्तियां बनाता था और उसके नाम की बहुत धूम थी। अपना गम उन भूरी पहाड़ियों में ज़ाकर गलत करता था जहां देखने वाले अगर देखते तो उन्हें डेढ़ साल का एक बच्चा नजर आता जो अपने हाथ में फाख्तायें लिये हुए आसमान की ओर देख रहा था। फिर दूसरी तीसरी मूर्ति। सारी मूर्तियां उसी बच्चे की थी। और सोजाग अपने अन्दाजे के मुताबिक उन्हें तराशता रहता था। इस बच्चे की हर साल की मूर्तियां उस गारों में मौजूद थीं। उनकी बनावट उम्र के हिसाब से थी और सोनाग अपने दिल की आग यहीं ठण्डी कर लेता था। उसने यह आग आगे नहीं बढ़ने दी थी। दानिया अपनी बेटियों को इन मूर्तियों की शक्ल दिखाकर वह उन्हें गमजदा नहीं करना चाहता था। बस जब भी उसके दिल में औलाद की आग भड़कती, वह छिपता छिपाता इन्हीं पहाड़ों में आ जाता और उसके बाद घण्टों यहां बैठा रहता था। कभी-कभी वह बूढ़े रामोस के पास भी चला जाता था। रामोस उसे बड़ी अच्छी-अच्छी बातें बताया करता था। उस दिन भी वह छुपता-छुपाता उन गारों की तरफ चल पड़ा। लेकिन उसे नहीं मालूम था कि आइका उसे देखरही है और उसके इस अन्दाज पर हैरान हो रहो है। यह उसकी सबसे बड़ी बेटी थी जो अब उम्र की अच्छी खासी मंजिल पर थी। बाप के गम को अच्छी तरह समझती थी और खुद भी गमगीन रहती थी। उसने सोनाग का पीछा किया और चलती चली। अंततः इन गारों तक पहुंच गयी—जिनमें से एक गार में सोनाग अन्दर दाखिल हुआ था और आइका उसका इन्तिज़ार करती रही थी। काफी देर गुजर गयी। आइका को पता नहीं चल

सका था कि सोनाग उस गार में क्या कर रहा था। वह अत्यधिक बेचैन थी और सम्भव था कि अगर कुछ और वक्त गुजर जाता तो वह खुद गार में दाखिल हो जाती। तभी उसने सोनाग को बाहर आते देखा। वह आखें पोंछता हुआ वापस चल पड़ा था। आइका सोचती रही कि क्या करना चाहिये, लेकिन उसने सोनाग को वापस बस्ती की ओर जाते हुए देख लिया था। फिर जब सोनाग काफी दूर निकल गया और आइका को यह यकीन हो गया कि वह घर ही वापस गया है तो उसने उस गार की ओर जाने का फैसला किया, और गार में दाखिल हो गयी। गार रोशन था—क्योंकि छत के एक बड़े सुराख से तेज रोशनी अन्दर आ रही थी और उस तेज रोशनी में उसने जो कुछ देखा, वह उसके लिये अविश्वसनीय था। वह छोटा-सा बच्चा जो पत्थर की फाख्तायें लिये आसमान या गार की छत की ओर देख रहा था। उसे अच्छी तरह याद था, क्योंकि जब उसका भाई नदी में बह गया था तो वह खासी समझदार थी। भाई के नयन नक्श आज भी उसके जहन में थे। आज उसे पत्थर की शक्ल में देखकर उसकी आंखों से आंसुओं की झड़ी लग गयी थी। लेकिन बात यहीं तक नहीं थी। उसने दूसरा, तीसरा, चौथा और फिर मुजस्समों का एक शहर-आबाद देखा जो हर कदम पर उसे यह एहसास दिला रहा था कि उसका भाई बड़ा होता जा रहा है। बाप की मेहनत, सब्र और बेटे के प्यार ने उसे जारो कतार रोने पर मजबूर कर दिया। उसकी आंखें आंसुओं से भर गयीं और वह सिसकियां लेकर रोने लगी। एक बांका जवान सबसे आखरी हिस्से में खड़ा था। मजबूत कद काठी का मालिक। खूबसूरत चेहरे वाला। यह उसका भाई था। अधिक जब्त न कर पाने की वजह से वह गार से बाहर आ गयी। वह देर तक रोती रही, फिर उसे अचानक एहसास हुआ कि उसका पति इन्तिजार कर रहा होगा। अतः वह जल्दी से वहां से चल पड़ी।

रात को जब वह तनहाई में बाप के पास पहुंची तो उसने कहा—"मैंने वह गार देख लिया है जिसमें भाई की मूर्तियां तराशी गयी हैं।"

बाप ने सहमी हुई निगाहों से उसकी तरफ देखा और बोला—"आह! दानिया को यह बात कभी पता न चले। लेकिन तू गार तक पहुंच कैसे गयी?"

"बस—इसे संयोग ही कहें।"

"खैर, एक बात बता। क्या तेरे भाई ने यही रूप इख्तियार किया होगा। क्या वह बड़ा होकर ऐसी ही शक्ल में न होगा—अगर जिन्दा हुआ तो।"

"बिल्कुल शत-प्रतिशत—यकीनन ऐसा ही होगा।" आइका ने जवाब दिया। फिर बोली—"लेकिन तुम बताओ—क्या तुम्हें उसके जिन्दा होने का यकीन है।"

"हां—मेरा दिल कहता है और वह भविष्य बताने वाला भी यही कहता है और वह आयेगा एक दिन।"

"तो फिर मैं अपने भाई का इन्तिजार करूंगी।"

"बुजुर्ग रामेस ने कहा था कि यह रहस्य गुप्त रहना चाहिये—क्योंकि उनका कहना है कि मेरा बेटा किसी देवता के साथ आयेगा और पूरे कोरसार में उसका नाम होगा।"

आइका एक अजीब से ख्याल में डूब गयी थी।

❑❑❑

सरजमीन कोरसार कालकों के लिये जहन्नुम बन चुकी थी। शोला ने एक कालके को जिन्दा पकड़कर पूछताछ की थी—लेकिन उससे इतना ही पता चला कि जब वह बाहर की दुनिया से यहां के लिये रवाना होते हैं तो उन्हें गहरी नींद सुला दिया जाता है और जब आंख खुलती है तो एक खानकाह में होते हैं जो कोरसार के बर्फपोश पहाड़ों में है—उसमें अन्दर ही अन्दर सुरंग है—इन्हीं सुरंगों से उन्हें कोरसार में पहुंचाया जाता है। कालकों से तो खैर शोला पहले भी दरयाफ्त कर चुका था—उन सबकी यही कहानी थी। उनमें से किसी को भी पता न था कि उन्हें यहां किस रास्ते से लाया जाता है। सिर्फ एक शख्स था जो अपने होशो हवास में यहां से बाहर जाने का रास्ता जानता था और वह शख्स कारनोस अब खत्म हो चुका था। शोला को अगर किसी एक चीज की शनाख्त हुई थी तो वह बर्फ का पहाड़ था—लेकिन कोरसार में बर्फ का पहाड़ कोई एक तो था नहीं और इस तरह तो वह बर्फ का पहाड़ था—लेकिन कोरसार में बर्फ का पहाड़ कोई एक तो था नहीं और इस तरह वह बर्फ के पहाड़ों में कहां टक्करें मारता रहता। पागोस के आदमियों और बस्ती वालों ने भीषण मारकाट की थी—पोगास उस जंग में मारा गया था, लेकिन वहां मौजूद एक भी कालका

जिन्दा न बचा था। उनमें से कुछ खोह में भागकर आये थे—शोला ने उन्हीं में से एक को जिन्दा पकड़ लिया था—फिट ने वहां उनकी लाशें बिछा दी थीं।

बुराई जब फैलती है तो बहुत से लोग उससे आकर्षित हो जाते हैं। कोरसार में भी ऐसे अनेक लोग थे। इन्हीं की शह पर कालकों का राज कायम हुआ था। अगर शुरुआत में ही उनको रोक दिया गया होता तो ऐसे हालात न बनते। कोरसार में ऐसी खूरेंजी न होती लेकिन यह भी अटल सच है कि जो होना होता है वह होकर रहता है। अब जहां भी कालके दिखायी देते उन्हें खत्म कर दिया जाता। और इस इन्कलाब का मसीहा शोला था—जिसके बारे में यह बात चारों तरफ फैल गयी थी कि सूर्य देवता ने कोरसार की धरती पर अवतार ले लिया है। लोग इसी अवतार के आदेश पर कोरसार को हुक्मरान नियुक्त करना चाहते थे—अगर देवता खुद हुक्मरान बनना चाहे तो सर आंखों पर।

"क्या ख्याल है—तुम्हारा प्रस्ताव कर दिया जाय।" शोला ने इस बारे में फिट से कहा।

"मुझे तो अभी तक इसी बात की हैरानी है कि तुम आग में कैसे जिन्दा रहते हो—ऐ अल्तास के शहंशाह! कहीं तुम सचमुच अवतार तो नहीं हो।"

"नहीं—यह बात मैं कितनी बार तुझे बता चुका हूं।"

"तो फिर तुम आग में क्यों नहीं जलते।"

"यों समझो कि मेरे खून में ऐसी तासीर है।"

"यह बात तो तुम कितनी ही बार बता चुके हो।"

"खैर, छोड़ो—यह बताओ कि क्या तुम कोरसार का शहंशाह...।"

"नहीं—मैं चाहूंगा कि कोरसार के शहंशाह तुम बनो और कोरसार और अल्तास को एक ही एम्पायर की शक्ल दे दो।"

"सवाल ही पैदा नहीं होता।" शोला ने कहा—"कोरसार और अल्तास यों समझो दो अलग-अलग दुनिया हैं। अगर अल्तास के बहुमूल्य खजानों का पता चल गया तो स्थिति बहुत बिगड़ जायेगी—क्योंकि कालकों की पहुंच कोरसार तक हो चुकी है। अल्तास एक पूजनीय धरती है—उसे सुरक्षित रखना हमारा फर्ज बनता है।"

"तो फिर कोरसार से निकल चलते हैं। मैं तो अब तुम्हारे साथ ही रहूंगा। इन लोगों के तेवर बड़े ही खराब नजर आ रहे हैं। ये हमें सुल्तान बनाकर ही छोड़ेंगे। और इन्होंने तो अब-बाकायदा हमारी पूजा भी शुरू...मेरा मतलब तुम्हारी पूजा भी शुरू कर दी है।"

शोला मुस्कराने लगा। इस सारी मुश्किल का एक ही हल था और उन्होंने वही किया। रातों रात अपने बोदों पर सवार होकर खामोशी से निकल खड़े हुए। सारी रात उन्होंने सफर किया और दिन निकलते ही एक जंगल में दाखिल हो गये जो बीच पहाड़ में था। वैसे इन दोनों को नामालूम रास्तों की जरा भी परवाह नहीं थी—दोनों बे मंजिल थे। किसी मंजिल का तसव्वुर तो जहन में था ही नहीं—बस बोदों को आजाद छोड़ दिया गया था। वह जहां भी ले जायें, क्या फर्क पड़ता था। जिन रास्तों पर उनका सफर जारी था वहां न कोई बस्ती थी, न कोई इन्सान, न आबादी नजर आती थी। बहरहाल, दूसरे दिन भी खामोशी से सफर किया गया और रात को एक उचित और सुरक्षित जगह कयाम किया गया जहां चारों तरफ भारी चट्टानों का सिलसिला फैलता चला गया था। ढलानों में घास मौजूद थी, पानी के जखीरे की भी कमी नहीं थी, अलबत्ता आबादी का नामोनिशान नहीं था। ढलानों के पास बोदों को जीन के बोझ से आजाद करके घास चरने के लिये छोड़ दिया गया। फिट ने सूखी लकड़ियां इकट्ठा करके सलाख जला दिया। सर्दी में अच्छा खासा इजाफा हो चुका था। वह दोनों आग के गिर्द बैठे किसी सोच में डूबे रहे।

"बड़ी अजीबोगरीब पहाड़ियां हैं। अक्ल चकराकर रह गयी है।"

"अक्ल का पीछा छोड़ो—सब ठीक हो जायेगा।" फिट ने कहा।

"हां—मुझे एहसास होता है—कदाचित तुमने तो बचपन ही से उससे किनाराकशी कर ली थी।" शोला ने कहा और फिर हंसने लगा।

शोला तो सो गया लेकिन फिट जागता रहा। ठीक उसी तरह जैसे बनवास के समय भगवान श्रीराम सो जाते थे और लक्ष्मण जागते रहते थे। अगले दिन भी सफर में गुजारा—फिर रात हो गयी

तो वह रुक गये। फिट टहलता हुआ एक चट्टान पर पहुंचा तो चौंक पड़ा। तेराई में नजर पड़ते ही हैरत से उसके होंठ सिकुड़ गये क्योंकि कुछ दूर घाटी में नन्हें-नन्हें जुगनू चमक रहे थे। उसने उधर ही निगाह जमा दी। उसे थोड़ी ही देर बाद यह एहसास हुआ कि रोशनियां साकित हैं। अगर वह गतिशील होतीं तो यह संदेह किया जा सकता था कि वह मशालें हैं। यह एहसास हो रहा था कि वह कोई बस्ती है। बस्ती का इस तरफ होना कोई अनोखी बात नहीं थी—लेकिन क्या इसी वक्त उस बस्ती का रुख किया जाय। उसने एक निगाह सोने वाले शौला पर डाली और यह अन्दाजा लगाने लगा कि अगर वह बस्ती तक जाकर उसका करीब से जायजा ले तो वापस आने में कितनी देर लगेगी। कोई इतना ज्यादा फासला नहीं था। उसने खामोशी से अपना घोड़ा खोला। उसकी कमर पर जीन भी नहीं कसी थी। बस्ती के बारे में उसने अन्दाजा लगाया था कि कितने फासले पर है। घोड़े को थोड़ी दूर तक खामोशी से लगाम पकड़कर लाया और उसके बाद उसकी पुश्त पर सवार हो गया। वह तेजी से घोड़े को दौड़ाता हुआ बस्ती के पास पहुंच गया। छोटे-छोटे मकानों की यह बस्ती सपनों की दुनिया में डूबी हुई थी। बहुत से घरों से रोशनियां झांक रही थी। लेकिन सड़कें और गलियां वीरान थीं। वह धीरे-धीरे आगे बढ़ता रहा। छोटी-सी बस्ती थी। उसने थोड़ी ही देर में बस्ती का चक्कर काट लिया। अभी वह बस्ती के अन्तिम छोर पर पहुंचा था तो उसे एक इन्सान नजर आया जो इस तरह रास्ता रोके खड़ा था जैसे उसका इन्तिजार ही कर रहा हो। वह ठिठक गया। फिर आहिस्ता-आहिस्ता घोड़ा आगे बढ़ाता हुआ उस शख्स के करीब पहुंच गया। वह एक बूढ़ा आदमी था पागल जैसा, लेकिन उसके चेहरे पर खुशी की मुस्कराहट थी। उसने दोनों हाथ आसमानों की तरफ बुलन्द किये।

फिर उसके मुंह से भरी चीख निकली। वह बोला—"देर तो कर दी तूने मरने में, लेकिन क्या किया जाय। तकदीर के इन्हीं फैसलों को आसमान का फैसला कहा जाता है।"

"क्या मतलब?" फिट ने आश्चर्य से कहा।

"चौदह बहनों का भाई है तू।"

"होय...तुम्हारा दिमाग अरे बाप रे...चौदह बहनों का भाई।"

"हां—तू है चौदह बहनों का अकेला भाई। मां और बाप तेरे लिये जी रहे हैं। यकीन करेगा या नहीं। अगर नहीं तो उतर आ मेरे साथ।"

फिट घोड़े से उतर आया। अपने बारे में उसे इतना ही मालूम था कि वह अनाथ है। उसके मां-बाप का किसी को पता न था। उसे एक दरिया के पास पाया गया था। बचपन से ही वह कोरमार के पुरोहितों के बीच पलकर बड़ा हुआ था।

"क्या कहा तुमने बुजुर्ग महाशय! क्या हम में से कोई एक पागल हो गया है।"

"नहीं—कोई पागल नहीं हुआ—आ मेरे साथ।"

फिट अर्थपूर्ण अन्दाज में उसके पीछे चलने लगा और थोड़ी देर बाद वह उस पहाड़ी सिलसिले तक पहुंच गये, जिसमें गार ही गार बिखरे हुए थे। फिट एक अजीब से सम्मोहन में जकड़ गया था। बूढ़े ने जो शब्द कहे थे, वह दरअसल फिट को आसमानों की सैर करा रहे थे।

बूढ़ा उसे गारों के पास ले आया और फिर उसने कहा—"चल अन्दर दाखिल हो। यहां तेरी पूरी जिन्दगी बिखरी पड़ी है।"

फिट बूढ़े के साथ गार में दाखिल हो गया। तब उसने वहां उन संगी मुजस्समों को देखा जो एक नन्हें से बच्चे के वजूद से शुरू हुए थे और आगे बढ़ते चले गये थे। फिट की आंखें अत्याधिक हैरत से फैल गयीं और उसने हैरत भरी निगाहों से एक-एक मुजस्समे को देखा। यहां तक कि वह आखरी मुजस्समें तक पहुंच गया जो उसकी वर्तमान शक्ल का था। उसकी फटी हुई आंखें अपने अतीत और वर्तमान को देख रही थीं और उसे चक्कर पर चक्कर आ रहे थे।

"य...वह...सब कुछ क्या है सम्मानित बुजुर्ग?" वह बोला।

"यह तेरी मूर्तियां हैं। तेरा बाप एक संगतराश है और उसने तेरे बचपन से लेकर अब तक की यादों को पत्थरों की शक्ल में ढाल दिया है।"

"मगर मेरे मां-बाप कहां हैं?"

"नहीं, जल्दबाजी न कर। ज्यादा-से-ज्यादा तू अपने साथी को बुलाकर यहां ले आ—क्योंकि भविष्यवाणी के अनुसार तू यहां

अकेला नहीं आया हो गया। तेरे साथ कोई जरूर होगा और जो मेरे साथ है वह कोई देवता होगा। उसके बाद इसी जगह दिन के उजाले का इन्तिजार था।"

"मैं तुम्हारी हर बात मानूंगा सम्मानित बुजुर्ग। किस नाम से पुकारूं तुम्हें?"

"एमोस।" बूढ़े ने जवाब दिया।

फिट पर एक दीवानगी-सी सवार हो गयी थी। वह तेजी से गार से बाहर निकल आया और फिर उसका बोदा कुलांचे भरने लगा। वह शोला को इस बात से अगाह करना चाहता था।

एक नयी दास्तान शुरू हो गयी थी।

❑❑❑

बूढ़ा रामोस किसी के दरवाजे पर दस्तक दे यह एक अनहोनी थी। लेकिन यह अनहोनी हुई थी और सोनाग आंखें मलता हुआ बाहर निकल आया था। रामोस को देखकर वह हैरत से गुम हो गया।

फिर बमुश्किल अपने आपको संभालते हुए बोला—"देवताओं के नुमाइन्दे तुम?"

"अपनी बीवी और बच्चों को जगा लो। सुबह की रोशनी तुम्हारे लिये एक अजीम खबर ला रही है। चलो, मेरे साथ चलो। वादा किया था ना मैंने तुमसे। कहा था ना मैंने तुमसे। करा था न मैंने तुमसे वादा—एक दिन तुम्हारा बेटा आयेगा और फिर वह इस बस्ती का सरदार बनेगा—आओ, मेरे साथ चलो।"

दाइना ने मुंह बनाते हुए कहा—"क्या कह रहा है यह शख्स? इसकी दीवानगी रात में भी इन्सानों को चैन नहीं लेने देती।"

सोनाग ने जल्दी से दाइना के मुंह पर हाथ रख दिया और बोला—"बुरी बात! बुजुर्गों के बारे में बुरे शब्द मुंह से अदा नहीं करते।" सोनाग ने अपने तमाम खानदान को तैयार किया। रास्ते में उसने आइका और ईवा को भी साथ ले लिया और यह छोटा सा काफला गारों में पहुंच गया। रामोस उनका मार्गदर्शन कर रहा था। थोड़ी देर बाद उन्होंने दो बोदे उस तरफ आते हुए देखे और जब वह करीब आकर नीचे उतरे तो दाइना के मुंह से एक चीख निकल गयी।

"मेरे बच्चे... मेरे बच्चे।"

कुदरत ने खून के रिश्ते भी खूब बनाये हैं। खून के रिश्ते अपनों को बरसों बाद भी इसी तरह पहचान लेते हैं। फिट को इस आबादी में अपने मां-बाप मिल गये थे और बात यहीं तक सीमित नहीं रही—यह खबर जंगल की आग की तरह कोरसार की दूर दराज बस्तियों तक फैल गयी। लोग दूर-दूर से यहां आये क्योंकि खबर यह भी थी कि फिट किसी देवता के साथ आया है। अब भला ऐसे तो बहुत से लोग थे जो इन दोनों के कारनामें सुन चुके थे। कई बस्तियों में पहले से ही इनकी तलाश हो रही थी। जब पता चला कि सूर्यदेवता अपने साथी के साथ इस बस्ती में प्रकट हुए हैं तो बस्तियां उनके दर्शनों के लिये उमड़ पड़ीं। सब उनके चरणों में बैठ गये। फिट को तुरन्त ही इस बस्ती का सरदार बना दिया। आनन-फानन में उसकी ताजपोशी कर दी गयी और शोला को पूरे कोरसार की सबसे बड़ी सिद्ध पीठ खानकाह का अध्यक्ष बना दिया गया—क्योंकि शोला ने शहंशाह बनने से सख्ती से मना कर दिया था। अब वह कोरसार के सभी दरवेशों का चेयरमैन था।

यह दुनिया जिसकी अभी तक धरती के वैज्ञानिकों ने खोज नहीं की थी। उन्होंने चांद सितारों तक तो पहुंच बना ली थी मगर इस लोक की खोज नहीं हुई थी। इस दूसरे लोक में फैली आबादियों को भी ऊपरी दुनिया के लोगों के बारे में कुछ पता न था, न वह वहां की तरक्की से वाकिफ थे। उन्होंने पहली बार दूसरी दुनिया के लोगों को अपनी सरजमीन पर देखा था जो कि कालके थे और इस जोड़ी ने उसका सफाया किया था।

कोरसार के कुछ इलाके ऐसे भी हैं जो घने जंगलात में घिरे हुए अपने दामन में अनगिनत रहस्यमय दास्तानें छुपाये हुए थे। पहाड़ों, जंगलों, सेहराओं में ऐसे अनोखे-अनोखे कबीले आबाद थे जो अपनी अजीबो-गरीब रवायतों के लिये मशहूर थे। सभी बस्तियां अपने-अपने देवी देवताओं की पूजा के लिये स्वतंत्र हैं—लेकिन फिर भी कोरसार की सिद्ध पीठ दरवेशों का एक मठ ऐसा भी था जो सर्वोपरि था जिसकी बात सभी कबीलों को मान्य थी। और शोला उसी खानकाह का चेयरमैन बन गया था।

❑❑❑

कोरसार में एक पहाड़ी बस्ती जूलारिया भी थी जिस पर इस

[illegible] करता था। लीपारा इस बस्ती का ताकतवर सरदार था—लेकिन बहुत कम लोग इस बात को जानते थे कि लीपारा एक कठपुतली मात्र है—और पर्दे के पीछे काराकास का हुक्म चलता है। बात सिर्फ जूलारिया तक सीमित न थी। काराकास सिर्फ इसी बस्ती का डच डॉक्टर (तांत्रिक) नहीं था, बल्कि दूसरे कबीलों तक भी उसकी पहुंच थी। लेकिन जूलारिया पूरी तरह उसके शिकंजे में था। जूलारिया के आस-पास छोटी-छोटी बस्तियां आबाद थीं और काराकास को यहां भी पूरी मान्यता प्राप्त थी। यहां के लोग अन्धविश्वासी हैं। यहां अनगिनत वहशियाना रस्में कायम थीं जिनमें से एक सबसे बदनुमा रस्म यह थी कि अगर हर साल बस्ती की सबसे खूबसूरत लड़की को देवताओं की भेंट न चढ़ाया गया तो बस्ती की हस्ती ही मिटकर रह जायेगी। लड़की को देवता की भेंट चढ़ाने की रस्म खुद काराकास के हाथों सम्पन्न होती थी और लड़की का अंजाम एक खास तरीके से होता था। बस्ती जूलारिया से लगभग दस कोस के फासले पर जंगल में एक अजीब रहस्यमय हस्ती का वजूद भी मौजूद था जो न मुकम्मल जानवर थी न इन्सान। भेंट चढ़ाने वाली लड़की इस खौफनाक हस्ती के हवाले कर दी जाती थी और खौफनाक हस्ती लड़की को लेकर कहां जाती थी और क्या करती थी, इससे कोई भी बस्ती वाला आगाह नहीं था। बस लोग उसकी पूजा करते थे और वह जानते थे कि यह मुकर्रर वक्त पर आता है और लड़की को ले जाता है। आज तक जूलारिया के किसी इन्सान में यह जुर्रत नहीं हुई थी कि वह उसका पीछा करे। यह मालूम करे कि उसका ठिकाना कहां है। यह बात भी काराकास में फैली हुई थी कि मुकद्दस देवता का पीछा मौत का दूसरा नाम है। भेंट चढ़ाने के लिये सात लड़कियां मनोनीत होती थीं जो आबादियों की सबसे खूबसूरत लड़कियां होती थीं। उनके हाथों में विभिन्न रंगों के फूल दे दिये जाते थे और फिर जिस रंग के फूल को बेहतर समझा जाता था, उसी रंग वाले फूल की लड़की इस कुर्बानी के लिये चुन ली जाती थी और कोई भी उसके खिलाफ आपत्ति दर्ज नहीं कर सकता था क्यों कि आपत्ति को बगावत का दूसरा नाम दिया जाता और ऐसे शख्स के लिये बस्ती का कानून बहुत सख्त था। वह लड़की के भेंट चढ़ने से पहले ही हलाक कर दिया जाता था। इसलिये अभी तक ऐसी किसी बदनसीब लड़की

के बाप और भाई ने कोई आपत्ति दर्ज नहीं की थी। बस जिस बदनसीब की मौत आ जाती वह चुपचाप बना संवार कर भेंट चढ़ाने के लिये काराकास के हवाले कर दी जाती थी और जंगल के उस हिस्से में यह रस्म अदा की जाती जहां वह रहस्यमय हस्ती आती थी। इस हस्ती को वह लोग दंगानिया के नाम से पुकारते थे और दंगानिया उन लोगों के लिये वहशत का देवता था। वह इतना बदशक्ल था कि भेंट चढ़ाने वाली लड़की उसे देखकर ही बेहोश हो जाती थी। लम्बे चौड़े जिस्म का मालिक बेहोश लड़की को कंधे पर डालकर आसानी से कहीं ले जाता था। काराकास के लिये लोगों के दिल में अच्छे जज्बात नहीं थे। उन्हें पता था कि काराकास दंगानियां का सरपरस्त है और उसकी वजह से कुर्बानी की यह रस्म अदा की जाती है। उनका ख्याल था कि काराकास इन लड़कियों को बेहोश करके उनके हवाले कर देता है। हर साल यह खौफनाक रस्म अदा की जाती थी और हर साल एक घर मातम मनाता था। जब कुर्बानी का समय आता तो मां बाप थरथराने लगते थे--विशेष रूप से वह मां बाप जिनके घरों में खूबसूरत बदनसीब लड़कियां मौजूद होती थी। बस्ती जूलारिया में खूबसूरत लड़की की पैदाइश मां-बाप के लिये एक बड़े सदमे का बायस होती थी। वह उसे बेशक भेंट चढ़ाते थे लेकिन यह सोचकर कि आखिरकार वह दंगानियां की भेंट चढ़ जायेगी। बहरहाल, रस्में रस्में ही हुआ करती हैं और बदनसीब लोग उनका शिकार होते रहते हैं। अतः इस साल भी उन लड़कियों का चयन हो चुका था जिनमें से एक लड़की को कुर्बानी के लिये चुना जाना था। इस वक्त भी काराकास के झोंपड़े के सामने ज़मावड़ा था। लोग टोलियों की शक्ल में आ रहे थे। उस लड़की का चयन होना था जिसकी तकदीर में देवता की कुरबत लिखी हुई थी या फिर दूसरे मायनों में मौत की कुरबत। सूरज पहाड़ियों के नीचे ढलकता चला आ रहा था। हवाओं में नमी शामिल हो गयी थी और आसमान उदासियों के रंगों में रंगा हुआ था। अभी तक काराकास अपने गुजरे से निकलकर नहीं आया था। अभी बस्ती का सरदार भी वहां नहीं पहुंचा था। वह सब मौजूद होते थे, तब यह रस्म निभाई जाती थी। काराकास का झौंपड़ा जिसे मुजरा कहा जाता था, एक पहाड़ी टीले के दामन में बना हुआ था। पहाड़ी टीले के अन्दर

भी काराकास ने उसे खोखला करके अपने लिये न जाने क्या-क्या बना रखा था। बहरहाल, सामने के किले में उसका अपना झोंपड़ा था।

अचानक ही काराकास अपने झोंपड़े के दरवाजे में खड़ा नजर आया। उसके अन्दाज में बड़ी शान थी। उसके दायें-बायें बहुत से लोग थे जिनके हाथों में पकड़े हुए बर्तनों से सुगन्धयुक्त धुवां उठ रहा था। काराकास लगभग पैंसठ या सत्तर साल का बुजुर्ग था, लेकिन उसका जिस्म इन्तहाई तंदुरुस्त, रंग तांबे की तरह। शारीरिक बनावट मजबूत और हाथ पांव लम्बे मजबूत, सीना चौड़ा। उसके चेहरे पर संजीदगी और जहानत साथ-साथ मिलती थी और इसमें कोई शक नहीं कि उसकी शख्सियत बेहद शानदार थी और वह हर तरह से एक रहनुमा बनने की योग्यता रखता था। उसकी गहरी आंखों ने जनसमूह पर निगाह डाली और वह यह जायजा लेनें लगा कि जुलारिया के लोग आज भी उसके सामने सिर झुकाकर खड़े होने पर मजबूर हैं या उनमें से कोई सरकश भी पैदा हो गया है। बहरहाल यह अन्दाजा उसे हो गया कि तकरीबन तमाम बस्ती वाले उसके सामने सिर झुकाते हैं। फिर उन लड़कियों को भी लाया गया जिन्हें फूल देकर एक लाइन की सूरत में खड़ा कर दिया गया था। उनके हाथों में विभिन्न रंगों के फूल थे, लेकिन उनके चेहरे से साफ इस बात का इजहार होता था कि वह जिन्दगी और मौत की कशमकश में फसी हुई हैं। उनकी आंखों में मौत के खौफनाक साये नज़र आ रहे थे। लेकिन गौर से देखने पर उनमें से एक लड़की ऐसी नजर आती थी जिसके चेहरे पर खौफ का कोई भाव नहीं था—न जाने क्यों। बहरहाल, काराकास के सामने वह बर्तन आकर रख दिया गया जिसमें वह रंगीन झूल रखे हुए थे, जिन्हें मौत का झूल कहा जा सकता था। उसने आंखें बन्द करके फूल निकालना शुरू कर दिये—उन्हें सूंघता रहा। उपस्थित लोगों के दिलों की धड़कनें तेज हो गयी थीं।

सातवां फूल भी निकल आया—साथ ही काराकास ने आंखें खोल दीं। उसने एक फूल उठाया जिसका रंग सुर्ख था। वैसा ही फूल जिस लड़की के हाथ में था वह देवता की भेंट के लिये चुन ली गयी थी, लेकिन यह वही लड़की थी जिसके चेहरे पर खौफ के भाव नहीं थे। भीड़ में बहुत सी मद्धिम-मद्धिम आवाजें उभरी

और उनमें गम के भाव थे। क्योंकि भेंट के लिये चुनी जाने वाली लड़की पूरी बस्ती की महबूब शख्सियत थी। विशेष रूप से बस्ती के सरदार का नौजवान बेटा नागोस उसका दीवाना था और यह लड़की नागोस की मुहब्बत थी। वह उसकी महबूबा थी। जिसे हासिल करने के लिये नागोस हर तरह की कुर्बानी देने के लिये तैयार था।

अचानक सरदार की आवाज गूंजी—''हशीमा!''

यह आवाज यह समझ लिया जाय कि मौत के फरिश्ते की आवाज थी। काराकास के पुकारते ही वह बहादुर लड़की धीरे-धीरे चलती हुई काराकास के सामने जा खड़ी हुई। उसके चेहरे पर मौत की स्याही की बजाय एक अज्म की रोशनी फूट रही थी। उसने काराकास की आंखों में आंखें डालकर कहा।

''मैं हाजिर हूं मुकद्दस जादूगर।''

''तुम समझ गयी होगी कि तुम्हारा चुनाव कुर्बानी के लिये हुआ है।'' काराकास ने नर्म लहजे में कहा—''तुम कुछ कहना चाहती हो?''

''नहीं।'' हशीमा ने सर्द लहजे में जवाब दिया—''वह इन्सान क्या कहना चाहेगा जो मौत के मुंह में जाने वाला हो।''

''बहादुर बच्ची! मैं तेरी जुर्रतमंदी की तारीफ करता हूं। यह रस्म सदियों से चली आ रही है और... ।'' अभी काराकास इतना ही बोला था कि उसने बात काट दी।

''और सदियों तक चलती रहेगी—यही कहना चाहते हो मा मुकद्दस जादूगर।''

''हां—तुम्हारा बाप कहां है—उसे बुलाओ।''

''घर अपने घर में है।'' लड़की ने जवाब दिया। जिस हस्ती को कुर्बान किया जाता है उसने उसे यहां भेज दिया। अब वह क्या करेगा यहां आकर। मैंने उसे आने से रोक दिया है।'' लड़की के अन्दाज में एक ऐसी बेखौफी थी कि खुद काराकास उसे हैरानी से देखने पर मजबूर हो गया।

लेकिन फिर अचानक ही उसने चेहरा बदलकर कहा—''तुमने मजहबी रस्म को तोड़ा है।''

''उससे क्या फर्क पड़ता है।''

''लड़की! तुम देवताओं की तोहीन कर रही हो।'' काराकास

की आवाज तराख होने लगी।

"मेरे लिये किसी की तोहीन से कोई फर्क नहीं पड़ता, मुकद्दस जादूगर।" हशीमा की आंखें बदस्तूर उसकी आंखों में गड़ी हुई थीं। फिर उसने कहा—"जो मरने जा रहा हो उसके सबसे रिश्ते टूट जाते हैं। उसके लिये देवता और इन्सान में कोई फर्क नहीं रहता।"

"यह मौत एक मुकद्दस मौत है जो हर एक को नसीब नहीं होती। तू खुशनसीब है।"

"हां—मैं खुशनसीब हूं कि मुझे इस मुकद्दस मौत के लिये चुना गया है। मगर मुझे एक सवाल का जवाब दीजिये मुकद्दस जादूगर।"

"बोल, क्या कहना चाहती है?"

"मुकद्दस जादूगर! यह मौत सिर्फ लड़कियों के लिये क्यों आती है। मर्दों के लिये क्यों नहीं।"

इस सवाल पर एक लम्हे के लिये भनभनाहट उभरी। कदाचित वहां के लोगों ने उसके बारे में सोचा कि वाकई ऐसा क्यों नहीं है।

काराकास तुरन्त बोला—"देवताओं की बातें देवता जानते हैं। मैं भला उसका क्या जवाब दे सकता हूं?"

"लेकिन मैं जवाब दे सकती हूं मुकद्दस जादूगर।" लड़की ने बदस्तूर गुर्राती हुई आवाज में कहा फिर बोली—"देवता भी मर्द होता है। औरत की कुर्बानी पसंद करता है। क्या कोई ऐसी देवी मौजूद है जिसे मर्दों की कुर्बानी पसंद है।"

"तू बहुत ज्यादा बोल रही है लड़की! देवता के मामले में कुछ कहना जायज नहीं होता। अगर तू यह सोचती है कि इस तरह अपनी बहादुरी का रूआब डाल रही है तो यह सम्भव नहीं है। मैं जानता हूं कि तू एक ऐसे बाप की बेटी है जो बड़ी हैसियत का मालिक है। अब तू सिर्फ यह बता कि तू कुर्बानी के लिये तैयार है?"

"हां—मुकद्दस जादूगर! मैं कुर्बानी के लिये तैयार हूं।" लड़की ने कहा। अभी तक सारी भीड़ यह बातें सुन रही थी और जैसे ही मजमें ने काराकास का अन्तिम वाक्य सुना, मजमें में बेचैनी फैल गयी। लोगों के दिल दुख रहे थे कि यह इंसानी बोलती

खूबसूरत लड़की एक लम्हे के अन्दर-अन्दर मौत का शिकार बन जायेगी। काश! किसी तरह इसे बचाया जा सकता। हशीमा का जवाब सुनकर काराकास ने ताली बजायी और कुछ लम्हों बाद एक कर्मचारी एक गिलास लेकर हाजिर हो गया। गिलास में सुर्ख रंग का एक शर्बत था। काराकास ने कर्मचारी को संकेत किया कि गिलास हशीमा को दे दिया जाय। जैसे ही कर्मचारी यह गिलास लेकर हशीमा की तरफ बढ़ा तो उसने हाथ उठाकर उसे रोक दिया।

वह बोली—"नहीं मुकद्दस जादूगर! मुझे यह शर्बत नहीं चाहिये।

"नहीं बेटी! यह इस रस्म का एक हिस्सा है। तुम्हें यह शर्बत पीना चाहिये।"

"मैं यह शर्बत नहीं पियूंगी। मैं होशोहवास के आलम में मुकद्दस दंगालियां का स्वागत करना चाहती हूं और यह तमाम मालूमात हासिल करना चाहती हूं कि वह मुझे कहां ले जाता है। मैं बुजदिल नहीं हूं कि बेहोशी कुबूल करके उसके कदमों में जाऊं।"

काराकास के चेहरे पर परेशानी के आसार नमूदार हो गये। अभी वह कोई जवाब नहीं दे पाया था कि बोदे की टापों की आवाज सुनायी दी। कोई बहुत तेजी से उस तरफ आ रहा था। लोगों ने उसे जगह दी। फिर उन्होंने देखा कि वह नागोस है—सरदार लोपास का बेटा। नागोस बोदे से उतरकर सीधा सरदार के पास पहुंचा। न जाने क्यों लोपास के चेहरे का रंग जर्द हो गया था।

नागोस ने कहा—"मेरे होते हुए हशीमा को कुर्बान नहीं होने दूंगा। मैंने तुमसे पहले ही कह दिया था। यह मेरा फैसला है। हशीमा मेरी महबूबा है। मेरी जिन्दगी की मालिक। मैंने तुम्हें बता दिया है कि ऐसा नहीं होगा।"

उसके यह शब्द सुनकर सरदार की तो जबान ही बन्द हो गयी।

लेकिन काराकास की खुंख्वार आवाज उभरी—"यह सब क्या है लोपास? तेरा बेटा सदियों की परम्पराओं की तोहीन कर रहा है। इधर तो यह लड़की सरकशी का प्रदर्शन कर रही है। इस बार तो सब कुछ गलत हो रहा है। इसका बाप यहां नहीं आया। सारगस को ऐसा नहीं करना चाहिये था। वह एक मोआज्जिज आदमी है। उसे इस बात का अन्दाजा होगा कि उसकी बेटी इस

वक्त सबसे हसीन है और हो सकता है उसका चयन हो जाय। और अब तुम्हारा बेटा जो कुछ कर रहा है, यह सरासर बगावत है और बगावत का अंजाम हमारी बस्ती के हर फर्द को मालूम है।"

"मैं जानता हूं सरदार! लेकिन यह अभी बच्चा है।"

"हां मैं बच्चा हूं। लेकिन मेरी मुहब्बत बहुत मजबूत है। मैं हशीमा के लिये जान दे सकता हूं। अगर दंगानिया ने उस पर हाथ डाला तो देवताओं की सौगन्ध—वह मेरे हाथों मारा जायेगा—क्या समझे?"

"तुम बेवकूफ हो अहमक! महाना दंगानिया के बारे में तुम ऐसी बातें करते हो। तुम्हें शर्म आनी चाहिये। यह हमारी बस्तियों का सदियों पुराना दस्तूर है और रस्मोरिवाज कभी खत्म नहीं होते। दस्तूर कभी नहीं टूटते। यह रस्म बदली नहीं जा सकती। मुकद्दस जादूगर हमारा रहनुमा है। काराकास के सामने ऐसी सरकशी कभी किसी ने नहीं की। मैं सरदार हूं और बस्ती के रस्मोरिवाज का पालन करने वाले पद पर हूं। तुम्हें इसके लिये सजा भी दी जा सकती है।"

"ठीक है लेकिन यह सब कुछ नहीं होगा। मैं कुछ न कुछ करके रहूंगा।"

"तुम कुछ भी नहीं कर सकते समझे! मुकद्दस जादूगर रस्म की अदायगी के लिये दूसरे काम शुरू किये जायें।"

फिर अचानक ही चार पांच ढोल वाले दरमियान में आ गये। शंख फूंके जाने लगे और ढोलों पर जोर-जोर से थाप पड़ने लगी। उसी दौरान हशीमा धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगी थी। उसी वक्त चूंकि नागोस ने सबका ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लिया था। इसलिये हशीमा की तरफ किसी का ध्यान न जा सका। जिस बोदे से नागोस उतरा था, हशीमा उसी बोदे के करीब पहुंची थी। फिर उस वक्त सब चौंक पड़े जब अचानक ही हशीमा उछलकर बोदे पर सवार हो गयी और उसने बोदे को एड़ लगा दी। चारों तरफ से अजीबो-गरीब आवाजें बुलन्द हुई थीं और एकदम से शोर मच गया था। उस वक्त काराकास को भी होश आया। उधर नागोश एक सिम्त दौड़ा था। और भी बोद सवार वहां मौजूद थे। उसने एक बोद सवार को धक्का दिया और दूसरे ही लम्हे उसके बोदे

पर सवार होकर उसने उसे हशीमा के पीछे दौड़ा दिया। एक लम्हे के लिये तो पूरे मजमें में सकता तारी हो गया, लेकिन दूसरे लम्हे काराकास का चेहरा क्रोध से सुर्ख हो गया।

"यह गजब हुआ है। यह बहुत बड़ा गजब हुआ है और इसका नतीजा बहुत बुरा होगा। बहुत बुरा होगा।" वह खौफनाक आवाज में कह रहा था और मजमे पर एक लम्हे के लिये सुकूत छा गया।

❑❑❑

"मेरे शब्दकोश में एक नये शब्द का इजाफा हुआ है—क्या समझे?" फिट ने भन्नाई हुई आवाज में कहा और शोला मुस्कराने लगा।

"गोया जमीन के इस दूसरे लोक में तुम कोई शब्दकोश का निर्माण कर रहे हो।"

"यार! यह लोग पागल नहीं हैं। मैं खुलेआम इनसे कहता रहा हूं कि मुझसे ज्यादा जहीन मेरा भाई है शोला! बड़ा बहादुर और ताकतवर है, लेकिन मुझे तो अपनी बस्ती के लोग बिल्कुल ही मूर्ख मालूम होते हैं। अरे बाप रे बाप...जरा गौर तो करो—यह सरदारी दुनिया की सबसे बड़ी मूर्खता है। इन्सान को अपने तौर पर आजादी से खेलना खाना चाहिये। मां-बाप मिले हैं। बहनें मिली हैं—उनके साथ जिन्दगी के शुबहो शाम बसर करने की बजाय उसे बेवकूफों की तरह सरदारी के तख्त पर बिठा रहे हैं। मुझे यह सब कुछ पसंद नहीं है। बिल्कुल पसंद नहीं है। यह बात कहे दे रहा हूं।"

शोला कहकहा लगाकर हंसने लगा फिर बोला—"जिम्मेदारी तो मुझे भी दी गयी है फिट!"

"यह जिम्मेदारी है! इससे बड़ी अय्याशी और कोई नहीं हो सकती। तुम कोरसार के सबसे बड़े मठ के चेयरमैन बन गये हो। जहां दिल चाहे जा सकते हो, जहां दिल चाहे आ सकते हो। जिस हसीन लड़की को चाहो आगोश में ले सकते हो। जो सरदार तुम्हारे सामने सरकशी करे, उसे पदच्युत कर सकते हो। मुझे तुम्हारी इस हैसियत का अच्छी तरह एहसास है। लेकिन मैं तो यहीं फंसा रह जाऊंगा। मेरे गले में तो पट्टा बंध गया है।"

शोला फिट की बातें सुनकर हंसता रहा था लेकिन उसकी

आंखें दूर-दूर तक का जायजा लेती जा रही थीं। ऐसा लगता था जैसे वह किसी गहरी सोच में हो। जिस वृक्ष से वह दोनों टेक लगाए बैठे थे, वह इस ढलान का इकलौता वृक्ष था। ढलान की ऊंचाई बहुत अधिक नहीं थी। नीचे की ओर दोनों घोड़े घास चर रहे थे। प्लान ऐसी जगह थी जहां आम लोगों का गुजर कम ही होता है। सरदारी का ताज फिट के सिर पर रख दिया गया था। लेकिन वह ज्यादा दिन नहीं टिक सकता था। उसकी जिन्दगी में ठहराव नहीं था। जब भी वह कहीं ठहरता तो कोई न कोई तूफान आ जाता था जो उसकी जिन्दगी में हलचल मचा देता था और फिर उसका रुख वृन्दा स्वामी की ओर हो जाता था। शोभा को एहसास हो रहा था कि कभी भी फिट्ट का और उसका साथ छूट सकता है।

अभी वह बातचीत कर ही रहे थे कि अचानक घोड़ों की टापों की आवाज सुनायी दी और उनकी निगाहें उसी तरफ उठ गयीं। उधर धूल के बगोले उठ रहे थे और वह तेजी से बढ़ते चले आ रहे थे। घोड़ सवार उन्हीं बगोलों के पीछे छुपे थे। यह नहीं कहा जा सकता था कि वह कितने हैं। घोड़ों की तेजरफ्तारी से यह अन्दाजा होता था कि वह रास्ता बहुत जल्द तय करना चाहते हैं। या जिस मंजिल की तरफ वह सफर कर रहे हैं वहां जल्दी पहुंच जाना चाहते हैं। गौर से देखने पर अन्दाजा हुआ कि वह बगोले दो हिस्सों में तक्सीम थे। एक बगोला आगे ही आगे चला जा रहा था और दूसरा पीछे। ऐसा लग रहा था जैसे पीछे वाला बगोला आगे वाले का पीछा कर रहा हो। देखते-ही-देखते वह दोनों बगोले आपस में टकरा गये। उसके साथ ही एक चीख फिजा को चीरती हुई उनके कानों से टकरायी और बेइख्तियार शोभा का हाथ पिस्तौल की ओर बढ़ गया। धूल का बगोला फिजा में उड़ना शुरू हो गया था और वहां जो कुछ भी हो रहा था वह स्पष्ट होता जा रहा था। उसकी आंखें अब आसानी से वह दृश्य देख सकती थीं। वह दो मर्द और एक लड़की थे। अपने-अपने घोड़ों पर सवार और एक दूसरे से उलझे हुए थे। एक लम्हें के अन्दर-अन्दर यह स्पष्ट हो गया कि वह दोनों मर्द लड़की को काबू में करने की कोशिश कर रहे थे, लेकिन वह अभी तक उनके काबू में नहीं आयी थी। शायद वह उसे घोड़े से खींच लेना चाहते थे, लेकिन औरत के भरपूर प्रतिरोध ने अभी तक उन्हें अपने मकसद में कामयाब नहीं होने

दिया था। अचानक लड़की को एक बार फिर निकल जाने का मौका मिला और वह एक लम्हा जाया किये बिना भाग निकली। उसका रुख उधर ही था जिधर किसी चट्टान पर वह दोनों खड़े हुए थे। वह दोनों हैरत और दिल्लगी से यह दृश्य देख रहे थे और कुछ इस तरह उसमें गुम हो गये थे कि अपना अम्ल भूल गये थे। लेकिन अचानक ही उन्हें होश आ गया।

फिट ने भर्राई आवाज में कहा—"वह लड़की इधर ही आ रही है।"

"हां—क्या तुम इतनी ऊंचाई से इस तरह छलांग लगा सकते हो कि इस लड़की के बोदे की पुश्त पर बैठ जाओ?" शोला ने कहा।

"हां—लेकिन क्या इसकी जरूरत है?"

"हां है। तो फिर तैयार हो जाओ। तुम्हें इस लड़की की मदद करनी है।" शोला ने जवाब दिया।

"क्या वाकई तुम जो कह रहे हो, सच कह रहे हो?"

"हां—जैसे ही वह इस ढलान के पास पहुंचे, तुम छलांग लगा देना। मैं इन दोनों शैतानों को देखता हूं जो लड़की का पीछा कर रहे हैं। मगर सुनो, लड़की को बोदा दौड़ाते हुए दूर तक न ले जाना। मैं जानता हूं तुम किस फितरत के आदमी हो।"

"बकवास—बिल्कुल बकवास। तुम्हें इस वक्त अन्दाजा नहीं है कि यहां की लड़कियां सरदार फिट को कैसी निगाहों से देखती हैं। बल्कि मैंने तो सुना है लड़कियों के दरमियान बाकायदा शर्त लगी हैं कि उनमें से कोई न कोई मुझ तक कुरबत हासिल करेगी।"

"बकवास बन्द करो—वह आ रही है।"

शोला ने यह बात मजाक में नहीं कही थी। सचमुच फिट ऐसी शानदार योग्यताओं का स्वामी था। हालांकि एक दौड़ते हुए बोदे पर छलांग लगाना इन्तहाई खतरनाक काम था। जरा सी असावधानी से हड्डी पसली टूट सकती थी, लेकिन शोला ने फिट पर भरोसा कर लिया था। और फिर सचमुच जो कुछ हुआ वह शोला के लिये आश्चर्यजनक था। ऐसा लगता था जैसे फिट हवा में उड़ना जानता हो। लड़की का बोदा अभी थोड़ा पीछे ही था, लेकिन फिट ने जिस अन्दाज में उस पर छलांग लगा दी थी वह अविश्वसनीय था। दूसरे ही लम्हे वह लड़की के बोदे की पुश्त पर।

पहुंच गया। लड़की खुद ऐसी घटना की कल्पना भी नहीं कर सकती थी। उसके खौफ में डूबी लम्बी चीख का अन्दाजा लगाना मुश्किल था। जैसे अत्याधिक लम्बी चीख।फ़जा को चीरती हुई दूर तक निकल गयी हो। इससे पहले कि वह कोई प्रतिरोध करती। फिट ने उसको बाजुओं में जकड़कर बोदे की रास थाम ली और बोदे को संभालने लगा। उधर पीछे आने वाले दोनों सवार भी तीव्रता से उस तरफ आ रहे थे। उनका रुख भी ढलान की ही जानिब था। अतः अब शोला प्रतीक्षा करने लगा। जैसे ही वह दोनों सवार ढलान के नीचे पहुंचे, शोला ने भी छलांग लगा दी। सवार को बाजुओं में जकड़कर वह नीचे ले आया। सवार के लिये यह हमला आशा के विपरीत था, इसलिये वह जमीन पर आ पड़ी। फिर जब वह मुआमले की नौबत समझा तो एकदम शोला से उलझ गया। सवार इस जज्बे के तहत शोला से लिपटा था कि उसके हाथ से लड़की के निकल जाने का कारण शोला ही है। दूसरा सवार अभी तक बोदे की पीठ पर ही था और कुछ फासले पर उसने अपने बोदे की लगामें खींच लीं और उसका रुख तब्दील कर दिया। बोदा रुक गया और दूसरा सवार शोला और अपने साथी का द्वंद देखने लगा। हालांकि उसके पास रायफल भी मौजूद थी और शायद पिस्तौल भी। वह चाहता तो फायर कर सकता था, लेकिन वह दोनों इस तरह एक-दूसरे से जकड़े हुए थे कि गोली चलाने की हिम्मत नहीं कर सकता था। गोली उसके साथी को भी लग सकती थी। शोला ने चंद ही लम्हों के अन्दर अपने साथी को संभाल लिया। लेकिन वह भी मोम का बना हुआ नहीं था। शोला उसे कत्ल नहीं करना चाहता था। उसे जिन्दा ही पकड़ने के लिये संघर्ष करना पड़ रहा था। बोद सवार की कुहनियां जख्मी हो गयी थीं और उनसे खून बहने लगा था। फिर चंद ही लम्हों बाद सवार को यह अन्दाजा हो गया था कि वह अपने प्रतिद्वंदी पर काबू नहीं पा सकता अतः उसने शोला से छुटकारा पाने के लिये जद्दो जहद शुरू कर दी। वह अपने साथी की बेबसी और बुजदिली को भी समझ रहा था। अभी वह दावपेंच जारी ही थे कि फिट लड़की सहित बोदा वापस लेकर उसी तरफ आ गया। एक लम्हें के लिये शोला का ध्यान लड़की और फिट की ओर बट गया कि उसका प्रतिद्वंदी जोर लगाकर तड़पा और उसकी गिरफ्त से निकलकर अपने बोदे की

और भाग पड़ा। वह भागता हुआ उछलकर घोड़े की पीठ पर सवार हो गया और घोड़ा आगे बढ़ता चला गया।

फिर उसने गुर्राती आवाज में कहा—"देखूंगा! मैं तुम्हें देखूंगा।" इसके साथ ही उसने घोड़ा दौड़ा दिया। दूसरा सवार भी उसके पीछे दौड़ पड़ा। बहरहाल उन दोनों के बारे में यह अन्दाजा नहीं था कि वह कौन है और लड़की के पीछे क्यों पड़े हैं। इसलिये उन दोनों ने भी उन पर विशेष ध्यान नहीं दिया था। अलबत्ता उनके जाने के बाद शोला लड़की की ओर आकर्षित हो गया। लड़की का एक बाजू जख्मी था। फिट ने अपने हाथ से दबाकर उसका खून रोकने की कोशिश की। शायद लड़की पर काबू न पाने की शक्ल में उसके बाजू में चाकू की नोक उतारी गयी थी। ताकि वह जख्म खाकर वह उनके बस में आ जाये। खून था कि बन्द होने का नाम नहीं ले रहा था।

शोला ने लड़की की तरफ देखा फिर बोला—"मेरा ख्याल है हमें वापस चलना चाहिये। इस बात की भी सम्भावनायें हैं कि वह दोनों सवार अपने साथियों के साथ यहां पहुंच जायें। ऐसी सूरत में इस जख्मी लड़की की हिफाजत करना मुश्किल होगा।"

"आओ, वापस चलते हैं।" फिट ने कहा और शोला ने गर्दन हिला दी फिर लड़की को उसके घोड़े पर सवार किया गया। शोला ने फिट के घोड़े की लगाम संभल ली थी और उसके बाद वह वापिस चल पड़े।

इस दौरान उन्होंने लड़की से कोई बात नहीं की थी। वह अर्ध बेहोशी के आलम में थी, और बार-बार उसकी आंखें बन्द होने लगती थीं। खून भी अच्छा खासा निकल गया था। इसके अलावा वह बेचारी न जाने कहां से आ रही थी। इस कदर थक चुकी थी कि उसके कंठ से आवाज तक नहीं निकल रही थी। उसने फिट से थोड़ी सी जद्दोजहद की थी और उसके बाद उसकी जद्दोजहद सर्द पड़ गयी थीं। हालांकि वह यह भी नहीं जानती थी कि वह इस वक्त दोस्तों में हैं या दुश्मनों में। यह बात भी हो सकती थी कि एक के चंगुल से निकलकर दूसरे की कैद में आ जाये। बहरहाल, लड़की की कैफियत क्या थी, यह वह नहीं जानते थे। जिस वक्त वह लोग बस्ती में दाखिल हुए तो अंधेरा फैल चुका था और वह अपने डेरे पर चल पड़े थे। फिट ने अपने घर ही का

रुख किया था। उसके मां-बाप वहां मौजूद थे। उन्होंने उन दोनों के साथ एक जख्मी लड़की को देखा तो उसकी तरफ आकर्षित हो गये। फिर फौरन ही लड़की की देखभाल शुरू हो गयी। फिट ने अपनी मां को उसके बारे में सारा विवरण बता दिया और फिट की मां और एक बहन पूरी तरह लड़की की देख-रेख में लग गयी थी। फिट की बहन ने लड़की के मुंह हाथ धोकर उसके जख्म पर मरहम पट्टी कर दी और दूध में शहद मिलाकर उसे पिलाया। उसके बाद आराम करने के लिये कहा। लेकिन लड़की ने लेटने से इन्कार कर दिया।

"अब मैं ठीक हूं। कृपया मुझसे सोने के लिये न कहें।"

"तुम शायद यह सोच रही हो कि अगर तुम सोने के लिये लेट गयीं तो तुम्हें कोई नुकसान पहुंचा जायेगा।"

"नहीं, बिल्कुल नहीं। जो लोग इस तरह किसी की मदद करते हैं वह नुकसान नहीं पहुंचा सकते। मैं इन दोनों की शुक्रगुजार हूं जिन्होंने अपनी जिन्दगी की परवाह किये बगैर मुझे दुश्मनों से बचाया।"

"शुक्रिया की जरूरत नहीं है। यह सब कुछ हमारा फर्ज है।" फिट ने लापरवाही से कहा, लड़की उसे देखने लगी। फिट ने महसूस किया कि अचानक उसकी आंखों में आंसू उमड़ आये थे। फिट हैरान रह गया।

फिट की मां ने कहा—"देखो बेटी! मेरा बेटा इस बस्ती का सरदार है। तुम मुझे बताओ, किसी मुसीबत में फंसी हो?"

"हां—मैं सख्त मुसीबत में फंसी हूं।"

"क्या नाम है तुम्हारा?"

"हशीमा।"

"कौन-सी बस्ती की रहने वाली हो?"

"जुलारिया की रहने वाली हूं।"

"क्या तुम जानबूझकर इस तरफ आयी थीं?"

"नहीं, मैं जिन हालात से गुजर रही हूं, उनसे गुजरकर रास्तों का चयन नहीं किया जा सकता था। बस तकदीर मुझे इस तरफ ले आयी थी। मैं नहीं जानती थी कि मैं किधर जा रही हूं।"

"वह लोग जो तुम्हारा पीछा कर रहे थे, वह कौन थे?" शोला ने सवाल किया।

"मैं नहीं जानती, लेकिन जहां तक मेरा ख्याल है, उनमें से एक बस्ती के सरदार का बेटा नागोस था। लेकिन मैं उसे सही तरीके से देख नहीं सकी थी।"

"नागोस! जूलारिया के सरदार का बेटा—लेकिन वह तुम्हारा पीछा क्यों कर रहा था?"

"बस, मैं क्या बताऊं! मेरी अक्ल मेरा साथ छोड़ चुकी है। वह मुझसे शादी करना चाहता है।"

"अगर ऐसी बात थी तो उन लोगों ने तुम्हें नुकसान पहुंचाने की कोशिश क्यों की। मैं तुम्हारे जख्मी बाजू के बारे में सवाल कर रहा हूं। बात कुछ उलझी हुई है।"

"मैं तुमसे एक बात कहूं। नागोस से शादी करने का मतलब अपने आपको मौत की आगोश में दे देना है। वह बस्ती का आबारातरीन आदमी है। मैं उससे नफरत करती हूं। उसने मुझसे मुहब्बत का खेल शुरू किया, लेकिन मैंने अपने ऊपर उसका बस कभी नहीं चलने दिया। खुद उसका बाप भी उसे पसंद नहीं करता। लेकिन है तो सरदार का बेटा और अपनी इस हैसियत से नाजायज फायदा उठाता रहता है; उसके इर्दगिर्द बदमाशों का एक गोल है जो उसकी अय्याशी की खातिर बस्ती में कुछ भी कर गुजरते हैं। मैं एक ऐसे घराने से सम्बन्ध रखती हूं जो बहुत बाइज्जत है और बहुत पसंद किया जाता है। लेकिन मैं क्या बताऊं! मेरा बाप सारगस भी मेरी रक्षा में नाकाम रहा है।"

"बस्ती में तुम्हारे बाप की क्या हैसियत है?" शोला ने सवाल किया।

"वह बस्ती के सम्मानित आदमी हैं। उनका अपना छोटा-सा कारोबार है। उन्होंने मेरी मां के मरने के बाद मेरा लालन-पालन लड़कों के अन्दाज में किया है। उन्हें बस्ती की पुरानी रस्मों से नफरत है। विशेष रूप से वह कुर्बानी वाली रस्म के सख्त खिलाफ हैं। लेकिन खुलकर वह इस बात का इजहार नहीं कर सकते वरना बस्ती के लोग उन्हें मजहब से बगावत के जुर्म में कत्ल कर देंगे। विशेष रूप से मुकद्दस जादूगर तो बर्दाश्त कर ही नहीं सकता।" लड़की धीमी-धीमी आवाज में निगाहें झुकाये यह सारी बातें बता रही थी।

"कुर्बानी की रस्म?"

"हां... ।"

"और अभी तुमने एक बात कही थी—मुकद्दस जादूगर उसे बर्दाश्त नहीं कर सकता। यह जादूगर कौन है?"

"काराकास।"

"वह तुम्हारे बाप से नफरत क्यों करता है?"

"बस न जाने कब से मेरे बाबा और काराकास के दरमियान नफरत का रिश्ता कायम है।"

"उसकी कोई वजह तो होगी।"

"यकीनन होगी, लेकिन मुझे नहीं मालूम। अलबत्ता कुछ कहानियां मेरे कानों में पड़ी थीं जिनमें से एक यह है कि उन दोनों के दरमियान नफरत की वजह मेरी मां थी। मुझे इस बारे में कोई विवरण मालूम नहीं है।"

शोला और फिर उसकी बात समझने की कोशिश कर रहे थे और थोड़ी बहुत बात उनकी समझ में आ गयी थी, क्योंकि यह बात तय है कि लड़की बहुत खूबसूरत थी। निःसंदेह उसकी मां भी एक खूबसूरत औरत होगी।

थोड़ी देर बाद फिट ने कहा—"अब यह बताओ कि तुम जा कहां रही थीं। हमारी ओर से तुम बेफिक्र रहो। अगर तुम्हारी निगाहों के सामने तुम्हारी जिन्दगी का कोई मकसद है और तुम कहीं जाना चाहती हो तो तुम्हें वहां पहुंचा दूं। तुम्हें वहां पहुंचाया जा सकता है।"

"मेरे बाप ने मुझे कहा था कि अगर मैं कभी किसी मुश्किल में गिरफ्तार हो जाऊं तो मुकद्दस फर्लांग के कदमों में पहुंच जाऊं। उनके अलावा कोई भी इस वक्त मेरा मददगार नहीं हो सकता। अगर तुम मेरे ऊपर एहसान करना चाहते हो तो मुकद्दस फर्लांग की खानकाह में पहुंचा दो। इसके अलावा मेरे लिये और कोई जगह नहीं है। मेरे बाबा ने यही मुझसे कहा था कि सिर्फ वही मेरे लिये पनाहगाह बन सकते हैं। अगर तुम मेरे ऊपर कोई एहसान कर सकते हो तो यह एहसान कर दो।"

"एक बात बताओ—तुम्हारी फरार के बाद कहीं बस्ती वाले तुम्हारे बाबा को तंग तो नहीं करेंगे।"

हशीमा सोच में डूब गयी। थोड़ी देर गौर करती रही फिर परेशानी भरे स्वर में बोली—"आह! यह तो सम्भव है। मैंने इस

बारे में सोचा भी नहीं था। यह सम्भव है क्यों कि मैंने...मैंने मुकद्दस जादूगर के हुक्म से बगावत की है। मैंने दंगानिया की तौहीन की है। काराकास बस्ती वालों को मेरे खिलाफ भड़कायेगा। उसे मेरे बाप को सजा देने का मौका मिल गया है। ओह! अब मैं क्या करूं। मैंने सचमुच ऐसा कभी नहीं सोचा था।''

''हूं! खैर, परेशानी की कोई बात नहीं है। हम देखेंगे कि हम क्या कर सकते हैं।'' फिट ने कहा और लड़की ने अपनी खूबसूरत निगाहें फिट पर जमा दीं।

शोला कहने लगा–''लड़की! मुझे सारा विवरण बताओ! तुमने अभी एक और नया नाम दंगानियां का लिया है। अब तो कई नाम इकट्ठे हो गये हैं। हमें इनके बारे में कोई जानकारी नहीं है।''

अंततः लड़की ने सारी बातें विवरण सहित बता दीं। न सिर्फ शोला और फिट बल्कि फिट के पूरे खानदान वाले हैरत से वह कहानी सुन रहे थे।

लड़की ने कहा–''और जब उनकी बस्ती की लड़कियां एक-एक करके कुर्बानी की रस्म पूरी कर देंगी–तो फिर कोरसार के दूसरे इलाकों से लड़कियां पकड़-पकड़कर भेंट चढ़ाई जायेगी। इस तरह पूरे कोरसार में बड़ महामारी फैल जायेगी।''

''हां–यह एक बड़ा पहलू है। यह दंगानिया क्या है और यह सब कुछ कैसे हुआ है? कारकास क्या चाहता है?''

''मेरे बाप ने कहा था कि अगर बात मुकद्दस फर्लांग तक पहुंच जाय तो थोड़े अरसे पहले उन्होंने दो ऐसे आदमी कोरसार में छोड़े जिन्होंने कालकों को धूल में मिला दिया और अब कालके हमारी बस्ती में मौजूद नहीं हैं। हो सकता है मुकद्दस फर्लांग उन्हीं दोनों को दंगानिया को खत्म करने के लिये तैनात कर दे।''

फिट ने शोला की तरफ देखा और शोला ने आंखें बन्द करके फिट को इशारा कर दिया कि अभी अपने बारे में न बताया जाय।

लड़की कहने लगी–''पता नहीं अब इसके बाद क्या होगा?''

''तुम्हारी फरारी के बाद काराकास क्या करेगा?''

''बाकी छः लड़कियों में से किसी एक को चुना जायेगा लेकिन रस्म जरूर पूरी की जायेगी।''

"अगर दंगानिया वक्त पर न पहुंचे तो?"

"उस सूरत में लड़की को जंगल में पेड़ से बांध दिया जाता है और दंगानियां जब भी आये, उसे ले जा सकता है। लेकिन ऐसा आज तक नहीं हुआ कि वह वक्त पर न पहुंचा हो।"

"बड़ी जालिमाना रस्म है।" फिट की मां ने खौफजदा अन्दाज में कहा—"तुम्हारी बस्ती के लोग बहुत बड़े बेवकूफ हैं। जिस सीने से बांधना चाहिये उसे वृक्ष से बांध आते हैं। ऐसे लोगों को तो खत्म ही हो जाना चाहिये।"

"काराकास का खौफ लोगों के दिलों पर छाया है और इस हद तक छाया है कि उसकी अपनी बेटी जो सराय में नर्तकी है, उसके बारे में कोई यह सवाल नहीं कर सकता कि वह आज तक कुर्बानी के लिये क्यों नहीं चुनी गयी। जबकि वह इस बस्ती की सबसे हसीन लड़की है और चालाक भी।"

अचानक फिट उछल पड़ा—"वाह! क्या उम्दा बात बतायी है तुमने—क्या नाम है उस लड़की का?"

"लाइना।" लड़की ने जवाब दिया।

"वाह! मुकद्दस शोला! अब तो इस बस्ती में जाना जरूरी हो गया है। सराय में कयाम करके हम नाच गाने का लुत्फ उठायेंगे। कितने अरसे से कोई लड़की नाचती थिरकती हमारे सामने नहीं आयी और वह भी मुकद्दस काराकास की बेटी—क्या उम्दा बात है।"

"गम्भीरता धारण करो फिट! यह मजाक का वक्त नहीं है।" शोला ने कहा फिर वह लड़की से बोला—"ठीक है तुम्हारी मुलाकात मुकद्दस फर्लांग से करा दी जायेगी। और उसके बाद मुकद्दस फर्लांग जो भी फैसला करे।"

"नहीं, इस वक्त इस मुआमले में मुकद्दस फर्लांग को बीच में लाना जरूरी नहीं है। ऐसा करते हैं...हशीमा को लेकर उनकी बस्ती में चलते हैं और वहां दंगानिया को तलाश करके उसे ठिकाने लगा देते हैं।"

शोला ने घूरकर फिट को देखा और बोला—"इतना आसान है क्या यह सब कुछ? तुम जरूरत से ज्यादा बढ़कर बातें मत किया करो। मेरे ख्याल में हमें मुकद्दस फर्लांग की खानकाह तक जाना चाहिये। उनसे इस सिलसिले में निर्देश लेंगे।"

"ठीक है...तुम्हारी मर्जी!"

"मैं भी यही कहना चाहती हूं। फर्ज करो दंगानिया के खिलाफ कोई कार्यवाही की जाती है तो बस्ती जुलारिया के लोग काराकास के कहने पर हंगामा करेंगे और यह सब कुछ इतना आसान नहीं होगा।"

"ठीक है! मुकद्दस फर्लांग इस सिलसिले में कोई मुनासिब बात बता सकेंगे और हम उन्हीं के कहने पर अम्ल करेंगे।"

अतः वह फर्लांग की खानकाह में पहुंच गये। फर्लांग भला शोला को क्या निर्देश देता—शोला की हैसियत तो अब फर्लांग से भी बड़ी थी, लेकिन वह शोला की मंशा समझ गया। दरअसल शोला यह नहीं चाहता था कि उसे दरवेशों के चेयरमैन के रूप में एक्सपोज किया गया। यह शर्त उसने तभी रख दी थी जब फर्लांग ने उसे चेयरमैन बनाया था। शोला को न जाने क्यों बार-बार ऐसा महसूस होता था कि दुनिया के सबसे खौफनाक जादूगर के चरण इस सरजमीन पर पड़ चुके हैं। वह कालकों का देवता बनकर यहां आया था। भले ही भोला ने उसे अब तक कहीं नहीं देखा था लेकिन उसकी मूर्ति तो देखी थी। अगर वृन्दा स्वामी यहां आ चुका है तो फिर शोला को बहुत सतर्क रहना था। पता नहीं उसकी जड़ें कहां-कहां तक फैली हों। शोला यह चाहता था कि उसे बिल्कुल भी एक्सपोज न किया जाय और यह बात गुप्त रखी जाय कि उसे दरवेशों का चेयरमैन बनाया गया है।

हशीमा को दिलासा दिलाने के लिये उसने यह काम किया था और हशीमा के सामने फर्लांग ने शोला और फिट को आदेश दिया था कि वह दोनों हशीमा के साथ उसकी बस्ती जायें और दंगानिया और काराकास के जुल्मोसितम से बस्ती को आजादी दिलायें। अतः वह इस हुक्म के बाद चल पड़े। दरअसल वह चाहता था कि अगर वृन्दा स्वामी उसे देख भी ले तो वह यही समझे कि यह शोला की कोई हमशक्ल कोरसारी है। शोला फिट के साथ चल पड़ी। हशीमा अब उनकी मार्गदर्शक थी।

"हम उस रास्ते से जुलारिया में नहीं जायेंगे जिस रास्ते से तुम भागकर आयी थीं। उस रास्ते पर तुम्हारी जोर-शोर से तलाश हो रही होगी—क्या मालूम वहां काराकास ने कोई जाल बिछा रखा हो।" शोला ने कहा—"वह जंगल किस तरफ है जहां दंगालिया

लड़की को लेने आता है?''

''वह तो उत्तर दिशा में है।''

''क्या हम उस जंगल के रास्ते कुमारिया पहुंच सकते हैं?''

''लेकिन उसके लिये तो हमें एक लम्बा चक्कर काटना पड़ेगा।''

''तुम्हें रास्ता तो मालूम है ना?''

''हां।''

''तब उसी रास्ते चलते हैं।''

इस तरह वे लोग एक लम्बा चक्कर काटते हुए पहाड़ी, दर्रे को पार करते हुए जंगल में पहुंच गये। जंगल में पहुंचते ही उन्होंने एक घने वृक्ष के नीचे पड़ाव डाल दिया और अगले दिन अपने नये सफर का आगाज़ किया। हशीमा अब खुश थी। न जाने वह क्या सोचकर बार-बार मुस्कराने लगती थी। वह आगे बढ़ते गए। कुछ दूर चलने के बाद उन्हें लम्बी-लम्बी झाड़ियों में एक पगडन्डी सी नजर आयी और हशीमा ने उस तरफ इशारा करते हुए कहा।

''इस पगडन्डी पर चलना चाहिये।''

वह लोग पगडन्डी पर सफर करने लगे। काफी फासला तय करने के बाद पगडन्डी कई चरणों में तब्दील हो गयी और बड़ी-बड़ी झाड़ियों दरख्तों के मध्य गुजरने लगी थी। यहां पहुंचकर हशीमा रुक गयी। उसके चेहरे पर गहरी सोच के आसार थे।

''क्यों क्या बात है?'' फिट ने पूछा।

''हमें इस पगडन्डी की कौन-सी शाख पर सफर करना चाहिये?''

''मेरा ख्याल है हमें किसी दरख्त की शाख पर सफर करना चाहिये।'' फिट ने जवाब दिया।

''क्यों?''

''यह फैसला तो तुम ही करोगी कि हमें कौन-सी शाख पर सफर करना चाहिये।''

''आह! मैं रास्ता भूल गयी है।'' वह कुछ देर सोचती रही फिर बोली—''इधर!'' और उन्होंने खामोशी से उधर घोड़े डाल दिये। आगे जाकर जंगल और भी घना होता जा रहा था छोटे बड़े जंगली जानवर नजर आने लगे थे।

काफी फासला तय करने के बाद हशीमा ने कहा—''मेरा

ख्याल है हम रास्ता भटक गये हैं।"

"क्या?" फिट हलक फाड़कर दहाड़ा।

"हां—मुझे यकीन है कि हम गलत रास्ते पर निकल आये हैं।"

"यह यकीन तुम्हें इतना फासला तय करने के बाद क्यों हुआ है? इससे पहले ही यकीन कर सकती थीं।"

"अब मुझे क्या मालूम था कि मैं गलत रास्ते पर जा रहा हूं।" हशीमा ने रुंधी हुई आवाज में कहा।

"समझ में आया।" फिर शोला की तरफ रुख करके बोला—"इसीलिये कहते हैं कि औरत की अक्ल पर कभी भरोसा मत करो। अगर किसी ने औरत के मार्गदर्शन में सफर किया तो समझ लो कि वह सीधा जहन्नुम में जायगा। अब चलो जहन्नुम के रास्ते पर।"

शोला ने कोई जवाब नहीं दिया। थोड़ी देर सोचने के बाद वह हशीमा से बोला—"अब बताओ क्या करना चाहिये? इसी पर आगे बढ़ें।

"हो सकता है यही रास्ता हमें आगे जाकर सही रास्ते पर पहुंचा दे।"

"हो सकता है—चलो।"

और उसके बाद वह आगे बढ़ गये। रात हो गयी थी, लेकिन जगह ऐसी खराब थी कि यहां कयाम करना भी अत्यधिक खौफनाक था। बोदे अलग खौफजदा नजर आ रहे थे। उन लोगों ने बहरहाल वहीं कयाम का फैसला किया और एक जगह बैठ गये।

"फिट, यहां सोने का सवाल ही पैदा नहीं होता। जागना पड़ेगा। हममें से एक-एक को पहरा देना होगा। यह दंगालिया का इलाका है। हम यहां आग भी नहीं जला सकते क्योंकि चारों तरफ खुश्क जंगल पड़ा हुआ है। अगर आग की एक चिंगारी भी आगे बढ़ गयी तो जंगल में आग लग जायेगी और उसके बाद जो कुछ होगा, उसके बारे में तुम जानते हो।"

"नहीं...नहीं, आग मत लगाना।" हशीमा चीख पड़ी।

"आग तो आप लगा चुकी हैं मोहतरमा।"

"मैंने क्या किया है?" हशीमा फिट की तरफ देखकर बोली।

"फिट, इन बातों से अब क्या फायदा।"

"मरवा दिया इस लड़की ने... !"

बहरहाल वह रात जैसे-तैसे गुजर गयी। अगले दिन फिर सफर शुरू हो गया। रास्ते का अब भी कोई पता न था। अगली रात भी वह थककर एक घने दरख्त के नीचे बैठ गये। अगला दिन भी इसी तरह भटकते-भटकते गुजर गया।

"अब मैं एक सलाह दूं।" फिट ने कहा।

"क्या?"

"हम दोनों में से कोई हशीमा से शादी कर ले। यहीं जंगल में हम एक झोंपड़ी बना लें और उसे आबाद कर दें। उसके बाद हमारे छोटे-छोटे बच्चे हों। हम उनकी परवरिश करें और वह जंगल ब्याय कहलायें। दरख्तों पर छलांगें लगाते फिरें—क्या समझे?"

"बक-बक से बाज नहीं आओगे।"

"मैं रास्ता तलाश करने की कोशिश में निरंतर व्यस्त हूं।" हशीमा ने भर्रायी हुई आवाज में कहा।

"अब तो मुझे दुआ मांगनी पड़ेगी कि रास्ता कभी न मिले। हम लोगों को इस जंगल में कयाम करना पड़े। मेरा भाई तो भिन्न किस्म का आदमी है। इसे तो बीवी बच्चों से कोई दिलचस्पी नहीं है। लेकिन मैं अब अपनी जिन्दगी के दिन इस तरह गुजारना चाहता हूं। क्या कहती हो?"

"देखो, मेरे कान न खाओ। मुझे सोचने दो कि किधर की तरफ चलना है।"

"जरूर सोचो। लेकिन मुझे यकीन है कि रास्ता कभी नहीं मिलेगा। मैं तुम्हारी खातिर इस जंगल को आबाद करने के लिये पूरी तरह तैयार हूं।"

हशीमा उसे खा जाने वाली निगाहों से घूरती रही।

जंगल में फल बहुतायत थे। उन्हें खा-पीकर वह लेट गये। दूसरे दिन एक दिशा का चयन करके वह आगे चल पड़े। फिट पर एक शोखी एक खिलंदरापन सवार था। रास्ते में वह छोटे-छोटे पत्थरों से परिन्दों को उड़ाता हुआ आगे बढ़ रहा था।

अंततः शोला ने उसे टोक ही दिया—"आवश्यकता से अधिक शोखी का प्रदर्शन नहीं कर रहे हो तुम?"

"नहीं कोई शोखी नहीं... यह एक भटके हुए मुसाफिर को सही राह पर लाने का तरीका है।"

"क्या मतलब?"

"यह परिन्दे उड़कर जिस तरफ का रुख करेंगे, आबादी उसी सीमा में होगी और अगर नहीं भी होगी तब भी कोई न कोई रास्ता मिल ही जायेगा।"

बहरहाल वह लोग आगे सफर करते रहे। अब वह जंगल के जिस हिस्से में सफर कर रहे थे, वह इतना घना नहीं था। दरख्त और झाड़ियां कम होती जा रही थीं। हवा में भी एक अजीब तरह की खुशबू रची बसी थी। वैसे अभी रात होने में देर थी। लेकिन दिन भर सफर करते रहने से थकन हो गयी थी। हशीमा का तो बुरा हाल था।

अंततः उसने कहा—"मैं थक गयी हूं। क्यों यह हम आराम करें।"

"ठीक है—क्या फर्क पड़ता है।" शोला ने जवाब दिया।

"मुझे सख्त शर्मिन्दगी है। तुम लोग मेरी वजह से इस मुश्किल के शिकार हुए हो।"

किसी ने कोई जवाब नहीं दिया। अंततः एक घने वृक्ष के नीचे उन्होंने अपना सामान रखा और बोदों को घास खाने के लिये खोल दिया। जंगल में घास की कमी नहीं थी और जगह-जगह पानी के जखीरे भी थे। वह तने से टेक लगाकर बैठ गये। कुछ देर तक खामोशी छायी रही और उसके बाद फिट अपनी जगह से उठ गया।

उसने शोला से कहा—"तुम्हें चिड़िया के शिकार से दिलचस्पी है।"

"मैं किसी मासूम जानवर के शिकार में दिलचस्पी नहीं रखता।"

"ठीक है—और हशीमा तुम?"

"क्या मतलब?"

"आओ, चल रही हो न मेरे साथ।"

"नहीं, मैं थक गयी हूं।"

फिट मुंह बनाता हुआ एक तरफ को चल दिया। उसने अपना बोदा हासिल किया और उसके बाद अपने बोदे पर सवार हुआ और एक छोटी-सी पगडण्डी पर बोदे को दौड़ा दिया। वह अपनी धुन में मगन पेड़ों में झांकता हुआ आगे बढ़ रहा था कि अचानक

उसके कानों में एक अजीब-सी आवाज पड़ी। उसने दिशा का अन्दाजा लगाया और फिर आहिस्ता-आहिस्ता उसी तरफ बढ़ने लगा। उसे ऐसा महसूस हुआ जैसे कोई इन्सान कराह रहा हो। पहले तो वह उसे अपना वहम समझा लेकिन कराह की आवाज दोबारा सुनायी दी तो वह चौकन्ना हो गया। आवाज एक वृक्ष की तरफ से आ रही थी। फिट उसी जगह जाकर रुक गया और फिर उसने एक अजीब बात देखी और उसकी आंखें हैरत से फैल गयीं। वह भी एक अत्यधिक खूबसूरत लड़की थी जो वृक्ष के तने से बंधी हुई थी। उसकी गर्दन लटकी हुई थी और बेहोशी के आलम में भी वह कराह रही थी। उसके एक तरफ ढलके हुए सिर से अन्दाजा होता था कि वह होश में नहीं है। फिट ने उसे और करीब से देखा। उसका चेहरा पीला पड़ा हुआ था। वह तीव्रता से बोदे से कूद पड़ा और तीव्रता के साथ अपने शिकारी चाकू से लड़की के बदन में बंधी हुई रस्सियां काट दीं। अगर वह लड़की को पकड़ न लेता तो लड़की जमीन पर गिर जाती। उसने संभालकर लड़की को जमीन पर लिटा दिया। वह हैरान था कि चार दिन से वह इस जंगल में मारे-मारे फिर रहे हैं लेकिन किसी इन्सान का कोई निशान तक नहीं मिला था, तो यह लड़की कहां से आयी और इस हालात में क्यों है। इसका मतलब तो यही हुआ कि कि आबादी कहीं करीब ही है और लड़की किसी दुश्मन का शिकार हो गयी। फिट ने चौकन्ने अन्दाज में चारों तरफ निगाहें दौड़ायीं कि कहीं कोई करीब ही छुपा हुआ तो नहीं है। फिर वह इस तरफ से निश्चिंत हो गया तो उसे होश में लाने की कोशिश की, लेकिन लड़की होश में नहीं आयी थी। अलबत्ता उसके कंठ से कराहें थोड़ी-थोड़ी देर बाद अब भी निकल जाती थीं। अंततः फिट ने उसे उठाकर बोदे की पुश्त पर लिटा दिया और खुद भी सवार होकर बोदे को अपने पड़ाव की ओर मोड़ दिया। जिस वक्त फिट अपने पड़ाव पर वापस लौटा तो अंधेरा फैल चुका था और शोला आग जला चुका था और हशीमा इस वक्त औरत होने का सबूत दे रही थी यानि वह आग पर कुछ पका रही थी। जैसे ही फिट पर उन दोनों की निगाहें पड़ीं, दोनों ही चौंक पड़े। फिट ने अपना बोदा रोका। शोला जल्दी से उठकर खड़ा हो गया। फिट ने लड़की को बाजुओं में लेकर नीचे उतारा। हशीमा भी उसके करीब आ गयी थी, फिट ने लड़की को

जमीन पर लिटाया तो हशीमा चीख उठी।

"सीमोना!" वह चीखती हुई बोली—"यह तुम्हें कहां मिली? बोलो यह तुम्हें कहां से मिली?"

"जंगल में इसे दरख्त से बांध दिया गया था और यह वहीं बेहोश थी और बेहोशी के आलम में कराह रही थी।"

"ओह! यह मेरी दोस्त है। यह भी उन्हीं लड़कियों में से एक थी जो कुर्बानी के लिये चुनी गयी थीं। आह! लेकिन... लेकिन...ओह! यकीनन...मैं समझ गयी ऐसा ही हुआ है।"

"क्या?" फिट ने शोला का चेहरा देखते हुए कहा।

"मेरे फरार हो जाने के बाद पहले उन्होंने मुझे तलाश किया होगा। फिर इसकी बारी आ गयी और इसे जंगल में वृक्ष से बांध दिया गया होगा। शत-प्रतिशत यही हुआ होगा।"

"इसका मतलब दंगानिया इस लड़की तक नहीं पहुंचा।"

"बिल्कुल! अभी तक वह नहीं पहुंचा होगा इसीलिये यह वहां मौजूद थी।"

"फिर! इसका मतलब है देवता हमें कामयाबी दिलाने वाले हैं। अब हमारे लिये दंगानिया को हलाक करना आसान हो जायेगा। वह आयेगा और उसी जगह आयेगा जहां यह लड़की बंधी हुई थी। अगर हम उस जगह की निगरानी करें तो उस जगह का पता चल जायेगा और फिर बस्ती से दूर उसे हलाक करना भी आसान होगा।"

"हां—यह बिल्कुल सम्भव है।" फिट ने कुछ सोचते हुए कहा।

"तब फिर हमें फौरन यहां से चल देना चाहिये और वहीं छुपकर दंगानिया का इन्तिजार करना चाहिये।"

"चलो।"

और इसके बाद उन लोगों ने बड़ी तेजी से तैयारियां की। इस वक्त वह बहुत जज्बाती हो गये थे। फिट ने लड़की को अपने बोदे की पुश्त पर लादा। वह बदस्तूर बेहोश थी, फिट आगे-आगे चल रहा था और दूसरे बोदों पर हशीमा और शोला थे।

फिट ने मुस्कराते हुए हशीमा को देखा और बोला—"तुमने इन्कार कर दिया तो क्या हुआ, देवताओं ने दूसरा प्रबन्ध कर दिया—क्या समझीं?"

"तुम अब भी बाज नहीं आओगे?"

बहुत जल्दी वह उस जगह पहुंच गये जहां वह लड़की मिली थी और फिर उन्होंने खूब गौर करने के बाद एक बहुत बड़े दरख्त के चौड़े तने के पीछे अपनी पनाहगाह बना ली। लड़की को घास पर लिटा दिया गया। हशीमा उसे होश में लाने की कोशिश कर रही थी। बहुत देर के बाद वह इस कोशिश में कामयाब हो गयी। लड़की में हल्की-सी जुम्बिश पैदा होने लगी थी। उसके मुंह से कराहें निकलने लगीं। यह कराहें बेहोशी में डूबी हुई नहीं थी। वहां मौजूद तमाम लोग उसे होश में आते देख रहे थे। उसने चंद लम्हों के बाद आंखें खोल दीं। आंखें खुलते ही उसके मुंह से दबी हुई सी चीख निकली।

"डरो नहीं। देखो! मैं हशीमा हूं। डरो नहीं सीमोना।"

लड़की ने यह सुनकर सिर उठाया और अचानक ही वह हशीमा को देखकर उससे लिपट गयी।

"सीमोना...सीमोना...।" हशीमा उसे पुकारती रही और चुमकारती रही। लड़की बिलख-बिलख कर रोने लगी और काफी देर तक वह दोनों इसी तरह से रोती रहीं।

शोला ने फिट के कान में कहा—"औरतों में यह बड़ी कमजोरी है। जरा-सी बात हो तो ऊं-ऊं करने के अलावा कुछ नहीं करतीं। अब यह वक्त रोने का नहीं है। इस वक्त तो हल्की-सी आवाज भी दंगालिया को सतर्क कर सकती है।"

सीमोना बहुत कमजोरी महसूस कर रही थी। उसने हशीमा से कहा—"बहुत देर से भूखी हूं। भूख से मेरे होशो हवास रुखसत होते जा रहे हैं। क्या मुझे कुछ दे सकती हो?"

"हां—क्यों नहीं।" हशीमा ने कहा और गोश्त का एक टुकड़ा उसे खाने के लिये दिया। जब सीमोना की हालत बेहतर हुई तो उसने अपनी कहानी सुनायी। कहानी बस यही थी कि हशीमा के फरार होने के बाद उसे काफी तलाश किया गया और अंततः सीमोना को कुर्बानी के लिये चुन लिया गया और फिर उसे यहां जंगल में दरख्त से बांध दिया गया।

हशीमा अपने बाप के लिये बहुत परेशान थी। अतः वह बोली—"तुम यही बताओ सीमोना! मेरे फरार होने के बाद मेरे घराने पर क्या गुजरी। मेरे बाबा का क्या हुआ?"

"तुम्हारी फरारी के बाद मुकद्दस काराकास बहुत नाराज हुआ। बस्ती के इतिहास में यह पहली घटना थी। बस्ती के लोग खौफजदा थे कि अब देवता नाराज हो जायेगा और अब बस्ती पर विपत्तियों का पहाड़ टूट पड़ेगा। काराकास ने तुम्हारे बाप के पास अपने आदमी रवाना किये कि वह तुम्हारे बाबा को हाजिर करें मगर...।" सीमोना खामोश हो गयी।

"मगर क्या?"

"वह घर पर नहीं मिले। सारी बस्ती तलाश कर ली लेकिन उन्हें तुम्हारे बाबा का कहीं पता नहीं चला। शायद उन्होंने खतरा महसूस कर लिया था और जानते थे कि अब काराकास उनकी तरफ रुख करेगा। वह कहीं रूपोश हो गये हैं।"

"न जाने मेरे बाबा कहां गये होंगे?"

"हो सकता है उन्हें भी हम जैसे लोग मिल गये हों।" फिट ने कहा।

"यह तो संयोग है कि तुम लोग इस तरफ आ गये, वरना मेरी जान का बचना असम्भव था।" सीमोन ने भर्राई आवाज में कहा।

"तुम्हारी जान बचाने के लिये ही तो ऊपर वाले ने हमें अपनी राह से भटका कर यहां भेज दिया।" फिट ने कहा।

अभी हशीमा ने कुछ कहने के लिये मुंह खोला ही था कि उन्हें आहट-सी महसूस हुई और शोला चौकन्ना हो गया।

"शायद वह आ रहा है।" शोला ने फिट से कहा। दोनों लड़कियां भयभीत होकर फिर एक-दूसरे से लिपट गयीं। थोड़ी देर तक आहटें सुनायी देती रहीं, उसके बाद बन्द हो गयीं।

हशीमा ने कहा—"नहीं, यह दंगालिया नहीं हो सकता। वरना आहटें करीब आ जातीं।"

"फिर कौन हो सकता है?"

"कोई जंगली जानवर।" अभी शोला का वाक्य खत्म ही हुआ था कि वह आहट फिर सुनायी दी। आहटें अब इतने करीब थीं कि दिशा का अनुमान लगाना अब आसान हो गया। शोला का पिस्तौल उसके हाथ में तैयार था और फिट भी गाफिल नहीं था। लेकिन जब उन्होंने आने वाले को देखा तो वह हैरान रह गये। दरख्त के तने की आड़ से जो शख्स प्रकट हुआ था, उसकी उम्र

अच्छी खासी थी और उसके दोनों हाथ सामने की तरफ उठे हुए नजर आ रहे थे। वह अब उसे ध्यानपूर्वक देखते रहे। वह आहिस्ता-आहिस्ता उन लोगों की तरफ कदम बढ़ा रहा था और उसके हाथ अब भी उठे हुए थे। थोड़ी देर के बाद वह करीब आ गया और अचानक हशीमा के मुंह से एक और चीख निकली। वह सीमोना को छोड़कर तेजी से आगे बढ़ी और बूढ़े से लिपट गयी। बूढ़ा एकदम घबरा गया। उसके हाथ अब भी ऊपर उठे हुए थे और हशीमा उसके सीने से लिपटी सिसकियां ले रही थी।—एक लम्हे के अन्दर-अन्दर पूरी परिस्थिति उनकी समझ में आ गयी। शोला ने पिस्तौल अपनी पेटी में रखा और उसके बाद सीमोना भी आगे बढ़ गयी। दोनों लड़कियां बूढ़े के दायें-बायें बाजू से लिपटकर रो रही थीं। बूढ़े ने हैरानी से उन दोनों को देखा फिर फटी-फटी आंखों से उन लोगों को देखने लगा।

उसके बाद बोला—"यह....यह दोनों बच्चियां....यह हशीमा मेरी बेटी...मेरी बच्ची। यह तू ही है।" एक बार फिर उसने हशीमा को अपने सीने से लिपटा लिया। शोला के होंठों पर मुस्कराहट थी। वह इस बात से बहुत खुश था कि हशीमा का बाप उससे मिल गया था। सीमोना ने उसके बारे में बताया था कि वह रूपोश हो गया है।

फिट ने कहा—"हम तो दंगानिया की तलाश कर रहे थे। आप कहां से आ गये बुजुर्ग महाशय सारगस।"

"ओह! तुम मेरा नाम भी जानते हो। तुम कौन हो और यह बच्चियां।"

हशीमा ने बूढ़े को सारा विवरण बताया तो बूढ़ा कहने लगा—"किस जुबान से तुम्हारा शुक्रिया अदा करूं। बेहद एहसानमंद हूं कि तुमने न सिर्फ मेरी बच्ची की जिन्दगी बचायी बल्कि उसकी पूरी रक्षा भी की। वैसे बेटे! अगर तुम दंगानिया का इन्तिजार कर रहे हो तो दंगानिया कोई मामूली चीज नहीं है जिसे तुम आसानी से हलाल कर दो। वह किसी हाथी से ताकतवर है। बन्दूक की गोलियां उस पर असर करेंगी भी या नहीं यह नहीं मालूम।"

"इसकी तो आप बिल्कुल फिक्र न करें। जिस शख्स के सामने आप खड़े हुए हैं, अगर दंगानिया ने उसकी आंखों में आंखें

डालकर देख भी लिया तो बेहोश हो जायेगा।''

"बेकार की बातें मत करो फिट। हमें सोच समझकर काम करना चाहिये।''

''ठीक कहता है यह नौजवान! कुछ करो तो सोच समझकर करो।'' बूढ़े ने कहा।

"''लेकिन तुम कहां रूपोश थे बाबा?'' हशीमा ने पूछा।

''मैं इसी जंगल में रूपोश हो गया था। जैसे ही मुझे पता चला कि तुम फरार होने में कामयाब हो गयी हो, मैं समझ गया कि काराकास सीधा मेरी ओर ही रुख करेगा। अतः मैंने घर छोड़ दिया और यहां जंगल में निकल आया। मैं यहां के तमाम रास्तों से वाकिफ हूं। यहां से निकल भी जाता। लेकिन फिर मुझे सीमोना के बारे में मालूम हुआ और मैंने इसे तलाश करना शुरू कर दिया। मैं भटकता-भटकता इधर आ निकला। जब मैंने इसे दरख्त से बंधे देखा तो फिर इसे मौत के मुंह में छोड़कर आगे बढ़ने का सवाल ही पैदा नहीं होता था। मैंने यही सोचा था कि इसे आजाद कराकर अपने साथ ले निकलूंगा। अभी मैं अपनी इस कोशिश में कामयाब नहीं हुआ था कि मैंने इस नौजवान को देखा जिसने सीमोना को आजाद करा दिया और अपने साथ लेकर चला गया। बेदों की टापों की आवाजें सुनकर मैं एक वृक्ष पर चढ़ गया था। वहीं से मैंने उसे देखा क्योंकि यह उसे छुड़ाकर बोदे पर ले गया था, इसलिये मैं कुछ नहीं कर सकता था। मैं तो यह भी नहीं जानता था कि वह कौन है। दोस्त है या दुश्मन यह भी अन्दाजा नहीं था। रात हो जाने के कारण मैं यहीं रुक गया और आगे जाने का इरादा तर्क कर दिया। फिर थोड़ी देर बाद तुम लोग आ गये और अंततः मैं इस नतीजे पर पहुंचा कि मैं अपने आपको तुम्हारे हवाले कर दूं। मैं नहीं समझ पाया था कि तुम लोग कौन हो। पहले तो मैं तुम लोगों को काराकास के ही आदमी समझा था और मेरा ख्याल था कि उसके आदमी जंगलों और रेगिस्तानों में मुझे तलाश करते फिर रहे हैं—लेकिन बहरहाल यह संयोग ही था कि तुम...यह।'' कहकर सारगस खामोश हो गया।

''मुझे एक बात बताना पसंद करेंगे?'' शोला ने कहा—''ताराकास आपका इतना विरोधी क्यों है?''

''हां—मैं तुम्हें बताऊंगा—लेकिन मैं भूखा हूं। क्या कुछ खाने

का बन्दोबस्त हो जायेगा?"

"हां–खाना मौजूद है।"

बूढ़े को खाना दिया गया। अतः बूढ़े ने जब खाना पेट भरकर खा लिया तो उसकी आंखें बन्द होने लगीं। फिर मैं कहा–"खाने में कोई ऐसी चीज तो नहीं थी जिससे इन्सान बेहोश हो जाय।"

"भूखे आदमी को अगर भरपेट खाना दे दो तो उसकी कैफियत इससे भिन्न नहीं होती। इसे आराम करने दो। हमें इसकी हिफाजत करनी होगी।" अतः उसे आराम करने का मौका दे दिया गया।

उसके बाद यह सब दंगालिया का इन्तिजार करने लगे। हर आहट पर चौंक पड़ते और आंखें फाड़-फाड़ कर देखने लगते। फिर लड़कियों को भी नींद आने लगी।

सीमा ने हशीमा से कहा–"यहां सोना बेहद खतरनाक हो सकता है। मैं इन लोगों के बारे में ज्यादा नहीं जानती जो दंगालिया की इन्तिजार में यहां बैठे हैं। इनसे पूछो कि क्या यह दंगालिया को खत्म कर सकेंगे। मुश्किल होगा–यह तो बहुत मुश्किल होगा। ऐसी सूरत में क्या यह उचित नहीं कि यहां से निकल जाया जाय।"

"नहीं, बड़ा मुश्किल काम है। यह आसानी से नहीं जायेंगे।"

और उसके बाद खामोशी छा गयी। रात आहिस्ता-आहिस्ता आगे सफर करने लगी। जंगल में अंधकार के साथ-साथ सन्नाटा छाया हुआ था। यह सन्नाटा भी अच्छा खासा खौफनाक लग रहा था। वह लोग बातें करते रहे। थोड़ी देर बाद सारगस भी दुरुस्त हालत में आ गया और शोला के अनुरोध पर उसने अपनी कहानी सुनाना शुरू कर दी।

"बहुत पुरानी बात है, इतनी पुरानी कि हम बहुत छोटे थे। यानि काराकास और मैं। हमारी दोस्ती बहुत गहरी थी। हर वक्त साथ उठना बैठना, लेकिन मेरे और काराकास के स्वभाव में जमीन आसमान का फर्क था। इस अंतर के बावजूद हमारी दोस्ती एक मिसाली हैसियत रखती थी। वह शंख और हाजिरजवाब था। वक्त गुजरने के साथ-साथ हम भी जवान हो गये। हमारी दोस्ती बदस्तूर थी। फिर न जाने कैसे उसके दिमाग में जड़ी बूटियों का ज्ञान प्राप्त करने की खब्त सवार हो गयी और फिर वह इतना दीवाना हो गया कि दिन-रात जंगलों की खाक छानने में व्यस्त हो गया। मुझे भी

अपने साथ रखता था। हालांकि मुझे उसके शौक से कोई दिलचस्पी नहीं थी। लेकिन उसकी खातिर मैं उसके साथ लगा रहता। शुरू-शुरू में तो मैं भी उसके साथ मिलकर जड़ी-बूटियां तलाश करता रहा, लेकिन फिर जब उसका जुनून हद से ज्यादा बढ़ गया तो मुझे उक्ताहट होने लगी और फिर एक अजीब घटना घटी। एक दिन वह कुछ जड़ी बूटियों को उखाड़ने और उन्हें सुरक्षित करने में लगा हुआ था। मैं उसे अपने काम में व्यस्त छोड़कर जंगल में निकल गया। फिर एक वृक्ष के नीचे मुझे अचानक एक लड़की का जिस्म बेतरतीबी से पड़ा हुआ महसूस हुआ। पहले मैं यही समझा कि किसी औरत को जंगली दरिन्दों ने मार डाला है। लेकिन उसके जिस्म की जुम्बिश और कराहट ने मुझे चौंका दिया। वह अभी जिन्दा थी। मेरे दिल में हमदर्दी उभर आयी और मैं वहीं जमीन पर उसके निकट बैठ गया और उसे होश में लाने की कोशिश करने लगा। थोड़ी देर बाद वह होश में आ गयी। उसने आंखें खोल दीं और उसकी पहली नजर मुझ पर पड़ी। वह एक नौ उम्रयौवना थी। खूबसूरत, स्याह आंखें, गुदाज जिस्म। यह वह वक्त नहीं था कि मैं उसके हुस्न में खो जाता। उसके जख्मों की मरहम पट्टी जरूरी थी। मैंने उसे सहारा देकर उठाना चाहा। उसके उठ जाने के बाद मुझे अन्दाजा हुआ कि उसके पांव में तेज पीड़ा है और वह उठ नहीं सकती। मैं उसकी यहां मौजूदगी पर हैरान था और समझ में नहीं आ रहा था कि इस जंगल में एक लड़की का क्या काम। वह बोलने के काबिल नहीं थी। मैंने जिस तरह भी सम्भव हुआ उसे सहारा दिया और अपने साथ लेकर एक तरफ चल दिया। चंद ही कदम चलने के बाद मुझे अन्दाजा हो गया कि लड़की अपने पैरों पर नहीं चल सकती। अतः मैंने उसे बाजुओं में उठा लिया और उसे लेकर चल पड़ा। फिर मेरी कैफियत अजीब सी हो रही थी। इस तरह किसी लड़की को बाजुओं में लेकर चलने का मेरा पहला तजुर्बा था। बहरहाल काराकास के पास पहुंच गया जो अभी तक बूटियों में उलझा हुआ था। वह मुझे और लड़की को देखकर चौंक पड़ा और अपना काम छोड़कर मेरी तरफ आकर्षित हो गया। मैंने लड़की को जमीन पर लिटा दिया। उसकी सवालियां निगाहों के जवाब में मैंने उसे अपनी तमाम सरगर्मी बता दीं। जिसे सुनकर वह लड़की की तरफ आकर्षित हो गया। वह जड़ी-बूटियों का माहिर

था। उसने कुछ पत्ते लड़की के पांवों में बांधे और लड़की को सुकून का एहसास हुआ। बाद में उसने बताया कि वह किसी दरिन्दे के डर से पेड़ पर चढ़ गयी थी और उसके जाने के बाद वह दरख्त से उतरने के लिये कूद पड़ी थी। जिसकी वजह से इतनी गहरी पीड़ा में फंस गयी। उसके बाद उसने अपने कबीले के बारे में बताया जहां उसके बाप का अत्याधिक गिरोह था। उसका सम्बन्ध एक मोआज्ज़िज घराने से था, लेकिन उसके बाप की दुश्मनी ने उसे भी दरबदर कर दिया था और वह जंगल में पनाह लेने पर मजबूर हो गयी। दुश्मनों ने उसके बाप को कत्ल कर दिया था और वह अपनी जान बचाने में कामयाब हो गयी थी। उसने कहा कि वह दोबारा अपने कबीले में नहीं जाना चाहती। अतः हम उसे अपने साथ ले आये। काराकास ने भी उसे अपनी सेवा पेश की थी लेकिन लड़की ने उसके साथ जाने से इन्कार करके मेरे साथ चलना पसंद किया और यहीं से मैं और काराकास के बीच दुश्मनी पड़ने लगी। काराकास उस लड़की को चाहने लगा था और उससे शादी करना चाहता था। मगर लड़की का झुकाव मेरी ही ओर था। मैं भी उसे पसंद करता था। बस यहीं हमारी दुश्मनी शुरू हो गयी। जब मेरी और उस लड़की की शादी हो गयी, काराकास ने मुझसे दोस्ती खत्म कर दी। बहरहाल, उसके बाद वह क्या करता रहा मुझे यह जानने की जरूरत नहीं थी। वक्त गुजरता रहा। उसने भी शादी कर ली और जड़ी बूटियों में इतनी महारत हासिल कर ली कि वह बस्ती का एक बहुत बड़ा हकीम बन गया। उसके साथ ही वह तंत्रमंत्र भी करने लगा। धीरे-धीरे वह लोगों का रहनुमा बनता चला गया। और अब उस बस्ती का मजहबी पेशवा है। उसने बजाहिर मुझे कोई नुकसान नहीं पहुंचाया। लेकिन मैं उसकी तरफ से निश्चिंत नहीं था और चौकन्ना रहता था। मुझे बाद में इस बात का पूरी तरह एहसास हो गया था कि वह अपनी शिकस्त भूला नहीं है। लेकिन मेरे गुमान में भी नहीं था कि वह इंतकाम लेने के लिये इतना लम्बा इन्तिजार करेगा। हशीमा की पैदाइश के बाद हशीमा की मां लम्बी बीमारी का शिकार होकर मेरा साथ छोड़ गयी। उसके मरने के बाद मैंने हशीमा की परवरिश की। मैं बाप और मां बनकर उसे परवान चढ़ाने लगा। आह! मैं नहीं जानता था कि कमबख्त काराकास हशीमा के जवान होने का इन्तिजार कर रहा है। यहां

तक कि उसके इन्तकाम का दिन आ पहुंचा। उसने जानबूझकर दंगानिया के हवाले करने के लिये हशीमा का चयन किया था। वह एक ऐसा भयानक इन्तकाम था जिसकी मिसाल मिलना मुश्किल थी। मैं उसकी तरफ से होशियार था। यह सब कुछ होने के बाद जब मुझे इल्म हुआ कि हशीमा फरार हो गयी है तो मैंने भी जंगल की राह इख्तियार कर ली।" इतना कहकर वह खामोश हो गया।

"चलो खैर, ठीक है। जो होना था वह हुआ। अब देखते हैं कि क्या होता है।" शोला ने कहा। उसके बाद खामोशी छा गयी।

सबको नींद आ रही थी। अतः एक एक करके वह सब लेटना शुरू हो गये और थोड़ी देर के बाद शोला के अलावा सब सो रहे थे। शोला हंस रहा था उन पर जो इस खौफनाक जंगल में भी अपने घर की तरह बेफिक्री से सो रहे थे। लेकिन इन हालात में वह नहीं सो सकता था। शायद उसे अपनी जिम्मेदारी का एहसास था। वह चित्त लेटा हुआ तमाम हालात पर गौर कर रहा था। काफी वक्त गुजर गया। जरा ही आहट पर भी वह चौंक पड़ता। उसके कान हर आहट को सुन रहे थे। उस वक्त रात का आखरी पहर था कि अचानक शोला को एक अजीब सी बदबू का एहसास हुआ। उसने लेटे-लेटे लम्बी सांसें लेना शुरू कर दी। वह दुर्गन्ध करीब आती जा रही थी। ऐसी दुर्गन्ध थी जैसे कच्चे गोश्त के सड़ जाने से पैदा होती है। शोला ने एक लम्हे के लिये अपने जहन पर जोर दिया और फिर एक ख्याल बिजली की तेजी से उसके जहन में कौंध गया। उसने अपने सोये हुए साथियों पर निगाह डाली और आहिस्ता से उठकर बैठ गया। उस वक्त जमीन पर पड़े हुए खुश्क पत्तों की आवाज सुनायी दे रही थी और साथ ही एक ऐसी धमक का भी एहसास हो रहा था जैसे एक वजनी शै जमीन पर सफर कर रही हो। शोला के लिये यह लम्हात बड़े अहम थे। उसे गुमान हुआ कि जमीन पर धमक पैदा करने वाला जानवर नुमा इन्सान दंगानिया के अलावा कोई नहीं हो सकता। उसका पूरा वजूद होशियार हो गया। वह अंधेरे में निगाहें जमाये उधर देख रहा था जिधर से वह आहटें आ रही थीं। फिर उसने अपने पिस्तौल पर हाथ रखा और खड़ा होकर कुछ आगे बढ़कर रुक गया।

अंततः वह शै नजर आ ही गयी। वह दूर था और उसका रुख उधर ही था जिधर सीमोना दरख्त पर बांधी गयी थी। वह अजीब सी मखलूक आगे बढ़ती जा रही थी। अन्दाज ऐसा ही था जैसे चल न रहा हो, लुढ़क रहा हो। शोला वृक्षों की आड़ लेता खुद भी उसकी तरफ बढ़ने लगा। उसने फिलहाल अपना इरादा बदल दिया था। चाहता तो उसे अपनी तरफ आकर्षित कर लेता और उससे भिड़ जाता। मगर अब वह उसका पीछा करके यह सोच रहा था कि जानवर नुमा इन्सान या इन्सान नुमा जानवर रहता कहां है। अंततः वह उस जगह पहुंच गया जहां वह दरख्त था। उसे यहीं आना चाहिये था। रुककर वह चारों तरफ गर्दन घुमाकर देखने लगा। शायद उसे हैरत थी कि वह हस्ती वहां मौजूद नहीं है जिसे उठाकर ले जाने के लिये वह आया था।

शोला कुछ फासले पर खड़ा सतर्कता के साथ उसकी हरकत का जायजा ले रहा था। वह यह अन्दाजा करना चाहता था कि यह जानवर है या इन्सान या फिर दोनों के दरमियान की कोई चीज। वह काफी विशाल आकार का था और उसके बदन से तेज बदबू उठ रही थी। सचमु वह इतना बदसूरत था कि कोई भी उसे एक निगाह देखता तो बेहोश हो जाता। विशेष रूप से लड़कियां। जिस्म के लम्बे-लम्बे बाल धूल से अटे पड़े थे। लिबास तो कोई था ही नहीं। बाल ही उसके जिस्म को छुपाये हुए थे। चेहरा खौफनाक, आंखें सुर्ख और दहाना इतना बड़ा कि उस पर शेर के दहाने का गुमान होता था। शोला सोच रहा था क्या वह माहोर की प्रजाति का दरिन्दा है?

दंगानिया को लड़की न मिलने पर गुस्सा आ रहा था जिसका इजहार उसने हाथों को मरोड़-मरोड़ कर और मुक्के बना-बनाकर फिजा में चलाते हुए किया। उसके मुंह से अजीबोगरीब आवाजें निकल रही थी। वह आवाजें शब्दों के रूप में थीं। तैश में आकर उसने जमीन पर पांव मारने शुरू कर दिये। शोला गौर से उसे देख रहा था और उसके जहन में न जाने कैसे-कैसे ख्यालात आ रहे थे। क्या यह कहानी वही है जिस अन्दाज में बयान की जाती रही है या उसकी पृष्ठभूमि में कुछ और है। उसने फैसला कर लिया कि इस पहेली को हल करके रहेगा।

शोला ने उन लोगों के बारे में सोचा जो सुकून की गहरी

नींद सो रहे थे। एक लम्हे के अन्दर उसने यह फैसला कर लिया कि किसी भी कीमत पर उन लोगों को इन मुआमलात से आगाह करना उचित नहीं होगा। वह अकेला ही दंगानिया का पीछा करके और अगर परिस्थिति ऐसी हुई कि पीछा जारी न रख सका तो फिर वापस आ जायेगा। यह भारी भरकम दरिन्दा नुमा इन्सान अपने भारी कदमों के निशान जरूर छोड़ेगा। इन निशानों का पीछा किया जा सकता है। उसे यह भी अन्दाजा था कि बस्ती में यह खौफनाक बला एक तरह से मजहबी हैसियत रखती है। इसलिये इसकी हलाकत खामोशी से हो जानी चाहिये। अगर बस्ती वालों पर यह राज खुल गया तो मुसीबत खड़ी कर देंगे। बहरहाल शोला इसकी प्रतीक्षा में था कि दंगानिया वापसी के लिये पलटे। दंगानिया काफी देर तक अपना क्रोध प्रकट करता रहा और उसके बाद वह घूमकर एक जानिब चल पड़ा। शोला तैयार हो गया और जब वह इतना दूर चला गया कि शोला उसका पीछा करते हुए कोई खतरा न महसूस करे तो शोला ने भी कदम आगे बढ़ा दिये और बड़ी सतर्कता के साथ दंगानिया का पीछा करने लगा। दंगानिया घने जंगल के अन्दर बढ़ता जा रहा था। उसने एक बार भी पलटकर नहीं देखा। वह पता नहीं क्या शै की। बहरहाल यह भी एक सच्चाई थी कि इस जंगल में कदम रखने की हिम्मत किसकी पड़ती जहां दंगानिया का वजूद हो। शोला देखता जा रहा था कि जंगल आगे घना होता जा रहा है और दरख्त इस कदर करीब-करीब थे कि रास्ते तंग होते जा रहे थे। हालांकि जहां उन लोगों ने पड़ाव डाला था वह जगह इतनी घनी नहीं थी और वहां दरख्त भी इतने करीब-करीब नहीं थे जितने अब होते जा रहे थे। इसके अलावा घास बहुत ऊंची थी। जिस पर चलने से शोला को खासी परेशानी हो रही थी। लम्बी-लम्बी घास बहुत मजबूत और मोटी थी और पैरों में उलझ रही थी।

वह अजीबो-गरीब मखलूक पीछा किये जाने से बेखबर लुढ़कती हुई चली जा रही थी। लेकिन शोला ने थोड़ी देर बाद महसूस किया कि अब उसके कदमों की रफ्तार तेज होती जा रही है। अचानक शोला के जहन में एक खास ख्याल आया और उसने काराकास के बारे में सोचा—हो सकता है यह काराकास का ही कोई पालतू दरिन्दा हो। हालांकि एक बात इस विचार का खंडन

करती थी—यानि यह कि कुर्बानी की। यह एक रस्म तो बहुत पुरानी है ओर न जाने कब से बस्ती वाले कुर्बानी की रस्म अदा करते चले आ रहे हैं। लेकिन दंगानिया—क्या दंगानिया इतने अरसे से जिन्दा चला आ रहा है? इसकी उम्र क्या है? बहरहाल, उसे अफसोस होने लगा कि इस बारे में उसने ज्यादा जानकारी हासिल क्यों नहीं की और यह क्यों नहीं मालूम किया कि कुर्बानी का यह तरीका कब से ईजाद हुआ कि दंगानिया लड़की को उठाकर ले जाये। इस सवाल का जवाब जरा मुश्किल ही था।

पीछा लम्बा होता जा रहा था। यों लगता था जैसे दंगानिया जंगल के आखरी सिरे की तरफ जा रहे हो। कितना रास्ता तय हो गया, उसका अन्दाजा लगाना ही मुश्किल था। अचानक ही शीला ने दंगानिया को रुकते हुए देखा। यह जगह घने दरख्तों और झाड़ियों से घिरी थी। और यहां अंधकार भी आम जगहों की अपेक्षा कुछ अधिक ही था। शीला ने फौरन अपने आपको एक वृक्ष की आड़ में कर लिया। वह आंखें फाड़-फाड़कर उस जगह को देख रहा था जहां इस वक्त दंगानिया खड़ा था। फिर अचानक ही शीला की दृष्टि में एक झोंपड़ी का मंजर नुमाया हुआ। घास-फूस से बनी हुई यह झोंपड़ी कॉफी बड़ी मालूम होती थी और उसके दरवाजे पर दंगानिया खामोश खड़ा हुआ था। शीला ने एक गहरी सांस ली। क्या वहशत के इस देवता ने यह झोंपड़ी अपने हाथों से अपने लिये बनायी थी। क्या इसका जहन इन्सानों की तरह सोच सकता है या फिर कुछ ऐसे इन्सान थे जिन्होंने इसके लिये यह जगह बनायी थी। बहरहाल, यह तो पता लग गया था कि दंगानिया लड़कियां इसी जगह लगता है। पता नहीं दंगानिया यहां अकेला रहता है या कोई और भी उसके साथ है। इसके बारे में अन्दाजा लगाना मुश्किल था। यही क्या कम बात थी कि उसने इस देवता की रिहाइशगाह देख ली थी।

अचानक ही उसे एहसास हुआ कि दंगानिया अपने आसपास का वातावरण शंकित निगाहों से देख रहा है। जब उसे यकीन हो गया कि उसे देखने वाला कोई नहीं है तो वह झुका और झोंपड़े के दरवाजे से अन्दर दाखिल हो गया। शीला यह फैसला नहीं कर पाया था कि उसे क्या करना चाहिये। यह बात उसके जहन में थी कि अन्दर झोंपड़ी में वह रहता है—पता नहीं अकेला है या उसके

साथ कोई और भी है। दिल तो चाह रहा था कि उसका भी पता लगा ले लेकिन वह जल्दबाजी में कोई कदम नहीं उठाना चाहता था। अभी उसे वहां रुके हुए बहुत ज्यादा देर नहीं हुई थी कि अचानक झोंपड़ी के दरवाजे में कुछ हलचल नजर आयी और शोला ने अन्दर से किसी को बाहर निकलते देखा। वह एक लम्बी कदकाठी का स्वामी था—जो इन्तहाई बदसूरत किन्तु चौड़ा चकला देव समान था। वह झोंपड़ी के दरवाजे से बाहर निकला। उसने इधर-उधर देखा और उसके बाद जंगल में एक तरफ देखने लगा। शोला के लिये यह फैसला करना मुश्किल हो गया कि अब उसे क्या करना चाहिये। उसके सामने दंगानिया उस झोंपड़ी में घुसा था और यह शख्स बाहर निकला था। वह सोचने लगा कि दंगानिया के बाहर निकलने का इन्तिजार करे या फिर इस शख्स के पीछे जाये, लेकिन उसके जहन ने कहा इस शख्स का पीछा करना अधिक उचित होगा। अतः वह बड़ी सतर्कता के साथ छुपे स्थान से बाहर निकला और धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगा। वह उस अजनबी का पीछा कर रहा था। लम्बे चौड़े कद के मालिक अजनबी के अन्दाज में बड़ी लापरवाही थी और वह बेपरवाही से आगे बढ़ता चला जा रहा था। उसकी कल्पना में भी यह बात नहीं थी कि उसका पीछा किया जा रहा है। शोला उसका पीछा करता रहा। रास्ते तय होते रहे। झोंपड़ी काफी पीछे रह गयी थी। शोला सोच रहा था कि अब क्या करना चाहिये। क्यों न इस शख्स को रोककर इसके बारे में जानकारी हासिल की जाय। यहां और कोई था भी नहीं। मुकाबला एक से एक का रहेगा। वैसे भी रात तेज रफ्तारी से बीतती जा रही थी और थोड़ी देर बाद दिन निकलने वाला था। जो कुछ करना था कर लेना चाहिये। यह फैसला करने के बाद शोला ने तेजरफ्तारी से कदम आगे बढ़ाये और जब वह पिस्तौल की रेंज में आ गया तो शोला ने उसे ललकारा।

"रुक जाओ पहलवान।" शोला की कड़कदार आवाज सन्नाटे में गूंजी। अजनबी अपनी जगह उछल पड़ा। वह सोच भी नहीं सकता था कि इस वीरान जंगल में उसकी मुलाकात किसी इन्सान से हो सकती है। शोला ने फिर कहा—"तुम रिवॉल्वर की जद में हो। अगर जरा-सी भी जुम्बिश की तो गोली भेजा उड़ा देगी।"

लम्बे कद के पहलवान ने यह शब्द सुने और बात समझ

में आ गयी। इसका पता इस बात से चलता था कि उसने अपने दोनों हाथ ऊपर उठा दिये थे।

शोला ने उसे नया हुक्म दिया—"चलो, उस तरफ रुख करो।" अजनबी ने इस हुक्म की भी तामील की। उसकी आंखें असाधारण रूप से चमकदार थीं और उसके चेहरे पर जो सुकून था, उससे पता चलता था कि वह शोला की कोई हैसियत नहीं समझता। बस तफरीह में वह उसकी आज्ञा का पालन कर रहा है। शोला को भी महसूस हो रहा था कि हाथ-पैरों के द्वंद में उसे काबू करना आसान न होगा। शोला उसका कत्ल तो कर सकता था लेकिन किसी को जीते जी काबू करना एक अलग फन था। शोला को उसकी बेपरवाही पर भी हैरत हो रही थी। ऐसा मालूम होता था शोला की आज्ञा का पालन उसने महज उसे खुश करने के लिये किया है वरना उसकी और कोई हैसियत नहीं है।

शोला ने गुर्राती आवाज में कहा—"चलो सामने की ओर रुख करो—उस तरफ।" शोला ने एक तरफ रुख किया तो अजनबी उस तरफ बढ़ने लगा। शोला एक लम्हे के लिये हैरान रह गया था। अनजबी का इस तरह आज्ञाकारी बनने वाला अन्दाज खौफनाक था। बहरहाल, वह उसे लिये हुए आगे बढ़ने लगा। उसका ख्याल था कि वह इस अजनबी को उस जगह ले जायेगा जहां उसके दूसरे साथी मौजूद हैं। वह दोनों आगे बढ़ते चले गये। समझ में नहीं आता था कि वह पहलवान बिना कोई सवाल जवाब किये उसकी आज्ञा का क्यों पालन कर रहा है। अचानक ही एक जगह अजनबी ने ठोकर खायी और जमीन पर ढेर हो गया। शोला इस परिस्थिति के लिये तैयार था, लेकिन दूसरे ही लम्हे वह भी संभल गया।

उसने गुर्राते हुए लहजे में कहा—"सीधे खड़े हो जाओ।"

अजनबी सीधा खड़ा हो गया मगर अब उसने हाथ नहीं उठाये थे बल्कि उसके दोनों हाथों में दो चाकू चमकने लगे थे। शोला ने दोनों चाकुओं की चमक देख ली थी। शोला चाहता तो उसे गोली मार सकता था लेकिन वह उस शख्स को खत्म नहीं करना चाहता था।

"अकेले ही हो?" अचानक उसने बड़े अजीबोगरीब अन्दाज में कहा।

"क्या मतलब?"

"मैंने सोचा शायद तुम मुझे अपने साथियों के पास ले जा रहे हो—बेहतर यही था कि मैं चला चलूं और एक साथ ही काम कर लिया जाय—कोई और नहीं है क्या?"

"फिलहाल तो मैं ही हूं।" शोला ने भी खिलंदरे से अन्दाज में कहा लेकिन उसे अन्दाजा हो गया था कि वह जहीन भी है और चालाक भी।

अचानक ही उसकी गुर्राती आवाज उभरी—"बेवकूफ के बच्चे! अपना पिस्तौल जमीन पर फैंक दे या मुझे गोली मार दे, वरना तुझे पता ही नहीं चलेगा कि कब तेरी गर्दन कटकर जमीन पर आ पड़ी।" यह आवाज बड़ी सफ्फाक थी।

शोला पर उसकी धमकी का कोई असर नहीं पड़ा। वह उसी अन्दाज में बोला—"तुझे गोली जरूर मार दी जायेगी। लेकिन उससे पहले तुझे कुछ सवालों के जवाब देने पड़ेंगे। यह बता झोंपड़ी में कौन था। दंगानिया कौन है?"

सांय की एक आवाज उभरी। शोला ने अपनी तरफ एक चमक लपकती देखी—उसने अपने बचाव के लिये जगह बदलनी चाही—तभी चाकू उसके हाथ से टकराया और उस शख्स की इस महारत नें खुद शोला को हैरत में डाल दिया। चश्म जून में वह निहत्था हो गया था और उसका पिस्तौल जमीन पर जा पड़ा।

उस शख्स ने फुर्ती से दूसरा चाकू निकाल लिया और बोला—"अब चलाओ गोली। झोंपड़े में तो मेरे अलावा कोई नहीं था। रहा दंगानिया का सवाल—तो यों समझो वह तुम्हारा बाप था। अब तू मेरे सवालों का जवाब देगा—वरना इस बार मेरा चाकू तेरी गर्दन उतार देगा।"

"देखो, मेरी तुम्हारी कोई दुश्मनी नहीं है। मैं तुमसे सिर्फ मालूमात हासिल करना चाहता हूं।"

जवाब में वह शख्स ठहाका मारकर हंसा—"तुम जैसे तुच्छ कीड़े से मेरी दुश्मनी भी नहीं हो सकती। दुश्मनी बराबर वालों से होती है। मैं इस जंगल का रक्षक हूं। अब चाहूं तुझे च्यूंटी की तरह मसल सकता हूं। अब तुम मुझे बताओगे कि इस जंगल में क्यों नजर आ रहे हो। खासतौर से इस इलाके में कदम रखने वाले जिन्दा वापस नहीं जाते।" वह धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा था।

और शोला भी यही चाहता था कि वह करीब आ जाये।

"तुम्हें देगानिया के बारे में क्या मालूम है?" वह शख्स गुर्राया—"शायद तुम देगानिया का पीछा करते हुए आये हो—जवाब दो—कौन हो तुम? वरना मैं तुम पर जरा बराबर भी रहम नहीं करूंगा।"

शोला एकदम से चौकन्ना हो गया—वह बोला—"यह तो वक्त ही बतायेगा कि तुम मेरे सवालों का जवाब दोगे या मैं?"

"क्या अब भी तुम्हें यह एहसास नहीं हुआ कि मेरे मुकाबले में तुम एक हकीर सी च्यूंटी हो। अब तुम अपने सिर पर हाथ रखकर इस तरफ मुड़ जाओ।"

शोला ने भी उसी तरह उसकी आज्ञा का पालन किया जैसे उसने किया था। लेकिन ऐसा करते समय शोला उसके काफी करीब आ गया था। शोला अब उस पर काबू करने की सोच रहा था। उसकी आंखों में बला की चमक पैदा हो गयी। अचानक शोला ने एक अजीब-सा करतब दिखाया। जिस तरह अजनबी ठोकर खाकर गिरा था, शोला भी लड़खड़ाकर गिरा—किन्तु उसके दोनों हाथ जमीन पर टिके और उसने अपने दोनों लातों को बैक लिफ्ट देते हुए उस शख्स की छाती पर लातों का प्रहार कर दिया। वह शख्स खड़े-खड़े उछर गया। शोला ने पलटकर उस पर छलांग लगा दी। अजनबी सोच भी नहीं सकता था कि ऐसा भी हो सकता है। ऐसा लगा जैसे कोई तनावर दरख्त ढेर हो गया हो, चाकू उसके हाथ से छूटकर दूर जा गिरा था।

इससे पहले कि शोला उस पर अपनी गिरफ्त कायम करता वह इतनी तेजी से उठा कि शोला देखता ही रह गया। वास्तव में इस भारी भरकम शख्स से शोला को ऐसी फुर्ती की कतई कोई उम्मीद नहीं था। उसका तो ख्याल था कि लातों के प्रहार से उसकी पसलियां टूट गयी होंगी। शोला उसकी तारीफ किये बगैर न रह सका। अजनबी ने भागने की कोशिश नहीं की, बल्कि उसके चेहरे पर इन्तहाई खौफनाक भाव उजागर हो गये। नीचे गिरने से उसे चोट भी अच्छी खासी लगी थी। उसके चेहरे पर शोला के लिये नफरत के भाव पैदा होते जा रहे थे और उसका चेहरा बेपनाह भयानक हो गया था।

अचानक उसने अपने दोनों हाथ फैलाये और शोला पर

छलांग लगा दी। उसका अन्दाज ऐसा ही था जैसे अपने बाजुओं में दबोचकर मसल देना चाहता हो। लेकिन शोला ने उसकी यह कोशिश कामयाब नहीं होने दी। वह इस छलांग से बच निकला और दूसरी तरफ खड़ा हो गया। अजनबी ने फौरन ही दूसरी छलांग भी लगा दी थी और उसके बाद वह निरंतर शोला पर हमले करता रहा। शोला ने अभी तक कोई जवाबी कार्यवाही नहीं की थी बल्कि वह सिर्फ उसके हमलों से बचाव कर रहा था और अजनबी का गुस्सा तेज होता जा रहा था। वह तेजरफ्तारी से इधर-उधर दौड़ रहा था और शोला महसूस कर रहा था कि उसके वजूद में एक थकन सी आती जा रही है। शायद शोला का मकसद भी यही था कि वह थक जाय। अलबत्ता उसे यह आभास हो गया था कि अजनबी का बदन बेपनाह ताकतवर है और अगर शोला उसकी गिरफ्त में आ गया तो यकीनी तौर पर नुकसान हो जायेगा। इस बार अनजबी ने बड़ा जोरदार हमला किया था और शोला बाल-बाल बच गया। उसने हवा में छलांग लगाकर यह हमला किया था। इस छलांग की नाकामी से उसे खासा नुकसान पहुंचा। वह खुद भी पेट के बल जमीन पर गिर गया। उसके हलक से एक कर्बनाक चीख निकली और उसकी वजह उसे एक लम्हें में समझ में आ गयी। जिस जगह वह पेट के बल गिरा था, वहां एक नोकदार पत्थर था लेकिन इन तमाम चीजों के बारे में सोचने की बजाय इस वक्त अम्ल करना बेहद जरूरी था। अतः शोला ने एक पल भी गंवाये बिना उसकी रीढ़ की हड्डी पर एक जोरदार प्रहार किया। पेट की चोट ने उस अजनबी को पहले ही पीड़ा में झोंका हुआ था। शोला की चोट से उसके मुंह से एक जोरदार दहाड़ निकल गयी और फिर शोला ने उसे ठोकरों की जद में ले लिया। अजनबी उठने की कोशिश कर रहा था लेकिन इसमें कामयाब नहीं हो पा रहा था। शोला ने उसकी रीढ़ की हड्डी को खासा नुकसान पहुंचाया था। अजनबी के मुंह से दहाड़ें निकलती रहीं और शोला निरंतर उसे मारता रहा। यहां तक कि अजनबी की आवाज डूबने लगी। शोला ने यह जानने के बाद कि अब वह उठ नहीं पायेगा, अंततः उस पर ठोकरें लगाना बन्द कर दी।

शोला गुर्राया—"अब चीखना चिल्लाना बन्द करो। मैं तुमसे कुछ सवालात करना चाहता हूं।"

अजनबी का चेहरा पसीने से तर हो रहा था। आंखें फटी हुई थीं। यहां तक कि उसने गर्दन डाल दी। वैसे इसमें कोई शक नहीं कि इस वक्त उस अजनबी के साथ ज्यादती ही हुई थी, वरना शोला शायद उस पर इस तरह काबू न कर पाता। शोला को यह अन्दाजा हो गया था कि अजनबी बेहोश हो गया है। लेकिन सवाल यह पैदा होता था कि अब क्या किया जाय। इस खौफनाक वजूद को यहां से उठाकर या घसीट कर ले जाना तो सम्भव नहीं था, इसके अलावा यह भी खतरा था कि कहीं कोई यहां पहुंच न जाय। यह सूरतेहाल बड़ी चिन्तनीय थी। क्या करना चाहिये। फिर वह झुककर अजनबी के बदन की तलाशी लेने लगा और इससे कोई खास कामयाबी हासिल नहीं हो सकी। कोई चीज अजनबी के पास से नहीं मिली थी। वक्त कुछ और गुजरा और शोला को यह अन्दाजा होने लगा कि अब शायद दिन निकलने वाला है। फिर अचानक ही वह झुका और अजनबी को अपने कंधे पर उठा लिया। इसके अलावा और कोई चारा नहीं था। उसने अपना गिरा हुआ पिस्तौल भी उठा लिया था। उस ग्राण्डील को लादकर वह अपने साथियों की तरफ चल पड़ा।

❑❑❑

जूलारिया की आज की रात बड़ी खुशगवार थी। वहां के रहने वाले यह बात अच्छी तरह महसूस कर रहे थे। कभी-कभी फिजायें खुद-ब-खुद खुशगवार हो जाती हैं। इस वक्त भी ठण्डी रोशनी हरी-भरी पहाड़ियों पर पिघलती हुई बर्फ के साथ-साथ बह रही थी। वैसे भी जूलारिया हरी-भरी पहाड़ियों के बीच एक खूबसूरत बस्ती थी। चारों तरफ मकान एक दायरे की शक्ल में फैले हुए थे। जूलारिया वालों को फूलों से कुछ ज्यादा ही दिलचस्पी थी। अतः ऐसा कोई मकान नजर नहीं आता था जिसके आगे फूलों का एक छोटा-सा बागीचा न हो। यहां के ज्यादातर लोग किसी-किसी नशे में ऊंघते नजर आते थे। इसके विपरीत यहां की आंखें चुस्त व चालाक और खूबसूरत जिस्मों की मालिक थीं। इसकी बुनियादी वजह यह थी कि उन्हें नशे की लत नहीं थी।

जूलारिया की सराय की इमारत आबादी से कुछ फासले पर थी। इसलिये उसमें ज्यादातर मुसाफिर ही ठहरते थे। इस सराय की मालिक काराकास की बेटी लाइना थी। हालांकि काराकास

ने लाइना को सराय के सिलसिले में सख्त मना किया था और उसका विरोध भी किया था। लेकिन लाइना का शौक था कि वह उस सराय को बेहतर रूप दे और मुसाफिरों को बेहतर सहूलियतें प्रदान करे। अतः उसने बाप की बात नहीं मानी थी और लाइना की यह सराय बहुत शानदार तरीके से अपना काम कर रही थी। काराकास को अपनी बेटी से इतनी मुहब्बत थी कि वह उसकी किसी बात का बहुत ज्यादा विरोध नहीं करता था, बल्कि हकीकत यही थी कि काराकास की सबसे बड़ी कमजोरी उसकी बेटी लाइना थी। लेकिन यह भी हकीकत थी कि लाइना स्वाभाव से बुरी नहीं थी और उसकी वजह उसकी मां थी। खूबसूरती के साथ-साथ अच्छी सीरत भी उसके हिस्से में आयी थी। रहमदिल और दर्दमंद किस्म की लड़की थी और सारी बस्ती उसे पसंद करती थी। उसके लिये लोगों की आंखों में सम्मान देखा जाता था। वैसे उसका हुस्न नौजवानों की आंखों की ठण्डक था। लेकिन किसी नौजवान में अभी तक यह जुर्रत नहीं हुई थी कि उससे अपनी चाहत का इजहार करे।

इस वक्त सराय रंगबिरंगी रोशनियों में जगमगा रही थी। लाइना ने रंगीन शीशों से यह रोशनियां खुद बनायी थीं। सराय का सबसे बड़ा कमरा जो काफी लम्बा-चौड़ा था, भरा हुआ था। उसकी वजह यह थी कि आज सराय में एक विशेष प्रकार का नाच गाना होने वाला था। नौजवान और अधेड़ उम्र के लोगों से सराय भर गयी थी। बेपनाह लोग आ गये थे, फिर लाइना की हिदायत पर सराय के कर्मचारी रोशनियां बुझाने लगे और नृत्य के चबूतरे पर सिर्फ इतनी रोशनी रह गयी कि चबूतरे पर जो कोई मौजूद हो, वह ह्योला ही नजर आये। और उसके नक्शेनिगार स्पष्ट न हों। अचानक नौजवानों के दिल धड़कने लगे। उन्हें उसके आगमन का न जाने कैसे एहसास हो जाता था। हमेशा यही होता। नृत्यगाह में कदम रखते ही उसकी खुशंबू नौजवानों को अपनी गिरफ्त में ले लेती थी। गहरा सन्नाटा छा गया था। लोग दम साधे टकटकी लगाये चबूतरे की तरफ देख रहे थे। अचानक एकदम नृत्य के चबूतरे पर झन्नाके उभरे। वह रक्स गाह में आ चुकी थी। आते ही उसने अपने हुस्न का जादू जगाया और वहां मौजूद लोगों के दिलों की धड़कने बढ़ने लगीं। पुरशौक निगाहें उस ह्योले को बगौर

देख रही थी। वह जंगली लिबास पहने हुए थी जो चौड़े पत्तों से बना हुआ था और वह किसी दरख्त की नाजुक सी शाख की तरह लचक रही थी। नृत्य शुरू हो गया। एक जंगली नृत्य पेश किया जा रहा था और उसके बदन में लचक और निहायत ही नजाकत थी। जिस्म के हर कोण से वह एक संगतराश के हाथों का तराशा हुआ बुत लग रही थी। उस पर पड़ने वाली निगाहें उसके हुस्न पर कुर्बान हो रही थीं। नृत्य धीरे-धीरे तूफानी शक्ल इख्तियार करता जा रहा था। ऐसा लग रहा था कि बस एक बिजली है जो इधर से उधर कौंध रही है। लोगों की निगाहें उसके बदन पर नहीं ठहर पा रही थीं।

अचानक बेशुमार नकाबपोश रक्सगाह के बड़े हाल में दाखिल हो गये। किसी को उनके आगमन की कोई खबर नहीं हुई थी, क्योंकि अंधेरा छाया हुआ था, इसलिये वह लोगों की निगाहों में नहीं आ सके। इसके अलावा वह लोग आहिस्ता-आहिस्ता ही अन्दर दाखिल हुए थे और यों लगता था कि किसी खास प्रोग्राम से आये हैं। अचानक ही उन नकाबपोशों में से एक आगे बढ़ा और उसने गर्जदार आवाज में नृत्य को रोकने का हुक्म दिया। वह दौड़ता हुआ चबूतरे पर आ गया था। बाकी नकाबपोश भी हाथों में बन्दूकें और रिवॉल्वर लिये हुए रक्सगाह में फैल गये। यह सब आशा के विपरीत हुआ था। सारा मजमा सकते में रह गया। लोग दहशतजदा अन्दाज में इन नकाबपोशों को देख रहे थे। नर्तकी भी खामोश होकर अपनी जगह साकित हो गयी थी। पॉव जो थोड़ी देर पहले बिजली की तेजी से थिरक रहे थे और रुक गये थे। जब तक लोगों को परिस्थिति का आभास हुआ तब तक देर हो चुकी थी। शस्त्रधारी नकाबपोशों ने सबको घेरे में ले लिया था। वह सब निहत्थे थे और नाच देखने आये थे। वह नकाबपोश जो नृत्य के चबूतरे की तरफ बढ़ रहा था, अब चबूतरे पर पहुंच चुका था। शायद वह अपने गिरोह का सरदार था, क्योंकि उसकी नकाब काली के बजाय लाल थी। फिर एक लम्हे बाद वह नर्तकी की तरफ बढ़ने लगा। वह भयभीत सी उसे अपनी तरफ बढ़ते देख रही थी। इससे पूर्व कि नर्तकी के मुंह से चीख निकलती, उसकी चौड़ी हथेली ने चीख का रास्ता बन्द कर दिया। उसने नर्तकी के चेहरे पर एक स्याह कपड़ा डाला और उसे अपने मजबूत बाजुओं में उठा लिया।

नर्तकी बुरी तरह मचल रही थी और उसकी गिरफ्त से निकलने की कोशिश कर रही थी। कहां एक शाख गुल की तरह नाज़ुक लड़की और कहां क्रूर लुटेरा! वह सिर्फ मचलकर रह गयी। मगर उसकी गिरफ्त से अपने आपको आजाद न करा सकी। नकाबपोश ने उसे अपने कंधे पर डाला और तेजी के साथ चबूतरे से नीचे उतरकर सामने वाले दरवाजे की तरफ बढ़ने लगा। उसके साथी अभी तक लोगों को घेरे हुए थे कि कोई भी अगर गड़बड़ करे तो उसे खत्म कर दिया जाय और वह लोग भी अच्छी तरह जानते थे कि उनके इरादे क्या हैं। आनन-फानन वह बाहर निकल गये। बाहर खड़े हुए बोदों की टापों की आवाज लोगों के कानों में गूंजती रही। किसी की हिम्मत नहीं पड़ी थी कि बाहर निकलकर कुछ कर सकें। असल में यह सब कुछ इतना अचानक और आशा के विपरीत हुआ था कि वह सोच भी नहीं सकते थे और उनकी महबूब रक्कासा उनके सामने अगवा कर ली गयी थी। बोंदे बर्क रफ्तारी से दौड़े चले जा रहे थे। नकाबपोश शीघ्रातिशीघ्र बस्ती से निकल जाना चाहते थे। उनका रुख उत्तरी चट्टानों की तरफ था। किधर जा रहे हैं? कौन हैं? किस रास्ते पर चल रहे हैं। इसका कोई अन्दाजा नहीं लगा सकता था। वह लड़की बदस्तूर बोंदे की पुश्त पर पड़ी हुई थी और उसको एक शख्स संभाले हुए था। उसका चेहरा अभी तक कपड़े में ढका हुआ था। सफर जारी रहा। लड़की के बदन के जोड़-जोड़ टूटें जा रहे थे।

अंततः सफर खत्म हुआ और नकाबपोश एक गार के दहाने पर जमा हो गये। फिर कुछ और लोगों ने मिलकर लड़की को उतारा। लड़की में अब इतनी जान नहीं थी कि अपने पैरों पर खड़ी हो सके। नकाबपोशों ने उसे सहारा दिया और अपने साथियों को सतर्क रहने की हिदायत दी। फिर लड़की को अन्दर ले जाया गया। यह गार भी बड़ा अजीबो गरीब था। अन्दर से काफी चौड़ा और रोशन था। साज-सज्जा से लगता था कि खासतौर से किसी की आरामगाह के लिये बनाया गया है। नकाबपोश लड़की को घसीटता हुआ एक और गार के अन्दर ले गया। दूसरा गार भी बड़ा अजीबोगरीब था। हल्की-हल्की रोशनी उसमें फैली हुई थी। यह भी सजा-धजा था। गार में एक विशेष किस्म की सुगन्ध सुलग रही थी जो नथुनों में पहुंचते ही एक सुरूर का एहसास दिलाती

थी। उस पर बिछी मसनद पर एक रहस्यमय हस्ती विराजमान थी जो गार के दहाने की तरफ नजरें उठाये बैठा था। उसका चेहरा भी कीमती स्याह नकाब में छुपा हुआ था, जिस्म पर कीमती स्याह लबादा था।

आने वाले ने लड़की को आगे बढ़ाते हुए कहा—"लो—संभालो इसे। यही वह लड़की है जिसकी तुम्हें तलाश थी।" आने वाले के लहजे से एक अजीब नापसंदीगी का एहसास झलकता था। गार में बैठे हुए नकाबपोश ने अपनी सुर्ख-सुर्ख आंखें लड़की पर गाड़ दीं और फिर नकाबपोश ने लड़की के चेहरे पर पड़ा हुआ कपड़ा उतारने का इशारा किया। अतः आने वाले नकाबपोश ने लड़की को सीधा बिठाया और उसके चेहरे से कपड़ा हटाने लगा। लड़की के चेहरे से कपड़ा हटा तो वह गहरी-गहरी सांस लेने लगी।

इधर गार में बैठे हुए नकाबपोश ने लड़की के चेहरे पर निगाह डाली। वह इस तरह उछला जैसे बहुत से बिच्छुओं ने एक साथ उस पर डंक मारे हों।

उसके मुंह से गुर्राहट भरी आवाज उभरी—"यह क्या?"

वह नकाबपोश जो लड़की को लेकर आया था और उसे छोड़कर जाने वाला था, एकदम से चौंककर पलटा और उसने हैरान होकर कहा—"क्या हुआ सरदार?"

"कुत्ते के बच्चे! यह उठा लाये।"

लड़की को उठाकर लाने वाला नकाबपोश एक लम्हें के लिये तो आश्चर्यचकित हो उठा, फिर उसके चेहरे पर गुस्से के आसार नजर आने लगे। उसने कहा—"क्या कहा था तुमने मुझसे सरदार! क्या यह वह लड़की नहीं है जिसके लिये तुमने मुझे हिदायत दी थी। तुमने यही था कि जो लड़की वहां नाचती है उसे ले आना।"

"यह वह नहीं है—ले जाओ इसे, ले जाओ। जहां से उठाकर लाये हो वहीं छोड़ आओ।" गार वाले नकाबपोश के स्वर में अजीब-सी बेचैनी छुपी थी।

"क्या बात कर रहे है सरदार! अब यह कैसे सम्भव है?"

"क्यों?" सरदार ने गुर्राते हुए स्वर में पूछा।

"आपके ख्याल में वहां गीदड़ रहते हैं क्या? बस्ती वाले हमें भूनकर रख देंगे।"

"यह तुम्हारा मुआमला है। जाओ...इसे बस्ती में छोड़कर

आओ, वरना मैं तुम्हें जिन्दगी से महरूम कर दूंगा।'

लड़की गार वाले की आवाज पर चौंकी थी। न जाने क्यों उसे यह एहसास हो रहा था जैसे उसने इस आवाज को पहले भी सुना हो। लेकिन यह आवाज उसने कब और कहां सुनी थी यह उसे याद नहीं आ रहा था। वैसे वह साफ पता चलता था कि गार में मौजूद नकाबपोश आवाज बदलकर बोलने की कोशिश कर रहा है और यह बात उस शख्स के लिये भी हैरानी भरी थी जो लड़की को उठाकर लाया था।

लड़की खामोश ही रही। नकाबपोश ने दोबारा लड़की के चेहरे को नकाब से ढक दिया और उसे सहारा देकर गार के बाहरी हिस्से में ले आया। लड़की चालाक थी। वैसे तो वह अपने को यहां लाये जाने और वापस जाने का मकसद नहीं समझती थी। मगर उसे गार में मौजूद नकाबपोश की बातों से यह अन्दाजा हो गया था कि उसे गलतफहमी में ले आया गया है। यहां शायद किसी और लड़की को लाया जाना था। अतः वह अब अपने पैरों से चलकर वापस जा रही थी। उसका खौफ काफी हद तक दूर हो गया था और उसे यकीन हो गया था कि अब वह लोग उसे कोई नुकसान पहुंचाये बगैर वापस पहुंचा देंगे। हालांकि वह सराय नहीं जाना चाहती थी। उसके ख्याल में इस वक्त सराय जाना किसी तरह भी उचित नहीं था। न जाने वह सब क्या कहानी थी।

❑❑❑

काराकास अपने मुजरे में बैठा पूजापाठ कर रहा था। वह एक गोल तराशी हुई खाल पर बैठा हुआ था—जो कदाचित रीछ की थी। इस वक्त उसके पास कोई और मौजूद नहीं था। उसकी आंखें बन्द थीं और वह ज्ञान ध्यान में व्यस्त था।

एकाएक एक लड़की चीखती हुई अन्दर दाखिल हुई। वह अपने बाप को पुकार रही थी। अचानक ही काराकास ने आंखें खोलकर देखा। उसकी आंखें गहरी सुर्ख हो गयीं। साझा दौड़कर उसके पास पहुंची और बास से लिपटकर जोर-जोर से रोने लगी। वह बुरी तरह हिचकियां ले रही थी और काराकास उसे इस तरह रोते देख अत्यधिक घबराहट का शिकार हो गया था। वह जानता था कि लाइना सिर्फ हंसना जानती है। रोना उसकी फितरत में शामिल नहीं था। इस वक्त उसका ऐसा उसकी समझ में बिल्कुल

नहीं आ रहा था। अतः वह भी बेकरार होगा। अपनी जगह से उठ खड़ा हुआ।

"क्या हो गया लाइना। मेरी बच्ची क्या हो गया। मुझे जवाब दे—हुआ क्या?"

लेकिन लाइना सिर्फ सिसकती रही। उससे बोला तक नहीं जा रहा था। फिर जब दिल की भड़ास अच्छी तरह निकल गयी तो उसने अपने आप पर गुजरने वाले वाकयात को बाप के सामने दोहराया।

"मैं अपनी सराय में नृत्य पेश कर रही थी बाबा मुकद्दस कि मुझे अगवा कर लिया गया...।" और उसके बाद उसने सारी कहानी तफसील से सुना दी। काराकास हैरत से मुंह खोले उसकी दास्तान सुन रहा था। उसकी आंखों में खून की सुर्खी कुछ और गहरी हो गयी थी और चेहरे पर अजीब से आसार थे। लाइना रो-रोकर अपनी कहानी सुनाती रही। फिर उसके खामोश हो जाने के बाद काराकास ने एक गहरी सांस ली और दीवारों पर नजरें गाड़ दीं। कुछ देर तक मुकम्मल खामोशी रही। लाइना शायद इस बात की प्रतीक्षा में थी कि उसका बाप उसके बारे में कुछ कहेगा, लेकिन काफी देर तक वह कुछ न बोला।

वह बोली—"ओह! बाबा! यह सब क्या हो रहा है? क्या हम लोग बिल्कुल खत्म हो चुके हैं?क्या तुम्हारी इज्जत तुम्हारी मान प्रतिष्ठा बिल्कुल व्यर्थ है।"

"हां—हमारी बस्ती सुरक्षित नहीं है मेरी बच्ची! कोरसार की सरजमीन पर कालकों का सफाया तो हो गया है, लेकिन कालके जो अपनी बुराइयां फैला गये हैं, वह इतनी आसानी से खत्म नहीं होगी। हमारी बस्त पर अभी और भी विपत्तियां आयेंगी। इसकी वजह कुछ और भी है। देवताओं की भेंट के लिये मेरा नाम क्यों नहीं निकलता? क्या मैं बदसूरत हूं।"

"नहीं मेरी बच्ची! यह बात नहीं है।" काराकास ने किसी कदर बौखलायी आवाज में कहा।

"तो फिर क्या? दूसरी बात यह कि मैं तुम्हारी बेटी हूं?" लाइना ने चुभते स्वर में कहा।

"हां—यही वजह है। मैं मजहबी रहनुमा हूं और किसी रहनुमा की बेटी को कुर्बानी के लिये पेश नहीं किया जा सकता।"

"मगर यह तो नाइन्साफी है बाबा।"

"तुम इस बारे में बहस मत करो मेरी बच्ची। तुम्हें इन बातों से कोई सरोकार नहीं होना चाहिये।" काराकास का लहजा किसी कदर खुश्क हो गया।

"लेकिन वह सब मुझसे छिन गयीं...। वह मेरी दोस्त थीं। हशीमा, सीमोना...वह सब फिर कहां चली गयीं?"

"कोरसार की सीमा से बाहर नहीं होंगी वह। खैर! छोड़ो इन बातों को। मैंने तुम्हें पहले ही सराय में कयाम के लिये मना किया था लेकिन अब तुम वहां नहीं नाचोगी। मैं समझता हूं तुम्हारा अपहरण किसी गलतफहमी की वजह से ही हुआ होगा। लेकिन जो हुआ वह मेरी तोहीन है। मैं नहीं चाहता कि तुम्हारी कोई नादानी मेरे मान-समान को ठेस पहुंचाये। इसलिये लाइना! आज से तुम सराय में नहीं जाओगी। यह मेरा हुक्म है।"

"नहीं बाबा! यह ज्यादती है मेरे साथ।" लाइना ने कहा।

"जो वाकयात हो चुके हैं लाइना, वह बहुत ज्यादा है। मैं नहीं चाहता कि जूलारिया में खूंरेंजी करूं। मैं देखूंगा कि जो कुछ हुआ है उसकी पृष्ठभूमि में क्या है।"

"मुझे एक बात बताओ बाबा! इस बस्ती में जब तुम नहीं थे, मेरा मतलब है जब तुम्हारा वजूद नहीं था, तो क्या देवताओं को भेंट इसी तरह चढ़ायी जाती थी? मुझे बताओ कि दंगानिया की उम्र क्या है। क्या वह हमेशा से जिन्दा है?"

अचानक ही एक भिन्न बात शुरू हो गयी थी, इसलिये काराकास ने उसे चौंककर देखा और फिर कहा—"यह तुम क्या बातें कर रही हो? यह तुम्हारे सोचने की बातें नहीं हैं।"

"नहीं बाबा! मैं जानती हूं कि यह जानकारी मेरे लिये बेहद जरूरी है।"

"दंगानिया की कोई उम्र नहीं होती। एक दंगानिया मरता है तो दूसरा आ जाता है। चूंकि देवताओं के काम हैं और देवताओं के काम सिर्फ देवता ही जानते हैं।"

"अगर देवता बस्ती वालों से नाराज हो जायें तो क्या दंगानिया बहुत सी लड़कियों को उठाने आ जाते हैं?" लाइना ने सवाल किया। काराकास की समझ में नहीं आ रहा था कि यह लड़की इस तरह क्यों सवाल कर रही है।

उसने कहा—"असम्भव भी नहीं है। देवता सब कुछ कर सकते हैं। वह जिस तरह भी चाहें इस बस्ती को उजाड़कर रख सकते हैं या फिर पूरे कोरसार के लिये मुसीबतें खड़ी हो सकती हैं।"

"मगर तुम तो देवता के पुजारी हो। तुम उसे ऐसा करने से रोक सकते हो। यह हमारी बस्ती है और इस बस्ती को उजाड़ना नहीं चाहिये। आखिर हमारी बस्ती कोरसार ही में तो है। हम कोरसार के वासी हैं। क्या तुम देवताओं को रोक नहीं सकते?"

"हमने कभी कोरसार के कानून के खिलाफ काम नहीं किया। इन लोगों को भी हमारे मजहबी मामलों में दखल नहीं देनी चाहिये।"

"मगर इसमें सबका कुसूर नहीं है बाबा! अब तुम मुझे बताओ—हशीमा अपनी जान बचाकर कहीं रूपोश हो गयी है। इतने बड़े कोरसार में वह कहीं भी छुप सकती है। घने जंगलात भी तो उसे पनाह दे सकते हैं। कोरसार के जंगलात में तो सैकड़ों आदमी छुप सकते हैं।" लाइना ने कहा।

"हां ऐसा हो सकता है।" अचानक ही कोरसार के चेहरे पर अजीब से भाव उजागर हो गये। उसने सोचा कि उसे यह ख़्याल क्यों नहीं आया। बेशक वह जंगलों पहाड़ों और तैराइयों में भी तो पनाह ले सकती है। उसको पहले जंगलों में तलाश करना चाहिये था। हशीमा को मिलना चाहिये था, हर कीमत पर। लेकिन वह अपने इन ख्यालात का इजहार अपनी बेटी के सामने नहीं कर सकता था।

अतः उसने लाइमा को समझाने वाले अंदाज में कहा—"मेरी बच्ची! तुम्हारा ख्याल सही हो सकता है।"

"बाबा! मैं जानना चाहती हूं कि मेरा अपहरण करने वाले कौन थे?"

"जिस जगह तुम्हें ले जाया गया था, क्या तुम मुझे उस जगह के बारे में बता सकती हो?"

"नहीं, उन्होंने मेरे चेहरे पर कपड़ा लपेट दिया था।"

"हूं! जिस गार वाले के पास तुम्हें ले जाया गया था, उसके बारे में मुझे कुछ बताओ।"

"वह काली नकाब और लबादे में छुपा था। मगर हां, एक

बात जरूर थी बाबा।"

"वह क्या?"

"मुझे ऐसा लगा जैसे उसकी आवाज मैंने कहीं सुनी हो। यह मुझे याद नहीं आ रहा है कहां। मेरा ख्याल है बाबा वह आवाज बदलकर बोल रहा था और उसकी वजह यही होगी कि वह शायद मुझे पहचानता था। आखिर मैं भी तो मुकद्दस काराकास की बेटी हूं।"

"हो सकता है, हो सकता है। लेकिन तुम चिन्ता मत करो मेरी बच्ची! मैं देखूंगा इस मामले को। मैं इसे आसानी से अनदेखा नहीं करूंगा।"

"ठीक है बाबा! मैं चलती हूं। लेकिन तुम ख्याल रखना। कहीं ऐसा न हो कि मुझे दोबारा नुकसान पहुंचाने की कोशिश की जाय।"

"ऐसा नहीं होगा। जाओ, आराम करो।" काराकास ने कहा।

❑❑❑

दिन निकल चुका था, लेकिन आसमान पर बादल छाये हुए थे और सूरज इन बादलों को चीरकर प्रकट नहीं हो सकता था। जंगल के परिन्दों ने सारा जंगल सिर पर उठा रखा था। वह सब बेखबर सोये हुए थे। न जाने क्यों आज उनकी नींद इतनी गहरी हो गयी थी। हशीमा भी अभी तक सो रही थी। हालांकि वह दिन निकलने से पहले ही उठने की आदी थी, शायद यह जंगली हवाओं का असर था कि वह सब नशे की सी कैफियत के शिकार हो गये थे। लेकिन जंगली परिन्दों के शोर ने उन्हें ज्यादा देर सोने नहीं दिया। सबसे पहले हशीमा जागी थी। उसने हैरान निगाहों से अपने आसपास सोये हुए लोगों को देखा, फिर उसकी निगाह शोला की तलाश में इधर-उधर भटकने लगी। शोला वहां मौजूद नहीं था। हो सकता है शिकार वगैरह के लिये निकल गया हो। यह सोचकर वह उठ खड़ी हुई और वह बाकी लोगों को जगाने की कोशिश करने लगी। न जाने क्यों हशीमा को एक अजीब-सा एहसास हो रहा था। वह हैरान भी थी कि चारों तरफ से खतरात में घिरे होने के बावजूद हम सब इतनी गहरी नींद सोये। एक-एक करके सब उठ गये। फिट ने शोला की तलाश में इधर-उधर निगाहें दौड़ायीं।

फिर मद्धिम लहजे में बोला—"यह शोला कहां है?"

"पता नहीं। मैं भी उन्हें ही तलाश कर रही हूं।" हशीमा ने जवाब दिया।

फिर एक बुलन्द जगह से शोला को तलाश करने के लिये निगाहें दौड़ाने लगा। लेकिन उसका कहीं पता नहीं था। बहरहाल, वक्त गुजरने लगा। लेकिन काफी वक्त गुजरने पर भी शोला नहीं आया। न जाने क्यों हशीमा की छठी इन्द्री उसे बेचैन कर रही थी। उसे यह एहसास हो रहा था कि कोई गड़बड़ हो गयी है। फिर सूरज आहिस्ता-आहिस्ता बादलों की ओट से निकल आया और चारों तरफ धूप फैल गयी। लेकिन शोला का कहीं पता न था। फिट भी उसके लिये परेशान था। हशीमा के अन्दर न जाने कैसी टूट-फूट हो रही थी। वह एक बुलन्द टीले पर खड़े होकर इधर-उधर देखने लगी। लेकिन दूर-दूर तक कोई आसार नहीं थे। कुछ देर बाद फिट भी उसके पास आ खड़ा हुआ।

"पता नहीं कहां चला गया। कहीं किसी खतरे में तो नहीं पड़ गया हो।"

"कुछ समझ में नहीं आता—क्या कहा जा सकता है?"

"मगर हम सब कितनी गहरी नींद सो गये। ऐसा तो नहीं हुआ कि शोला को कोई उठाकर ले गया हो।" सीमोना ने कहा और फिट के होंठों पर हल्की-सी मुस्कराहट फैल गयी।

"क्यों,..इसमें मुस्कराने की क्या बात है।"

"बड़ा दिलचस्प ख्याल है यह कि कोई शोला को उठाकर ले जाय।"

खासी देर गुजर गयी थी और अब शोला की अनुपस्थिति किसी हादसे का ही नतीजा मालूम हो रही थी। बहुत देर हो गयी। सब शोला का इन्तिजार कर रहे थे। फिर तय किया गया कि अब उसे तलाश करना चाहिये। सारगस ने यही सुझाव दिया था कि सब मिलकर एक साथ सफर करते हुए तलाश करें। अलग-अलग नहीं। बहरहाल वह लोग बोटों पर सवार होकर रवाना हो गये। और धीमी रफ्तार से सफर तय करने लगे। सारगस की भी आंखें भी इधर-उधर का जायजा ले रही थीं। वह सबका मार्गदर्शन कर रहा था, क्योंकि जंगल के चप्पे-चप्पे से वाकिफ था। सूरज की रोशनी अब तेज हो गयी थी और फिर उन्होंने काफी फासला तय

कर लिया तो उन्हें कुछ नजर आवा और फिर वह सब आंखें फाड़-फाड़कर उधर देखने लगे। उन्होंने देखा कि वह एक शख्स है जो पैदल चल रहा है और दूसरा उसके कांधे पर लटक रहा था। उन्होंने फौरन ही बोदों के रुख उस जानिब कर दिये क्योंकि हशीमा ने सबसे पहले कहा था कि वह शोला है। तेजी से बेदों को दौड़ाते हुए उसके करीब पहुंच गये और करीब पहुंचने के बाद फिट ने सबसे पहले अपने बोदे से छलांग लगायी और शोला के पास पहुंच गया। शोला रुक गया था। फिट के साथ-साथ सारगस ने भी बोदे की पुश्त छोड़ दी और फिर शोला के कंधे से उस बेहोश आदमी को नीचे उतारने लगे। उन्होंने उसे जमीन पर डाल दिया था। उनकी निगाहों में काफी हैरत थी। हशीमा ने शोला को ध्यानपूर्वक देखा। उसका चेहरा सुर्ख हो रहा था। और सारा जिस्म पसीने में डूबा हुआ था। बाल बिखरे हुए पेशानी पर झुके हुए थे। वह एक ऊंचे पत्थर पर बैठ गया। सारगस बेहोश आदमी के सिर पर खड़ा हो गया। शोला ने थोड़ी देर तक खामोशी इख्तियार की और फिर वह उनकी तरफ देखकर मुस्कराने लगा। न जाने क्यों हशीमा के चेहरे पर इस वक्त एक अजीब सी कैफियत नजर आ रही थी। लग रहा था जैसे वह शोला के बारे में किसी और अन्दाज में सोच रही थी।

फिट ने कहा—"यह क्या किस्सा है—कौन साहब हैं यह जो तुम्हारे मेहमान बने हैं।"

"एक दिलचस्प कहानी है।"

"वह किस तरह।"

"बताऊंगा। सबसे ज्यादा परेशान तुम ही हो।"

"तुम्हारा क्या ख्याल है। क्या हशीमा मुझसे ज्यादा परेशान हो सकती है।" फिट ने चोट की ओर देखा। शोला बौखलाकर सारगस की तरफ देखने लगा। लेकिन सारगस दूसरी तरफ आकर्षित था। वह निरंतर उस बेहोश आदमी को देखे जा रहा था।

शोला ने संक्षेप में सारी बात बता दी।

फिट बोला—"दंगानिया के बारे में यही बतायेगा, क्योंकि यह उसकी झोंपड़ी से बाहर निकला था जिसमें दंगानिया दाखिल हुआ था। यह खुद को जंगल का रक्षक बताता है। अब यह नहीं

मालूम कि इस जंगल की हिफाजत किसने इसके सुपुर्द की। होश में आ जायेगा तो हम उससे यह सवाल करेंगे।" सारगास वगैरह भी यह बात सुनकर बुरी तरह उलझ गये थे।

सारगस ने कहा—"यानि कि तुमने दगानिया को इतने करीब से देखा कि उसकी शक्लोसूरत भी पहचान सकते हो।"

"हां क्यों नहीं। वह एक बदबूदार जानवरनुमा इन्सान का मिला जुला रूप है। बहुत ज्यादा लम्बा-चौड़ा है। उसकी तमाम हरकतें इन्सानों जैसी ही हैं।"

"कुछ समझ में नहीं आता कि क्या करना चाहिये।"

"मैं बताऊं। हमारे लिये यह बेहतर है कि पहले हम अपने आपको इन तमाम लोगों की जिम्मेदारी से आजाद करा लें। आज तक हम दोनों ने ही जो कुछ किया है वह बरामद हुआ है। कहीं इनकी वजह से हमें नुकसान न पहुंच जाय।"

"हां—इसमें कोई शक नहीं है। विशेष रूप से इन लड़कियों की जिम्मेदारी।"

"अब सबसे पहले इसे होश में लाकर इससे जानकारी हासिल की जाय।"

फिर उस शक्ल को होश में लाने की कोशिश शुरू हो गयी। सारगसन ने उसकी रीढ़ की हड्डी का जोड़ अपनी जगह बिठा दिया और पेट पर नोकीले पत्थर से जो चोट लगी थी, उस पर भी कपड़ा वगैरह बांध दिया गया। कोई पन्द्रह मिनट के बाद अजनबी के जिस्म में जुम्बिश पैदा हुई। वह सब उसे होश में आते देख संभल गये थे। अंततः थोड़ी सी कराहों के बाद अजनबी ने आंखें खोल दीं और हैरत से अपने सामने बैठे लोगों को देखने लगा। फिर उसने अपना हाथ उठाया और पेशानी को इस तरह रगड़ने लगा जैसे कुछ याद करने की कोशिश कर रहा हो। अगर रीढ़ की हड्डी में चोट न आती तो शायद वह इस तरह बेहोश न होता। उसकी निगाहें शोला पर ठहर गयीं और आंखों में खून उतर आया। खौफनाक चेहरा और सुर्ख हो गया। शायद उसे तमाम वाकयात याद आ गये थे। उसने एकदम खड़ा होने की कोशिश की, लेकिन फिट ने उसे कंधे पर दबाव डालकर फिर से बिठा लिया।

"बैठे रहो—वरना हो सकता है कि बैठने के काबिल भी न रहो।"

"सुनो—अगर तुम यह समझते हो कि मुझे कोई नुकसान पहुंचा दोगे तो यह तुम्हारे लिये सम्भव नहीं है। मैं—मैं तुम सबके लिये काफी हूं। इसके अलावा मैं मौत से नहीं डरता। तुम ज्यादा-से-ज्यादा मुझे मौत के घाट उतार दोगे। इससे ज्यादा क्या करोगे।"

"हां—सचमुच! लेकिन संयोग की बात यह है कि यहां मौत का घाट नहीं है।"

"बकवास करने की जरूरत नहीं—अगर तुम लोग रास्ता भटककर इस जंगल में आ निकले हो तो मैं तुम्हें रास्ता बताये देता हूं और तुम्हें हुक्म देता हूं कि जितनी जल्दी हो सके इस जंगल से गायब हो जाओ, वरना तुम्हारी हड्डियों का निशान भी नहीं मिलेगा।"

"बस, अब बहुत हो गया दोस्त।" शोला ने कहा—"तुम सिर्फ इतना बता दो कि दंगानिया कहां से आता है और लड़की को कहां पहुंचाता है।"

"मैं नहीं जानता।"

"तुम तो अपने आपको इस जंगल का चौकीदार कहते हो। क्या जंगल में आने-जाने वालों से तुम्हारी कोई वाकफियत नहीं है? हालांकि मैं दंगानिया का पीछा करता हुआ उस झोंपड़ी तक गया था जिससे तुम बरामद हुए थे। अब बताओ क्या कहते हो।"

"मैं उसी झोंपड़े में रहता हूं।"

"अच्छा, यह बताओ तुम्हें इस जंगल का किसने चौकीदार बनाया है?"

"क्यों बता दूं—तुम मेरे आका तो नहीं हो।"

"तुम कोरसार के बाशिन्दे हो?"

"नहीं।" वह बेइख्तियार बोला और फिर एकदम संभल गया—"तो फिर और कहां का बाशिन्दा हो सकता हूं।"

"मेरा ख्याल है तुम कालके हो।" शोला ने एकदम से कहा और वह बुरी तरह उछल पड़ा। शोला को ऐसा लगा था जैसे वह अपनी कैफियत पर काबू पाने की कोशिश कर रहा हो।"

"पागल हो तुम! जो ऐसे बेतुके सवाल कर रहे हो।"

"दोस्त! दिलचस्प बात यह है कि कालकों के खात्में के दौरान तुम बच गये और तुमने अपने छिपने के लिये यहां झोंपड़ी बना ली।"

"देखो, तुम भटके हुए लोग हो। मैं तुम्हें रास्ता दिखा देता हूं। यहां से चले जाओ वरना जिन्दगी भर अफसोस करते रहोगे।"

"हम जिन्दगी भर अफसोस करते रहना चाहते हैं। इसलिये तुम हमारे सवालात के जवाब दो।"

"थोड़ी देर बाद मेरी तलाश शुरू हो जायेगी और वह लोग यहां तक पहुंच गये तो तुम मारे जाओगे। वह तुम्हारी साथी औरतों को उठाकर ले जायेंगे।"

"हम देखेंगे कि हम अपनी साथी औरतों का किस हद तक बचाव कर सकते हैं। लेकिन तुम फिलहाल हमारे सवालात का जवाब दो।"

"मैं किसी सवाल का जवाब नहीं दूंगा। अब तुमसे जो कुछ किया जा सके, कर लो।"

"वह जिम्मेदारी मुझे दे दो। मैं वह जिम्मेदारी पूरी कर लूंगा।" फिट ने कहा और अजनबी खुंख्वार निगाहों से उसे देखने लगा।

फिट गुर्राकर बोला—"अगर मेरी रीढ़ की हड्डी में चोट न लगती तो मैं तुम सबको भी बता सकता था कि मैं चीज क्या हूं।"

"मैं तुम्हारी रीढ़ की हड्डी ही तोड़ दूंगा। इसलिये तुम जमीन पर खड़े होने की कोशिश करो और अब मैं तुमसे तुम्हारे बारे में सवालात करूंगा।" फिट का लहजा एकदम सफ्फाक हो गया। उनमें से कोई नहीं जानता था, लेकिन शोला को अन्दाजा हो गया था कि अब फिट किसी मूड में है। अतः वह सीधा खड़ा हो गया। अजनबी ने भी अपनी कैफियत बदल ली थी और उसने एकदम खड़े होने की कोशिश की थी, लेकिन कमर की तकलीफ अभी कम नहीं हुई थी। उसके हलक से एक कराह निकली और वह जमीन पर बैठ गया। फिट उसके सामने तना हुआ खड़ा था। तब शोला ने नर्म स्वर में कहा—

"तुम जख्मी हो और हम किसी मरे हुए को नहीं मारते। तुम्हारे लिये एक बेहतर जरिया यह है कि तुम अब हमें सब कुछ बता दो—समझे।"

अजनबी को एहसास हो गया था कि इस वक्त वह लड़ने की पोजीशन में नहीं है। अतः उसके चेहरे के हाव-भाव बदल गये। कुछ देर खामोश होने के बाद उसने निगाह उठायी और

बोला—"क्या पूछना चाहते हो?"

"सिर्फ इतना कि दंगानिया कहां से आता है और कहां जाता है?"

"यह बताओ, तुम लोग कौन हो और इस जंगल में क्या कर रहे हो?"

"हम कोई भी नहीं हैं। बस यह समझ लो कि संयोगवश मैंने दंगानिया का पीछा किया था।"

"क्यों?"

"वह बस्ती जूलारिया की लड़कियों को देवताओं की भेंट चढ़ाने के लिये ले जाता है—और क्या करता है।"

"इतना ही जानना चाहते हो या और कुछ भी।"

"फिलहाल इतना ही बता दो।"

"तो फिर सुनो—वह लड़की को उठाकर जंगल के उस पार की बस्ती में ले जाता है जो बर्फपोश पहाड़ियों की तैराई में आबाद है और उनके सरदार के हवाले कर देता है।"

"उस बस्ती में कौन लोग आबाद हैं?" सारगस ने सवाल किया।

"एक जंगली कौम है जिसमें दरिन्दे रहते हैं—यकीन मानो वहां दंगानिया जैसी ही नस्लों के इन्सान नुमा दरिन्दे आबाद हैं।"

"उस बस्ती का क्या नाम है?"

"उसका कोई नाम नहीं। उसे तुम दरिन्दों की बस्ती कह सकते हो।"

"और उनका सरदार भी है।"

"सरदार ही क्यों—उनका देवता भी है जो बर्फ के पहाड़ में रहता है। दंगानिया लड़की को उसी बस्ती में सरदार के हवाले करता है।"

"सरदार लड़की का क्या करता है?"

"यह मैं नहीं जानता।"

"तुम्हें इस जंगल का रक्षक किसने बनाया है?"

"उसी सरदार ने।"

"क्यों?"

"दंगानिया की निगरानी के लिये।"

"दंगानिया कहां रहता है?"

"उसी झोपड़ी में।"

"तुम उस बस्ती में कैसे पहुंचे?"

"यह नहीं बताऊंगा। बस यह समझ लो कि बहुत बड़ी गलती वहां जाने का कारण बनी।"

"क्या दरिन्दों की बस्ती का सरदार इन्सान है?"

"शत प्रतिशत।"

"और उनका देवता कौन है?"

"उनका देवता रागोन है जिसकी एक मूर्ति बस्ती में भी खड़ी है। लेकिन उनकी मान्यता है कि वह बर्फ के पहाड़ों में रहता है और उसे वह देवता का पहाड़ कहते हैं—किसी को उस तरफ जाने की अनुमति नहीं है। मैं यकीन से नहीं कह सकता लेकिन मेरा अनुमान है कि लड़की को रागोन की भेंट चढ़ाया जाता है।" वह उस इलाके के बारे में बताने लगा। उसने बताया कि दरिन्दों की बस्ती के चारों तरफ सांपों का पहरा रहता है। आने जाने के रास्ते गुप्त हैं और अगर उन रास्तों से न आया-जाया जाय तो सांप उस शख्स को जीता नहीं छोड़ते जो उस इलाके में पहुंच जाता है। दंगानिया पर सांप हमला नहीं करते। वह किसी भी रास्ते से जा सकता है।

उसकी बातें सुनकर सारगोस ने कहा—"दोस्त! जो कुछ तुमने कहा है, क्या वह सब कुछ सच है?"

"हां।"

"ठीक, अब तुम हमें बताओ कि... ।" अभी सारगस ने इतना ही कहा था कि कहीं दूर से आहटें सुनायी दीं। अजनबी एकदम चौकन्ना हो गया।

फिर उसने ज़ल्दी से कहा—"लेट जाओ, घास में लेट जाओ। मेरी तलाश शुरू हो चुकी है। अगर वह इधर आ गये तो खैरियत नहीं। जानबूझकर अपने आपको हलाकत में मत डालो। तुम्हारे साथ औरतों का होना बहुत खतरनाक बात है। मैं जो कोई भी हूं लेकिन इस वक्त तुम्हें नुकसान नहीं पहुंचाना चाहता।" उसने कुछ इस अन्दाज में कहा कि वह सब उसकी बात मानने पर मजबूर हो गये। सभी ने करीब की ऊंची-ऊंची झाड़ियों में पनाह ले ली थी। वह सांस रोके आने वालों की आहटें सुनने लगे। आहटें थोड़े फासले से गुजर रही थीं, लेकिन उन्होंने गर्दनें उठाकर उन्हें देखने

की कोशिश नहीं की। हालांकि फिर उनसे जंग करने के मूड में नहीं था। लेकिन शोला ने उसे रोक लिया था। बर्फ के पहाड़ में किसी देवता की मौजूदगी ने उसकी छटी इन्द्री में खतरे की घन्टी बजा दी थी। कोरसार में कोई बर्फ का ऐसा पहाड़ था जहां भी कालके आते-जाते थे और कालकों के देवता काल की अजल्ला मून्दा स्वामी से मिलती थी, क्या यह दरिन्दों की बस्ती में उसी देवता का नाम रागोन है और क्या वह लोग अब भी यहां साजिश कर रहे हैं। शोला जंग से पहले वस्तुस्थिति की जानकारी चाहता था। दूसरी बात यह थी कि उसके साथ लड़कियां भी थीं। लड़कियों के अलावा बूढ़ा सारगसी उनके साथ था। थोड़ी देर तक वह इन्तिजार करते रहे। आहटें अब काफी दूर हो गयी थीं। फिर शोला ने ही सबसे पहले गर्दन उठायी और अपनी जगह से उठ खड़ा हुआ। उसकी तेज निगाहें चारों तरफ का जायजा ले रही थीं। जब कोई खतरा करीब नजर न आया तो वह झाड़ियों से छलांग लगाकर मैदान में आ गया। सब ही अपनी जगह से उठ गये थे और झाड़ियों से बाहर निकल आये थे। अब सवाल यह था कि इसके बाद वह क्या करें। रुकें या आगे चल पड़ें। जंगल में कुछ रहस्यमय लोगों या दरिन्दों की सरगर्मी जारी हो गयी थी।

"आप क्या कहते हैं बाबा सारगस? क्या करना चाहिये हमें?"

सारगस थोड़ी देर तक सोचता रहा फिर उसने आहिस्ता से कहा—"बेहतर यही होगा कि यह जगह छोड़ दी जाय। उत्तर पूर्व की तरफ निकल लिया जाय।"

"क्यों—उस तरफ क्यों?"

"उधर जंगल ज्यादा घना है और उधर मैं कई जगहों से वाकिफ हूं जहां जरूरत के वक्त पनाह ली जा सकती है।"

"यह बूढ़ा ठीक कह रहा है।" अजनबी ने कहा।

शोला ने चंद लम्हें खामोशी इख्तियार की फिर अजनबी की तरफ रुख करके बोला—"क्या तुम वापस जाना चाहते हो।"

अजनबी किसी सोच में डूब गया फिर धीमे स्वर में बोला—"नहीं, अब मैं उनके दरमियान नहीं जा सकता। वैसे भी मैं तुम्हारे सामने नत मस्तक हूं और अब तुम्हारा मुझ पर अधिकार भी है कि चाहे जैसे मेरा उपयोग करो—क्योंकि तुम चाहते तो मुझे

कत्ल कर सकते थे—पूरे कोरसार में मुझे ऐसा कोई शख्स आज तक नहीं मिला जिसने मुझे द्वंद्व में पराजित किया हो। मुझे हैरानी है कि कोई एक ही हमले में मेरी रीढ़ की हड्डी चटखा सकता है। उन लोगों को मेरी गुमशुदगी का इल्म हो चुका है और वे यह भी जान लेंगे कि मेरे साथ पंगा हुआ है। अब अगर मैं उनके सामने गया तो वह मुझे हलाक कर देंगे क्योंकि उनकी निगाह में अब मैं संदिग्ध हो चुका हूं। इससे पहले कभी ऐसा नहीं हुआ कि मैं जंगल से गायब रहा हूं। मैं उनके हाथों मरना नहीं चाहता।''

''मैं इस पर भरोसा नहीं करता शोला। यह शख्स मुझे सूरत से ही मक्कार मालूम होता है। मैं जानता हूं कि इसे बहुत कुछ मालूम है, लेकिन इसने अपनी जुबान बन्द रखी है। इस पर भरोसा करना बेवकूफी है।''

फिट के इन खुले-खुले शब्दों पर अजनबी ने उसकी तरफ देखा और गुर्राते हुए लहजे में कहा—''तुम बहुत ज्यादा बुद्धिमान बनने की कोशिश करते हो। मैं अभी बता चुका हूं कि मेरा उनके कब्जे में चले जाना सिर्फ एक हादसा था वरना मैं इस तरह का आदमी नहीं हूं। मैं कोरसार से इस तरह गद्दारी नहीं कर सकता था।

''और जो अब तक करते रहे हो वह?''

''हरगिज नहीं। मैंने कुछ नहीं किया। मेरा काम सिर्फ इतना था कि... ।'' अचानक अजनबी कहते-कहते रुक गया और फिर उसकी निगाहें सीमोन और हशीमा की तरफ उठ गयीं। उसने आहिस्ता से कहा—''इसके बारे में फिर बताऊंगा। मगर यकीन करो कि मैंने कोरसार के साथ गद्दारी नहीं की है। तुम लोगों को इस बात का इल्म होगा कि कालके लगभग खत्म हो गये हैं, लेकिन शायद तुम नहीं जानते कि यहां कोरसार में अब भी बहुत गहरी साजिश हो रही है।''

''मुझे तो लगता है तुम खुद कालके हो।''

''नहीं, मैं कालका नहीं बल्कि कोरसार का बाशिन्दा हूं। तुम नहीं जानते कि कालकों का असली हरकारा कौन था और कालकों की मौत के बाद वह अपने आका के लिये काम कर रहा है।''

''वह कौन है?'' फिट ने उसकी आंखों में आंखें डालकर पूछा।

अजनबी ने परेशानी से इधर-उधर देखा फिर आहिस्ता से कहा—"तुम लोग तो यह समझ रहे हो जैसे कोहसार में सारे फसाद की जड़ मैं ही हूं। जैसे संगानिया मेरा ही गुलाम है। मैं उसके बारे में नहीं जानता जिसके बारे में तुम सवाल कर रहे हो। लेकिन मैं सिर्फ इतना जानता हूं कि वह है और यकीनी तौर पर वह कोहसार का बाशिन्दा है। वह बड़ी रहस्यमय हस्ती है। मैं उसके बारे में कुछ नहीं जानता कि वह कौन है। मैंने उसे हमेशा स्याह लबादे और स्याह नकाब में देखा है।"

"और तुम उसके गुलाम हो?"

"हां—और सिर्फ मैं ही नहीं, बल्कि तुम उसके गुलामों की तादाद का सही अन्दाजा भी नहीं लगा सकते। वह जादूगर है और उसके जादू में ऐसी बात है कि लोग आसानी से उसके जाल में गिरफ्तार हो जाते हैं। मैं खुद को उन्हीं ताकतों में जकड़ा महसूस करता हूं। वह मुझे जो हुक्म देता है, मैं उससे इन्कार नहीं कर सकता।"

"तुम्हें यकीन है कि वह कालका नहीं है।"

"कुछ भी नहीं कह सकता। अन्दाजा ही नहीं लगा सकता कि वह कहां का रहने वाला है। कहां से आता है और कहां से जाता है। वह अचानक ही प्रकट होता है। लोगों को तरह-तरह की हिदायतें देकर रूपोश हो जाता है।"

"तुम बता सकते हो कि उसके गिर्द किस तरह के लोग रहते हैं?"

"पता नहीं—न जाने उसके पास कौन-कौन लोग हैं। उसने बेशुमार लोगों को नशे का आदी बना दिया है और नशे की पूर्ति के लिये उसके दर पर भिखारियों की तरह सदायें देते रहते हैं। वह उन्हें झिड़कता है, भगाता है, लेकिन फिर भी वह उसके पैरों को कुत्तों की तरह चाटते रहते हैं। फिर वह तरस खाकर उन्हें सुकून की दवा दे देता है। वह दवा जिसकी बदौलत इतनी जिल्लतें उठाते हैं, उसके लिये वह इस तरह इसके गुलाम बन चुके हैं कि अगर वह उनके सिर भी मांगे तो वह अपने हाथों से अपना सिर उतारकर उसके कदमों में डाल दें।"

"ओह! क्या तुमने कभी उस दवा को चखा?" फिट ने दिलचस्पी से सवाल किया।

"सिर्फ एक बार। बड़ी बदजायका थी, लेकिन जुबान पर रखते ही सारे बदन में एक सुरूर-सा दौड़ जाता है। ऐसा सुरूर जिससे पहले कभी परिचित नहीं था। मैं बार-बार उसे इस्तेमाल करना चाहता था, लेकिन वह दोबारा मेरे हाथ न लग सका। वह सफेद रंग का पाउडर है। मैं तुम्हें बता दूं—इस चीज को हासिल करने के लिये जुनारिया के अनगिनत लोग उसके गुलाम बन चुके हैं। मैं महसूस करता हूं कि इस नशे की पहुंच दूसरी बस्तियों तक भी हो चुकी होगी और उसने किसी खास मकसद से उन्हें नशे का आदी बनाया है। उसे नशा भी नहीं कह सकते—वह तो बस...।" अजनबी कहते कहते रुक गया जैसे उस नशे की लज्जत को याद कर रहा हो।

"एक बात बड़ी अजीब है।" फिट ने शोला की तरफ देखते हुए कहा।

"क्या?"

"हमें इस शख्स का नाम नहीं मालूम।" फिट बोला और शोला के होठों पर अजीब-सी मुस्कराहट फैल गयी।

"अभी तक हमारे दरमियान परिचय की रस्म ही अदा नहीं हुई। क्या नाम है तुम्हारा?"

"डलास—एडगर डलास।"

"वाह! बड़ा अजीब नाम है। यह तो बिल्कुल ऊपर की धरती के अंग्रेजों जैसा नाम है। कोरसार की धरती पर अंग्रेज।"

"अहमक हो तुम अगर मुझ पर शक कर रहे हो। मैंने सोचा कि जब मैं तुमसे सहयोग करने पर तैयार हो ही चुका हूं तो तुमसे कुछ भी छुपाना उचित नहीं है।"

"अच्छा तो तुम बताओ दंगानिया क्या चीज है?"

"कुछ भी नहीं।"

"क्या मतलब?"

"असली दंगानिया को उसने मरवा दिया है।"

"किसने?"

"मेरी बात को शायद तुम गलत समझ रहे हो लेकिन मैं बताता हूं कैसे दंगानिया मर चुका है और उसकी जगह कोई और वजूद दंगानिया का किरदार अदा करता है। वह सिर्फ लड़की को उठाकर उसके हुक्म का पालन करता है। असल में वह दंगानिया नहीं है।"

"बाप रे बाप! यह तो बाकायदा साजिश का जाल है जो यहां फैला हुआ है।" शोला किसी गहरी सोच में डूबा नजर आ रहा था। उसका दिमाग तेजी से बाकी कड़ियां मिला रहा था। उसने डलास पर एक निगाह डाली। एक ख्याल बिजली की तरह उसके जहन में उभरा था, लेकिन सीमोना और हशीमा की मौजूदगी में उसने डलास से और सवालात करने से गुरेज किया। अलबत्ता उसने यह बात दिल में सोच ली थी कि वह उससे तन्हाई में बात करेगा।

"बाबा सारगस! मैं आपके सुझाव पर अमल करना चाहता हूं। हमें उत्तर-पूर्व की तरफ सफर शुरू कर देना चाहिये। यहां रुकना हमारे लिये खतरनाक है।"

"ठीक है।" फिर सभी तैयारियां करने लगे।

अब वह आगे बढ़ने के लिये बिल्कुल तैयार हो गये थे। थोड़ी देर के बाद वह सब वहां से आगे बढ़ गये और इस सिलसिले में सोचते हुए एक-दूसरे से बातें करने लगे।

फिट ने शोला से कहा—"सवाल यह पैदा होता है कि हम उत्तर-पूर्व की तरफ क्यों जा रहे हैं?"

"दगानिया का किस्सा खत्म करना जरूरी है।"

"मगर यह तो कहता है असली दगानियां मारा गया है।"

"क्या तुम वापस जाना चाहते हो?" शोला ने सवाल किया।

"नहीं, लेकिन कहीं जाने का कोई खास मकसद होता है और फिर यह लड़कियां भी तो हमारे साथ हैं। इनकी वजह से बहुत से मुआमलात में रुकावट हो सकती है। मैं तो कहता हूं कि इनकी मौजूदगी में बिल्कुल नकारा से हो गये हैं।"

फिट के शब्द हशीमा ने सुन लिये थे। उसने बड़ी झल्लाई हुई आवाज में कहा—"मेरी समझ में नहीं आता कि तुम हमारे पीछे क्यों पड़ गये हो। हम तुम्हारे कांधों पर तो सवार नहीं है। अजीब इन्सान हो।"

फिट आंखें बन्द करके हंसने लगा। वह लोग सफर करते रहे। फिर थोड़ा-सा फासला तय किया था कि आसमान में धुवें के बादल उठते हुए नजर आये और वह सब चौंककर रुक गये।

"यह क्या है?" सारगस की आवाज उभरी।

डलास के चेहरे पर एक अजीब-सी परेशानी के भाव नजर आ रहे थे। उसने कहा—"मैं जानता हूं यह क्या है?"

"ठीक है—क्या है यह?"

"जंगलों में यह आग बेमकसद नहीं लगी है। उन्होंने सुरक्षा के दृष्टिकोण से जंगल में आग लगाकर बस्ती में दाखिल होने के रास्ते बन्द कर दिये हैं।"

सबकी निगाहें उस तरफ उठी हुई थीं। धुएं के बादलों में शोलों की लपक भी दिखायी दे रही थी। सचमुच ऐसा महसूस हो रहा था जैसे दूर कहीं एक आतिशी दीवार खड़ी कर दी गयी हो। शोलों की तपिश अब उन्हें अपने करीब आती महसूस हो रही थी।

"अगर उनकी बस्ती कहीं आस-पास मौजूद है तो क्या यह आग उनकी बस्ती तक नहीं पहुंचेगी?" फिट का सवाल वाजिब था।

"नहीं, वह इतने बेवकूफ नहीं हैं। उन्होंने सिर्फ बस्तियों तक पहुंचने के रास्ते बन्द किये हैं। उनकी बस्ती ढलवानों में है और आग बुलन्दी पर लगी हुई है। इन ढलानों से उतरे बगैर हम उनकी बस्ती तक नहीं पहुंच सकते।"

"लेकिन इस आग से हमें भी नुकसान पहुंच सकता है।"

"मैं भी यही कहने वाला था। क्योंकि अभी थोड़ी देर में दूर-दूर तक धुवां फैल जायेगा और उस धुवें में हम सांस भी नहीं ले सकेंगे।"

"तो फिर क्या किया जाय?"

"आओ, रास्ता काट देते हैं। हमें इस तरफ से आगे बढ़ना ही नहीं चाहियें। अगर वह लोग हमारा रास्ता रोकना चाहते हैं तो उससे यह भी एहसास होता है कि वह हम चंद लोगों से भयभीत हैं। यह आश्चर्य की बात है।"

थोड़ी देर बाद वह बायीं सिम्त का रुख करके उस तरफ चल पड़े। फिट इलास के साथ-साथ चल रहा था और उसके चेहरे पर अजीब से भाव थे।

उसने कहा—"प्यारे डलास! तुम्हारी शख्सियत अभी गोल-मोल ही है। वैसे एक बात बताओ। अगर जंगल में आग दूर-दूर तक फैल गयी तो क्या तुम्हारा दंगानिया उसकी लपेट में नहीं आ जायेगा?"

"हो सकता है वह इससे प्रभावित न हो।" डलास का चेहरा

अजीब तरह खोया-खोया-सा था।

"क्यों, यह बात तुम क्यों कह रहे हो?"

"इसलिए कि मैं खुद दंगानिया हूं।" डलास ने कुछा और फिर घोड़े की पुश्त से गिरते-गिरते बचा। अचानक ही ऐसा लगा जैसे डलास सोते-सोते चौंक गया हो। उसने आंखें फाड़-फाड़कर फिट को देखा।

"त...तुम दंगानिया हो?" फिट के मुंह से निकले शब्दों में लड़खड़ाहट थी।

डलास के चेहरे से लग रहा था जैसे उसे अपनी गलती का सख्त अफसोस हो रहा हो। वह एकदम से पीला पड़ गया।

फिट ने उसे गौर से देखा फिर कहा—"अब कुछ छुपाना बेकार है...और फिर वैसे भी तुम उन लोगों का साथ छोड़ चुके हो। तुमने यह बात कहकर कम-से-कम मेरी तो अक्ल ही खत्म कर दी कि तुम दंगानिया हो।"

"हां—मैं दंगानिया हूं। अब इस बात को छुपाना बिल्कुल व्यर्थ है।"

शोला, फिट, सारगस और दोनों लड़कियां उसे हैरत से देख रही थीं। हशीमा के चेहरे पर अजीब से भाव थे। उसका बस चलता तो डलास के टुकड़े-टुकड़े करके फेंक देती—क्योंकि वह खुद भी इस चक्कर में आ चुकी थी। बहुत देर तक खामोशी छायी रही,

फिर फिट ने खामोशी का तिलस्म तोड़ा।

"मगर डियर डलास, दंगलिया बनकर तुम्हें कैसा लगता था।"

"बस लगेगा कैसा...वह तो मेरी ड्यूटी थी।"

"तुम दंगलिया की खाल ओढ़ते थे?"

"हां उसी खाल को पहनकर मैं दरिन्दों की बस्ती में जाया करता था—लेकिन बस्ती में दाखिल होने से पहले मुझे एक गार से गुजरना होता था। मैं लड़की को गार में छोड़ देता था वहां से कुछ नकाबपोश उसे उठा ले जाते थे और फिर मैं गार से बाहर बैठा रहता। नकाबपोश मुझे बुलाते तो काफी वक्त बीत चुका होता। लड़की दोबारा मेरे सुपुर्द कर दी जाती लेकिन उस वक्त वह अधमरी सी हालत में होती थी। बेहोश...मैं इस बेहोश लड़की को उठाकर बस्ती में ले जाता और दरिन्दों की बस्ती के सरदार

के सुपुर्द कर देता। मेरा पक्का विश्वास है कि लड़की को कोई नशीली चीज दी जाती होगी और उसके बाद गार में उसके साथ कोई वहशत भरा खेल खेला जाता है। कई बार मैंने लड़की की चीखों की आवाजें भी सुनी थी। काश! कि मैं जान सकता कि गार में उसके साथ क्या होता है...मैं तो सिर्फ अपनी ड्यूटी बजाता था—इसके अलावा मुझे किसी चीज से कोई सरोकार नहीं था। इसके अलावा मैं जंगल की रखवाली भी करता था।"

"अच्छा वह खाल कहां है जिसे तुम ओढ़ते थे।"

"वह खाल उसी झोंपड़ी में छुपा रखी है। बाहर आने से पहले मैंने खाल उतार दी थी और अपनी नाकामयाबी की रिपोर्ट देने उसी गार की तरफ जा रहा था कि मैं शैला के चंगुल में फंस गया। अब उन लोगों को सबसे बड़ा खतरा इसी बात का होगा कि कहीं मैंने यह राज़ फाश न कर दिया हो और जंगलिया की असलियत जुनारिया तक न पहुंच जाये—इसलिये उन्होंने पूरे ही जंगल को आग लगा दी। वह इतने पर भी सब्र नहीं कर रहे होंगे। उन्होंने पहले मुझे तलाश किया होगा और जब मैं उन्हें नहीं मिला तो यह सब किया गया। सम्भव है इस जंगल को भी उन्होंने अब तक चारों तरफ से घेरे में ले लिया हो।

आग धीरे-धीरे उन्हें चारों तरफ से घेरती बढ़ रही थी।

—समाप्त—